

दृश्यकला कोश

डॉ. हृदय गुप्त



वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

BVP - 1925
8/2/18

(52/66)

दृश्यकला कोश

।ढ़

अलीगढ़

न,

र

यल बुक

(1997)

रेली

मेरठ,

ती

ए

न्दी ग्रन्थ

देल्ली

पुर

), मध्य

दृश्यकला कोश

(A Dictionary of Terms in Visual Art)

डॉ० हृदय गुप्त

ललित कला विभाग,
डी०ए-वी० कॉलेज, कानपुर
(सी०एस०जे०एम० विश्वविद्यालय, कानपुर, उ०प्र०)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग/भारत सरकार
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ)

प्रकाशक

डॉ० सुधाकर अदीब

निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

लखनऊ

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थ निर्माण योजना के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रभाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वारा प्रकाशित।

© उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रथम संस्करण - 2015

ISBN - 978-93-82175-54-4

प्रतियाँ : - 500

मूल्य : - 185=00 रुपये मात्र

मुद्रक :

अवध पब्लिशिंग हाउस

पानदरीबा, लखनऊ।

समर्पणं

कीर्तिशेष

बड़े भाई सुन्दर लाल गुप्त

श्याम लाल गुप्त एवं

अशोक कुमार गुप्त

को

सादर समर्पित!

प्रकाशकीय

सामाजिक प्राणी के रूप में हमारे विकास में दृश्यकलाओं का भूतपूर्व योगदान है। नदी, पहाड़, वृद्ध और घर हमारे दैनिक जीवन की अनेकानेक गतिविधियाँ इन दृश्य विधाओं को पूर्ण बनाती हैं। इसी के कारण यदि आदि मानव ने सर्वप्रथम चित्रकला को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, तो इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं था। चाहे कोई शिकार का दृश्य हो चाहे युद्ध का, चाहे किसी माँ द्वारा शिशु को दुलराने अथवा किसी निर्धन को भिक्षा देने के रेखाचित्रों अथवा रंगचित्रों का आयोजन हो मनुष्य की चित्रवृत्तियों का रूपांकन दृश्यकला के माध्यम द्वारा युगों-युगों से होता आया है। कोई भी समय रहा हो, अपने विकासक्रम के हर दौर स्थान पर चित्रकला, मूर्तिकला व वास्तुकला आदि उसकी विशिष्ट पहचान को मूर्त रूप देने का सशक्त माध्यम रहे। इस विकासकाल में कला की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं, विभिन्न माध्यम विकसित हुए। उनमें मानव मन की उड़ान को निहारते आंखे नहीं थकती।

कला की इस विविधतापूर्ण दुनिया में प्रयुक्त हो रहे विभिन्न शब्दों को यदि भलीभाँति समझा जा सके, तो कथ्य को समझने में अधिक सुविधा होगी। राजभाषा हिन्दी में कला सम्बन्धी स्तरीय पुस्तकें कम रही हैं, ऐसे में कला मर्मज्ञ डॉ० हृदय गुप्त द्वारा लिखित कला विषयक विभिन्न शब्दों, उनके अर्थों और संक्षिप्त परिचय पर केन्द्रित यह 'दृश्यकला कोश' अत्यंत उपयोगी है। इस कोश से गुजरना मानों संक्षिप्त में कला इतिहास और उसके तकनीकी पहलुओं को सम्यक् रूप से समझना है। ऐसे में इस कोश के प्रणयन के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान विद्वान लेखक डॉ० हृदय गुप्त के प्रति हृदय से आभारी हैं और अपनी विश्वविद्यालयस्तरीय पाठ्य पुस्तक ग्रन्थ निर्माण योजना के अन्तर्गत इसका प्रकाशन कर गौरवान्वित भी हैं।

यह 'दृश्यकला कोश' तीन अध्यायों में विभाजित है। पहले अध्याय में

चित्रकला, मूर्तिकला व स्थापत्य कला आदि से सम्बन्धित विभिन्न शब्दों का सरल भाषा में परिचय दिया गया है। विवरण रोचक है और बोझिलता से बचने की विद्वान संकलनकर्ता की सफल कोशिश यह स्पष्ट करती है कि उसे अपने क्षेत्र विशेष के साथ-साथ पाठकीय मनोविज्ञान पर भी भरपूर अधिकार है। अगले अध्याय में कला विषयक अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी अनुवाद अत्यंत उपयोगी है। इसी तरह, कला सम्बन्धी हिन्दी शब्दों को भी पर्याप्त सम्मान दिया गया है और एक अलग अध्याय में उनके अंग्रेजी अनुवाद संकलित हैं। कोश के अन्त में सन्दर्भित ग्रंथों की सूची इस सम्पूर्ण संकलन को अतिरिक्त उपादेयता प्रदान करती है। विश्वास है, विद्वत्तजनों के साथ-साथ कला क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों आदि के बीच यह कोश अपनी उपयोगिता प्रमाणित करेगा।

डॉ० सुधाकर अदीब
निदेशक

निवेदन

मनष्य के सर्वप्रथम गुणों में एक अभिव्यक्ति की आकांक्षा भी है। जब से उसने होश संभाला, अभिव्यक्ति के लिए उसने जो माध्यम चुने, उनमें चित्रकला (दृशकला) सर्वप्रमुख है। भाषा से भी पहले इसका विकास हुआ और इसके कारण आज जो प्रागैतिहासिक चित्र मिलते हैं, उनमें तत्कालीन मानव के जीवन की आखेट, मनोरंजन और रहन-सहन आदि के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। भारत सहित दुनिया के विभिन्न भागों में ऐसे चित्रों की भरपूर परम्परा है। प्रदेश के सोनभद्र व मिर्जापुर जिलों में भी ऐसे चित्र मिल चुके हैं। मध्य प्रदेश में भी बैठका की प्रागैतिहासिक चित्रों वाली गुफाएं कालान्तर में काफी चर्चित रहीं।

प्रागैतिहासिक काल हो या सैकड़ों साल की यात्रा के बाद आज के समय में पहुंचा मानव, चित्रांकन उसके अवचेतन में हमेशा मौजूद रहा। इसके कारण भारत सहित विभिन्न देशों में समय-समय पर उसकी अनेकानेक शैलियां विकसित हुईं, माध्यम विकसित हुए। प्राचीन संस्कृत और अन्य ग्रंथों में चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य और वास्तु कला सरीखे माध्यमों का सविस्तार वर्णन मिलता है। कालान्तर में ग्रीक, अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं में भी इनका भरपूर विवरण उपलब्ध है। इनसे पता चलता है कि समय-समय पर विसित कला अंकन कितने स्वाभाविक और कितनी व्यापकता व गहराई समेटे है। अतीत की चर्चा करें तो अजन्ता व बाघ की गुफाओं में उपलब्ध और वर्तमान में 'मोनालिसा' व 'गुएर्निका' जैसे कालजयी चित्र इसी श्रेणी में आते हैं। मूर्ति व वास्तुकला में भी ऐसे उदाहरणों का भरपूर सिलसिला दूर तक जाता है।

कला की विभिन्न शैलियों व उनके माध्यमों से सम्बन्धित जानकारी दुर्भाग्य से राजभाषा हिन्दी में प्रचुरता में उपलब्ध नहीं रही है। कई बार तो उनके तकनीकी नामों के बारे में संक्षिप्त जानकारी तक का अभाव रहता है। मीनियेचर्य (लघुचित्र), ट्राइबल आर्ट, तांत्रिक पेन्टिंग्स, आब्स्ट्रैक्ट आर्ट (अमूर्तकला) और एंक्रैलिक कलर्स जैसे अनेकानेक कला विषयक तकनीकी शब्दों को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। ऐसे में सुप्रसिद्ध कलामनीषी डॉ० हृदय गुप्त ने 'दृश्यकला कोश' का प्रणयन कर एक महत्वपूर्ण

जरूरत की भरपाई की है। इधर कुछ दशकों में हिन्दी ने अपने दायरे का असीमित विस्तार किया है। उन क्षेत्रों से सम्बन्धित स्तरीय पुस्तकें भी अब हिन्दी में उपलब्ध हैं, जिनके अभाव के चलते पहले अंग्रेजी आदि दूसरी भाषाओं में मौजूद पुस्तकों को खंगालना पड़ता था। इसके प्रणयन के लिए कला विशेषज्ञ डॉ० हृदय गुप्त को अनेकानेक साधुवाद। आशा है कि न केवल कला क्षेत्र से जुड़े छात्रों अपितु जागरूक पाठकों के बीच भी इस 'दृश्यकला कोश' का व्यापक स्वागत होगा।

उदय प्रताप सिंह

कार्यकारी अध्यक्ष

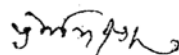
भूमिका

‘दृश्यकला’ प्रारम्भ से ही मानवीय गतिविधियों, भावों का उत्कर्षण रही है। भाषा के उद्भव से पहले, चित्रगत सन्देशात्मक वार्तालाप मानवीय प्रयास में थे। भाषा-विकास के साथ, कला शैली का विधागत नामांकन स्वरूप भी विकसित हुआ, जिसका भारत के प्राचीन ग्रन्थों में तकनीकी शब्दावली के रूप में वर्णन है। इन ग्रन्थों की रचना, प्राचीन भारतीय भाषा संस्कृत में हुई है। कालान्तर में प्रारम्भिक तकनीकी शीर्षक, अंग्रेजी शब्दावली के साथ लेखन में प्रयुक्त हुए और वह अंग्रेजी शब्द, उसी रूप में पाठ्य पुस्तकों में भी आ गये।

आज हिन्दी, जनमानस की प्रमुख भाषा होते हुए भी, हिन्दी में, कला पुस्तकों का अपेक्षाकृत अभाव है और शब्दार्थ-संचयन तो न के बराबर है। अब तक प्रयोग होने वाले तकनीकी शब्दों की व्याख्या समझ लेना नितान्त आवश्यक है। ‘शब्द’ के ‘प्रतिशब्द’ की अपेक्षा; उसका अर्थ विस्तार, कला विद्यार्थियों के लिए वांछनीय है। दृश्यकला के ऐतिहासिक और सौन्दर्यात्मक पक्ष पर तो लेखन उपलब्ध है, किन्तु महती आवश्यकता है, इस प्रकार के शब्द विशेष को अभिप्रेषित करने वाले लेखन की; क्योंकि प्रत्येक कला में उसके अंग-उपांग के विधागत शीर्षक होते हैं, जो उनकी विशिष्टता को इंगित करते हैं। कलागत अभिप्रेषण स्पष्ट अर्थवत्ता का आश्रयी होता है। शब्दावली की ग्राह्य रचना के लिए, अन्वेषक का प्रयास दुरूह और खोज प्रधान है। लेखक ने अपने श्रमसाध्य अन्वेषण में, प्रक्रियागत शब्दों के साथ, विशिष्ट स्थान, स्कूल, महाविद्यालय, अकादमी, संग्रहालय आदि की, जो कला के समुचित व्यवस्थापक हैं, इस खोजपूर्ण ग्रन्थ की शब्दावली में परिचयात्मक प्रस्तुति दी है।

पुस्तक में, प्रख्यात चित्रकार डॉ. अभय द्विवेदी द्वारा किया गया रेखांकन, विषयवस्तु के प्रति आकर्षण उपयुक्तता का परिचायक है।

डॉ. हृदय गुप्त लिखित, यह दृश्यकला कोश, कला के क्षेत्र में, एक अहम रचना है, जो कला जिज्ञासुओं और विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक तथा उपयोगी सिद्ध होगी।



(डॉ. प्रेमा मिश्रा)

वरिष्ठ चित्रकार एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
ललित कला विभाग,
जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कालेज, कानपुर

यथानुसार भावार्थ एवं तत्सम्बन्धी शब्दों के सारगर्भित अर्थों को समझने के लिए इस प्रकार के हिन्दी में शब्दकोश की नितांत आवश्यकता थी। इस उद्देश्यपूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस 'दृश्यकला कोश' की रचना की है। प्रस्तुत पुस्तक में कला इतिहास, घटनाएँ, संस्थागत जानकारी एवं विविध रचनात्मक पहलुओं का विशद विवेचन है तथा उपरोक्त समग्र जानकारीयों की सार-संक्षेप रूप में व्याख्या है। अन्य अध्याय में कला से सम्बन्धित हिन्दी-अंग्रेजी एवं अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश है। प्रस्तुत पुस्तक समकालीन कला-व्याख्या एवं प्राचीन कला-व्याख्या दोनों पर आधारित है। मेरे लिए सौभाग्य का विषय होगा कि प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले, ज्ञान अर्जन करने वाले, जिज्ञासुओं, कला-प्रेमियों एवं विद्यार्थियों के ज्ञानवर्द्धन में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी तथा उपयोगी होगी।

इस कोश के लिए विषयानुरूप रेखांकन बनाने हेतु प्रसिद्ध चित्रकार डॉ० अभय द्विवेदी का योगदान बहुमूल्य है, तथा इसको समृद्ध बनाने में डॉ० राम कंवर, डॉ० प्रेमा मिश्रा, ओ.पी. त्रिपाठी, गोपाल खन्ना, बड़े भाई कृष्ण कुमार गुप्ता, अरुण गुप्ता, जगदीश गुप्ता एवं कानपुर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं ललित कला विभाग, डी०ए-वी० कालेज, कानपुर के समस्त शिक्षकों का विशेष आभारी हूँ जिनके सहयोग व सुझावों से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। इस कोश-रचना में मेरी जीवन-संगिनी सोना गुप्ता व मेरे पुत्र कलांकुर गुप्त का अपार सहयोग सराहनीय है। इस कोश के टंकण हेतु श्रीमती रेखा गुप्ता और शब्द एवं वाक्यविन्यास में त्रुटि-सुधार में बहुमूल्य समय देने हेतु श्री विशाल शुक्ल को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस पुस्तक के प्रकाशक उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह, निदेशक डॉ० सुधाकर अदीब एवं प्रकाशन अधिकारी डॉ० अमिता दुबे को साधुवाद जिनके अपार सहयोग से इस पुस्तक का प्रकाशन हो सका। मेरा यह छोटा सा प्रयास आप के सम्मुख है, इसे और समृद्ध करने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का स्वागत है।

18 जून, 2015

• 2/414, नवाबगंज, कानपुर - 208 002

• ललित कला विभाग, डी.ए-वी. कालेज, कानपुर

डा० हृदय गुप्त

अनुक्रमणिका

अध्याय - 1 दृश्यकला शब्दावली	1 - 129
अध्याय - 2 दृश्यकला शब्दकोश : अंग्रेजी - हिन्दी	130 - 162
अध्याय - 3 दृश्यकला शब्दकोश : हिन्दी - अंग्रेजी	163 - 184
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	185 - 186



Ka

Aboriginal Art (एबॉरिजनल आर्ट) - सरल रूपों, रेखाओं द्वारा बनाया गया आदिवासी चित्रण जिसमें धार्मिकता, मिथक आस्था, जादू-टोना, अंधविश्वास एवं प्रकृति प्रदत्त रूपों का अंकन किया जाता है। (देखें Tribal Art)
आदिवासी कला

Abstract Art (ऐब्स्ट्रैक्ट आर्ट) - कला का वह सूक्ष्म रूप जिसमें भौतिक रूपों का चित्रण न कर उसके अस्तित्व-बिम्ब का चित्रण किया गया हो।

कैमरे के अविष्कार के बाद कलाकारों का यथार्थ चित्रण से मोहभंग हो चुका था। वे नवीन सृजन की ओर उन्मुख हुए और नूतन आकारों, रेखाओं व वर्णों को लेकर संयोजन प्रारम्भ किये। यह निर्मित मौलिक कृतियाँ सौन्दर्य-युक्त थीं। यह नवीन कला भौतिक प्रधान नहीं बल्कि रूपप्रद थी जिसमें अस्तित्व-बिम्बों को अनुभूतियों के आधार पर संयोजित किया गया। मूलतः इस अमूर्त कला को वस्तु-निरपेक्ष कला कहकर सम्बोधित किया गया। यह कला, 20वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण परिणामकारक कला के रूप में प्रचलित हुई।
अमूर्त कला

Abstract expressionism (ऐब्स्ट्रैक्ट इक्सप्रेसिनिज़्म) : वह कला आन्दोलन जो द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् पनपा, जिसमें वस्तु निरपेक्ष आकृतियों की सहज स्फूर्त क्रियाशीलता द्वारा मनोभावों की अभिव्यक्ति की जाती थी। इस कला आन्दोलन में अति यथार्थवाद का स्पष्ट प्रभाव था। यह आन्दोलन न्यूयॉर्क में जन्मा था। जो कलाकार युद्ध की वजह से यूरोप छोड़ अमेरिका आये थे, उनकी कला का अमेरिका की कला पर प्रभाव पड़ा था। इस कला में सादृश्यता एवं विषय-वस्तु का कोई स्थान नहीं था। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग रॉबर्ट कोट्स ने जैक्सन पोल्लाक, डे कुनिंग एवं उनके साथियों के चित्रों की आलोचना में किया था। इस विद्या के प्रमुख कलाकार जैक्सन पोल्लाक, फ्रान्स, ट्वोर्कोव व डी कुनिंग थे।
अमूर्त/वस्तु-निरपेक्ष अभिव्यञ्जनावद

Abstract form (ऐब्सट्रैक्ट फॉर्म) : वस्तु निरपेक्ष रूप जो सूक्ष्म, अमूर्त अथवा परिष्कृत होते हैं। ये रूप प्रकृति रूप का प्रभाव मात्र होते हैं। चित्रकार इन रूपों का सृजन करते समय अदृश्य कल्पनाओं का सहारा लेता है। समकालीन चित्रकला व मूर्तिकला में इन रूपों को सँजोकर कलाकार नयी-नयी सम्भावनाओं को जन्म दे रहे हैं।

सूक्ष्म रूप

Abstract Impressionism (ऐब्सट्रैक्ट इम्प्रेशनिज़्म) : वस्तु-निरपेक्ष प्रभाववाद। वस्तुतः विशुद्ध रंगों की उद्देश्यपूर्ण रंगसंगति या धब्बों के प्रभाव से बनाया गया चित्र। इस कला का विकास 1945 ई. के पश्चात् रोजे बिसियर के मार्ग दर्शन में हुआ था, जो इस प्रकार की विधि का प्रयोग कर चित्रांकन करता था। इस वाद के चित्रों में दृश्य चित्रों के समस्त प्रभाव धब्बों द्वारा दिखलाये जाते थे। मुख्य चित्रकार अमेरिकी कलाकार फिलिप गस्टन, जेम्स ब्रक्स, यूरोपीय कलाकार, ज्यां बाजेन, मानेसिय, सँजिय व फ्रेन्च चित्रकार, लान्स्कोय, निकोल दस्ताल थे।

वस्तु-निरपेक्ष आभासवाद

Academy (एकॅडमी) -विद्वानों की परिषद्। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा, कला, साहित्य एवं मानवहित में कार्य करना है।

विद्वत्परिषद्

Accidental Effect (ऐक्सीडन्टल इफ़ेक्ट) : कलाकृति में आकस्मिक प्रभाव उत्पन्न होना। बिना पूर्व योजना के कार्य करते समय अचानक कलाकृति में यथोचित बिम्ब उद्भूत हो जाना। इन उद्भूत बिम्बों से कलाकार नये-नये रूपों का सृजन करता है तथा इनमें थोड़ा सुधार कर इन्हें सौन्दर्य प्रदान कर पूर्ण रूप प्रदान करता है एवं कृति में संयोजित करता है।

संयोगिक / आकस्मिक प्रभाव

Achromatic Painting (अक्रोमैटिक पेन्टिंग) -रंगहीन चित्र, जिस पर सिर्फ काले, सफेद व सलेटी रंगों का प्रयोग किया गया हो।

वर्णहीन/अवर्ण चित्र

Acrolith (ऐकॅलिथ) - ग्रीक मूर्ति, जिसमें मानव धड़, लकड़ी व हाथ, पैर व सिर पत्थर के बने होते थे।

काष्ठाश्म

Acrylic Colours (एक्रेलिक कलर्स) : यह संश्लेषित (Synthetic) रंगों की एक किस्म है जो पानी एवं एक्रेलिक माध्यम दोनों में घुलनशील है। 20वीं शताब्दी के मध्य में यह रंग प्रचलन में आया। इन रंगों द्वारा जल-रंग की तरह पारदर्शी प्रभाव एवं तैल-रंग का अपारदर्शी (मोटी परत) प्रभाव दोनों ही दिखा सकते हैं। ये रंग

तुरन्त सूखते हैं और इनमें चमक भी रहती है। आजकल इनका प्रयोग समकालीन चित्रकार बहुतायत में कर रहे हैं।

संश्लेषित रंग

Action Painting (एक्शन पेंटिंग) - चित्राधार पर रंग चुआकर या गिराकर अथवा छिड़ककर चित्र बनाने की पद्धति। जिसमें सहज स्फूर्त क्रियाशीलता द्वारा अभिव्यक्ति की जाती है। इस विधि की कल्पना **लियोनार्दो द विन्ची** ने की थी उन्होंने सर्वप्रथम कहा था कि दीवार पर दिख रहे धब्बे या खरोंच को नवीन आकृति में बदल देना चाहिए। वहीं इस विधि के प्रवर्तक चित्रकार अमेरिकी **जैक्सन पोलाक** का मानना था कि यह एक सहज वृत्ति है जिसमें पूर्ववर्ती कोई विचार नहीं होता। जैक्सन पोलाक ने द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् कैनुवस पर रंग छिड़क कर, उड़ेलकर व बहाकर अपने चित्रों को प्राकृतिक दृश्यों जैसी अनुभूति दी। यह आकस्मिक नहीं बल्कि इस प्रक्रिया में इनका पूर्ण नियंत्रण था। वह अपने चित्रों में हाथ की छाप एवं वस्तुओं को रंग में भिगोकर उनकी छाप भी देते थे। इस प्रकार के चित्रों की रचना उन्होंने सन् 1947 से 51 के बीच में की थी। इस विधा का **हैरोल्ड रोसेनबर्ग** ने नामकरण किया था।

क्रियात्मक चित्रण

Adivasi Lok Kala Parishad (आदिवासी लोककला परिषद्) : भोपाल (म.प्र.) में स्थित एक संस्था जो आदिवासी लोककला के उन्नयन एवं संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। जनजातियों की अन्तर्दृष्टियों का रूप स्पष्ट रूप से लोककलाओं में दृष्टिगोचर होता है। यह संस्था इन कलाओं को सहजने का तथा विकसित करने का, कार्य करती है। इसकी स्थापना सन् 1980 में हुई थी। यह अकादमी सर्वेक्षण कार्यक्रम, आयोजित कार्यक्रम, ग्रंथों तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि करती रहती है। आदिवासियों से सम्बन्धित वस्तुओं कलाकृतियों को सहजने के लिए एक संग्रहालय की स्थापना भी इस अकादमी द्वारा की गयी है।

आदिवासी लोककला परिषद्

Advertisement (एडवर्टिसमेंट) - चित्र, बैनर, पोस्टर, पेंटिंग, साइन बोर्ड, ड्रगडुगी, संचार एवं अन्य माध्यमों द्वारा की गयी घोषणा या प्रचार। मूलतः विज्ञापन का उद्देश्य सार्वजनिक सूचना, प्रचार-प्रसार, घोषणा, संदेश एवं अपील आदि से होता है। परन्तु अब इसका अधिकांशतः प्रयोग औद्योगीकरण व व्यापार लाभ के लिए होने लगा है। इससे निर्माता, विक्रेता तथा उपभोक्ता सभी लाभान्वित होते हैं। आज विज्ञापनों की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण है।

विज्ञापन

द्वारा भित्ति व मूर्तियों में रंगांकन किया जाता है और विशेष तकनीकी चित्र बनाये जाते हैं ।

वायु कूँची / फुहार

Alcove (ऐलकोव) : भवनों की दीवार पर बना ताक/आला जो ऊपर की ओर महराबदार या अर्धचन्द्राकार बनाया जाता है । इसका प्रयोग दीपक वगैरह अथवा सजावटी समान रखने के लिए किया जाता है ।

ताखा / आला

Alla-Prima (अला प्रीमा) - एक बैठक में बनाया गया चित्र । प्रायः 'डिमांसट्रेशन' में इस प्रकार के चित्रों की रचना की जाती है ।

एक बैठक चित्रण

Allegorical Form (एलिगोरिकल फॉर्म) : जिन रूपों की रचना पूर्व निर्धारित मान्यताओं, आकारों एवं लक्षणों के आधार पर की जाती हो, वह रूप इस श्रेणी में आते हैं । जैसे - राशियों के चिह्न, देवी-देवताओं के रूप, ड्रेगन आदि ।

रूपक / लाक्षणिक रूप

Allegorical Painting (एलिगोरिकल पेन्टिंग) : रूपक कथा-चित्र अथवा नीति कथा-चित्र जो प्राचीन काल से परम्परागत बनते चले आ रहे हैं । इन चित्रों में कथा, कहानी, पौराणिक गाथा, दृष्ट्यांत आदि का विवरणात्मक उल्लेख होता है । यह चित्र एक भी हो सकता है और क्रमानुसार शृंखलाबद्ध भी ।

रूपकालक चित्र

All India Handicraft Board (ऑल इंडिया हैंडिक्राफ्ट बोर्ड) : भारत की आजादी के पाँच वर्ष उपरान्त 1952 ई. में भारत सरकार ने हस्तकलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए "अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड" का गठन किया तथा इसकी प्रथम सभापति श्रीमती कमला देवी चट्टोपध्याय को बनाया । इस समय भारत के शिल्पकार कोने-कोने में फैले थे । कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं था । निर्धनता का जीवन जी रहे शिल्पकारों का जीवन कठिनाइयों भरा था । श्रीमती कमला देवी ने विशेषज्ञों की टीम गठित कर सर्वे कराया तथा शिल्पकारों के आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए योजनाएँ बनायीं । 1954 ई. में स्वयं कमला देवी ने अपने साथियों के साथ पूरे भारत का भ्रमण किया और शिल्प उद्योग को पुनर्जीवित करने के प्रयास शुरू किया । प्रदेश सरकारों से भी सहयोग माँगा । इस अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड ने कई अन्य विशिष्ट विभाग बनाये, प्रशिक्षण केन्द्र खोले तथा विक्रय केन्द्र बनाये । इस बोर्ड का कार्यकाल 2 वर्ष का होता है जो शिल्पकारों के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाता है और उन्हें कार्यान्वित कराता है ।

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड

Altar-piece (ऑल्टरपीस) - ईसा मसीह के जीवन से सम्बन्धित नक्काशी चित्र जो गिरजाघर की वेदी के पीछे या ऊपर लगाया जाता था ।
वेदी चित्र

Alwar School (अलवर स्कूल) : अलवर राजस्थान का एक नगर जहाँ की चित्रशैली जयपुर की उपशैली है, परन्तु मौलिकता के आधार पर यह स्वतन्त्र चित्रशैली है । इस राज्य की स्थापना सन् 1775 में राव राजा प्रताप सिंह (सन् 1756-90) ने की थी । यहाँ मुगल कलाकारों ने सर्वप्रथम शरण ली थी । इन कलाकारों ने स्थानीय कलाकारों के साथ मिलकर जयपुर चित्रशैली को एक नया रूप प्रदान किया । यहाँ की हवेली, महल व भवनों में सुन्दर भित्ति चित्र पाये गये और यहाँ अनेक ग्रंथ चित्रित किये गये । चित्रण विषय कृष्ण-लीला, नर्तकी, दुर्गा-सप्तशती, महाभारत, राग-रागिनी, बारहमासा, शिव-पार्वती, रामचरित, राजपूत वैभव, साधू-संत, पशु-पक्षी आदि हैं । हाशिये सुन्दर बनाये गये हैं । चित्रों में परदाज (छाया-प्रकाश) का विशेष प्रभाव है । चित्रों में चमकीले तथा स्वर्ण रंगों का प्रयोग किया गया है ।

अलवर चित्रशैली

American Art (अमेरिकन आर्ट) : अमेरिकी कला इतिहास 18वीं शताब्दी से प्रारम्भ माना जाता है । सन् 1776 के स्वतन्त्रता युद्ध के पश्चात् अमेरिकी चित्रकार जन-जीवन एवं प्रकृति चित्रण पर आधारित चित्र बनाने लगे थे । इसके साथ-साथ पौराणिक आख्यानों पर भी चित्रण किया । यहाँ की कला पर पेरिस की कला का प्रभाव था, क्योंकि यहाँ के चित्रकार पेरिस कला स्कूल में अध्ययन हेतु जाते थे । कुछ छात्र म्यूनिख भी गये । यहाँ के चित्रकारों ने सन् 1908 में 8 (आठ) नामक संस्था का गठन किया व प्रदर्शनी लगायी । जिसमें दैनिक जीवन व सामाजिक सरोकार से जुड़े विषय पर आधारित चित्र प्रदर्शित हुए । यह चित्र यथार्थवादी चित्र थे । इन चित्रों को देख कला विशेषज्ञों ने 'एश्केन शैली' का नामकरण किया । सन् 1913 में प्रगतिशील चित्रकारों ने एक अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन 69वीं रेजीमेंट के शस्त्रागार में किया । यह प्रदर्शनी 'आर्मरी शो' के नाम से विख्यात हुई । प्रदर्शनी की कटु आलोचना हुई । इसके पश्चात् अमेरिकी कलाकार एश्केन शैली से भिन्न आधुनिक चित्र बनाने लगे । इस प्रकार बीसवीं सदी में दो प्रकार के चित्रकार हुए । एक अमेरिका के जन-जीवन का चित्रण कर रहे थे और दूसरे यूरोपीय आधुनिक कला से प्रभावित हो अमूर्त चित्रण करना प्रारम्भ कर दिये थे । सन् 1960 के दशक में यहाँ के कलाकारों ने विज्ञापन चित्रों की स्पष्टता को चित्र में सँजोना शुरू किया जो **Pop Art** के नाम से प्रसिद्ध हुई ।

अमेरिकी कला

Amateur Artist (एम्चुअर आर्टिस्ट) - वह शौकिया कलाकार जिसने कहीं भी कला की विधिवत् शिक्षा न प्राप्त की हो । **शौकिया कलाकार**

Amer School (आमेर स्कूल) : आमेर (16वीं शताब्दी में) राजस्थान का महत्वपूर्ण राज्य था तथा ढूँठार क्षेत्र में स्थित था । यह जयपुर से कुछ दूरी पर स्थित है । यहाँ महलों, भवनों, छतरियों में लघु चित्रण की समृद्ध परम्परा रही है । अनेक ग्रन्थ चित्रित हुए हैं । इस शैली में मुगलिया प्रभाव के साथ-साथ स्थानीय लोक शैली का समावेश था । आकृतियाँ लम्बी छरहरी बनायी जाती थीं । वेशभूषा के स्थानीय प्रभाव के साथ मुगलिया प्रभाव भी था । चित्रण विषय कृष्ण-लीला, रागमाला, नायक-नायिका, अमरुशतक, मल्ल-योद्धा, राजदरबार, लड़ते हुए हाथी, शिकार, रसिक-प्रिया, रीति-कालीन एवं व्यक्ति चित्रण आदि थे । यह शैली 16वीं से 18वीं शती तक विशेष रूप से फली-फूली । जयपुर की स्थापना पश्चात् यह शैली जयपुर चित्रशैली में समाहित हो गयी । **आमेर चित्रशैली**

Amphitheatre (एम्फीथियैटर) - रोमन सम्राज्य के क्रीड़ा स्थल जो पहली शताब्दी ई० पू० में थे । **रंगभूमि**

Amusement Art (अम्यूजमेण्ट आर्ट) - वह चित्र जिसका उद्देश्य मात्र कौतुक व मनोरंजन होता है । **मनोविनोद कला**

Anagoric Painting (ऐनैगॉजिक पेन्टिंग) : रहस्यात्मक चित्रण जो मानव के आदर्शोन्मुख अचेतन मन से प्रस्फुटित हो बनती है । **रहस्यात्मक चित्र**

Analogous Colour (अनैलॉगस कलर) - रंग-चक्र में अगल-बगल के रंग । **अनुरूप / सदृश रंग**

Anamorphosis (ऐनैमॉर्फोसिस) - विमूर्त रूप में चित्रित किया गया वह चित्र जो अवतल दर्पण में बने प्रतिबिम्ब जैसा दिखता हो । **विचित्र / रूपाभास**

Anatomy (अनैटमी) - मानव शरीर रचना विज्ञान जिसमें शारीरिक गठन का अध्ययन किया जाता है । **शरीर रचना**

Ancona (ऐनकॉना) - लकड़ी के पट्टे पर चित्रित चित्र जो गिरिजाधरों की वेदी में लगाये जाते थे । यह एक इटैलियन शब्द है । **वेदी चित्र**

Anti Art (ऐन्टि आर्ट) - प्रचलित एवं परम्परागत कला के विपरीत कृति बनाना ।

जिसमें पुरानी, खराब, टूटी-फूटी, रद्दी, बेकार सामग्री आदि की कलाकृति बनायी जाती है। दादावादियों ने इस प्रकार की खूब कलाकृतियों की रचना की थी।
विरोधी कला

Anticorne (ऐन्टीसेनी) - सफेद रंगों के माध्यम से धरातलीय विभाजन अथवा रूपों का बाह्य रेखांकन जो सतही वर्ण यानी सफेद रंग का होता है। यह एक 'फ्रेन्च' शब्द है।
सतही रंग-रेखा

Antique (ऐन्टीक) - पुरातन कलाकृति जो युगों-युगों तक जनमानस को प्रेरित व आकर्षित करती रहे।
पुरावस्तु / प्राचीन

Apostle (अपोसल) : धर्म के प्रचार-प्रसार के अग्रदूत जो धार्मिक संदेश जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। विशेष रूप से इस शब्द का प्रयोग ईसाई धर्म के प्रचारक के लिए किया जाता है।
देवदूत / धर्मदूत

Applied Art (अप्लाइड आर्ट) - व्यापारिक उन्नति हेतु प्रयुक्त कला।
व्यावहारिक कला

Applique (अप्लीक) - पैबन्ध लगाकर या जड़कर बनायी गयी कृति या पोशाक।
गोटापट्टा / पैबन्धकारी / जड़ाऊ काम

Aqua Fortist (ऐक्वै फ़ार्टिस्ट) : इसका अर्थ है strong water यानी नाइट्रिक अम्ल। इस शब्द का प्रयोग 'एचिंग' में किया जाता है।
जल फ़ार्टिस्ट

Aquatic Pencils (ऐक्वाटिक पेन्सिल्स) : जल रंग-चित्र एवं रंगीन पेन्सिल-चित्र दोनों प्रकार के चित्र इस पेन्सिल द्वारा बनाये जा सकते हैं। ये पेन्सिल जल में घुलनशील होती हैं। जहाँ जल रंग का प्रभाव देना हो, वहाँ पेन्सिल से चित्रण करने के पश्चात् मुलायम बालों वाले ब्रश से पानी लगाकर फैला देते हैं। यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध रहती है।
जलीय पेन्सिल

Aquatint (ऐक्वाटिन्ट) - धातु प्लेट पर सतह निक्षारण (Etching) की विशेष विधि। इस तकनीक के प्रयोग से सतह पर हल्के - गहरे प्रभाव उत्पन्न होते हैं। फ्रांस के कलाकारों ने इसकी शुरुआत 18वीं शती के मध्य में की थी। ऐक्वाटिन्ट की अनेक तकनीक प्रचलित है। प्रथम - धातु प्लेट पर रेजिन छिड़कर कर, गर्म कर अम्लांकन कर प्लेट तैयार की जाती है। द्वितीय - वैक्स को गर्म कर, प्लेट पर फैलाकर नमक के कण फैला देते हैं। सूखने के पश्चात् गर्मपानी से नमक

के कण को धो अम्लांकन कर प्लेट तैयार करते हैं। तृतीय - नमक वाली पद्धति जिसमें नमक के स्थान पर बालू या मौरंग का छिड़काव किया जाता है।

धातु पत्र निष्कारण

Arcade (आर्केड) : महलों अथवा बड़े भवनों के बहिर्द्वार या शृंखलाबद्ध तोरण पथ।

महराबें / तोरण मण्डप या पंक्ति

Arabesque (ऐरबेस्क) - आलेखन जिसमें फूल-पत्ती, पशु-पक्षियों, व मानवाकारों का लयात्मक रेखाओं द्वारा अंकन किया जाता है। यूरोप व अरब की प्रचलित अलंकरण शैली।

अति-काल्पनिक / बेलबू

Architect (आर्किटेक्ट) - भवन की पूर्व कल्पना को प्रारूपानुसार तैयार कराने वाला विशेषज्ञ कलाकार, अभियन्ता।

वास्तुकार / स्थापत्यविद्

Architecture (आर्किटेक्चर) - भवन निर्माण की कला।

वास्तुकला / स्थापत्यकला

Armature (आर्मैचर) - मूर्ति को मज़बूती प्रदान करने वाला ढाँचा जो मुलायम तार, लकड़ी, फूस या लोहे की राड आदि से बनाया गया हो।

कवच / ढाँचा

Armory Show (आर्मैरि शो) : अमेरिका आधुनिक कला का वास्तविक इतिहास इस चित्र प्रदर्शनी से प्रारम्भ होता है। सन् 1913 में कलाकार 'आर्थर डेविज़' ने अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक कला-प्रदर्शनी का आयोजन 69वीं रेजीमेन्ट के शस्त्रागार में 'आर्मैरी शो' के नाम से आयोजित किया। जिसमें करीब 2000 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया। इस कला-प्रदर्शनी में भाग लेने वाले कलाकार प्रगतिशील विचार धारा के थे। इस प्रदर्शनी में फ्रांस, हालैण्ड, जर्मन, इंग्लैण्ड, इटली व रूस आदि देशों के कलाकारों ने भाग लिया था।

शस्त्रागार प्रदर्शनी

Art (आर्ट) : कला मानव की जन्मजात प्रवृत्ति है जो उसकी अभिव्यक्ति व भावों का प्रकाशन करती है। यह एक प्रकार का कौशल, तकनीक, क्रिया, कल्पना, लोकरंजन, ज्ञान, चमत्कार, शिक्षा है जो भावनाओं, संवेदनाओं, विचार, अनुभूतियों व कल्पनाओं की भावाभिव्यक्ति करती है तथा समकालीन लोक की सांस्कृतिक भावना को व्यक्त करती है। इसके द्वारा मानव अपनी रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन करता है, अपनी संवेदनाओं अनुभूतियों को व्यक्त करता है, अपनी मनोभावनाओं को दर्शाता है तथा कल्पनाओं को प्रकट करता है। प्राचीन भारत में कलाओं की संख्या 64 मानी गयी थी। परन्तु अब ललित कला के रूप में 7 कलाओं को मान्यता प्राप्त है- चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीतकला,

काव्यकला, नाट्यकला एवं नृत्यकला आदि। कला को जर्मन भाषा में 'कुन्स्ट', ईरानी में 'तशन एवं हुनर', इतालवी में 'ल-आर्ते', फ्रेंच में 'ल-आर्त', स्पेनिश में 'एल आर्ते', संस्कृत में 'सुनर' व 'तक्षण' एवं अंग्रेजी में 'आर्ट' कहा जाता है। यह 'आर्स' शब्द से उत्पन्न है जिसका अभिप्राय मानवीय कुशलता से है। एक प्रकार से कला मानव की सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, कलात्मक वृत्ति को दर्शाती है तथा समकालीन लोक की सांस्कृतिक भावना को प्रकट करती है।

कला

Art Attack (आर्ट अटैक) : कला संस्था जिसका गठन कानपुर में कला-दीर्घा के संघर्ष के लिए सन् 1994 में किया गया। इस संस्था का घोषणा-पत्र डॉ. अभय द्विवेदी ने तैयार कर 6 अप्रैल 1994 को कानपुर में लागू किया। जिसका मुख्य उद्देश्य था, कानपुर में एक कला-संकुल की स्थापना हो, विशेष रूप से कला-दीर्घा की। इस हेतु मंत्री, नेता, अधिकारीगण, उद्योगपति तथा व्यापारी वर्गों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए स्थान-स्थान पर, जैसे— बस स्टैंड, रेलवे स्टैंड, पुल, ब्रिज के ऊपर, सार्वजनिक फुटपाथों पर चित्र लगाकर प्रदर्शनी कर आंदोलन किया जायेगा व इसके माध्यम से जागरूकता फैलायी जायेगी। इस संस्था के माध्यम से धार्मिक भाई-चारे का संदेश दिया जायेगा। माता-पिता से आग्रह कर बच्चों में कला के प्रति रुचि पैदा की जाएगी। निष्क्रिय कलाकारों को उत्साहित कर कला कार्य के लिए जागृत किया जायेगा। जनता में सौन्दर्य की भावना को प्रबल किया जायेगा आदि। इस संस्था के सभापति कामता प्रसाद व उपसभापति हृदय गुप्ता थे। इस आन्दोलन की प्रथम फुटपाथ प्रदर्शनी 23 अप्रैल 1994 को मोतीझील, कानपुर में हृदय गुप्ता के संयोजन में आयोजित हुई थी। जिसमें 35 कलाकारों ने भाग लिया था।

कला आक्रमण संस्था

Art Connoisseur (आर्ट कॉन्नेसर) : कला के पारखी जो कला के विभिन्न पक्षों सिद्धान्तों एवं सौन्दर्य आदि से परिचित होते हैं तथा कला की महत्ता को जन-जन तक पहुँचाते हैं। यह कला के सच्चे उन्नयक होते हैं। इनकी समाज में महती आवश्यकता रहती है।

कला मर्मज्ञ/गुणज

Art Critic (आर्ट क्रिटिक) - वह व्यक्ति जो कला का जानकार हो तथा कला के प्रत्येक बिन्दु पर अपना व समाज का बिना पूर्वाग्रह के मूल्यांकन कर अपना समीक्षात्मक दृष्टिकोण रखे।

समालोचक / कला-समीक्षक

Artisan (आर्टीसन) - धार्मिक, सजावटी तथा उपयोगी कला के शिल्पी अर्थात् कौशलपूर्ण कार्य कर कृति रचने वाले दस्तकार । **कारीगर/शिल्पी**

Ashcan School (एश्केन स्कूल) : सन् 1908 में अमेरिकी कलाकारों के दल 'आठ' ने एक चित्र प्रदर्शनी 'एश्केन शैली' नाम से आयोजित की। इस कलाकार दल के चित्रकार दैनिक जीवन के क्रियाकलापों, मनोरंजन, खेल आदि के दृश्यों को यथार्थ रूप से चित्रित करते थे। इस शैली के बेलोस, स्लोन, प्रेंडरगास्ट, लासन एवं आर्थर डेविस मुख्य कलाकार थे। **एश्केन शैली**

Assemblage Art (असेम्ब्लिज आर्ट) - विभिन्न संकलित वस्तुओं का संयोजन कर कृति का निर्माण करना। इसका उद्गम कोलाज से है। इसको 'संकलन कला' भी कहा जाता है। **समुच्चय कला**

Astronomical Sign & Symbol : (ऐस्ट्रॉनॉमिकल साइन एण्ड सिम्बॉल) : खगोल-विद्या सम्बन्धी चिह्न एवं प्रतीक जैसे - पृथ्वी (Earth) ⊕, बृहस्पति (Jupiter) ♃, मंगल (Mars) ♂ बुध (Mercury) ☿, चन्द्रमा (Moon full) ○, वरुण (Neptune) ♆, शनि (Saturn) ♄, तारा (star) ☆, सूर्य (Sun) ☉, वरुण (Uranus) ♅, शुक्र (Venus) ♀ आदि। **खगोलीय चिह्न**

Atelier (अटेलियर) - वह कला स्टूडियो जो कलाकार को सामान्य दरों में उपलब्ध रहता है। जिसमें कलाकार अपना कार्य स्वच्छन्द रूप से कर सकता है। इस प्रकार के स्टूडियो की स्थापना सन् 1925-30 के मध्य पेरिस में हुई थी। यह फ्रेंच शब्द है। इन शिल्पशाला में नग्न मॉडल भी उपस्थित रहती है जिससे कलाकार मानव शरीर की संरचना का ज्ञान प्राप्त कर सके। **शिल्पशाला/चित्रण-कक्ष**

Bb

Background (बैकग्राउण्ड) - पृष्ठ-भूमि में चित्रित सहायक आकार, रंग अथवा पीछे का भाग (पृष्ठ भाग) जो मूल विषय को बल प्रदान करता है। **पृष्ठभूमि/पृष्ठिका**

Balcony (बैल्कनी) : भवनों की दीवार से बाहर की ओर निकला हुआ छज्जा अथवा छत का भाग ।
छज्जा/आलिन

Bambocciata (बैम्बोसियेय) - लोककला के सन्दर्भ में प्रयुक्त इटैलियन भाषा का शब्द । 17वीं शताब्दी में हालैण्ड व बेल्जियम में ऐसे चित्र खूब लोकप्रिय हुए ।
जिनके विषय ग्रामीण जन-जीवन थे ।
लोकचित्र

Bamboo Art (बैम्बू आर्ट) : बाँस से बना कलात्मक उपयोगी सामान-जैसे-बाँस का फर्नीचर, बाँस का पार्टिशन, बाँस का पर्दा एवं गृह उपयोगी व सजावटी सामान ।
बाँस कला

Banderol (बैन्डरोल) : दीवार की सतह से उभरकर बनायी गयी पट्टी अथवा नक्काशीदार जँगला ।
उद्भूत पट्टी

Banner Painting (बैनर पेन्टिंग) - सार्वजनिक स्थल में प्रचार हेतु कपड़े पर बनाये गये चित्र व लिपि तथा कपड़े की ध्वजा पर धार्मिक चित्र या प्रतीकों का चित्रण ।
पताका चित्र

Barbizon Painters (बारबिजॉ पेन्टर्स) - फ्राँस के बारबिजॉ गाँव में सन् 1840 में बसे कलाकारों का समूह जिन्होंने प्रकृति को अपनी प्रेरणा मानकर चित्र बनाये । जिसमें ग्राम्य जीवन व प्राकृतिक दृश्यों को यथार्थ रूपों में चित्रित किया जाता था । इन चित्रकारों ने पेरिस में चल रहे कला आन्दोलन से हटकर ग्रामीण परिवेश के प्रकृति-चित्रण एवं यहाँ के भोले-भाले निवासियों के क्रिया-कलापों का चित्रण किया । प्रारम्भ में इन चित्रकारों को कोई ख्याति नहीं प्राप्त हुई, परन्तु बाद में इनके चित्र राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनी में स्वीकृत होने लगे । इस समूह के चित्रकारों में प्रमुख चित्रकार तेओदोर रुसो, शार्ल दोबिन्नी, ज्यॉ फान्स्वा मिले एवं कामीयकोरो थे ।

बारबिजॉ चित्रकार

Barred (बार्ड) : विभिन्न रंगों की पट्टियों से अथवा शलाका द्वारा सजावट करना ।

छड़/पट्टी सजावट

Baroque Style (बैरोक स्टाइल) - यूरोप की कला जो 1600 ई0 से 1750 ई0 तक प्रचलित रही, जिसमें धार्मिक चित्रण के अतिरिक्त राजदरबार, सामाजिक जीवन व व्यक्ति चित्र खूब बने । यूरोप का यह काल स्वर्ण युग था । इस युग में स्थापत्य, मूर्ति एवं चित्र में एक समान रूप से कार्य हुआ । यह शैली इटली से

प्रारम्भ हो पूरे यूरोप में फैल गयी। चित्र, मूर्ति एवं वास्तु तीनों में इस शैली का प्रभाव था। यह शैली पुनरुत्थान एवं आधुनिक काल के मध्य की कड़ी थी। इसमें दिव्य कल्पना, नाटकीयता, भव्यता, भ्रम, आश्चर्य, आलंकारिता आदि का स्थान था। मूर्तियों में रंगों का प्रयोग किया गया। वास्तु में ऐसे रंग किये गये जिससे छतें वास्तविकता से ऊँची लगें, चित्रित चौखट वास्तविक फ्रेम लगने लगे।

बरोक शैली

Basement (बेस्मेन्ट) : भूमि के नीचे बनाया गया तलगृह अथवा भवन का निचला खण्ड जो आधार या भू-तल की सतह से नीचे बनाया गया हो।

तहखाना / भुईँधरा / तलघर

Basholi School (बसहोली स्कूल) : बसहोली जम्मू एण्ड कश्मीर के जसरोटा जिले की तहसील है जो कभी 74 गाँवों का एक राज्य थी। इस चित्रशैली का प्रारम्भ 16वीं शती के अन्तिम वर्षों में हुआ था। सर्वप्रथम नरेश राजा कृष्णपाल ने इस शैली को संरक्षित किया। प्रारम्भ में इस कलम को 'जम्मू कलम' का रूप माना गया। यह कलम स्थानीय लोककला एवं मुगल प्रविधि से मिलकर जन्मी थी। इस चित्रशैली में तेज चमकदार रंगों का प्रयोग, रेखाएँ गतिमय, ओजपूर्ण बनायी गयीं। आकृतियों की नाक लम्बी, आँख प्रेम-आसक्त, पतले और उभरे गाल बनाये गये हैं। ब्लाउज-लहँगा, चुनरी, आभूषण स्त्रियों को धारण किये हुए बनाया गया है। पुरुष पैजामा, धोती, जाँघिया, कमर पटका, कलगीदार पगड़ी, माला आदि धारण किए हुए बनाये गये हैं। हाशिये प्रायः लाल एवं पीले रंग से बनाये गये हैं। पृष्ठभूमि सादी है, सरोवर पेड़-पौधे, पहाड़ आदि चित्रित हैं। चित्रों में दोहे आदि लिखे गये हैं। चित्रण विषय राम बलराम, कृष्ण राधा, रस-मंजरी, नायक-नायिका, श्रीकृष्ण-लीला, गीत-गोविन्द, रामायण, भागवतपुराण, राग-रागिनी, बारामासा एवं समसामयिक जीवन का चित्रण आदि है।

बसोहली चित्र शैली

Basket Work (बासकेट वर्क) : टोकरी सजाने की कला जिसमें बुनते समय कलात्मक अभिकल्पन किया जाता है, अथवा बुनने के पश्चात् रंगों द्वारा या रंगीन कागज द्वारा सजावट की जाती है।

डलिया सजावट

Batik (बाटिक) : कपड़ों पर रंगाई करने की एक तकनीक जिसमें पिघले हुए मोम (बी-वैक्स, विरोजा और पैराफ़िन वैक्स) से कपड़े पर आकृति बनाकर, क्रैक्स डाल कर रँगते हैं। तत्पश्चात् गर्म पानी से मोम को कपड़े से हटा देते हैं। इस तकनीक से रंगे वस्त्रों पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ, छींट और बिन्दुओं से युक्त

रूपाकारों का सृजन होता है। बाटिक शब्द मूलतः इण्डोनेशिया से आया जिससे वहाँ पर 'बतीक' कहते हैं जिसका अर्थ होता है मोम से लिखना या बनाना।

बातिक

Bas relief (बेस रिलीफ) - अर्ध-उभार नक्काशी जो सतह से हल्की उभरी हुई होती है।

निम्नतर उभार

Basilica (बैसिलिक) - रोमन सम्राज्य की न्याय-सभा व व्यापारिक केन्द्र का नाम एवं समाधि मंडप।

समाधि मंडप/ अधिकार युक्त गिरजाघर

Battle Piece (बैटल पीस) - युद्ध दृश्य से सम्बन्धित चित्र।

रण/समर चित्र

Bauhaus (बौहौस) : आधुनिक जर्मन कला की एक कला संस्था जो डिजाइन का एक स्कूल था। जिसके कलाकारों का उद्देश्य था कि चित्रकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला का समन्वय कर वस्तु-निरपेक्षता आधारित चित्रण करना। वास्तुकार वाल्टर ग्रोपियस ने जर्मनी के वीमार (Weimar) नगर में उक्त संस्था बौहौस (Bauhaus) की विधिवत् शुरुआत सन् 1919 में की थी। सन् 1925 में इस स्कूल को डेसू नगर ले जाया गया और सन् 1932 में बर्लिन (Berlin) जहाँ सन् 1932 में नाजीवादियों ने अराजकता का आरोप लगा संस्था को बन्द करा दिया। बाद में इस संस्था की एक शाखा अमेरिका में सन् 1938 में खोली गयी। धीरे-धीरे इससे जुड़े कलाकार यूरोप छोड़ अमेरिका में बस गये। इस संस्था के प्रमुख कलाकार कान्दिन्की, ओस्कर श्लेमेर, ल्यूनेल फाईनिंगेर, जावेलेन्की, विक्टर पासमोर, आल्बेर्स एवं पौल क्ली थे।

बौहौस

Bay Window (बे विन्डो) : दीवार से आगे बाहर की ओर निकली हुई खिड़की।

खाँचा खिड़की

Beading (बीडिंग) - लकड़ी की वह पट्टी (चिप्पड़) जिसे काष्ठ फर्नीचर या चित्र में चारों तरफ बाह्य किनारे पर फ्रेम की जगह लगाया जाता है।

गौठन/चौखट

Beam (बीम) : लम्बा - मोटा टुकड़ा लकड़ी अथवा लोहे का जिस पर छत का भार टिका रहे अथवा सीमेण्ट - कंक्रीट से ढली धरन जिस पर छत ढाली जाती है।

टेक/धरन

Beauty (ब्यूटि) - सौन्दर्य एक भावना, सुखद अनुभव व आनन्द से परिपूर्ण एहसास जिसे शब्दों में बताया नहीं जा सकता, केवल महसूस किया जा सकता है। यह

आन्तरिक, मानसिक, प्राकृतिक, भौतिक एवं शारीरिक होता है। **सौंदर्य**

Beaux Art (बोजा आर्ट) - फ्रेंच भाषा का शब्द जो Fine Arts (ललित कला) के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। **ललित कलाएँ**

Belief Painting (बिलीफू पेन्टिंग) : धार्मिक-आस्था एवं विश्वास पर आधारित चित्रण जो मानव की यकीनन विश्वसनीयता को प्रकट करती है। जैसे- धार्मिक कलेण्डर, चित्र, पोस्टर अथवा लोक-जनजातीय चित्रण। **आस्था चित्र**

Bespangle (बिस्पैन्गल) : सितारों द्वारा वस्त्रों को सजाना अथवा धार्मिक चित्रों को सितारों के साथ-साथ चमकीली द्वारा अलंकृत करना।

चमकियाँ/सितारे चिपकाना या लगाना

Bharat Bhavan (भारत भवन) : भोपाल (म.प्र.) श्यामला हिल में स्थित कला-संकुल है, जहाँ ललित कलाओं की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियाँ, प्रदर्शनी, कार्यशाला, डिमांस्ट्रेशन, अभ्यास आदि होते हैं। इसकी अभिकल्पना प्रसिद्ध वास्तुकार **चार्ल्स कोरिया** ने की थी। यहाँ पर विविध कला-संग्रहालय, कला-दीर्घा, आन्तरिक व बाह्य प्रेक्षागृह, अभ्यास कक्ष व पुस्तकालय हैं। जिनमें **रूपांकर-दृश्य कलाओं का संग्रहालय व दीर्घा, रंग मंडल-नाटक रेपटरी, वागर्थ-कविताओं का केन्द्र, अनहद-शास्त्रीय एवं लोक संगीत केन्द्र एवं छवि-सिनेमा से जुड़ी गतिविधियों के केन्द्र** हैं। इसकी स्थापना 13 फरवरी 1982 में हुई थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री **इंदिरा गाँधी** ने इसका विधिवत् उद्घाटन किया था। **भारत भवन**

Bharat Kala Bhavan (भारत कला भवन) : भारतीय कला एवं पुरातत्व सामग्री संग्रहालय जिसमें दुर्लभ, कलात्मक, उत्कृष्ट, अद्वितीय वस्तुएँ संग्रहीत हैं। इसकी परिकल्पना **पद्म विभूषण राय कृष्ण दास** ने की थी। वे इस संग्रहालय के आजीवन अवैतनिक निदेशक रहे। इसके प्रथम सभापति **श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर** थे। इसकी सर्वप्रथम स्थापना काशी नागरी प्रचारिणी के अंग के रूप में **'भारतीय कला परिषद्'** के नाम से 1 जनवरी 1920 को हुई थी। सन् 1928 में इसका नाम बदलकर **'भारत कला भवन'** रखा गया। सन् 1950 में यह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस (यू.पी.) के मालवीय भवन में स्थानान्तरित हुआ। 17 जुलाई 1950 को इसके वर्तमान भवन, जो इसी प्रांगण में स्थित है, का

शिलान्यास किया गया। 13 जनवरी 1962 को इसका विधिवत् उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने किया। इस संग्रहालय में लगभग एक लाख कृतियाँ संग्रहीत हैं। तेरह विधाओं में प्राचीन प्रस्तर मूर्तियों, सिक्के, मृत्तिका शिल्प, टेराकोटा, मृदभाण्ड, आभूषण, चित्र, हाथीदाँत कृतियाँ, धातु मूर्तियाँ, प्रस्तर उपकरण, अस्त्र-शस्त्र, साहित्य सामग्री, वस्त्र-वेषभूषा आदि प्रदर्शित हैं। 12 हजार चित्र चर्म, कागज, कपड़ा व ताड़पत्र में बने हुए संग्रहीत हैं। यहाँ पर जन-सामान्य की जागरूकता हेतु प्रदर्शनी, व्याख्यान, कार्यशाला, प्रतियोगिता आदि आयोजित होती रहती है। इस भवन में कला कृतियों की सुरक्षा के लिए संरक्षण प्रयोगशाला है। एक पुस्तकालय है। यहाँ से एक कला शोध पत्रिका 'कला निधि' सन् 1942 से प्रकाशित होना शुरू हुई थी।

भारत कला भवन (संग्रहालय)

Bharatiya Lok Kala Mandal (भारतीय लोक कला मंडल): उदयपुर (राजस्थान) में स्थित यह लोक-सांस्कृतिक केन्द्र व लोककला संग्रहालय है। इसकी स्थापना पद्म श्री देवी लाल समर द्वारा सन् 1952 में की गयी थी और इसके भवन का विधिवत् उद्घाटन 14 नवम्बर 1959 को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल जी सुखाडिया ने किया था। यह विभिन्न लोककला, लोकनृत्य, लोक - संस्कृति, लोक साहित्य व पारम्परिक कला को प्रदर्शित करता केन्द्र है। इसकी दीर्घाओं में वस्त्र, गहने, मास्क, कठपुतली, वाद्य-यन्त्र, लोक-देवता, लोक व जनजातीय चित्र, टेराकोटा मूर्ति, धातु चित्र आदि संग्रहीत हैं। लोक कलाओं के संवर्धन व संरक्षण के लिए इस केन्द्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशेष रूप में राजस्थानी कला विरासत को सँजोने में यहाँ पर एक कठपुतली थियेटर है जहाँ पर जीवन्त प्रदर्शन होते रहते हैं। **भारतीय लोक कला केन्द्र**

Bhojapattr Painting (भोजपत्र पेन्टिंग): प्राचीन समय में भुज वृक्ष की छाल व पत्तियों को सुखाकर इन पर ऋषि-मुनि-विद्वान पोथी/ग्रन्थ व पाण्डुलिपि (Manuscript) लिखते थे तथा चित्र भी बनाते थे। खनिज रंग एवं काजल द्वारा यह कार्य होता था। चित्र सरल - सहज रूप में बनाये जाते थे। इन चित्रों से इनके अभिप्राय अर्थ, व कथानक आसानी से समझ में आ जाते हैं।

भोज-पत्र चित्र

Bichrome Painting (बाईक्रोम पेन्टिंग) - दो रंगों से बनाया गया चित्र। **द्विरंगी चित्र**

Biennale (बिनालय) : समकालीन भारतीय कला प्रदर्शनी, जिसका आयोजन भारत भवन, भोपाल द्वारा किया जाता है। यह समकालीन कलाकारों की प्रमुख प्रदर्शनी प्रत्येक दो वर्षों में आयोजित होती है। इसकी 7वीं प्रदर्शनी 2013 में आयोजित हुई और प्रथम छापा प्रदर्शनी 1989 ई0 में हुई थी।

द्विवार्षिक कला-प्रदर्शनी

Bijapur School (बीजापुर स्कूल) : दक्षिण चित्रशैली का केन्द्र बीजापुर जिसके प्रथम शासक **यूसुफ आदिल शाह** (सन् 1490-1510) कला प्रेमी शासक थे। इनके पुत्र **इस्माइल आदिल शाह** (सन् 1510-34) स्वयं चित्रकार थे। आदिल शाही वंशज के बादशाह कलाप्रेमी, कविहृदय, कला संरक्षक थे। चाँद सुल्ताना (पत्नी अली आदिल शाही प्रथम, सन् 1558-80) भी स्वयं चित्रकार थी। इस समय रागमाला शृंखला के चित्र बने। यह चित्रशैली 17वीं शताब्दी तक निरन्तर उन्नति के रास्ते पर चलती रही। इस शैली के प्रसिद्ध चित्र हाथियों का युद्ध एवं प्रसिद्ध खगोल विद्या की चित्रित पुस्तक 'नुजूम-अल-उलूम' थी, जिसमें 876 चित्र बने थे। यहाँ के महलों में भित्ति चित्रों के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। इस चित्रशैली की विशेषता फूल-प्रतियों का अलंकरण था। **बीजापुर चित्रशैली**

Bikaner School (बीकानेर स्कूल) : मारवाड़ चित्रशैली की उपशैली। बीकानेर की स्थापना जोधपुर के **राजारव बीकोजी** (सन् 1462-1504) ने सन् 1485 में की थी। बीकानेर की प्रारम्भिक चित्रशैली में मुगल एवं दक्खिनी की प्रमा दिखाई देती है और बाद में जयपुर एवं जोधपुर के तत्वों का समावेश। इन सभी के सम्मिश्रण से बीकानेर शैली का स्पष्ट स्वरूप प्रकट हुआ। इस शैली का सच्चा प्रवर्तक **रुकनुद्दीन** (17वीं शताब्दी) नाम का कलाकार था। यहाँ पर मंदिरों एवं भवनों में चित्रण की समृद्ध परम्परा रही है। पुरुष तथा स्त्री आकृति में प्रेमासक्त नयन, पतले होठ, पुरुष बिना दाढ़ी के स्त्रियों के बालों की घुँघराली अलकेलियाँ सहित बनायी गयी हैं। वेशभूषा में जामा, पैजामा, सिर में पगड़ी, गले माला, आभूषण से सुसज्जित, पैर में जूतियाँ पहने दर्शाई गयी हैं। चित्रण विषय रसिक प्रिया, राग-रागिनी, श्रीकृष्ण लीला, नारी शृंगार, महिषासुर मर्दिनी, महाभारत, रामायण एवं शिकार आदि थे। पृष्ठभूमि में घुमड़ते बादल, पक्षियों का चित्रांकन विशेष था।

बीकानेर चित्रशैली

Binder (बाइण्डर) - इसका इस्तेमाल प्रायः बन्धक के रूप में होता है। जैसे- सरेस, गोंद, राल, पायस, एडहेसिव इत्यादि जो रंग पदार्थ के कणों को बाँध सतह पर चिपका देते हैं। जिल्दसाज़ को भी कहते हैं।

योजक पदार्थ/बंधक

Black & White Painting (ब्लैक एण्ड व्हाइट पेन्टिंग) - काले व श्वेत रंगों के प्रयोग द्वारा बनाया गया चित्र । श्वेत-श्याम चित्र

Black Varnish (ब्लैक वारनिश) : मोम (wax) + मृदुसा (Paraffin) + कालिख (soot) अथवा मोम (wax) + गोंद (Mastic) + शिलाजीत (राल) (Bitumen) से मिलाकर तैयार की जाती है । इस पर अम्ल का प्रभाव नहीं होता । इसलिए धातु-पत्र में इसकी तह लगाकर, इन्ग्रेवकर, एसिड बाथ कराकर, छपाई हेतु धातु प्लेट तैयार की जाती है । काला रोगन

Bleed (ब्लीड) - तैल चित्रण की पद्धति जिसमें नीचे प्रयुक्त रंग दिखाई दे । जो प्रायः टेक्श्चर रूप में होते हैं । झलकते रंग

Blending (ब्लेंडिंग) - चित्र में रंगों को मुलायम ब्रश द्वारा कोमलता से मिलाने को कहते हैं । यह प्रक्रिया ड्रॉइंग में 'स्टम्प' या अँगुली से की जाती है । मिश्रण

Block (ब्लॉक) : छापाचित्र छापने का ठप्पा । यह विभिन्न तकनीक के प्रयोग से तैयार किया जाता है - अन्तः सतह उत्कीर्णन, उभार सतह उत्कीर्णन एवं समतल सतह व उभार प्रणाली आदि से इनको तैयार कर इनसे विभिन्न प्रिण्ट (प्रतियाँ) निकाले जाते हैं । ये ठप्पे पत्थर, काष्ठ, धातु, रबड़ व लिनोलियम आदि के होते हैं । भवन के खण्ड को भी कहते हैं । ठप्पा / छापा

Block Painting (ब्लॉक पेन्टिंग) : विभिन्न प्रकार के तैयार ठप्पों के प्रयोग से चित्र बनाना । संयोजन के अनुसार ब्लॉक का प्रयोग कर, उन पर इच्छानुसार रंगांकन करते हैं । इस प्रकार के चित्र अद्भुत प्रभाव देते हैं । सतह के रूप में छपे हुए अखबार, मैग्जीन पृष्ठ, पोस्टर आदि का प्रयोग कर सृजनात्मक कार्य किया जा सकता है । ठप्पा चित्रण

Block Printing (ब्लॉक प्रिंटिंग) - ठप्पों के प्रयोग से छपाई करना है । ठप्पा छपाई

Blot Painting (ब्लॉट पेन्टिंग) - कागज को विभिन्न प्रकार से मोड़-मोड़ कर, रंगों में डुबोकर छाप-छाप कर चित्र बनाने की पद्धति जिसमें आकस्मिक नये-नये रूपों का सृजन होता है । धब्बा चित्रण

Blue Rieter (ब्लू राइटर) : जर्मनी में स्थापित एक समान विचारों के कलाकारों की संस्था जिसकी स्थापना म्यूनिख शहर में सन् 1911 में वासिली कान्दिन्स्की एवं

फ्रांज मार्क ने की थी। इन दोनों चित्रकारों को नीला रंग प्रिय था। फ्रांज मार्क को घोड़े और कान्दिंस्की को अश्वारोही बनाना पसन्द था इसीलिए इस संस्था का नाम 'द ब्लू राइटर' पड़ा। बाद में इस संस्था में पौल क्ली और औगुस्त माके भी जुड़ गये। जर्मन में आधुनिक कला का शंखनाद करने में इस संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस संस्था की सर्वप्रथम प्रदर्शनी म्यूनिख शहर में (Gallery Thannhauser) हुई थी। फ्रांस के रॉबर्ट देलोने व आंरी रूसो भी प्रथम प्रदर्शनी में शामिल थे। मार्क व कान्दिंस्की ने एक वार्षिक पत्रिका भी इसी नाम से निकाली थी।

नीला अश्वारोही

Board Pin (बोर्ड पिन) - ड्रॉइंग बोर्ड पर ड्रॉइंग पेपर पर लगाने की पिन। पट्ट कील

Board Clip (बोर्ड क्लिप) - ड्रॉइंग बोर्ड पर ड्रॉइंग सीट को लगाने की चिमटी जिससे सुचारु रूप से चित्रांकन कार्य किया जा सके। पट्ट पकड़

Body Colour (बॉडी कलर) - अपारदर्शी रंग, जिसे सफेद रंग मिला, गाढ़ा कर प्राप्त किया जाता है। अपारदर्शी रंग

Bolus Ground (बोलस ग्राउण्ड) - लाल-भूरे रंग की मिट्टी से तैयार चित्र-तल। लेप चढ़ाना

Bombay Group (बम्बे ग्रुप) - बम्बई (मुम्बई) में सन् 1957 में स्थापित समूह जो सन् 1962 तक सक्रिय रहा। इस समूह का उदय प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के छिन्न-भिन्न हो जाने के पश्चात् हुआ। प्रमुख चित्रकार के.के.हैबबर, के.एच.आरा और एच.के.गाडे थे। अन्य प्रतिष्ठित कलाकार डी.जी. कुलकर्णी, वी.एस.गायतोर्डे, एस.डी. छाबड़ा, एम.वी.पलसीकर, मोहन्त समान्त, हरिकृष्ण लाल एवं बाबू राव सतवलेकर थे। इन सभी चित्रकारों ने अपनी शैलीगत विशेषता के आधार पर चित्रांकन किया और कला जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी। बम्बई दल

Book of Kells (बुक ऑफ केल्स) : 9वीं शताब्दी में लैटिन भाषा में लिखी गयी ईसाई उपदेश की पाण्डुलिपि। इस आयरिश पाण्डुलिपि को हमलावरों से बचाने हेतु पादरियों ने 'केल्स' नामक स्थान में सुरक्षित छिपा दिया था। इसलिए इसका नाम 'बुक ऑफ केल्स' पड़ा। इस पुस्तक में साज-सज्जा का विशेष स्थान है।

केल्स की पाण्डुलिपि

Book of the Dead (बुक ऑफ द डेड) - मृतकों के जीवन से सम्बन्धित सचित्र पुस्तक जो मिस्र देश में कब्रों में रखी जाती थी। जिसका आधार था 'मरणोपरान्त जीवन'। मृतक स्मृति ग्रन्थ

Border (बार्डर) : चित्र को सुन्दर बनाने हेतु हाशिया बनाना अथवा किनारी सजाना या अलंकृत चौखटा लगाना । अथवा साड़ी का आँचल । **सजावटी किनारी**

Bottega System (बोतेगा सिस्टम) - इटली की गुरु-शिष्य परम्परा जो पुनर्जागरण काल में प्रचलित थी । 10-12 साल के नौसिखिये कला-छात्रों को निपुणता हेतु ख्याति प्राप्त कलाकारों के मार्ग दर्शन में कार्य सीखना पड़ता था । **बोतेगा रीति**

Brass (ब्रास) : पीतल धातु जिससे सजावटी व उपयोगी वस्तुएँ बनती हैं । विशेष तौर पर बर्तन एवं मूर्तियाँ । यह ताँबे व जस्ते को मिलाकर बनाया जाता है । इस धातु को बनाने के लिए 63% ताँबा व 37% जस्ता का प्रयोग किया जाता है । **पीतल**

Brayer (ब्रेयर) - हैन्डिल लगा हुआ रबड़ का बेलन जिसके द्वारा ब्लॉक, प्लेट, लिनोकट, वुडकट आदि पर इंक लगायी जाती है । **रबड़ बेलन**

Bribery (ब्राइबरी) : प्राचीन अनोखी कलाकृतियाँ जो पुराने समय की कलात्मकता तथा सृजनात्मकता को प्रस्तुत करती है । **अनूठी पुरानी कृति**

Bric-a-brac (ब्रिकें ब्रैक) : सौन्दर्य से परिपूर्ण प्राचीन लघु कलाकृतियाँ ।

संग्रहीत / प्राचीन लघु कलाकृतियाँ

Bristle Brush (ब्रिस्तल ब्रश) : तैल, एक्वेलिक एवं पोस्टर चित्रण में उपयुक्त ये ब्रश कड़े बालों से निर्मित होते हैं । ये गोलाई लिये हुए, फिलबर्ट, चपटे एवं घुमावदार चपटे आकारों के मिलते हैं । इन ब्रशों से रेखांकन, रंगांकन के साथ-साथ, रंगों का मिश्रण भी भलीभाँति किया जाता है । **कड़े बालों की तूलिका**

Broken Colour (ब्रोक्न कलर) - चित्रों में रंगों की चमक को फीका करने की विधि । इस तकनीक में रंगों का स्वभाव या ओज को, किसी अन्य रंगों के मिश्रण से घटा दिया जाता है, अथवा तूलिका द्वारा धब्बे (Patch) लगाकर रंगों की चमक को कम कर दिया जाता है । इस पद्धति से टैक्श्चर का प्रभाव भी उत्पन्न होने लगता है परन्तु रंगों की मूल चमक समाप्त हो जाती है । इसे **भंजित रंग पद्धति** कहा जाता है । **खण्डित रंग पद्धति**

Bronze (ब्राँज) - ताँबे-टिन/जस्ता के आनुपातिक मिश्रण से तैयार धातु जिसे काँस्य कहा जाता है । मूर्तिकला व पुरस्कार के मैडल बनाने में इस धातु का विशेष उपयोग होता है । उपयोग को देखते हुए ब्राँज कई प्रकार से तैयार किये जाते हैं ।

(1) **वास्तु-सम्बन्धी काँसा (Architectural Bronze)** जिसमें 57% ताँबा, 40% जस्ता व 3% सीसा का सम्मिश्रण होता है ।

(2) **व्यापारिक काँसा (Commerical Bronze)** जिसमें 90% ताँबा व 10% जस्ते का मिश्रण होता है ।

(2) कसकुट (Bronze) जिसमें 88% ताँबा व 12% टिन का सम्मिश्रण होता है।

काँसा

Brushes (ब्रशेस) - चित्रण एवं कलात्मक लेखन हेतु प्रयुक्त होने वाली तूलिका जो मुलायम तथा कड़े बालों वाली होती है। इनके किनारे विभिन्न प्रकार के गोल, चपटे, पंखदार होते हैं। यह छोटे-बड़े बालों की विभिन्न मापों वाले बनाये जाते हैं। कड़े बाल की तूलिका का सुअर (शूकर) के बाल से और मुलायम बालों की तूलिका सेबल, गिलहरी, नेवला, बकरी, बछड़े, मृग, गाय, ऊँट, मिक एवं लोमड़ी आदि के बालों से निर्मित होती है। इनके द्वारा चित्रण कार्य, कलात्मक लिखाई, घरों की पुताई का कार्य, फर्नीचर आदि में रंगांकन कार्य किया जाता है। पशुओं के शिकार में प्रतिबन्ध लग जाने के कारण अब यह नाइलोन के उपलब्ध हैं। प्राचीन समय में इन्हें कलम, वर्तिका व शलाका कहकर सम्बोधित किया जाता था। प्राचीन समय में यह पेड़ के रेशे से बनायी जाती थी।

तूलिकाएँ

Bulbous (बल्बोस) - भवनों की छत पर बना हुआ अर्ध गोलाकार अथवा बल्बाकार गुम्बद या इमारत में बना अर्धय गोलाकार शिखर।

कंदाकार

Bundi School (बूंदी स्कूल) - राजस्थान के हड़ौती अंचल का एक जिला बूंदी जिसकी स्थापना हाड़ा शासक राव देवा जी ने की थी। यहाँ लघुचित्र एवं भित्ति-चित्रण की समृद्ध परम्परा रही है, जिसके प्रारम्भिक चित्र रागमाला शृंखला के सन् 1591 के प्राप्त हुए हैं। यहाँ के चित्रों में छाया-प्रकाश का प्रभाव दर्शाया गया है। रंग आकर्षक लगाये गये हैं। विषय राग-रागिनी, बारहमासा, दरबारी दृश्य, हाथियों का अंकन, नायक-नायिका, श्री कृष्ण-लीला, ल्यौहार, जैन तीर्थकर सम्बन्धी घटनाएँ, प्रेमप्रसंग आदि हैं। पुरुष-स्त्री की लम्बी आकृतियों से सुसज्जित चित्रों में मुख गोलाई आकार के बनाये गये हैं। आकृतियों में आँख आम - पत्राकृति, पतले होंठ, छोटी नसिका वाली बनायी गयी हैं। पुरुष आकृति चौड़ी छाती से युक्त लम्बी कलम, हल्की मूँछ वाली तथा वेशभूषा जामा, चुन्नटदार पैजामा, आगे की ओर झुकी पगड़ी, कमर में पटका एवं अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित बनायी गयी है। स्त्री-आकृति की वेशभूषा लहंगा-चुनरी बूंदी व धारियों से युक्त, केश घने व आभूषण से युक्त हैं। पृष्ठभूमि में आकाश में उमड़ते - घुमड़ते बादल, सरोवर में कमल, पक्षियों का विचरण, पशु-पक्षियों का अंकन, वास्तु में राजस्थानी छतरियाँ एवं आन्तरिक सज्जा के दृश्य हैं। हाशियों में स्वर्ण रेखांकन अथवा पीले व सिन्दूरी रंग का अधिकांश प्रयोग है। चित्र खण्डों में विभाजित बनाये गये हैं।

बूंदी चित्रशैली

Buono Fresco (बुओनो फ्रैस्को) - दीवार की गीली सतह पर किया गया चित्रण। यह सतह भीगे हुए मुलायम चूने एवं संगमरमर के महीन चूर्ण के पलस्तर से तैयार होती है। इसमें तीन से चार स्तरों पर पलस्तर किया जाता है। अन्तिम लेप उतने ही भाग में किया जाता है जितने भाग में चित्रांकन करना होता है। इस चित्रण पद्धति में भूमिज रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह एक इतालवी शब्द है। जिसका इटली में विधिवत् विकास 14 से 16वीं शती में हुआ।

लेपचित्र/फ्रैस्को (गीली पद्धति)

Burin (ब्यूरिन) - धातु की चादर को इन्ग्रेव करने के कार्य में आने वाला औजार। यह विभिन्न आकार-प्रकार की होती है। विशेष तौर पर नुकीले एवं अर्धवृत्ताकार आदि।

खोदनी / उकेरनी या तक्षणी

Burr (बर) : छापाकला की पद्धति ड्राई पॉईंट जिसमें धातु के पैसे नुकीले औजार से खोदने पर धातु सतह पर उकेरित-रेखा के किनारे उठे हुए बनते हैं। इन्हें 'कँटीला' (Burr) कहा जाता है। चित्र छापने पर उकेरित रेखा के साथ कँटीला का प्रभाव परछाई जैसा छपता है।

खुरदरा/कँटीला किनारा

Bust (बस्ट) - मानव आकृति की वक्ष तक मूर्ति शिल्प।

अर्ध-प्रतिमा / आवक्ष

Byzantine Art (बाइज़ण्टाइन आर्ट) - सर्वोत्कृष्ट विकसित ईसाई कला की एक प्रारम्भिक शैली थी। इसका आरम्भ पूर्वी यूरोप में हुआ था। इस कला के अन्तर्गत मणिकुट्टिम (Mosaic) पोथी चित्रण, स्टेनग्लास चित्रण आदि गिरजाघरों में होता था। सन् 330 से प्रारम्भ यह कला अनेक उतार-चढ़ाव को देखते हुए सन् 1453 तक प्रचलित रही। इस्तमबूल का नाम ही बाइज़ण्टाइन था जिसको रोमन सम्राट कान्स्टेण्टाइन ने अपनी राजधानी बनाया था और यहाँ पर बड़े-बड़े गिरजाघरों का निर्माण करवाया था। छठी-सातवीं एवं बारहवीं-तेहरवीं शताब्दी इस कला का स्वर्णकाल था।

बाइज़ण्टाइन कला

Cc

Cafe Guerbois (काफ़े गेब्वी) : नवीन विचारों के कलाकारों का समूह जो एक काफ़े में बैठकर कला विषयक चर्चा करते थे। सन् 1870 के लगभग नव विचारों के कलाकार, साहित्यकार पेरिस के बातिन्योले मार्ग (Batignolles Marg) में 'काफ़े गेब्वी' जलपान गृह में एकत्रित हो तर्क-वितर्क व विचार गोष्ठी करते और कला विषयक चर्चाएँ करते। मतभिन्नता होने के बावजूद इन गोष्ठियों के सदस्य

कलाकार कला को नयी दशा देने का प्रयत्न करते। चित्रकार **एडुवर्ड माने** सभी को प्रोत्साहित करते थे। नवीन विचारों से ओत-प्रोत ये कलाकार प्रभाववादी के नाम से विख्यात हुए। सन् 1982-83 का **एडुवर्ड माने** का एक चित्र जो इस स्थान का है, काफी प्रसिद्ध है। इस चित्र में काफ़े का दृश्य है, माध्यम पेस्टल है।

काफ़े गेबर्वा

Calcutta Group (कलकत्ता ग्रुप) : सन् 1943 में स्थापित कलकत्ता (कोलकाता) के आठ कलाकारों का समूह जिसने आधुनिक कला की प्रवृत्तियों को दर्शकों के सम्मुख रखा। **प्रदोष दास गुप्ता** के प्रयासों से यह दल बना। जिसमें प्रमुख कलाकार थे— **पारितोष सेन, गोपाल घोष, प्राण कृष्ण पाल, नीरद मजूमदार, शुभो टैगोर, रथिन मित्रा** (चित्रकार), **प्रदोष दास गुप्ता एवं कमलदास गुप्ता** (मूर्तिकार)। इस संस्था के अन्य प्रतिष्ठित कलाकार **राम किंकर बैज, अवनी सेन, हेमन्त मिश्रा, गोवर्धन ऐश एवं सुनील माधव सेन** थे। इस संस्था की अंतिम महत्वपूर्ण प्रदर्शनी 1953 ई. में दिल्ली में हुई थी। इस संस्था का लक्ष्य था कि 'व्यक्ति सर्वोपरि है...कला स्वयं पर आश्रित होनी चाहिए'। इस दल की प्रथम प्रदर्शनी सन् 1944 में **श्रीमती कैसी** के प्रयत्नों से हुई थी। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्रों की अलोचना भी हुई और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा भी।

कलकत्ता संस्था

Calendar (कैलेंडर) : जंत्री, पंचांग एवं तिथि-पत्र को कहते हैं परन्तु जन प्रचलन में कलेण्डर का तात्पर्य छपे हुए चित्र के साथ मासिक तिथि-पत्र से लिया जाता है। इन कलेण्डर में धार्मिक-चित्र, दृश्य-चित्र, प्रसिद्ध सिने अभिनेता, प्रसिद्ध व्यक्ति के छपे हुए चित्र होते हैं। यह हाथ से बने चित्र की अथवा फोटोग्राफ की छपी प्रतिलिपियाँ होती हैं। जिनमें तिथि-पत्र अलग से लगे होते हैं अथवा साथ में छपे होते हैं।

दिन दर्शिका / तिथि-पत्र

Calligraphy (कैलिग्राफ़ि) - सुन्दर तथा कलात्मक लिखाई की अक्षर कला जो पोथियों, पाण्डुलिपियों, चित्रों व इमारतों की सजावट के लिए प्रयोग में लायी गयी। यह कला चीनी, जापानी, हिन्दी, संस्कृत, फारसी व उर्दू भाषा के कलात्मक लेखन में खूब प्रयोग हुई।

सुलिपि / सुलेखन

Calligraphy Pen (कैलिग्राफ़ि पेन) - लिपि लेखनी जिसके द्वारा सुलेखन, स्केचिंग, ड्रॉइंग, डिजाइनिंग, इलेस्ट्रेशन, डाईग्राम, कैरीकेचर एवं कार्टून आदि बनाये जाते हैं। यह विभिन्न प्रकार के होल्डर, पेन, कलम एवं धूर्णक पेन के रूप में होते हैं तथा इनकी नोक विभिन्न प्रकार के आकारों वाली होती है।

लिपि लेखनी

Camaieu (कैमएयू) - एक रंग से चित्र बनाने की विधि।

एक रंगीय चित्र

Camera Obscura (कैमरा ऑब्स्क्युरा)- प्रारम्भिक कैमरा जो प्रकृति दृश्य के यथार्थ अंकन का उपयुक्त यन्त्र था। इसके अविष्कार का श्रेय लियो बतिस्ता आल्बर्टी को जाता है।
आब्स्क्युरा कैमरा

Campitura (कैम्पीचूरा) - यह आधुनिक चित्र बनाने की एक तकनीक है। 'कैम्पीचूरा' इटैलियन शब्द है। जिसमें चित्रकार सूक्ष्म आकारों का प्रयोग कर, कलात्मक अभिव्यक्त करता है। इस तकनीक से बने चित्र ऐसे दिखाई देते हैं जैसे- आकाश से उड़ते हुए जमीनी दृश्य को देख रहे हों। सम्पूर्ण चित्र-धरातल शतरंज के धरातल की भाँति दिखाई देती है।
कैम्पीचूरा

Canvas (कैन्वस) - चित्र बनाने के लिए सूती-मोटे कपड़े (किरमिच) का धरातल जिसमें टिकाऊ चित्रण किया जा सके। हल्की-मजबूत लकड़ी के चौखटे पर 'किरमिच' को कसकर 'प्राइमिंग' और 'साइजिंग' कर, इसे चित्रण हेतु तैयार किया जाता है। कैन्वस में रंग पीछे की ओर न निकले इस बात का ध्यान रखा जाता है। यह विभिन्न कम्पनियों के बाज़ार में तैयार मिलते हैं।
किरमिच

Canvas Board (कैन्वस बोर्ड)- हार्डबोर्ड, दफ्ती में मढ़कर तैयार कैन्वस जो छोटे चित्र बनाने के लिए सरल व सुलभ है। इसके रख-रखाव और लाने ले जाने में आसानी रहती है।
किरमिच फलक

Canvas Plier (कैन्वस प्लायर)-कैन्वस को ठीक तरह से मढ़ने व कसने का औजार। जिससे किरमिच को खींचकर लकड़ी के फ्रेम में कील या स्टिपलर गन से कस दिया जाता है।
किरमिच चिमटा

Caricature (कैरिकेचर) - वस्तु या व्यक्ति की विशेषताओं को लेकर अतिशयोक्ति रूपों का अंकन जिसमें उपहास व व्यंग का भाव हो।
विद्वेष / विरूप चित्र

Cartography (कार्टोग्राफ़ि) : नक्शा बनाने की कला।
मानचित्रकला

Cartoon (कार्टून) - पेन्टिंग के लिए बनाया गया मूलाकार आलेख जिससे अभीष्ट सतह पर ट्रेसिंग की जा सके अथवा व्यंगात्मक चित्र।
व्यंग्य चित्र/मूलाकार आलेख

Caryatid (कैरिऐटिड) : नारी आकृति वाला खम्बा/वास्तुकला में उकेरकर इस प्रकार के खम्बे बनाये जाते हैं। इन खम्बों में वस्त्रधारी नारी के साथ अलंकरण भी बनाया जाता है।
परी खम्बा / स्त्रीस्तम्भ

Casting (कास्टिंग) - साँचे द्वारा मूर्ति को ढालना।
ढलाई

Catacomb (कैटैकूम्) : कब्रों का तहखाना अथवा ईसाईयों की ध्यान गुफा। दूसरी - तीसरी शती में ईसाई धर्म के प्रति आस्था रखने वाले अनुयायी छिप-छिपकर

भूमिगत कन्दराओं की भित्तियों पर आभासात्मक व सांकेतिक रूप बनाकर उन प्रतीकों की पूजा करते थे।

भूमिगत कब्रिस्तान/कन्दरा

Catalogue (कैटलॉग) - सूची-पत्र जिसमें कलाकार व कलाकृति के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी होती है। कला-प्रदर्शनियों के अवसर पर ये छापे और बाँटे जाते हैं।

सूची / सूचक-पत्र

Cave Painting (केव पेन्टिंग) - गुफा चित्र जो प्राचीन मानव द्वारा ई० पू० 25000 से 4000 वर्ष पहले तक बनाये गये। यह आदिम मानव द्वारा गुफाओं की भित्तियों पर बनाये गये प्रागैतिहासिक चित्र हैं। जिनके विषय, पशु-आकृतियाँ, शिकार, विश्वास, तन्त्र-मन्त्र आदि हैं। इन गुफा-चित्रों को तीन कालखण्डों में बाँटा गया है। पूर्व पाषाण काल (Palaeolithic) 50,000-15,000 ई.पू., मध्य पाषाण काल (Mesolithic) 15,000-10,000 ई.पू. एवं नव पाषाण काल (Neolithic) 10,000-5000 ई.पू.। यह शैल-चित्र सरल रेखाओं, सहज रूपों व भूमिज रंगों द्वारा बनाये गये हैं। भारत में मध्यप्रदेश के पंचमढ़ी, होशंगाबाद, सिधनपुर, मन्दसौर, भीम बेटका, पहाड़गढ़, उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर (लिखुनिया, भलडरिया), मानिकपुर (बाँदा), बिहार के शाहाबाद व चक्रधरपुर, राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में आहाड़ व गिलूण्ड, दक्षिण भारत के रायचूर क्षेत्र में कुप्प गल्लू (बेलारी), बसबनगुड़ी (बंगलौर) तथा यूरोप के उत्तरी स्पेन की अल्तामिरा, कोवालानाज़, सेन्तिअन, एल कैसिल्लो, ला पेसिगा, पिण्डाल, लॉस कैसारेस, ला पिलेता व पूर्वी स्पेन की कोगुल, केवा वीजा, मिनाटेडा, वालतोर्ता, तोरमोन एवं रेमीजिया। फ्रांस की फोन्त द गॉम, ल कम्बारेली, लास्कॉ, नियाओ, ला बाम लैत्रोन, शैबोत, एबू, ले पेट्रल, तक द ओदोबर्त, माण्टेस्पान, इस्तुरित्ज़, पकमर्ले, सरजिआक, रेवरडिट, लौज़ल, केप ब्लांक, पेअर नान पेअर एवं इटली की लीवान्ज़ो, रोमानेल्ली, एदुदौरा, निसेमी आदि क्षेत्रों में ये चित्र पाये गये हैं।

गुफा चित्र/शैल चित्र

Ceiling (सीलिंग) : छत की आन्तरिक सतह अथवा पाटन का अन्दरूनी भाग।

भीतरी छत

Chain Bridge (चेन ब्रिज) : झूला-सेतु जो नदी के ऊपर बिना खम्बों के सहारे बनाये जाते हैं।

झूला पुल

Chamba School (चम्बा स्कूल) : हिमाचल प्रदेश का जनपद चम्बा रावी नदी के तट पर स्थित है। 17वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक चम्बा कलम का विकास हुआ। यहाँ की चित्रशैली में स्थानीय लोक तत्वों का समावेश है। राजा पृथ्वी सिंह (सन् 1641-64) ने इस कला शैली को पुष्पित-पल्लवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। समय के साथ-साथ यहाँ की चित्रशैली में मुगल, बसोहली एवं

गुलेर के चित्र-तत्व समाहित होते गये और इस का स्वरूप निखरता गया। इस शैली के चित्रों में स्त्रियाँ पेशबाज, झीनी चुनरी सितारों एवं आभूषणों से सजी हुई बनायी गयी हैं। पुरुष धोती पटका आदि पहने हुए चित्रित हैं।

विषय - गणेश जी, दुर्गा-सप्तशती, रामायण, महाभारत, प्रेम कहानियाँ, नायिका-भेद एवं श्रीकृष्ण लीला आदि रहे हैं। पृष्ठभूमि में नीला आकाश, फव्वारे, अलंकृत हरीतिमा, पशु-पक्षी, नदी, तालाब, पुष्प व झूले आदि दर्शाये गये हैं। हाशिये फूल - पत्ती एवं पक्षियों से अलंकृत बनाये गये हैं। नारी सौन्दर्य को चित्रों में विशेष स्थान दिया गया है। यहाँ के रुमाल विशिष्ट लोक चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध हैं।

चम्बा चित्रशैली

Charcoal (चारकोल) : अपनी अभिव्यक्ति को रेखांकित करने का सबसे प्राचीन एवं सरल माध्यम है। यह कोयले की शलाका होती है। इसके द्वारा छटाओं को ग्रे से गहरे काले तक दिखा सकते हैं। यह तीन प्रकार की होती है। **मुलायम चारकोल (Willow charcoal), कठोर चारकोल बत्ती (Compressed charcoal stick), चारकोल पेन्सिल (Charcoal Pencil)।**

काठ कोयला

Chiaroscuro (केरॉसक्यूरो) - छाया-प्रकाश प्रभाव से युक्त चित्र। यह शब्द इटैलियन भाषा में प्रयुक्त होता है।

छाया / प्रकाश योजना

Chiaroscuro wood cut (किआरॉस्क्यूरो वुडकट) : छापाकला की पद्धति जिसमें 'वुडकट' द्वारा प्रिण्ट में छाया-प्रकाश का प्रभाव छापा जाता है। चित्र छापने के लिए तीन से चार ब्लाक का प्रयोग, क्रमवार अलग-अलग रंगों में किया जाता है। इस तकनीक का विकास कलाकार **उगो द कार्पी (सन् 1480-1532)** ने किया था। इस शब्द का प्रयोग चित्र तकनीक के साथ-साथ छापाकला तकनीक के लिए भी किया जाता है।

छाया-प्रकाश छाया चित्र

Chikitushi (चिकितुशी) - उत्तर प्रदेश की प्रमुख सामाजिक, साहित्यिक एवं कला संस्था, जिसका गठन 1994 में कानपुर में हुआ था। उत्तर भारत में कला मेलों के आयोजन में इस संस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है। चिकितुशी सरस्वती जी के नाम का पर्यायवाची शब्द है। इस संस्था के संस्थापक डॉ. शिव बालक द्विवेदी (अध्यक्ष), डॉ. अभय द्विवेदी (उपाध्यक्ष), डॉ. कमलेश अवस्थी (उपाध्यक्ष), डॉ. पूर्णिमा तिवारी (महासचिव), डॉ. बृजेश कटियार (सचिव) एवं डॉ. हृदय गुप्त (कोषाध्यक्ष) थे।

चिकितुशी संस्था

Children's Painting (चिल्ड्रेन्स पेन्टिंग) - बच्चों द्वारा बनायी गयी कलाकृति जिसमें सहजता व सरलता का भाव रहता है। यह चित्र सरल रेखाओं, सहज रूपों एवं प्रकाशित रंगों से युक्त होते हैं।

बाल चित्रण

Chinoiserie Art (चाइनोंरी आर्ट) : योरोप में 17वीं व 18वीं शताब्दी में चीनी कला का अनुकरण कर अलंकरण कला की एक नयी शैली विकसित की गयी।

चीनी अलंकरण कला

Chroma (क्रोमा) : 'क्रोमा' का तात्पर्य रंगों की शुद्धता से है। जो रंग जितना शुद्ध होगा उसका घनत्व उतना अधिक होगा और यह रंग प्रखर भी होगा। शुद्ध रंग में सघनता को कम करने के लिए तटस्थ अथवा धूमिल रंगों का मिश्रण किया जाता है।

रंग-शुद्धता

Civilization (सिविलाइज़ेशन) : प्रगैतिहासिक आखेटक सभ्यता के पश्चात् मानव ने सभ्यता की ओर एक कदम बढ़ाया और कृषि तथा पशु-पालन करने लगा। वह सामाजिक प्राणी की श्रेणी में आ गया। इसी क्रम में विभिन्न सभ्यताओं का विकास हुआ और नगर-राज्यों की सभ्यताएँ विकसित हुईं। ये सभ्यताएँ प्रायः नदियों के तट पर विकसित हुईं और उन्हें उन्हीं नदियों के नामों से पुकारा जाने लगा। ये सभ्यताएँ निम्न हैं—**सिन्धु घाटी की सभ्यता** अथवा **सिन्धु नदी की सभ्यता** (भारत), **नील नदी की सभ्यता** (मिस्र), **मेसोपोटामिया की सभ्यता** अथवा **दज़ला-फ़रात नदियों की सभ्यता** (ईराक) तथा **पीत नदी की सभ्यता** (चीन) आदि।

सभ्यता

Classical Art (क्लैसिकल् आर्ट) - वह शास्त्रीय कला जो नियम व सिद्धान्तों पर आधारित हो। यह कला प्रेरणादायक व मन को प्रसन्न करने वाली होती है। यूनान की 4वीं-5वीं शताब्दी ई० पू० की कला को भी कहते हैं।

शास्त्रीय कला

Clear Varnish (क्लीअर वारनिश) : क्लीयर वारनिश, वारनिश का शुद्धतम रूप है। इसका प्रयोग फर्नीचर, मूर्ति एवं चित्रों में किया जाता है। तैल-चित्रों में अलसी तेल (Linseed oil) के स्थान पर कुछ कलाकार इसका प्रयोग करते हैं। इसके प्रयोग से चित्रों की चमक बढ़ जाती है। यह वारनिश की अपेक्षा जल्दी सूखती है।

पारदर्शी रोगन

Cloister (क्लाइस्टर) : साधु-संन्यासी के रहने का स्थान अथवा वह मठ जहाँ बौद्ध मतावलम्बी रहते हैं तथा ध्यान आदि करते हैं।

विहार/मठ

Coarse Art (कॉर्स आर्ट) : स्थूल अथवा भौंडे आकार बनाना अर्थात् अनुपातहीन, बेढंगे - भद्दे रूपों को चित्र अथवा मूर्ति रूप में सँजोना।

अपरिष्कृत कला

Cobra Mandal (कोब्रा मण्डल) : सन् 1948 में **हालैण्ड** के **अॅम्स्टरडम** शहर के प्रगतिशील कलाकारों का एक मण्डल और कोपनहेगन एवं ब्रसेल्ज में कार्यरत समान विचारों के कलाकारों के मण्डल। इन तीनों मंडलों के कलाकारों ने मिलकर 'कोब्रा' नाम के मंडल की स्थापना की। जिन्होंने अपने चित्रों में बाल-कला,

लोक-कला एवं आदिम-कला के सहज एवं सरल रूपों को स्थान दिया। परन्तु इन रूपों की अभिव्यक्ति में मुक्त तूलिका-संचालन एवं अभिव्यक्ति पूर्णता को विशेष स्थान दिया। प्रमुख चित्रकार कारेल, जॉर्ज कॉन्स्टन्ट, आसोर योर्न, पियरे आलेशिन्की, कोर्नेय एवं आपेल थे। इस चित्र शैली में अभिव्यञ्जनावेद व वस्तु निरपेक्षता का मिलाजुला, परन्तु विकसित रूप प्रस्तुत हुआ। **कोब्रा मण्डल**

Cold Pressed (कोल्ड प्रेसड) : यह कागज बनाने की तकनीक है। जलरंग तथा इंक वाश के लिए इस तकनीक से बना कागज प्रयोग में लाया जाता है। इस तकनीक से दानेदार, खुरदरा कागज तैयार किया जाता है जो जलरंग, वाश के लिए उपयुक्त माना जाता है। **हल्का दबाव कागज**

Collage (कॉलाज)- कागज, छपी हुई सामग्री, फोटोग्राफ, कपड़ा आदि को काट - काट चिपका कर बनाया गया चित्र जो विशेष प्रभाव से युक्त, विषयगत होते हैं। इस तकनीक का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1912-13 में चित्रकार ब्राक तथा पिकासो ने अपने चित्रों में समाचार पत्रों की कटिंग, परिचय कार्ड, कुर्सी के बेंत एवं रस्सी आदि को चित्रभूमि में चिपका कर किया था। दो वर्षों तक निरंतर इन चित्रकारों ने वास्तविक वस्तुओं को चित्रों में चिपकाकर इस तकनीक को समृद्ध किया। बाद में इटली के कलाकार कारा तथा जर्मन के कलाकार कुर्ट शीतर्स ने सन् 1919 में इस तकनीक का प्रयोग कर रचनाएँ की। और इसको परिष्कृत कर ऊँचाई तक पहुँचाया। इन कलाकारों का मानना था कि यह अच्छा माध्यम है अनुपयोगी, रद्दी कागजों आदि से अलंकरण करने का तथा समाज पर टिप्पणी करने का।

चिप्पी चित्र

Collage Graphics (कोलाज़ ग्राफ़िक) : छापा पद्धति की विधि जिसमें विभिन्न प्रकार की बुनावट वाली सामग्री को गोंद अथवा फेवीकोल द्वारा चिपकाकर, संयोजन तैयार कर, मुलायम तथा कठोर रोलर के प्रयोग से आकर्षक छापा चित्र बनाये जाते हैं। इस पद्धति में अनेक रंगों का प्रयोग भी किया जाता है।

चिप्पी छापा चित्र

Collection (कॉलेक्शन) - कलाकृतियों के संग्रह हेतु प्रयुक्त शब्द। **संकलन**

Collection Display (कॉलेक्शन डिस्प्ले) : संस्थागत संग्रह अथवा निजी संग्रह द्वारा संग्रहीत वस्तुओं या कलाकृतियों की प्रदर्शनी जनमानस हेतु करना और उन्हें उपरोक्त वस्तुओं या कलाकृति से अवगत कराना अथवा दिखाना।

संकलन प्रदर्शनी

Collograph (कॉलोग्राफ़) : विविध प्रकार की सामग्री एवं वस्तुओं को चिपकाकर, गहरे तथा उभरे प्रभाव देकर चित्र निर्मित कर, विभिन्न नर्म तथा कठोर रोलर का

प्रयोग कर, स्याही लगाकर, नम पेपर रख, दबाव देकर छापा चित्रण बनाने की पद्धति ।

समुच्चित छापा चित्र

Colosseum (कॉलिसियम) : रोम का विशाल मुक्ताकाश खेल मैदान एवं रंगभूमि जिसका निर्माण 70 ई. में वेस्पासिन (Vespasian) ने प्रारम्भ करवाया था । 80 ई. में इसका उद्घाटन सम्राट टाइटस ने किया था । अण्डाकृति में बने इस कोलोसियम में 60,000 दर्शकों को बैठने की सुविधा है । इसकी बाहरी दीवारें चार मंजिल की हैं । जिसकी ऊँचाई 157 फिट 6 इंच है इसको यूनानी पद्धति से अलंकरण किया गया था । इस कोलोसियम का बाहरी कार्य, खिड़कियाँ तथा सीढ़ियाँ दोमितियन नामक शिल्पी ने बनायी थी । इसकी गणना संसार के सात आश्चर्यों में की जाती है ।

रोम का प्रेक्षागृह

Colour (कलर) : रंग प्रत्यक्ष भौतिक पदार्थ है । प्राचीन काल से आज तक इसका महत्व यथावत् है । प्रकृति ने रंगों द्वारा सौन्दर्य का अद्वितीय खजाना दिया है । रंगों के बगैर जीवन की कल्पना करना व्यर्थ है । इनके आकर्षण से कोई नहीं बच पाया है । प्रकाश-किरणों के माध्यम से इन्हें देखते व पहचानते हैं । यह विभिन्न रूपों भूमिज, खनिज, वानस्पतिक, धात्विक एवं रासायनिक होते हैं । शुद्ध रंग पाँच, लाल, पीला, नीला, काला व श्वेत हैं और सामान्य रंग आठ लाल, नीला, पीला, हरा, नारंगी, बैंगनी, सफेद तथा काला होते हैं जिन्हें सामान्यतया प्रत्येक व्यक्ति पहचान लेता है । प्रकाश में उपस्थित रंग किरणों के रूप में होते हैं, जिन्हें देखने के लिए 'प्रिज्म' (त्रिपाश्व) का सहारा लिया जाता है । ये रंग हैं — लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नीलमणि एवं बैंगनी । इन रंगों को 'इन्द्रधनुष' में भी देखा जाता है । इनकी पहचान धरातलीय गुणों के कारण होती है ।

रंग/वर्ण

Colour Grey (कलर ग्रे) - रंगीन धूसर रंग जो प्रायः पूरक रंगों के समिश्रण से बनते हैं ।

भूरा/धूसर रंग

Colour Lithography (कलर लिथोग्राफ़ी) : विभिन्न तैयार प्लेट का प्रयोग कर छपाई करना । यह प्लेट रंगानुसार प्रत्येक रंग की अलग-अलग तैयार की जाती है । जहाँ घर जो रंग छापना होता है उसके अनुसार डिजाइन प्रत्येक प्लेट में अलग-अलग बनायी जाती है । शिला बनाने की विधि लिथोग्राफी वाली ही होती है । प्रारम्भिक रंगीन लिथोग्राफ छपाई को तैलमुद्रण (Oleograph) कहा जाता था । इस पद्धति में तेल युक्त रंगीन स्याही का प्रयोग किया जाता था ।

रंगीन अश्म मुद्रण

Colour Spectrum (कलर स्पेक्ट्रम) : प्रकाश में उपस्थित रंगों का अविरल क्रम जो किरणों के रूप में होता है, जिन्हें इन्द्रधनुष में एवं प्रिज्म (त्रिभुजाकार समपाश्व) के

द्वारा देखा जा सकता है। प्रकाश में उपस्थित ये रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नीलमणि एवं बैंगनी होते हैं। बैंगनी रंग का प्रकाश-विचलन सबसे अधिक और लाल रंग का विचलन सबसे कम होता है।

रंग-क्रम

Colour Wheel (कलर व्हील): रंगों को पहचानने के लिए तथा परस्पर एक दूसरे रंगों का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए रंग-चक्र महत्वपूर्ण होता है। इस रंग-चक्र में तीन प्रथम श्रेणी के रंग लाल, पीला व नीला, तीन द्वितीय श्रेणी के रंग हरा, नारंगी व बैंगनी, तीन तृतीय श्रेणी के रंग रसेट, ऑलिव व सिटरिन तथा छः मध्यवर्ती रंगों लाल-नारंगी, लाल-बैंगनी, बैंगनी-नीला, हरित-नील, पीत-हरा व पीत-नारंगी आदि होते हैं। इस वर्ण-चक्र के माध्यम से विभिन्न अन्य रंगों की जानकारी प्राप्त की जाती है।

रंग-चक्र

Column (कॉलम): वह खम्भा जिस पर घर/भवन का पूरा आधार टिका हो और जिस पर पूरे भवन का भार हो।

खम्भा

Comic Strips (कॉमिक स्ट्रिप्स) - कथा व्यंग्य-चित्र जिसमें किसी कहानी को लेकर धारावाहिक चित्र बनाये व प्रकाशित किये जाते हैं।

हास्य चित्र पट्टिका

Commercial Art (कॉमर्शियल आर्ट) - व्यापार के महत्व को दर्शाने की कला अथवा व्यापार को बढ़ाने हेतु पोस्टर, बैनर, पम्फलेट, होल्डिंग, संचार व सिनेमा को माध्यम बना प्रचार करने की कला।

व्यापारिक / वाणिज्यिक कला

Company School (कम्पनी स्कूल) - ब्रिटिश शैली जिसने भारतीय परम्परागत कलाकारों को प्रभावित कर पश्चिमी शैली में भारतीय जीवन के चित्र बनाने को प्रेरित किया। इस शैली का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से माना जाता है। इस शैली के अन्तर्गत अंग्रेज चित्रकारों ने भारतीय जनजीवन को ब्रिटिश शैली में चित्रित किया तथा भारतीय चित्रकारों ने अंग्रेजों की जीवनचर्या एवं भारतीय जन-जीवन को अपनी तूलिका का आधार बनाया। प्रारम्भ में यह शैली 'पटना कलम' कहलाई, परन्तु बाद में इसे कम्पनी शैली कहकर सम्बोधित किया गया। इस शैली के चित्रकार दिल्ली, लाहौर, लखनऊ, आगरा, मथुरा, बनारस, तंजौर, पूना एवं मुर्शिदाबाद आदि में फैले थे। इस शैली के चित्रों में छाया-प्रकाश का विशेष महत्व था।

कम्पनी चित्रशैली

Composition (कॉम्पोजिशन): व्यवस्थित संयोजन या डिजाइन। एक प्रकार से सुव्यवस्था ही संयोजन है। यह सुव्यवस्था ऐसी होती है जिसमें सौन्दर्य का भाव निहित होता है। कला-संयोजन में निश्चित कला तत्वों की सुरुचिपूर्णता तथा स्थापित सिद्धांत के पालन से कला-कृति उत्तम बनती है। चित्र संयोजन के

स्थापित सिद्धांत निम्नलिखित है— एकता (Unity), सामंजस्य (Harmony), सन्तुलन (Balance), लय और गति (Rhythm and Movement), प्रभाविता (Dominance) एवं अनुपात/प्रमाण (Proportion) । **रचना / संयोजन**

Compositor (कॉम्पोज़िटर) : अक्षर-योजक जो छापने हेतु सामग्री का अक्षर-संयोजन करता है । **अक्षर-योजक**

Computer Art (कंप्यूटर आर्ट)- कम्प्यूटर द्वारा जो कला-कार्य किया जाता है वह इस श्रेणी में आता है । वस्तुतः कम्प्यूटर कला में मानवीय तत्वों का अभाव रहता है, मानवीय भावों को रूपायित नहीं किया जा सकता । कम्प्यूटर द्वारा चित्र-निर्माण वही कलाकार कर सकता जो कम्प्यूटर जैसे जटिल यन्त्र के नियन्त्रण कौशल का ज्ञान एवं कला सम्बन्धी जानकारी रखता हो और निपुण हो । सर्वप्रथम कम्प्यूटर कला की प्रदर्शनी सन् 1965 में न्यूयार्क में हुई थी । इसके प्रयोग से अद्भुत कृतियाँ सृजित की गयीं जो दृश्य सौन्दर्य से परिपूर्ण थीं । इसमें चित्रों का निर्माण एवं सम्पादन विशेष सॉफ्टवेयरों में किया जाता है जैसे— कोरल ड्रॉ, फोटोशॉप, इमेज एडीटर एवं पेन्ट ब्रश इत्यादि । विभिन्न सॉफ्टवेयरों में जो भी चित्र बनते हैं उनके एक्सटेंशन अलग-अलग होते हैं जैसे - jpg, png, psd, ppt, bmp आदि । इंटरनेट से या अन्य स्टोरिंग डिवाइस की सहायता से इन चित्रों को हम इमेज अर्थात् jpg format बनाकर कहीं भी भेज सकते हैं । इसके अतिरिक्त पावर प्वाइंट जैसे सॉफ्टवेयर की सहायता से हम इन चित्रों में ऐनीमेशन इफ़ेक्ट भी डाल सकते हैं । इनका उपयोग कर हम चित्रों को और अधिक आकर्षक बना सकते हैं व किसी भी चित्र को स्कैन कर उसमें अपने अनुसार परिवर्तन कर उसका रूप बदल सकते हैं ।

अभिकलक / परिकलक कला

Concrete Art (कॉन्क्रीट आर्ट) - ज्यामितीय रचनावादी वस्तुनिरपेक्ष कला । जो दृश्य सौन्दर्यानुभूति पर आधारित कला है । जिसमें मानव रूपों का त्याग, ज्यामितीय रूपों का प्रयोग कर, चित्र-रचना की जाती है । एक प्रकार से ज्यामितीय आकारों द्वारा त्रिआयामी प्रभाव वाले रूपों का सृजन कर, चित्र बनाना । इसे ठोस कला भी कहा जाता है । सर्वप्रथम **थिओवान डोस बुर्ग** ने सन् 1930 में स्वयं की कला को आकार-निष्ठ कला नाम से सम्बोधित किया था तथा इस नाम से उन्होंने पत्रिका का प्रकाशन भी किया । सन् 1944 में पेरिस की कलावीथिका '**देनी रेन**' आकार-निष्ठ कला का केन्द्र बन गयी । सन् 1947 में '**सलॉ द रेआलिते नुबेल**' प्रदर्शनी ने इस कला का महत्व और बढ़ाया । फ्रेंच चित्रकार **योसेफ आल्बेर्स** ने सन् 1950 के उपरान्त एक बड़े रंगीन वर्ग के भीतर दूसरे छोटे भिन्न रंग के वर्ग का

अंकन कर चित्र बनाये। स्विस् कलाकार **माक्स बिल** ने आकर-निष्ठ कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **मॉड्रियाँ** की कला को भी इस श्रेणी में रखा जाता है।

आकार-निष्ठ कला/प्रत्यक्ष/साकार कला

Concretisation (कांक्रियइसेशन) - मूर्तिकरण जिसमें विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से मूर्ति गढ़ी जाती है। **मूर्ति गढ़न**

Constructivism (कॉन्स्ट्रक्टिविज़्म) : इस आन्दोलन के प्रयोक्ता रूस के **ब्लादीमीर तातलिन** थे। जिन्होंने सर्वप्रथम सन् 1913 में काँच, धातु व लकड़ी का प्रयोग कर वस्तु निरपेक्षीय रचनावादी कृति बनायी थी। इस आन्दोलन का उद्देश्य था कि बौद्धिकता पूर्ण कला निर्मित करना जो त्रिमितीय हो। इस आन्दोलन के कलाकारों का मानना था कि रंग द्वारा रूपों की रचना करने की अपेक्षा अन्य पदार्थ जैसे-काँच, तार, रस्सी, गत्ता, चमड़ा, सीमेण्ट एवं काष्ठ आदि का प्रयोग कर रचना करें। इस प्रकार की कला-कृतियाँ व्यक्तिगत भावनाओं से युक्त विशुद्ध रचना के सिद्धांतों पर आधारित थीं। निर्माणवाद से आधुनिक मूर्तिकला एवं वास्तुकला को भी एक नया आयाम प्राप्त हुआ। इसके प्रमुख कलाकार **नॉमगाबो, अकिपेन्को तथा आन्तोइन पेब्सनर** थे। **रचनात्मकवाद / निर्माणवाद**

Conte (कॉन्ट) : शुष्क माध्यम से चित्रण करने की बल्ली (stick) जो लाल, भूरे एवं काले रंग की होती है। चारकोल की भांति ही इसका प्रयोग किया जाता है। यह कठोर होती है। **कॉण्ट**

Contemporary Art (कॉन्टेम्पोररि आर्ट) - सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित सृजनात्मक कला जो समय के साथ-साथ चलती है और समसामयिक होती है। **समकालीन कला**

Conventional Art (कन्वेन्शनल आर्ट) - परम्परा पर आधारित रुढ़िगत कला जो अपने पुराने मापदण्डों पर चलती है। **परम्परागत कला**

Conversation Painting (कॉन्वरसेशन पेण्टिंग) : सामूहिक रूप में वार्तालाप करते हुए चित्र जो पारिवारिक या सामाजिक हो सकते हैं। बरोक शैली में 19वीं शताब्दी में यूरोप में इस प्रकार के सामाजिक जीवन में बातचीत करते हुए अनेक चित्र चित्रित हुए थे। **वार्तालाप चित्र**

Cool colour (कूल कलर) : वह रंग जिनको देखने से शीतलता का आभास होता हो ये रंग हैं - नीला, हरा या इनके संयोग से बनें रंग। **शीतल रंग**

Coping (कॉपिंग) : भवन की छत की शीर्षिका अथवा मुंडेर। यह छत के चारों ओर उठी हुई दीवार का ऊपरी भाग होता है। **मुंडेरी**

Coptic Art (कॉप्टिक आर्ट) - ईसाई कला के वह चित्र जो ममी की पेटिकाओं में चौथी से 7वीं सदी तक बनाये गये। ममी पेटिका चित्र

Copy Work (कॉपी वर्क) - प्रतिष्ठित चित्रकारों द्वारा बनाये गये उच्च श्रेणी के चित्र, परम्परागत चित्र, प्राचीन चित्र आदि की अनुकृति या नकल कर बनायी गयी कृति जो मूल चित्र की तरह ही हू-ब-हू बनायी गयी हो। प्रतिलिपि/अनुकरण कार्य

Copyright (कॉपिराइट) - सर्वाधिकार सुरक्षित, पुस्तक का कोई अंश या भाग जो रचनाकार या लेखक अथवा प्रकाशक की बगैर अनुमति के प्रयोग में नहीं लाया जा सकता अथवा दोबारा या अन्य जगह पर छापा नहीं जा सकता।

सर्वाधिकार / स्वत्वाधिकार

Coulisse (कूलीस) - चित्रमूर्ति अथवा मंच का पार्श्व भाग। पार्श्व भाग

Craft (क्राफ्ट) - शिल्पकार्य, जिसमें दक्षता व हस्त कौशल का विशेष योग होता है जो परम्परागत तरह से चलती रहती है। शैलीगत विशेषता पर आधारित उक्त कला में अनुकृति का योग रहता है। यह धार्मिक, सजावट एवं सामाजिक उपयोग का ध्यान रखकर बनायी जाती है। शिल्प / शिल्प कर्म

Crafts Museum (क्राफ्ट्स म्यूज़ियम) : हस्तशिल्प तथा हथकरघा वस्तुओं का संग्रहालय। लुप्त हो रही शिल्पकलाओं, लोककलाओं एवं जनजातीय कलाओं को संरक्षण देने के उद्देश्य से इसकी स्थापना 21 दिसम्बर, 1972 में की गयी थी। यह संग्रहालय भैरों रोड, प्रगति मैदान, नयी दिल्ली में स्थित है। यहाँ एक परिसर गाँव रूप में बनाया गया है तथा 6 संग्रह दीर्घाएँ (भूता वीथी, दृश्य-श्रव्य कक्ष, अस्थायी वीथी, वस्त्र वीथी, आनुष्ठानिक वीथी एवं वैभवशाली वीथी), स्टॉल, प्रदर्शन क्षेत्र, पुस्तकालय, कैफेटेरिया, प्रांगण (आय्यन्मार) बिक्री केन्द्र आदि बने हैं। शिल्पकारों को एक माह के लिए अपनी कला का प्रदर्शन करने तथा अपने बनाये शिल्पों की बिक्री करने का अवसर प्रदान किया जाता है। यहाँ की भित्तियाँ लोकचित्रण से सजी हैं। भारत की पारम्परिक, लोक एवं जनजातीय प्रदर्शनकारी कलाओं का सजीव प्रदर्शन चलता रहता है। इस संग्रहालय की डिजाइन प्रसिद्ध वास्तुकार 'चार्ल्सकोरिया' ने की थी। इसका पूरा नाम **National Handicrafts and Handloom Museum** है। शिल्प संग्रहालय

Craftsman (क्राफ्ट्समैन) : निपुणता पूर्वक तथा हस्त कौशल द्वारा किसी कृति अथवा वस्तु को बनाने वाला व्यक्ति। प्राचीन समय से इन शिल्पकारों का महत्व है। श्री विश्वकर्मा जी (विश्वशिल्पी) के उत्तराधिकारी के रूप में नौ शिल्पी कर्मकार (लोहार), कुविन्द (जुलाहा), मालाकार (माली), शंखकार (हड्डी, शंख आदि से कार्य

करने वाला), कुम्भकार (कुम्हार), सूत्रधार (राज बड़ई), काँस्यकार (तँवेरा), चित्रकार (चित्र व मूर्ति बनाने वाले) एवं स्वर्णकार (सोनार) आदि थे। जिनका कार्य सामाजिक उपयोग की वस्तुएँ बनाना व उन पर अलंकरण करना था। आजकल शिल्पकारों का क्षेत्र वृहद् है, परन्तु धातु शिल्पकार, काष्ठ शिल्पकार, कुम्हार, प्रस्तर शिल्पकार, डलिया-चटाई बनाने वाले, दर्जी, पारम्परिक चित्रकार आदि मुख्य हैं। इनके कार्य में दस्तकारी प्रवीणता देखी जा सकती है। यह अपने-अपने हुनर में दक्ष होते हैं जो परम्परागत रूप से इन्हें प्राप्त होती है। इनकी कृतियों में कुशलता का योग होता है। अलंकरण से युक्त शिल्प बनाने वाले शिल्पकारों को समाज में विशेष स्थान प्राप्त है।

शिल्पकार/दस्तकार

Cretan Art (क्रीटन आर्ट): क्रीट यूनानी सभ्यता का मुख्य केन्द्र था। यहाँ 2500 ई० पूर्व से 1100 ई.पू. तक पनपी कला को क्रीटन कला कहा गया, जो तीन काल आरम्भिक, मध्य एवं परवर्ती मिनोअन (minoan) में वर्गीकृत हुई। इस कला के अवशेष महल, आवास, पात्र एवं खिलौने के रूप में पाये गये, जिन पर उत्कृष्ट चित्रकारी है। पूर्व युग के भवन पकी ईंटों के बने थे तथा पात्र व खिलौने पकी मिट्टी के बनते थे। पात्रों में खंजित ज्यामितीय आलेखन बना, श्वेत अथवा लाल रंग भर देते थे। 2000-1700 ई.पू. में बहुरंगे पात्र बने। इन पर पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, फूल-पत्ती की चित्रकारी की गयी है। 1700-1400 ई.पू. में भवनों में चित्रकारी पायी गयी, आलंकारिक चित्रण है। पशु-पक्षी, फूल-पत्ती व मानव को प्रफुल्लता भाव में दर्शित किया गया है। ई० पू० 1400-1100 युग में पात्रों का अंकन बहुतायत से हुआ है जो अलंकृत है। समाधियों में पात्र कला के समान अंकन है।

क्रीटन कला

Crociil Pen (क्रोसिल पेन) - पेन जिसकी विशेष प्रकार की धातु निब होती है जो आकार में छोटी व जिसका सिरा बारीक होता है और दबाव देने से नोक दो भागों में विभक्त हो मोटी रेखा खींचती है। उसे क्रोसिल कलम कहा जाता था।

क्रोसिल कलम

Cross-hatching (क्रॉस हैचिंग) - परस्परछेदी-रेखाच्छादन। रेखाओं द्वारा छाया-प्रकाश की विधि जिसमें रेखाओं को पास-पास आड़ी-बेड़ी खींच कर छाया-प्रकाश का प्रभाव दिया जाता है।

रेखन / गुणन छायाभास

Crucifix (क्रूसिफिक्स) - सलीब में ईसा मसीह की कृति।

क्रूस मूर्ति

Cubism (क्यूबिज़्म) - घनवादी चित्रण जिसमें ज्यामितीय रूपों द्वारा वस्तु का त्रिआयामी अंकन किया जाता है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में फ्रांस का सबसे

सशक्त और उल्लेखनीय कला-आन्दोलन जो सबसे अधिक रचनात्मक तथा आधुनिक कला के विकास में एक नवीन रूपात्मक परिभाषा का प्रबल समर्थक था पूरे विश्व में प्रचलित हुआ। यह कला आन्दोलन सन् 1907 से 1914 ई. तक चला। इसमें वस्तुओं के आयतन पर विचार किया गया, वस्तुओं को ज्यामितीय रूप प्रदान किया गया, वस्तुओं के तीनों आयामों को दिखाया गया, प्रकृति को बेलन, घन, शंकु तथा वृत्त आकार में देखने की परिकल्पना की गयी। इस आन्दोलन से चित्रकारों को एक नवीन भौतिक-रूपात्मक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त हुआ, जिससे कला के विकास में गति आयी। **सेजान** को घनवाद का प्रेरणा स्वरूप माना जाता है। इस वाद के प्रमुख प्रवर्तक चित्रकार **पाब्लो पिकासो** थे तथा अन्य कलाकार **फर्नालीजे**, **ब्राक** तथा **हानग्रिस** थे। सन् 1908 में स्वतन्त्र कलाकारों की प्रदर्शनी में हेनरी मतिस् ने पिकासो एवं बॉक के चित्रों को देखने के पश्चात् आलोचना स्वरूप 'घनवादी आकृतियों' शब्द का प्रयोग किया था। ब्रॉक ने इस शब्द का स्वागत किया। परिणाम स्वरूप घनवाद रचनात्मक कला-आन्दोलन स्थापित हुआ।

घनवाद

Curator (क्युरेटर) : कला-वीथिका या संग्रहालय के एक खण्ड अथवा भाग का प्रभारी या अध्यक्ष जिसका कार्य देख-रेख करना, आयोजन करना, चयन करना, रख-रखाव करना आदि-आदि होता है। यह मूलतः एक पद है जो संग्रहालय या कला-दीर्घा के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। इस पद पर नियुक्त व्यक्ति सम्पूर्ण जिम्मेदारी से कलाकृतियों व वस्तुओं का रख-रखाव, देख-रेख करता है तथा प्रदर्शनी का आयोजन करता है। विश्वविद्यालय की प्रबन्ध समिति के सदस्य को भी क्युरेटर कहा जाता है। संरक्षक व अभिभावक के संदर्भ में भी इस शब्द को प्रयोग किया जाता है।

संग्रहाध्यक्ष

Cut Mount (कट माउंट) : चित्र को सुरक्षित रखने एवं सुन्दरता प्रदान करने के उद्देश्य से मोटे-कड़े कागज से मढ़ाई करना अथवा 'फ्रेमिंग' करने को cut mount कहा जाता है। यह कागज सादे, रंगीन एवं टैक्शर युक्त कोई भी हो सकता है। इस विधि में चित्र नापानुसार कागज की शीट पर निशान लगा देते हैं तदुपरान्त उस निशान से आधा इंच से एक इंच तक छोटा एक और निशान लगा देते हैं। इस निशान से कागज का बीच का हिस्सा काटकर हटा देते हैं फिर चित्र को पीछे से चिपका देते हैं। यह उपयुक्त तरीका है चित्रों को सुन्दरता प्रदान करने का एवं सुरक्षित रखने का।

चौखटा मढ़ना

Dadaism (दादाइज़्म) - कला विरोधी कलाकृति का प्रदर्शन जैसे मूत्रपात्र को 'फव्वारा' शीर्षक से प्रदर्शित करना। एक प्रकार से निरुपयोगी सामग्री को कृति रूप में प्रदर्शित करना ही दादावाद था जो सन् 1916 से 1922 तक खूब प्रचलित रहा। इस आन्दोलन में कलाकारों ने पूर्ववर्ती कला-शैलियों एवं साहित्य का विरोध निरुपयोगी वस्तुओं को कलाकृति रूप में पेश कर किया था। इस वाद के प्रमुख कलाकार मारसेल दुशाम्प एवं फ्रांसिस पिकाबिया थे। इस आन्दोलन के पश्चात् कलाकार अति यथार्थवाद की ओर उन्मुख हुए। उन्हें इस वाद से प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

वह आन्दोलन, जिसका लक्ष्य पूर्ववर्ती कला-शैलियों एवं साहित्य का विरोध करना। जिसमें मानव सभ्यता की निरर्थकता एवं युद्ध की बर्बरता की तर्कहीन - अर्थहीन घटनाओं का चित्रण करके साधारण वस्तुओं व सामग्री को कला रूप में प्रस्तुत करके अभिव्यक्ति की गयी। प्रथम विश्व युद्ध उपरान्त उत्पन्न हुए इस कला-आन्दोलन के नैराश्यपूर्ण वातावरण एवं सामाजिक परिस्थितियों ने सहायता दी। महायुद्ध के व्यापक विनाश ने कलाकारों के हृदय में व्यापक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। सन् 1916 में इस आन्दोलन का प्रारम्भ ज्यूरिख (जर्मनी) में हुआ तदुपरान्त यह पेरिस पहुँचा। इसका नामकरण रूमानिया के कलाकार ट्रिस्ट्यान त्सारा ने फ्रेंच शब्द कोश से एक शब्द 'दादा' लेकर किया जिसका अर्थ था 'झूलने वाला लकड़ी का घोड़ा'। सन् 1920 तक यह आन्दोलन अपने चरम तक पहुँचा। इन दादावादियों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी पेरिस में सन् 1922 में हुई। इसी के पश्चात् यह आन्दोलन क्षीण होने लगा। इस आन्दोलन के पश्चात् अति यथार्थवाद का जन्म हुआ। जो इसी कला-आन्दोलन से प्रेरित था। दादा-वादियों ने मूत्रपात्र को फुहारा, मोनलिसा की फोटो में मूँछ लगा व निरुपयोगी यंत्र, रद्दी समान रख उन्हें कला रूप दिया। इस वाद के प्रमुख कलाकार मारसेल दुशाम्प, फ्रांसिस पिकाबिया थे तथा अन्य कलाकार लेजे, जॉकी, कोलोन, हैनोवर, मानरे, मैक्स अर्स्ट, कुर्त शीतर्स, जीन आर्प, जारा, वाल, जार्ज ग्राज, पाल क्ली, रिचर्ड हालसेन बेक तथा पिकासो थे।

दादावाद

De Stijl (डे स्टायल): हालैण्ड में प्रकाशित एक पत्रिका का नाम जो सन् 1916 में प्रकाशित हुई थी जिससे सम्बद्ध चित्रकारों की कला को इसी आन्दोलन के नाम से पुकारा जाने लगा। ये कलाकार व्यक्तिवादी कला के विरोधी थे। इनका मानना था कि ब्रह्माण्ड सत्य है उसी की विशेषताओं को अपनी अभिव्यक्ति का आधार

बनाना चाहिए। इन कलाकारों ने आकारों के ज्यामितीय सरलीकरण को अनिवार्य तत्त्व माना। यह कला आन्दोलन चित्रकला तक ही सीमित नहीं बल्कि वास्तु, फर्नीचर, व्यावसायिक कला में भी इसका प्रभाव परिलक्षित हुआ। इस आन्दोलन के प्रणेता पियर मोन्दिऑ, थियोवान डोजबुर्ग एवं बर्ट वान डेर लेक थे।

डे स्टायल

Deccan School (दक्खिन स्कूल) - दक्खिन प्रदेश कला और संस्कृति की परम्पराओं का निर्वाह करता रहा है। अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा आदि दक्खिन शैली के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। 13वीं शती से 18वीं शती तक इस शैली का भारतीय चित्र परम्परा में बड़ा योगदान रहा है। इस शैली के प्रमुख विषय नायिका, दरबारी चित्र, संगीत रसिक, रागमाला, युद्ध एवं शोभा यात्रा इत्यादि रहे हैं। पुस्तक 'तोलकप्पियम्' और 'संगम साहित्य' में कला के विषय में विशद वर्णन किये गये हैं।

दक्षिणी चित्रशैली

Decollage (डिक्लोज) : इश्तिहार के ऊपर इश्तिहार चिपकाकर कहीं-कहीं से फाड़कर चित्र बनाने की कला। इस पद्धति से नीचे और ऊपर दोनों इश्तिहार के प्रभाव मिश्रित दिखाई देने लगते हैं। यह विधि कोलाज से भिन्न है।

उतारन

Decorative Art (डैक्रेटिव आर्ट) - सजावटी कला जिसमें मंगल कामना व शोभा का भाव निहित रहता है। इस प्रकार की कला का प्रयोग चित्र के साथ-साथ भू व भित्ति के अलंकरण में किया जाता है।

सज्जा कला/आलंकारिक कला

Deep Etching (डीप् एचिंग) : धातु-पत्र पर डिजाइन बना वांछित अम्लांकन करा, उक्त डिजाइन व किनारों को पृष्ठभूमि सहित अम्ल प्रतिरोध से ढककर, शेष भाग का अम्लांकन तब तक कराते हैं जब तक की पृष्ठभूमि डिजाइन से नीची न हो जाए।

निक्षारण / गहरा अम्लांकन

Degenerate Art (डिजेनरेट आर्ट) : जब कोई कलाकृति का सृजन अपरिपक्व व्यक्ति, अनाड़ी कलाकार अथवा प्रतिभाहीन कलाकार करता है तो कलाकृति में रूप दोष उत्पन्न होने लगता है। कृति में सौन्दर्य का अभाव दिखाई देता है। कुछ माह का प्रशिक्षण प्राप्त चित्रकारों की कृतियों में यह दोष स्पष्ट दिखाई देता है।

अपविकसित कला

Delli Haat (दिल्ली हाट) : यह हस्तशिल्प एवं हथकरघा क्षेत्र के शिल्पियों / बुनकरों के लिए महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्र है। यह केन्द्र दिल्ली पर्यटन एवं परिवहन विकास निगम तथा नयी दिल्ली म्यूनिसिपल परिषद् का संयुक्त उपक्रम है। इस

केन्द्र को वस्त्र मंत्रालय व पर्यटन विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया जाता है। हस्तशिल्पी एवं बुनकरों के संवर्धन के लिए इसकी स्थापना 1994ई. में की गयी थी। यह दक्षिणी दिल्ली में आई.एन.ए. मार्केट तथा एम्स के पास स्थित है। 27000 वर्ग मीटर में फैले इस केन्द्र में एक साथ लगभग 100 शिल्पियों के लिए पक्की दुकानें, प्लेटफार्म, खुले स्थान और प्रदर्शनी हॉल उपलब्ध हैं। एक शिल्पी को 15 दिन के लिए स्थान उपलब्ध कराया जाता है। यहाँ पर विभिन्न राज्यों के पारम्परिक खान-पान के 25 स्टाल उपलब्ध हैं। सरकारी तौर पर मान्यता प्राप्त शिल्पियों को अथवा पंजीकृत समितियों को यहाँ स्टाल उपलब्ध कराया जाता है। इस केन्द्र का उद्देश्य शिल्पियों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना है। इस प्रकार का 'दिल्ली हॉट' पीतमपुरा, नयी दिल्ली में भी स्थित है।

दिल्ली हाट

Democratic Art (डेमोक्रेटिक आर्ट) - किसी भी प्रकार के बन्धन से मुक्त, सामाजिक प्रेरणा से अभिप्रेरित जनसाधारण विषय पर बनायी गयी कलाकृति। इस प्रकार की कृति समाज हित के लिए बनायी जाती है। इनकी शैली व्यंग्मात्मक भी हो सकती है और मानवीय भी।

लोकतांत्रिक कला

Demonstration (डेमन्स्ट्रेशन) - विशेषज्ञ अथवा गुण सम्पन्न व्यक्ति द्वारा अपने हुनर को प्रदर्शित करना अथवा सिद्ध करना। दृश्य कलाओं में कलाकार अपनी कलात्मक प्रतिभा, क्षमता, तकनीक व शैली का प्रदर्शन जनता, दर्शक के सम्मुख कृति बनाकर करता है। प्रायः इस प्रकार का प्रदर्शन एक बैठक में किया जाता है। इस विधा का मुख्य उद्देश्य प्रचार-प्रसार, शिक्षा-ग्रहण एवं सीखने-सिखाने के लिए होता है।

प्रदर्शन

Design (डिज़ाइन) - परिकल्पना कर किसी भी रचना का प्रारूप तैयार करना अथवा प्राथमिक रूपरेखा।

उपाय रचना, अभिकल्पना

Diagram (डाईअग्रैम) - रेखा द्वारा बनाया गया वस्तु, यन्त्र व रूप चित्र जो विषय पर आधारित होते हैं।

आरेख/रेखाचित्र

Digital Art (डिजिटल आर्ट) - अंकीय कला, कम्प्यूटर के तकनीकी प्रयोग द्वारा विभिन्न कला कार्य तैयार करना। जैसे-ग्राफिक से सम्बन्धित, विज्ञापन से संबन्धित, एनिमेशन फिल्म आदि।

अंकीय कला

Digital Painting (डिजिटल पेन्टिंग) - कम्प्यूटर के प्रयोग द्वारा बनाया तथा छापा गया चित्र जिसमें कम्प्यूटर की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग कर कैनवस व कागज पर चित्र छापा जाता है। इस प्रकार के चित्रों का आज-कल पश्चिमी देशों में खूब

- प्रचलन है। इन चित्रों में ब्रश का कोई स्थान नहीं रहता। **परिकल्पित अंकीय चित्र**
- Diorama (डायरमा)** - त्रिआयामी, नैसर्गिक, यथार्थ रूपदृश्य चित्र। **त्रिविम-दृश्य**
- Dipper (डिपर)** : तैल चित्रण के लिए तेल रखने हेतु एक पात्र जिसमें दो छोटी-छोटी कटोरियाँ आपस में जुड़ी रहती हैं। GI धातु के तेल-पात्र बाज़ार में मिलते हैं। इस तेल-पात्र को पैलेट में लगाने-हटाने की व्यवस्था रहती है। इसे 'पैलेट कप' एवं 'आयल कप' भी कहा जाता है। **पली / तैल-पात्र**
- Direct Painting (डिरेक्ट पेन्टिंग)** : बिना पूर्व योजना के, बिना विचार किये चित्रांकन आरम्भ कर कलाकृति का सृजन करना। **सीधा चित्रण**
- Disallowances (डिसअलाउअन्सेस)** : राष्ट्रीय अथवा राज्य या क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली कला-प्रदर्शनी से अस्वीकृत हुई कलाकृतियाँ। फ्रांस की 'रॉयल अकादमी' ने सन् 1863 ई. में राष्ट्रीय प्रदर्शनी से करीब 4000 कलाकृतियों को अस्वीकृत कर दिया था। जिसकी बाद में कलाकारों ने प्रदर्शनी की, जिसका नाम 'सैलॉन डे रिफ्यूज़े' रखा गया। इस प्रदर्शनी की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई थी। **अस्वीकृत कृतियाँ**
- Distemper (डिस्टेंपर)** - मिट्टी के चूर्ण रंग जिन्हें पानी में घोलकर, बन्धक मिलाकर उपयोग में लाया जाता है। इन रंगों से घर की दीवारें व रंगमंच की पृष्ठभूमि पोती जाती है। इस रंग से भित्ति चित्र व पोस्टर भी बनाये जाते हैं। यह काफी सस्ता माध्यम है। प्राचीन मिस्र एवं मेसोपोटामिया में इस माध्यम से चित्र बनाये जाते थे। **समारंजन/रंग**
- Distortion (डिस्टॉर्शन)** - यथार्थ रूप को बनाकर फिर परिवर्तित कर विद्रूप रूप प्रदान करना। **विरूपण**
- Dome (डोम)** - धार्मिक भवन अथवा महल में निर्मित अर्ध गोलाकार शिखर/छत/आकृति। **गुम्बद**
- Dot Painting (डॉट पेन्टिंग)** - बिन्दु प्रयोग से चित्र बनाना अर्थात् रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े बिन्दुओं के प्रयोग से रूपाकारों का सृजन कर चित्र बनाना। इस पद्धति में उपरंगों के बिन्दुओं द्वारा छाया-प्रकाश दिखाया जाता है। इस विधि को **Stippling** भी कहते हैं। **बिन्दु चित्रण**
- Drapery (ड्रेपरी)** - तह किये वस्त्रों से सजावट। **पर्दे / वस्त्र विन्यास/सज्जा पट**
- Drapery border (ड्रेपरी बार्डर)** - सज्जा हेतु तह किये गये वस्त्रों द्वारा तैयार झालर। **झालर**

Drawing (ड्राइंग) - रेखाओं द्वारा किसी प्रकार के विचार को, पूर्वयोजना को, वस्तु अथवा मानवाकृतियों को सम्पूर्ण भाव-भंगिमा सहित अंकन करना आरेखण कहलाता है। ड्राइंग हमेशा विवरण सहित बनायी जाती है। रेखांकन विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे- स्मृति-रेखांकन, वस्तु-रेखांकन, प्रकृति-रेखांकन, काल्पनिक-रेखांकन, यांत्रिक-रेखांकन, प्रकृति-रेखांकन, सांकेतिक-रेखांकन, स्वतन्त्र-रेखांकन, सम्पूर्ण-रेखांकन, तीव्र-रेखांकन, प्राविधिक-रेखांकन एवं सीमांत-रेखांकन आदि।
आरेखण/रेखा-चित्र

Drawing and Painting (ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग) - दृश्यकला की वह शाखा जिसमें चित्रकला से सम्बन्धित इतिहास, सिद्धान्त, परंपरा, दर्शन, तकनीक, प्रयोग, विधि व प्रविधि के विभिन्न आयामों की जानकारी अध्ययन एवं प्रशिक्षण दिया जाता है।
आरेखण एवं चित्रकला

Drier (ड्राइअर) : चित्रांकन पश्चात् चित्रों को जल्दी सुखाने के लिए, माध्यम में मिलाने वाला पदार्थ। जैसे - कोपल, पेट्रोल, जेलें आदि।
शुष्कक

Dry Brush (ड्राइ ब्रश) - ब्रश द्वारा विशेष प्रभाव जो सपाट न होकर खुश्क, रुखा-सूखा, कटा-फटा, टेक्शचर युक्त होता है। ब्रश में कम से कम तरल पदार्थ के साथ रंग लेकर तब तक सतह पर रगड़ते हैं जब तक की ब्रश का रंग पूर्ण रूप से समाप्त न हो जाये। इस पद्धति से नीचे के रंग का प्रभाव भी झलकता है।

शुष्क तूलिका प्रभाव

Dry Point (ड्राई पाइंट) - सतह उत्कीर्णन पद्धति जिसमें धातु की प्लेट में सुई चलाकर उत्कीर्ण किया जाता है। इस विधि में तेजाब का प्रयोग नहीं किया जाता। वस्तुतः यह छापा तैयार करने की पद्धति है। नुकीली स्टील की सुई से उत्कीर्ण करने पर धातु - पत्र के किनारे उठ जाते हैं जिन्हें 'कटीला' (Burr) कहा जाता है। यह बर्छ छापने पर कोमलता से युक्त रेखाओं का प्रभाव उत्पन्न करती है।

शुष्क नोक उत्कीर्णन

Ee

Early Christian Art (अर्ली क्रिश्चियन आर्ट) : प्रारम्भिक मसीही चित्र जो समाधि-कन्दराओं की भित्तियों पर रोमन सम्राट के भय व आतंक से छिप-छिप कर बनाये गये। यह चित्र दूसरी शती से पाँचवीं शती के मध्य अंकित किये गये।

ये चित्र सांकेतिक थे, क्योंकि ईसा मसीह स्वयं प्रत्यक्ष कला के विरुद्ध थे। इन गुफाओं में पत्ती, फूल, अंगूर के गुच्छों व पक्षियों का अंकन पाया गया है। इन्हीं चित्रों से मसीही कला का आरम्भ हुआ। प्रारम्भिक मसीही आकृतियाँ निर्जीव व भावहीन चित्रित हैं। रंग सपाट तथा गहरे हैं। पाँचवीं शती में आकृतियाँ रेखा प्रधान बनने लगी थीं। मुद्रा में कठोरता थी। यहाँ से ईसाई कला की शैली का प्रारम्भ हुआ। शव-पेटिकाओं में भी कलात्मक अंकन हुआ। विषय ईसाई धर्म से सम्बन्धित थे। राजाश्रय मिलने के उपरान्त ही यह कला समृद्ध हुई।

प्रारम्भिक मसीही कला

Easel (ईज़ल) : चित्र को टेक देकर बनाने की तिपायी (EASEL) जो बाजार में धातु एवं लकड़ी के तैयार मिलते हैं। ये विभिन्न आकारों की होती हैं। इनमें खूटियाँ (Nails) लगी रहती हैं, जिन्हें अपनी सुविधानुसार कलाकार ऊपर-नीचे कर सकता है।

चित्राधार

Easel-Painting (ईज़ल पेन्टिंग)- तिपायी पर रखकर बनाया गया चित्र। इसका प्रचलन 13 वीं से 14वीं शती (प्रारम्भिक पुनरुत्थान काल) में प्रारम्भ हुआ। इसके पूर्व दीवार के सहारे रखकर तथा बैठकर चित्र बनाने की परम्परा थी।

तिपाई-चित्र

Ecclesiology (इक्लीज़िऑलॉजी) - गिरजाघर से सम्बन्धित निर्माण कला।

चर्च निर्माण-कला

Ecorche (एक्रोशे) - यह एक फ्रेंच शब्द है जिसका सन्दर्भ खालहीन मानव के शारीरिक चित्रण से लिया गया है।

खालहीन मानव संरचना

Effigy (एफिजी) : किसी व्यक्ति का पुतला अथवा अपरिष्कृत प्रतिकृति या मूर्ति।

पुतला

Egyptian Art (इजिप्शन आर्ट)- धर्म और राज की निष्ठा से जुड़ी कला जो मृतकों के चिरस्थायी मकबरा स्मारकों में अंकित की गयी। जिसमें मृत व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित दृश्य अंकित किये जाते थे। यह कला ई० पू० 3500 से लेकर ई० पू० 1000 तक बनायी गयी।

अंत्येष्टि (मृतक) संस्कार की कला जो मकबरों में विकसित हुई। ई.पू. 2850 से ई.पू. 725 तक इस कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं। मिस्र वासी नश्वर शरीर को रसायन उपचार कर ममी बनाकर पिरामिडों में सुरक्षित रखते थे, साथ ही कलात्मक व बहुमूल्य वस्तुएँ एवं सामग्री भी रखते थे। यहाँ के वासी यहाँ की भित्तियों पर सुन्दर-सुन्दर अलंकरण करते थे। यह अलंकरण चित्रित तथा उत्कीर्ण

दोनों रूप में प्राप्त हुए। यहाँ से प्राप्त पिरामिडों की संख्या 80 है परन्तु खूफ़, खफ़े एवं मैकुरे तीन मुख्य हैं। इन्हें गिज़ा के पिरामिड भी कहा जाता है, क्योंकि यह गिज़ा के पठारी क्षेत्र में पाये गये हैं। भित्ति एवं पैनल पर उत्कीर्ण आकृतियाँ डूबी हुई उभारदार बनी हैं जिनके किनारे गोल हैं। यहाँ बने भित्ति-चित्रों एवं उत्कीर्ण मूर्ति शिल्पों की मुखाकृतियाँ पार्श्व रूप में बनायी गयी हैं। नील नदी की सभ्यता यहीं विकसित हुई थी। यहाँ पर प्राप्त हुए पात्र, गहरे लाल रंग के हैं। जिनमें श्वेत रंग से पशु-पक्षी तथा ज्यामितीय डिजाइन बने हैं। मिट्टी की रंगीन प्रतिमाएँ भी प्राप्त हुई हैं। हाथी दाँत की एक नारी प्रतिमा अद्भुत है। **मिस्री कला**

Eidograph (आइडोग्राफ़) - रेखाकृति बनाने की चित्रलेखी। **रेखांकन उपकरण**

Eight Group (एट ग्रुप) - अमेरिकी कलाकारों का भ्रातृमण्डल। न्यूयार्क में 'आठ' नाम के कलाकार मण्डल की स्थापना बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई थी। इस समूह के कलाकारों की प्रथम प्रदर्शनी सन् 1908 में आयोजित हुई। जिस प्रदर्शनी का नाम 'एश्केन शैली' रखा गया। यह आठ कलाकार स्लोन, प्रेंडर गास्ट, लासन, आर्थर डेविस, जार्ज ल्यूक्स, राबर्ट हेनरी, ग्लेक्स एवं शिन्न थे।

आठ कलाकार दल

El paso (एल्पासो) : स्पेनिश नव कलाकारों का दल। सन् 1957 में मैड्रिड शहर में 'एल्पासो' चरण नाम का एक मंडल स्थापित हुआ था। इस समूह के कलाकार अमेरिकन वस्तु निरपेक्ष अभिव्यंजनावाद से प्रभावित थे। **एल्पासो कलाकार मण्डल**

Emblem (ऍम्ब्लम) : प्रतीक चिह्न एक प्रकार के संकेत होते हैं, जिन्हें देखकर उसमें छिपे भावों के अर्थ प्रायः स्पष्ट हो जाते हैं। यह एक प्रकार की सांकेतिक भाषा है। विशिष्ट डिजाइन का सूक्ष्म दृश्यात्मक-प्रतीक अथवा दृश्यात्मक वस्तु-चिह्न, जिसमें किसी समूह के गुण, विचार व प्रकार को प्रस्तुत किया जाता है। **प्रतीक चिह्न**

Embossing (इम्बॉसिंग) - सतह को पीछे से उभार कर या तकनीकी प्रयोग से धरातल को उभार कर चित्र बनाने की प्रविधि। **उभारदार / समुद्भरण**

Empathy (ऍम्पैथी) : कलाकृति देखते ही तादात्म्य भाव स्थापित हो जाना। जब दर्शक कलाकृति देखता है तब वह विषयानुसार समानुभूति महसूस करने लगता है। वह विचार-मग्न हो कलाकृति से समागम स्थापित कर लेता है। **समानुभूति**

Emphasis (ऍम्फैसिस) : दृश्यकला में प्रभाविता का तात्पर्य विषय से सम्बन्धित मुख्य आकृतियों वाले भाग से है। यह भाग ही दर्शक का ध्यानाकर्षित करता है।

प्रभावित करने वाले तत्त्वों की रचना इसी भाग में की जाती है। दर्शक की दृष्टि सर्वाधिक इसी भाग में जाती है। **प्रभाविता**

Emulsion (इमलशन) : यह टेम्परा चित्रण का माध्यम है, इसमें सामान्यतः पानी और तेल एक हो जाने की प्रवृत्ति होती है। अण्डा, श्रेष्ठ प्राकृतिक पायस (Emulsion) है। वैसे अण्डे के अतिरिक्त दूध का केसीन, गोंद इमलशन, सरस इमलशन, मोम इमलशन भी अच्छे पायस हैं। रंगों में माध्यम के रूप में इसका प्रयोग करने से रंग जल्दी सूखते हैं तथा दृढ़ीभूत हो जाते हैं। इस तकनीक से बने चित्रों पर पानी-सीलन का कोई असर नहीं होता और चित्र सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहते हैं। **पायस**

Encaustic Painting (इनकास्टिक पेन्टिंग) - मोम में सूखे रंग मिला, गर्मकर, लकड़ी के पट्टे पर चित्र बनाने की विधि। इस प्रकार के चित्र ई०पू० में प्राचीन मिस्र एवं ग्रीस में बनाये जाते थे। **गले मोम से चित्रकारी / सिक्थवर्णक**

Engraving (इन्ग्रेविंग) - सतह से नीचे उकेर कर या नक्काशी कर बनायी गयी कृति अथवा धातु की चादर (कॉपर या जिंक) या पत्थर, काष्ठ, रबड़ एवं लिनोलियम पर उकेर कर बनाये गये छापा चित्र। छापाकला पद्धति की एक विधि जिसमें ब्यूरीन के साथ स्क्रैपर, नाइफ, ग्रेवर, रॉकर आदि औजारों का प्रयोग कर छापा प्लेट तैयार की जाती है। **उकेरन/उत्कीर्णन**

Engross (ऐंग्रोस) - सुलेखन कला की शाखा जिसके अन्तर्गत मोटे-बड़े अक्षरों में लिखा जाता है। **सुलिपिकरण / मोटे अक्षरों की कला**

Enlargement (इन्लार्जमन्ट) - छोटी कृति की बड़ी प्रतिलिपि तैयार करना अथवा बड़ी फोटो बनाना। **परिवर्धन / परिवर्धित चित्र**

Enrichment (इन्रिचमन्ट) - किसी भी सतह को अलंकृत करना अथवा सजावट से संवर्धित करना। **अलंकरण करना**

Environment Painting (इन्वाइरनमेंट पेन्टिंग) - परिवेश से सम्बन्धी अथवा पर्यावरण से सम्बन्धी चित्र। **पर्यावरणीय चित्रण**

Epigraph (एपिग्राफ) - उत्कीर्ण शिलालेख अथवा अभिलेख। **पुरालेख**

Episode (एपिसोड) - शृंखलाबद्ध प्रासंगिक वृत्त जिसमें किसी कहानी, कथानक, कविता, चित्र अथवा पौराणिक आख्यान को कई भागों अथवा अंशों में दिखाया जाता है या प्रदर्शित किया जाता है। **प्रकरण / उपाख्यान अंश/वृत्त**

Erotic Art (ईरोटिक आर्ट) - काम विषयक कला जिसको धार्मिक, वैज्ञानिक व सामाजिक दृष्टि से मान्यता प्राप्त होती है । **कामुक कला**

Escapism (इस्केपिज़्म) - द्वेष, पूर्वअवधारणा, कल्पना, असामाजिकता, पलायनवादी दृष्टिकोण व अवसाद की स्थिति में अथवा सोच से चित्र बनाना । यह नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव वाले चित्र होते हैं, जिनके द्वारा समाज में भय, डर, निन्दा व्याप्त होती है एवं इस प्रकार के चित्रों से समाज को सावधान भी किया जाता है ।

पलायनवाद / नकारात्मक चित्रण

Esoteric (एसॅटेरिक) : कला सम्बन्धी गुरु-शिष्य परम्परा । दक्ष कलाकार कला की बरीकियों को शिष्यों को सिखाता है । **गूढ़ / दीक्षा सम्बन्धी कला**

Etching (एचिंग) - तेजाब द्वारा धातु प्लेट की खुदाई । इसे अम्ल उत्कीर्णन कहा जाता है । इस तैयार प्लेट से चित्रों को मुद्रित किया जाता है । इस तकनीक का प्रारम्भ 16वीं शताब्दी से उत्तरी यूरोप एवं इटली में माना जाता है । यह एक लैटिन शब्द है ।

निक्षारण / अम्ल उत्कीर्णन

Etruscan Art (इट्रस्कन आर्ट) : इटली की प्राचीन कला जो इट्रस्कन नगर के नाम से प्रचलित हुई । ई.पू. 8वीं शती से ई.पू. चौथी शती तक पनपी समाधि गृह (मकबूरों) एवं पात्रों की कला । इन पर ज्यामितीय अभिप्राय, नर्तकी, पशु, पेड़-पौधे, मानव-आकृतियाँ अंकित हैं । समाधि गृह में सुन्दर चित्रित पात्र, माणिरल, आभूषण तथा हाथी दाँत की उत्कृष्ट वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं । मूर्तियों में कांस्य की पशु आकृति प्राप्त हुई है । चित्र फ्रेस्को पद्धति से बने हैं । इनके विषय क्रीड़ा, आखेट व दैनिक जीवन हैं ।

इट्रस्कन कला

Experimental Art (इक्सपेरिमेंटल आर्ट) - प्रयोगवादी कला जिसमें कलाकार नवीन प्रयोग कर कृति की रचना करता है । आधुनिक कला में इस प्रकार के प्रयोग खूब किये जाते हैं । **प्रयोगात्मक कला**

Expressionism (इक्सप्रेशनिज़्म) : इस कला आन्दोलन का प्रारम्भ बीसवीं शती के प्रारम्भ में प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त जर्मन में हुआ था । इस आन्दोलन का प्रवर्तक चित्रकार नार्वे के **एडवर्ड मुंक** था । इस आन्दोलन का ध्येय विषय - वस्तु के बाह्य रूप की उपेक्षा कर निजी भावनाओं के रूप में चित्रित करना अर्थात् अपने अनुसार सरल ढंग से अभिव्यक्त करना था । इस शैली के कलाकारों का मानना था कि यथार्थ की अनुकृति तुच्छ है । एक चित्रकार को यथार्थ का भेद कर आध्यात्मिक व बौद्धिक स्तर पर एक नवीन शैली की स्थापना करनी चाहिए । वस्तुओं की गतिशीलता पर विशेष विचार हुआ । सभी वस्तुओं को मानव संवेग

के आधीन माना गया। प्रभावशाली मानवीय भावों को सरल रूप में अंकित किया गया। इस आन्दोलन के प्रमुख कलाकार जेम्स एन्सोर, फर्डिनोड होल्डर, जार्ज रूओल्ल, वान गॉग, पौला मोडेरसोन बेकेर, लुडविग किर्चनर, एरिक हैकल, मैक्स बेक मान, कार्ल स्मिरोल लुफ, एमिल नोल्डे, ओस्कर, कोशका, वासिली कान्दिंस्की, फ्रांजमार्क तथा पाल क्ली थे।
अभिव्यंजनावाद

Expressionist Art (इक्सप्रेशनिस्ट आर्ट) - आत्मनिष्ठ कला जिसमें कलाकार अपने आन्तरिक भावों को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार की कला, भावना प्रधान होती है।
अभिव्यंजनावादी कला

Exterior Design (इक्सटिरियर डिज़ाइन) : भवन की बाह्य (सामने का) भाग की योजना-रूपरेखा बनाना अथवा अभिकल्पना को रेखांकित करना या बाह्य स्वरूप का रूपांकन प्रस्तुत करना।
बहिर्भाग / बाह्य रूप योजना

Eye Level (आई लेवल) : दृष्टि के समानान्तर क्षैतिज रेखाएँ। वस्तु चित्रण, प्रकृति चित्रण एवं वास्तु कला में आई लेवल का बहुत महत्व होता है। समतलन दृष्टि

फ

Facade (फ़ासाड) - भवन के सामने का भाग अथवा अग्रभाग। मुखौटे को भी कहते हैं।
गृहमुख

Fantasy (फैंटेसी) - सुसुप्त चेतना का कल्पित चित्र अर्थात् कल्पना चित्र जिसमें कपोल कल्पना व विचित्रता का भाव रहता है। इस प्रकार के चित्रों का भौतिक अस्तित्व नहीं होता।
फ़ंतासी / अतिकल्पना

Fashion Designing (फैशन डिज़ाइनिंग) - वस्त्र विन्यास कला जिसमें वस्त्रों या पोशाकों को विभिन्न प्रकार से बनाया व सजाया जाता है तथा इनमें कई प्रकार से रचनात्मक कढ़ाई-सिलाई की जाती है।
भूषाचार अभिकल्पन

Fauvism (फॉविज़्म) : नव कलाकारों की वह कला जो मनुष्य की प्राकृतिक स्थिति अनिवर्चनीय परिकल्पनाओं एवं नैराश्यपूर्ण दृष्टिकोण पर आधारित थी। फाववाद आन्दोलन मूलतः तीन वर्षों तक सन् 1905 से 1908 तक चला। सर्वप्रथम पेरिस के 'सलॉन दोतान' में इस आन्दोलन के चित्र सन् 1905 में प्रदर्शित हुए और कला समीक्षक 'वोक्सेल' ने इसका नामकरण किया। नवीन रंग योजनाओं, स्वच्छन्द प्रयोगों एवं प्रकृति प्रदत्त रूपों को इच्छानुसार परिवर्तित कर, बिना अनुपात का ध्यान रखे, सरलता से प्रस्तुत करना ही फाववादियों का

उद्देश्य था। विषय मानवीय संवेदना पर आधारित थे। इन कलाकारों की समाज में कटु आलोचना हुई, इन्हें 'फाव' (जंगली पशु) कहा जाने लगा। इन कलाकारों ने प्रकृति के रूपों को विकृत नहीं किया था बल्कि एक नये रूप में, नवीन माध्यम से, मन की प्रवृत्तियों को रचा था। इस कला में संवेदना के साथ बौद्धिकता का भी समावेश था। मुख्य चित्रकार हेनरी मातिस और जार्ज रूआल्ल, माक्वे, आंद्रे देरें, वाल्ला, मोरिसैब्लामैक, फ्रिस, वान, डोन्जेन, मांग्वें, रैलघुफि, पॉल गागिन एवं प्वी आदि थे।

फाववाद

Felt tipped Pen (फ़ेल्ड टिप्ड पेन) : स्याही चित्रांकन के लिए उपयुक्त पेन जिसमें निब के स्थान पर नमदा (जमाया हुआ ऊनी कपड़ा) का एक लम्बा टुकड़ा रहता है जिसका एक सिरा पेन में भरी स्याही में डूबा रहता है। (अब बाजार में फाइबर टिप्ड पेन मिलते हैं) इस पेन द्वारा चौड़े आघात आसानी से लगाये जा सकते हैं।

नमदा-नोक लेखनी

Finger Painting (फिंगर पेन्टिंग) : अंगुलियों द्वारा छाप दे-दे कर नये-नये रूपों का सृजन कर, चित्र बनाना। इस पद्धति के चित्रों में ब्रशों का प्रयोग नहीं किया जाता।

अंगुलि चित्रण

Figurative Painting (फिग्युरैटिव पेन्टिंग) - मानव आकृति प्रधान चित्रांकन जिसमें मानव आकृतियों को ही प्रमुखता से बनाया जाता है।

लाक्षणिक चित्र

Fine Arts (फाइन आर्ट्स) - आनन्द व सौन्दर्य से ओत-प्रोत स्वतंत्र ललित कलाएँ जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से चित्र, मूर्ति, वास्तु, काव्य, नृत्य, संगीत व नाट्य कलाएँ आती हैं। बोध एवं आध्यात्मिक चेतना पर आधारित सौन्दर्ययुक्त ललित कलाएँ प्रायः भाव एवं रस-प्रधान होती हैं। इन कलाओं में भाव तत्व, विचारों, कल्पनाओं, संवेदनाओं, अनुभूतियों, क्रिया-कलापों एवं चेष्टाओं का प्रकटीकरण किया जाता है। ये कलाएँ प्रायः क्रिया आधारित होती हैं। इनका उद्देश्य अभिव्यंजना के साथ-साथ लोकमंगल की कामना एवं आनन्द की प्राप्ति से है। क्रिया व गुणों के आधार पर इन कलाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है—दृश्यकला एवं मंचीय कला। मंचीय कला में काव्य, संगीत, नाट्य एवं नृत्य (इन कलाओं को प्रदर्शनकारी कलाएँ कहकर भी सम्बोधित किया जाता है) और दृश्यकला में चित्र, मूर्ति एवं वास्तु हैं। दृश्य कलाओं का रसास्वदन नेत्रों एवं मंचीय कलाओं का आस्वादन नेत्रों व कानों द्वारा होता है।

ललित कलाएँ

Finishing Touch (फिनिशिंग टच) - कलाकृति पूर्ण करते वक्त अन्तिम चरण में किया गया कार्य, जिससे कृति में और निखार आ जाता है।

अंतिम सज्जा/कार्य
दृश्यकला कोश / 47

Fixative (फिक्सैटिव) - वह तरल पदार्थ जिसमें रंगकणों को बाँधने-चिपकाने का गुण हो। इस प्रक्रिया से चित्र में स्थायित्व आ जाता है। सूखे बत्ती-रंगों जैसे-पेस्टल, चाक, सेंग्विन, कौण्ट एवं चारकोल आदि से बने चित्रों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए एक तरल बन्धक जिससे चित्र लम्बे समय तक सुरक्षित रह सकें। यह बाजार में तैयार मिलते हैं और अपने भी बनाये जा सकते हैं। इसके प्रयोग में एक दोष रहता है कि चित्र के रंगों का प्रभाव यथावत् नहीं रह पाता। **स्थिरीकारक**

Flochetage (फ्लोशेताज) : चित्र में रंगों के धब्बे लगा कर प्रभाववादी चित्र की रचना करना। यह एक फ्रेंच शब्द है जिसका अभिप्रायः धब्बांकन से है। **धब्बांकन**

Fluting (फ्लूटिंग) : भवन की भित्तियों अथवा खम्भों पर क्रमबद्ध धारियों द्वारा अलंकरण। **नाली अलंकरण**

Folk Art (फोक आर्ट) - जन-जन के मानस में रची-बसी कला जो ग्रामीण परिवेश में सरल रेखाओं व सहज रूपों द्वारा बनायी जाती है और परम्परागत तरीके से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। इस कला में बिन्दु व रेखा का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। प्रत्येक स्थान की लोककला में क्षेत्रीयता का समावेश रहता है भारत में यह सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावना से ओत-प्रोत होती है। **लोककला**

Folk Art Museum U.P. (फोक आर्ट म्यूज़ियम यू.पी.) : भारत में लोक कलाओं को संकलित, संरक्षित एवं प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इस प्रकार के संग्रहालयों की स्थापना की गयी है। इसी क्रम में लखनऊ (उ.प्र.) में फरवरी सन् 1989 में लोककला संग्रहालय की स्थापना कैसरबाग में हुई। वर्तमान में यह संग्रहालय बनारसी बाग (चिड़ियाघर परिसर) में स्थित है। इस संग्रहालय में भारत की दुर्लभ तथा उत्कृष्ट लोक-वाद्य, लोक-चित्र, लोक-आलेखन, लोक-आभूषण, मृण् मूर्तियाँ, मुखौटे, बर्तन, खिलौने, पारम्परिक पोशाक, लोहे, ब्रास, काष्ठ, पत्थर के शिल्प आदि का विशाल संग्रह है। यहाँ पर पाँच वीथिकाएँ भोजपुर, अवध, ब्रज, बुन्देलखण्ड तथा रुहेलखण्डल स्थित हैं, जिनमें इन अंचलों के रहन-सहन को दर्शाया गया है। यहाँ पर समय-समय पर विभिन्न लोककला प्रतियोगिता, कार्यक्रम, कार्यशाला, व्याख्यान तथा संगोष्ठी का आयोजन होता रहता है। लोक कलाओं के संवर्द्धन के लिए एवं जनमानस में जन-जागृति लाने के लिए यह संग्रहालय महत्वपूर्ण है। **लोककला संग्रहालय (यू.पी.)**

Fore Ground (फोर ग्राउन्ड) : चित्रकला में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द जिसको चित्रपट पर आगे की ओर अथवा अग्र भाग में अंकित रूपों-आकृतियों के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। ठीक विपरीत पृष्ठभाग में अंकित रूपों - आकृतियों के

संदर्भ में प्रयुक्त पृष्ठभूमि (Back ground) कहकर सम्बोधित किया जाता है।

अग्रभूमि

Fore edge Painting (फ़ोर एंज पेन्टिंग) - 17वीं सदी में इंग्लैण्ड में प्रचलित पुस्तक किनार चित्रण तकनीक, जिसमें मोटी पुस्तक के पृष्ठों के किनारों पर चित्र बनाये जाते थे, जो पुस्तक खोलने पर ही दिखाई पड़ते थे।

अग्रकिनार चित्र

Frame (फ्रेम) - किसी भी चित्र की सुन्दरता व सुरक्षा के उद्देश्य से लगाया गया चौखटा जो प्लास्टिक, फाइबर, धातु व लकड़ी आदि का हो सकता है। चौखटा

Free Expression (फ्री इक्सप्रेसन) - बिना सोचे समझे, बिना पूर्वानुमान के, धारणा व नियम का ध्यान न रख, स्वतन्त्रतापूर्वक, स्वच्छन्द चित्रांकन करना, ही मुक्त चित्रण है।

स्वतन्त्र अभिव्यक्ति

Free hand Drawing (फ्री हैंड ड्रॉइंग) - मुक्त व स्वतन्त्र हाथों द्वारा रेखांकन जिसमें किसी भी यन्त्र की सहायता नहीं ली जाती।

मुक्त हस्त रेखांकन

Freelance Artist (फ्रीलान्स आर्टिस्ट) - स्वतन्त्र रूप से कला कार्य कर जीविकोपार्जन करने वाला कलाकार।

स्वतन्त्र कलाकार

Fresco (फ्रेस्को) - भित्ति चित्रण की एक विधि। जिसकी दो विधियाँ प्रचलन में हैं Fresco Secco एवं Fresco Buono। सूखी भित्ति पर **Fresco Secco** और गीली भित्ति पर Fresco Buono बनाया जाता है। इसकी सतह विशेष विधि द्वारा तैयार चूने से बनायी जाती है। भूमिज एवं वानस्पतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। भारत में फ्रेस्को तकनीक का प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। इटली में 14वीं से 16वीं शती तक फ्रेस्को तकनीक से बने चित्र बहुतायत से बनाये गये।

Fresco मूलतः इटैलियन शब्द है जिसका अर्थ होता है — ताजा पलस्तर। इस तकनीक से चित्र बनाने के लिए खुरदरी भित्ति की सतह को नम कर, विशिष्ट विधि से तैयार एक भाग चूने (कई महीनों का भीगा चूना जिसके पानी को निधार कर पलस्तर के लिए तैयार करते हैं) तथा संगमरमर की बजरी तीन या चार भाग को मिलाकर, चार स्तरों में पलस्तर करते हैं। इस पलस्तर की तह 1 सेमी से 1½ सेमी तक मोटी रहती है। अंतिम स्तर के लेप (**Intonaco**) में मैदा के सामान महीन बजरी को मिलाते हैं। बूनों (Buono) पद्धति से फ्रेस्को बनाने के लिए उतने ही धरातल/भाग में पलस्तर लगाते हैं जितने भाग में चित्रण कर सकते हैं। जल

मिश्रित रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो पलस्तर में बैठकर सूख जाते हैं और स्थायी हो जाते हैं। इस विधि में भूमिज रंगों का प्रयोग किया जाता है। **लेप चित्र**

Frottage Painting (फ्रोटाज् पेन्टिंग) - खुरदरी सतह अथवा लकड़ी के विभिन्न ठप्पों पर कागज को रख मोम रंग, पेन्सिल, चारकोल या रंगीन पेन्सिल द्वारा घिस-घिस कर, प्रभाव देकर चित्र बनाने की पद्धति। 'फ्रोलाज' फ्रेंच शब्द है। इस तकनीक के प्रवर्तक **माक्स एर्न्स्ट** थे। **घर्षण चित्र**

Fusion Art (फ्यूजन आर्ट) - अलग-अलग प्रकार की दो या दो से अधिक शैलियों को मिश्रित कर रचा गया चित्र या मूर्ति। **संलयन / सम्मिलन कला**

Gg

Gallery (गैलरी) : वह कक्ष, हॉल अथवा भवन जहाँ पर दृश्य कलाओं का प्रदर्शन किया जाता हो। यहाँ पर कलाकार अपनी बनायी कृतियों का प्रदर्शन करते हैं और इसके माध्यम से वह सीधे जनता से जुड़ते हैं। इन कला-दीर्घाओं के पास कलाकृतियों का संग्रह होता है। ये कला-दीर्घाएँ कलाकारों की कृतियों को, कला प्रेमी व संग्रहकर्ता को विक्रय करने का कार्य भी करती हैं। कला-दीर्घा प्रचलित शब्द है परन्तु इसे **चित्रशाला, चित्रवीथी एवं कलामण्डप** भी कहा जाता है।

दीर्घा / प्रदर्शन कक्ष

Galvanize (गैल्वेनाइज़) : जस्ता द्वारा पीतल के पात्रों की अन्दरूनी सतह पर कलई करना। जिससे पात्र सुरक्षित रहते हैं तथा आग के प्रभाव से खाना खराब नहीं होता। **जस्ता की परिरक्षित परत/लेवा चढ़ाना**

Garhwal School (गढ़वाल स्कूल) : उत्तराखण्ड के गढ़वाल अंचल की चित्रकला का वास्तविक इतिहास गढ़वाल नरेश **पृथ्वीपत शाह** (सन् 1640-60) एवं महाराज **फतेह सिंह** (सन् 1684-1716) के कार्यकाल से माना जाता है। ये राजा स्वयं चित्रकला प्रेमी थे। राजा फतेहसिंह के समय के दो चित्र राजा-भिखारी व शिकार प्राप्त हुए हैं जो सम्भवतः चित्रकार मोलाराम के वंशज द्वारा चित्रित हैं। इसके पूर्व में महाराज बलभद्र शाह (सन् 1473-98) ने काशी से कलाकारों को बुला श्रीनगर में अपने महल का निर्माण करवाया था, जो वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। गढ़वाल चित्रशैली के चित्रण-विषय प्रायः पौराणिक रहे हैं, साथ ही प्रेम कथाएँ, दरबारी जीवन, गीत-गोविन्द, बिहारी सतसई, महादेव-पार्वती, कृष्ण-

राधा, अष्टदुर्गा, देवी-भवानी, दम्पत्रि, शबीह, नायिका-भेद, दशावतार, ऋतु चित्रण, दाम्पत्य जीवन, नारी आदि भी चित्रित किये गये हैं। चित्रों में पुरुष आकृतियाँ धोती, लम्बा जामा, पटका, पगड़ी धारण किये हुए हैं। स्त्री लहंगा, चोली, आभूषण से सुसज्जित बनायी गयी हैं। पृष्ठभूमि में पर्वतमाला, वास्तु, पुष्प से अच्छादित वृक्ष, अलंकरण से युक्त सज्जा, पीठिका, दूर बसे गाँव, चक्राकृत जल-धाराएँ, पशु-पक्षी आदि अंकित हैं। इस क्षेत्र का प्रसिद्ध चित्रकार मोलाराम (सन् 1743-1833) था। गढ़वाल शैली का वास्तविक इतिहास इसी चित्रकार से प्रारम्भ माना जाता है। अधिकांश चित्रों को अलंकृत अण्डाकार सीमा में बनाया गया है।

गढ़वाल चित्रशैली

Genre Art (जेनर आर्ट) - दैनिक जीवन की घटनाओं पर आधारित चित्र जो यूरोप में 14वीं व 15वीं शताब्दी में बनाये गये। भारत में इस प्रकार के चित्र भी बहुतायत से बने। इसका श्रेष्ठ उदाहरण है 'कालीघाट' शैली के चित्र। **दैनिक-जीवन चित्रण**

Geometric Art (जिऑमेट्रिक आर्ट) - ज्यामितीय रूपों द्वारा रचित चित्र इस श्रेणी में आते हैं। जैसे घन, बेलन, शंकु, वर्ग, आयत, वृत्त, त्रिकोण आदि से बने चित्र अथवा इन रूपों के प्रभावों से बने चित्र।

ज्यामिती कला

Gel (जेल): यह तेल चित्रण का उपयुक्त माध्यम (Medium) है। ट्यूब में उपलब्ध जेल माध्यम द्वारा चित्र बनाने से जल्दी सूखते हैं। इसके प्रयोग से रंगों की चमक बढ़ जाती है। इसके द्वारा बनाये गये चित्रों में रखरखाव में सतर्कता बरतनी चाहिए नहीं तो फफूंदी लगने का भय रहता है।

जेल

Gelatine (जेलैटीन): चिपकाने हेतु प्रयोग में आने वाला चिपचिपा लसदार पदार्थ जो मृत भैंस आदि पशुओं के सींग अथवा खुर के पास के मांस से विशेष पद्धति द्वारा तैयार किया जाता है। यह पपड़ी रूप में बाजार में उपलब्ध रहता है। इसे गर्म पानी में डाल, कार्य हेतु तैयार किया जाता है।

सरेस

General Colours (जेनरल कलर्स): वह रंग जिसको सामान्यता प्रत्येक व्यक्ति पहचान लेता है। ये आठ रंग लाल, पीला, नारंगी, हरा, नीला, बैंगनी, काला एवं सफेद होते हैं।

सामान्य रंग

Geometrical Form (जिऑमेट्रिकल फॉर्म): ज्यामितीय यन्त्रों अथवा ज्यामितीय आकारों के प्रयोग द्वारा जिन रूपों का सृजन होता है, वह रूप ज्यामितीय रूप कहलाते हैं। इन रूपों का प्रयोग प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरंतर होता चला आ रहा है।

ज्यामितीय रूप

Gesso (जेसो) - चित्रण के लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस/चूना/खड़िया से धरातल बनाने की पद्धति। विशेष विधि द्वारा तैयार की गयी सतह जो शोषक होती है।

जिप्सम / जेसो चित्रभूमि

Gild (गिल्ड) - धातुओं को चमकीला बनाना अथवा सोने एवं चाँदी का मुलम्मा चढ़ाना। विभिन्न धातुओं के पात्र, आभूषण आदि में सोने एवं चाँदी की परत चढ़ा (पॉलिश) कर उन्हें सुन्दरीकृत कर चमकाया जाता है।

परत चढ़ाना/मुलम्मा करना

Glail (ग्लेएल) - चमड़े पर स्वर्ण कार्य।

सोने की परत चढ़ाना

Glass Engraving (ग्लास इन्ग्रेविंग) : काँच की शीट पर 'जिलेटिन' का अस्तर चढ़ा, सुई द्वारा डिजाइन बना, फोटो तकनीक का प्रयोग कर, फोटो कागज (सुग्राही कृत) पर उद्भासित कर चित्र बनाना। 19वीं शताब्दी के अंत में यह विधि विकसित हुई। इस विधि के सर्वप्रथम कलाकार **कैमल कारोंट** (सन् 1796-1875) थे।

काँच उकेरना

Glass Painting (ग्लास पेन्टिंग) : काँच की सतह पर काले रंग (एक्रेलिक, फ्रैबिक, ग्लास रंग माध्यम आधारित या ग्लास लाइनर) का बाह्य रेखांकन कर, ग्लास रंगों का प्रयोग कर, चित्र तैयार करना। यह ग्लास रंग विलायक तथा जल पर आधारित होते हैं और पारदर्शी होते हैं। सतह पर सीधे लगाये जाते हैं। इस प्रकार के चित्र कल्पनात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। यह रंग धातु रंगों अर्थात् सुनहरा, चमकीला तथा ताँबे के रंग में भी उपलब्ध रहते हैं। इस प्रकार के चित्रों की सुरक्षा हेतु फ्रेमिंग आवश्यक है।

काँच चित्रण

Glaze (ग्लेज़) - एक रंग की तह के ऊपर दूसरे रंग की पतली तह लगाना जिससे नीचे का रंग दिखता रहे। अथवा चित्र बनाकर चमक हेतु सम्पूर्ण चित्र में चमकदार तेल या वार्निश ऊपर से लगाना।

पारदर्शक आवरण/चमक

Golconda School (गोलकुण्डा स्कूल) : दक्षिण चित्रशैली की एक उपशैली जिसका प्रारम्भ **सुल्तान इब्राहीम कुतुबशाह** (सन् 1550-1580) के कार्यकाल से हुआ। यहाँ के प्रारम्भिक चित्रों में ईरानी प्रभाव तथा बाद के चित्रों में मुगलिया प्रभाव रहा है। यहाँ के बने पट चित्र विदेशों में भेजे जाते थे। यहाँ के चित्र विषय - दरबारी जीवन, मुखाकृति (पोर्ट्रेट), राग-रागिनी, नृत्यांगना एवं मैना-स्त्री है। सन् 1688 में औरंगजेब ने यहाँ कब्जा कर सूबेदार नियुक्त कर दिया तत्पश्चात् यहाँ की शैली का विकास रुक गया।

गोलकुण्डा चित्रशैली

Golden-Age (गोल्डन एज) - कला-इतिहास का वह काल जिसमें कला उत्कृष्ट रूप से खूब फली-फूली व कृतियाँ आदर्श, गुणवत्ता वाली और श्रेष्ठ बनीं जो उस काल का प्रतिनिधित्व करती हैं। **स्वर्ण युग**

Gothic Art (गोथिक आर्ट) - वास्तुकला जिनमें ऊँची व नोकदार मेहराबें बनती थीं। बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी तक यह कला पश्चिमी यूरोप में खूब प्रचलित थी। इस कला का प्रादुर्भाव 12वीं शती के मध्य में पेरिस में हुआ। प्रारम्भ में इसे फ्रांसीसी शैली के नाम से सम्बोधित किया गया। फ्रांस के पश्चात् यह शैली इंग्लैण्ड, जर्मनी, स्पेन, इटली तक फैली। यह मुख्यता स्थापत्य कला थी, जिसमें नुकीली मेहराब, नुकीले शिखर एवं खिड़कियों से युक्त भवन, गिरजाघर व कैथीड्रल बनाये गये जो इस कला-शैली की विशिष्टता को प्रकट करते हैं। खिड़कियाँ लम्बी रंगीन काँच-चित्र से युक्त, विशिष्ट देदीप्यमान प्रभाव उत्पन्न करने वाली बनायी गयी थीं। इसके अतिरिक्त इस कला का स्वरूप हस्त-लिखित चित्रित पाण्डुलिपियों, कशीदाकारी, पर्दे, धातु कला-कृतियों एवं हाथी दाँत की कला-कृतियों में देखने को मिलता है। रंगीन शीशा-चित्र के विषय ईसा मसीह एवं सन्त-महात्मा थे। इस शैली के प्रसिद्ध चर्च, सेण्ट चैपेल, सेन्ट डेनिस (फ्रांस) है तथा प्रसिद्ध पुस्तक 'ट्रेस रिचेज आवर्स, आवर्स आफ इटीन शिवेलियर' है।

गोथिक कला

Gouache (ग्वआश)- चित्रण पद्धति जिसमें अपारदर्शी रंगों का प्रयोग होता है जैसे Poster colour। 13वीं शताब्दी में फ्रांस के चित्रकारों ने इस पद्धति का खूब प्रयोग किया था। **अपारदर्शी रंग चित्रण**

Gouge (गाउज़) : उत्कीर्णन औजार जो U तथा V आकार के होते हैं। इनके द्वारा काष्ठ, लिनोलियम एवं रबड़ को उकेरित किया जाता है। **रुखानी / टॉकी**

Graffiti (ग्रेफ़ीटि) : भित्ति चित्रण विधि। 18वीं शताब्दी में इस कला का प्रारम्भ यूरोप में हुआ। अमेरिका में यह 20वीं शताब्दी में प्रचलित हुई। यह भित्ति-चित्रण की एक विधा है जिसमें सार्वजनिक स्थानों की दीवारों पर अपनी अभिव्यक्ति कर सन्देश बनाये जाते हैं, दीवारों को चित्र से सुसज्जित कर सुन्दर बनाया जाता है। यह संस्थान या कॉर्पोरेट के लिए सन्देश देने का भी कार्य करती है। भारत में कुछ दशकों से इसका प्रचलन बढ़ा है। आयोजन और उत्सव में इसका प्रयोग खूब हो रहा है। **अभिरंखण**

Graffiti Artists (ग्रेफ़ीटि आर्टिस्ट) : जो कलाकार भित्ति में चित्रांकन कर संदेश देते हैं अथवा अजब-गजब तरह से भित्ति को सजाते हैं। **भित्ति-चित्रण कलाकार**

Grand Style (ग्रैंड स्टाइल) : प्राचीन समय की उत्कृष्ट कला की विशेषता अथवा

भव्यता को दर्शाने के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। **भव्य रीति**

Granite (ग्रेनाइट): स्फटिक अथवा बिल्लौरी पत्थर जो सख्त किस्म का होता है। यह पारदर्शी सफेद तथा विभिन्न रंगों में अपारदर्शी चित्तीदार होता है। तैयार होने के पश्चात् यह चिकना तथा विशेष चमक वाला बन जाता है।

स्फटिक / सख्त बिल्लौरी पत्थर

Graphic Art (ग्रेफिक आर्ट)- चित्र मुद्रण कला जिसमें एक कृति द्वारा अनेक प्रतिकृतियाँ तैयार कर ली जाती है। जिसकी तीन विधियाँ उभार सतह, अन्तः सतह एवं समतल सतह प्रणाली प्रचलन में हैं। जैसे-लिथोग्राफी, एचिंग, बुडकट, लिनोकट, इन्ग्रेविंग, मेजोटिन्ट, एक्वाटिन्ट, ऑफसेट लिथोग्राफी एवं सिल्क स्क्रीन प्रिन्टिंग इत्यादि।

आलेखी / चित्रोपमा छापा कला

Graphic Block (ग्रेफिक ब्लॉक): छापाचित्र ठप्पा। इसको बनाने की तीन तकनीक हैं, प्रथम-उभार सतह उकेरन, द्वितीय-अन्तः सतह उत्कीर्णन और तृतीय-समतल सतह प्रणाली। इन तकनीकों की अन्य पद्धतियाँ हैं, जो निम्न हैं—

प्रथम पद्धति — धातु के पत्तर (ताम्र तथा जिंक) पर सीधे उत्कीर्ण कर। (अन्तः सतह उत्कीर्णन)

द्वितीय पद्धति — धातु के पत्तर पर वार्निश अथवा वैक्स वार्निश की तह लगा, सुखाकर, इन्ग्रेव कर अम्ल-बाथ कराकर। (अन्तः सतह उत्कीर्णन)

तृतीय पद्धति—काष्ठ, रबड़ अथवा लिनोलियम की सतह को उकेर कर। (उभार सतह)

चतुर्थ पद्धति — विशेष विधि द्वारा सतह को उभार (Emboss) कर। (उभार सतह)

पंचम पद्धति — जो छापा जाता है उसे न तो उभारा जाता है और न ही खोदा जाता है, सिर्फ सतह पर ड़ों कर, विशेष पद्धति के प्रयोग से शिला अम्लांकन कर प्रिण्ट निकाले जाते हैं। इस विधि को 'लिथोग्राफी' कहते हैं। (समतल सतह)

छापा चित्र-ठप्पा

Graphics (ग्रेफिक्स) - कलाकार द्वारा छापा गया चित्र जिन पर प्रमाणिकता के लिए हस्ताक्षर और प्रति संख्या भी अंकित की जाती है। ग्राफ से चित्र बनाने की कला को भी कहते हैं।

आलेख विद्या/ आलेखनीय कला

Graver (ग्रेवर) - छापा चित्रण में डिजाइन को उकेरने हेतु प्रयोग में आने वाला औजार। स्टील अथवा लोहे धातु से बना यह औजार जिसमें लकड़ी का हथ्या लगा रहता है। यह उत्कीर्णक/टांकीयाँ विभिन्न माप की होती है। **उत्कीर्णक/टांकी**

Graver (ग्रेवर) - नक्काशी करने वाला यानी वह कलाकार जो काष्ठ, पत्थर आदि धरातलों पर नक्काशी कर मूर्ति या उभार-पट बनाता है। इसे **नक्काश** या **मूर्तिकार**

(Graver) कहा जाता है ।

उत्कीर्णक

Greek Classical Art (ग्रीक क्लासिकल आर्ट) : मानव के आदर्श भौतिक स्वरूप का यथार्थ अंकन, ग्रीक कला की विशेषता थी । इस कला के दो केन्द्र ओलम्पिया व एथेन्स थे । इस कला का आरम्भिक स्वरूप 1500 ई.पू. से प्रारम्भ माना जाता है परन्तु शास्त्रीय ग्रीक कला 480 ई.पू. से 300 ई.पू. तक उत्कर्ष रूप से पनपी । यह कला चित्र, मूर्ति एवं वास्तु तीनों में परिलक्षित हुई । संगमरमर एवं कॉप्स से बनी प्रतिमा भौतिक यथार्थवादी की पराकाष्ठा थी जो 40' फीट तक की ऊँचाई की बनी थी । 420 ई.पू. में चित्रकला का प्रारम्भ हुआ था । फारसी आक्रान्ताओं ने सन् 480 में यहाँ की मूर्तियों एवं वास्तु को तहस-नहस कर डाला था । इस कला को यथार्थ का आदर्श स्वरूप मान इसका अनुकरण 14वीं से 16वीं शती तक 'पुनरुत्थान काल' के रूप में पनपा था । इस युग में मानवाकृतियों का विश्लेषण कर शारीरिक आदर्शों के उपमानों का ध्यान रख, गतिपूर्ण मुद्राओं का अंकन किया गया । प्रसिद्ध मूर्ति डेल्फी की नग्न प्रतिमा, काम के देवता क्यूपिड, मल्ल, ज्यूस, एथीना (आदर्श नारी रूप) व विजय श्री आदि थी । ग्रीक शास्त्रीय कला

Green Room (ग्रीन रूम) : वह प्रसाधन कक्ष जहाँ कलाकार, नृत्यक, अभिनेता एवं संगीतज्ञ आदि प्रस्तुति के लिए तैयार होते हैं अथवा उनकी रूप-सज्जा की जाती है । मूलतः इस शब्द का प्रयोग रंगशाला, नृत्यशाला एवं प्रेक्षागृह के रूप-सज्जा कक्ष अथवा वेश-भूषा कक्ष के लिए किया जाता है । नेपथ्यशाला / सज्जा कक्ष

Gresaille (ग्रेसाले) : यह एक रंगीय तकनीक है । जिसमें एक ही रंग के विभिन्न धूसर उपवर्ण दे कर चित्रण कार्य किया जाता है । एक वर्णीय चित्र

Grotesque (गोटिस्क) : अर्ध मानव एवं पशु की मिश्रित रूपाकृति । जैसे — नरसिंह अवतार, मत्स्य कन्या (जलपरी), नराश्व (आधा घोड़ा-आधा मानव) आदि ।

विलक्षणाकृति

Grounding (ग्राउन्डिंग) : चित्रण हेतु तैयार भूमि । उपर्युक्त धरातल जिसको विशेष प्रकार का लेप लगाकर तैयार किया जाता है । चित्रफलक पर सीधे रंग लगाने से रंग स्थायी नहीं रह पाते और न ही मनवांछित परिणाम देते हैं । इसलिए चित्रण हेतु चित्र सतह पर चूर्ण पदार्थों के साथ बन्धक तरल मिलाकर अथवा बाजार में तैयार लेप को लेकर धरातल पर लगाते हैं जिससे सतह उपर्युक्त चित्रांकन लायक बनती है । अस्तर का कार्य / भूमि बन्धन

Group 1890 (ग्रुप 1890) : दिल्ली व बम्बई के कलाकारों का समूह जिसकी स्थापना गुजरात, भावनगर में 26 अगस्त 1962 में हुई थी । जे. स्वामीनाथन ने समूह का

घोषणा-पत्र तैयार कर 19 जुलाई 1963 में इसे दिल्ली में लागू किया। इस संस्था का नाम एक कलाकार **जे. पाण्ड्या** के मकान नम्बर के आधार पर किया गया क्योंकि इस संस्था का गठन यहीं पर किया गया था। इस संस्था की प्रथम प्रदर्शनी 1963 में ललितकला अकादमी दीर्घा, नई दिल्ली में हुई। इस संस्था के प्रमुख चित्रकार **जे. राम पटेल, गुलाम मो. शेख, के. अम्बादास, हिम्मतशाह, ज्योति भट्ट, राजेश मेहरा, एरिक बोवेन, राघव कनेरिया, एम.रंगप्पा नायडू, एस.जी. निगम** एवं **बाल कृष्ण पटेल** थे। इन कलाकारों ने व्यक्तिगत स्तर पर अपनी-अपनी शैली विकसित कर भारतीय कला को नया आयाम दिया। इन कलाकारों ने अचेतन मन को महत्व दिया तथा अतिथ्यार्थ सिद्धान्त का अनुपालन किया। **समूह 1890**

Guild (गिल्ड)- चित्रकारों की संस्था जिसमें उस्ताद चित्रकार के साथ सहायक और नौसिखिये कलाकार सम्मिलित रूप से कार्य करते थे। यह संस्था यूरोप में मध्य काल में चित्रकारों ने अपनी आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा हेतु बनायी थी।

शिल्पी संघ

Guler School (गुलेर स्कूल): हिमाचल प्रदेश में स्थित गुलेर जो कभी एक राज्य हुआ करता था। इसकी नींव सन् 1405 में **राजा हरिश्चन्द्र** ने रखी थी। गुलेर चित्रशैली स्थानीय हिन्दू लोक चित्रकारों एवं मैदानी स्थानों से आये शरणार्थी मुगल चित्रकारों के समन्वय से विकसित चित्रशैली थी। यह शैली 18वीं शती में अपने पूर्ण यौवन में थी। इस शैली के सच्चे प्रवर्तक **राजा गोवर्धन चन्द्र** (सन् 1730-73) थे। गुलेर चित्रकला का वैभवपूर्ण केन्द्र था। यहाँ के चित्रकार अन्य पहाड़ी रियासतों में जा कर अन्य पहाड़ी शैलियों को विकसित किया। चित्रों की पृष्ठभूमि में संगमरमरी वास्तु के साथ शान्त, प्राकृतिक पहाड़ी वातावरण को चित्रित किया गया है। विषय आवक्षचित्र, राजपरिवार, नायिका, प्रेम-प्रसंग, रामायण, गीत-गोविन्द, श्रीकृष्ण लीला, भागवत पुराण आदि थे। यहाँ कई ग्रन्थ भी चित्रित हुए हैं। आकृतियाँ लम्बी बनायी गयी हैं। पुरुष, धोती, जामा, साफा व दाढ़ी मूँछों से युक्त बनाये गये हैं। स्त्री आकृति लम्बा चुन्नटदार घाघरा, लम्बी चुनरी, धोती, पैजामा धारण किये हुए बनायी गयी है। आकृतियों में प्रेम आसक्त नयन, मोटी नाक, पतले अधर, लम्बा चौड़ा मुख, कमनीय काया, आभूषण आदि पहने हुए दर्शाया गया है। हाशिये सादे व अलंकृत दोनो प्रकार के बनाये गये हैं।

गुलेर चित्रशैली

Nh

Half Tone (हाफ़ टोन) - एक रंगी मुद्रण में छाया-प्रकाश का प्रभाव विभिन्न सूक्ष्म-बिन्दुओं द्वारा दिखाया जाता है अथवा काले व श्वेत के मध्य की विभिन्न छटाएँ।

अर्ध प्रकाश/बिन्दु-चित्र

Hallmark (हॉलमार्क) : सोने (धातु) के आभूषणों की गुणवत्ता एवं शुद्धता के लिए लगाया गया प्रमाणिक चिह्न। **कसौटी / प्रमाणिकता चिह्न**

Handling (हैंडलिंग) - सधे हुए हाथों के संचालन से चित्र या मूर्ति सृजन। **निर्वाहण**

Hand Roller (हैंड रोलर) : छापा चित्रण हेतु ब्लॉक में, स्याही लगाने हेतु इस उपकरण का प्रयोग किया जाता है। यह मुलायम से लेकर कठोर रबड़ एवं जिलेटिन की गद्दी वाला आता है। कठोर रोलर का प्रयोग उभार सतह कर्तन और मुलायम रोलर का प्रयोग अन्तः सतह उत्कीर्णन के लिए किया जाता है। यह गोल बेलनाकार रबड़ का बना होता है। इसे आगे-पीछे ले जाने के लिए बेलनाकार रबड़ के बीच में एक सरिया पड़ी रहती है, जो एक हथ्थे से जुड़ी रहती है। इसका व्यावसायिक नाम 'बरेयर' है। **हस्त-बेलन**

Handicraft : (हैन्डिक्राफ्ट) : दस्तकारी कला जिनमें सामाजिक, धार्मिक उपयोग की अथवा सजावटी वस्तुएँ बनायी जाती हैं। इस कला में अनुकृत का योग रहता है। हस्त-शिल्पकार रीति-रिवाज, संस्कार, तीज-त्योहार, अनुष्ठान, लोक-विश्वास, उपयोगिता, सजावटी एवं बच्चों के खिलौने बनाते हैं। इस कला में मूर्तियाँ, चित्र, पात्र, वस्त्र की कढ़ाई-बुनाई, ज्वेलरी, डलिया-चटाई, सीप-शंख-हाथी दाँत आदि की अलंकृत वस्तुएँ बनायी जाती हैं। हाथों से की गयी कुशल कारीगरी के कारण इसे हस्तशिल्प कला कहा जाता है। **हस्त शिल्पकला**

Hand-span (हैंड स्पैन) : हथेली के अँगूठे के सिरे से कनिष्ठा के सिरों के मध्य की दूरी को बिल्ला कहा जाता है। प्राचीन समय में 12 अंगुल का एक बिल्ला अर्थात् एक ताल होता था। ताल माप का पैमाना था। **बालिशत/बिल्ला**

Hanging (हैनिंग) - अलंकृत कृति अथवा सजावटी पर्दा-चित्र जो दीवारों पर लटकाये जाते हैं। **लटकन / पर्दा चित्र**

Hatching (हैचिंग) - छाया-प्रकाश की एक विधि जिसमें त्रिआयामी प्रभाव देने के लिए समानान्तर रेखाओं के परस्पर छेदी समूह का प्रयोग किया जाता है। **रेखा छाया / रेखाच्छादन**

Hellenistic Art (हैलेनिस्टिक आर्ट) : दक्षिणी इटली के हैलेनिस्टिक क्षेत्र की कला जो ई.पू. 323 से ई.पू. 31 तक पनपी जिसमें वास्तु एवं मूर्तिकला का विशेष योगदान था। मणिकुट्टिम चित्रों के भी उत्कृष्ट प्रमाण प्राप्त हुए हैं। माध्यम के रूप में संगमरमर, हाथी दाँत, सोना, चाँदी, काँस्य आदि का प्रयोग हुआ। सौन्दर्य तथा यथार्थता से परिपूर्ण यह कला अद्भुत है। इस युग में सामूहिक मूर्तियों का निर्माण विशेषता थी। सूर्य की विशाल प्रतिमा, वीनस की मूर्ति, विजय श्री की प्रतिमा

प्रसिद्ध है इनकी गति एवं उत्कृष्ट मुद्रा सृष्टा की कल्पनाशीलता का परिचय प्रकट करती है। इस युग के चित्रों की संख्या न के बराबर है। प्रसिद्ध चित्र अफ्रोदिती एनादायोमीन, कुमारियों से घिरी आर्टमीज, हेराक्लीज़, भाग्य की देवी ताइकी एवं नग्न वीर पुरुष हैं।
हैलेनिस्टिक कला

Hermaphrodite (हरमैफ्रोडाइट) : द्विलिंगी आकार जैसे - अर्द्धनारीश्वर (शिव का अवतार) आदि।
उभयलिंगी

High Key (हाइ की) : उच्च कुँजी का तात्पर्य चित्र में अधिक प्रकाश अर्थात् श्वेत प्रभाव दिखलाने के सन्दर्भ में लिया जाता है।
उच्च कुँजी

High Light (हाइ लाइट) - चित्र के जिस भाग में प्रकाश प्रभाव दिखाना होता है उस भाग को हल्के प्रकाशित रंग का पैच लगाकर या रंग खुरच कर सम्भावित स्थान से हटा कर प्रकाश प्रभाव दिया जाता है। परन्तु जलरंग में उस स्थान पर तल छोड़ दिया जाता है, अर्थात् रंग नहीं लगाया जाता।
उच्च प्रकाश

High Relief (हाइ रिलीफ़) - सतह से उभरी हुई नक्काशी जो शिल्पाकृति को तल से काफी ऊँचा रखती हो।
उच्च उद्भूत

Higher Arts (हाइअर आर्ट्स) - चित्र, मूर्ति व वास्तु-कलाएँ जिनमें मौलिकता, रचनात्मकता व सृजनात्मकता का योग होता है। इन्हें उच्च कलाएँ कहकर सम्बोधित किया जाता है।
उच्चतम कलाएँ

Historical Painting (हिस्टोरिकल पेन्टिंग) - ऐतिहासिक विषय पर बनाये गये चित्र।
ऐतिहासिक चित्रण

Hobby Painter (हॉबि पेन्टर) - शौकिया चित्रकार जिनको चित्र बनाने का शगुल हो और जो कहीं से भी शिक्षित न हों।
शौकिया चित्रकार

Hog Hair Brush (हॉग हेअर ब्रश) - तैल चित्रांकन हेतु कड़े सुअर के बालों से बनी तूलिका।
कड़े बालों की कूँची

Holder (होल्डर) : होल्डर का प्रयोग लेखन, लिपि-लेखन से लेकर चित्रांकन तक सभी के लिए होता है। परम्परागत होल्डर लकड़ी के हथ्ये वाला होता है, जिसमें धातु की निब को हटाने-लगाने की व्यवस्था रहती है। होल्डर से कार्य करने के लिए होल्डर को इंक में बार-बार डुबोना पड़ता है। इसका प्रयोग अब अल्प मात्रा में होने लगा है, क्योंकि बाजार में यह आसानी से उपलब्ध नहीं है। इसके स्थान पर सुविधा जनक **यन्त्रकला पेन (Technical Drawing Pen)** मिलने लगे हैं। जिनमें इंक भरने की सुविधा रहती है।
कलम/लेखनी

Hot Colour (हाट कलर) - वह रंग जो उष्ण प्रभाव वाले होते हैं। जिन्हें देखने मात्र से गर्मी व उत्तेजना का एहसास होने लगता है। यह रंग अति उत्तेजक होते हैं। जैसे- लाल, नारंगी, चमकदार पीला। उष्ण रंग

Hot Pressed (हॉट प्रेस्ड): यह अधिक दबाव देकर अर्थात् गर्माहट देकर कागज बनाने की तकनीक है। इस तकनीक से चिकना कागज तैयार होता है। जो ड्राइंग, स्केचिंग, स्याही चित्रांकन व पोस्टर के लिए उपयुक्त माना जाता है।

अधिक दबाव कागज

Huckster (हैकस्टर): रेडियो, दूरदर्शन एवं चलचित्र गृह आदि के लिए विज्ञापन की पाण्डुलिपि लिखने वाला। फेरी लगाने वाले व्यक्ति को भी कहते हैं।

फेरी / चल/संचलन-विज्ञापन लेखक

Hue (ह्यू): रंगत रंग का गुण अथवा स्वभाव या विशेषता है। रंग अपनी रंगत से पहचाने जाते हैं। जैसे—लालपन, नीलापन एवं हरापन आदि। एक प्रकार से रंगों का वह गुण जिसके द्वारा लाल, पीले एवं नीले के भेद को समझते हैं। रंग / रंगत

Hyderabad School (हैदराबाद स्कूल): हैदराबादी चित्रशैली, गोलकुण्डा चित्रशैली का परिवर्द्धित रूप है। गोलकुण्डा (दक्षिण भारत) के शासक मोहम्मद कुली कुतुबशाह ने सन् 1589 में हैदराबाद को अपने राज्य की नयी राजधानी बनाया था। मुगल बादशाह औरंगजेब के शासनकाल से पीड़ित मुगल चित्रकार जो यहाँ आकर बसे थे। उन्होंने यहाँ स्थानीय शैली को मिश्रित कर एक नयी शैली को 17वीं शताब्दी में जन्म दिया। रंगों में मुगलिया चटकपन नहीं था परन्तु मुगल प्रभाव दिखाई देता है। विषय राग-रागिनी, दरबारी चित्रण, नायिका-भेद, सन्त-महात्मा, कृष्ण-गोपियाँ एवं स्त्रियाँ थीं। प्रसिद्ध चित्रित ग्रन्थ तुजक-ए-आसफी जिसे मीर निजामअली खाँ आसफजाह द्वितीय ने लिखवाया था। बाद के चित्रों में मराठा प्रभाव दिखाई देने लगा था। चित्रों में आकृतियाँ लम्बी-छरहरी बनायी गयी हैं। स्त्रियाँ पारदर्शी ओढ़नी बूटीदार, लहंगा कम घेरदार छींटदार, मोतियों के आभूषण से सुसज्जित बनायी गयी हैं। पृष्ठभूमि में सरोवर कमल से युक्त, हरीतिमा, पशु-पक्षियों का विचरण आदि दर्शाया गया है।

हैदराबादी चित्रशैली

ii

Icon (आईकॉन) - मूर्ति अथवा प्रतिमा। विशेष रूप से ईसा की पवित्र प्रतिमा या

धार्मिक चित्रांकन के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। **मूर्ति/प्रतिमा**
Iconography (आईकनोग्राफी) - शास्त्रीय नियमों का पालन कर धार्मिक मूर्ति निर्माण
कला या पवित्र प्रतिमा विज्ञान। **प्रतिमा विज्ञान**

Illumination of manuscripts (इल्यूमिनेशन ऑफ मेनुस्क्रिप्ट्स) - पाण्डुलिपि सज्जा
जो हस्तलिखित पुस्तक को सजाने की कला है। मध्य युगीन भारत में इस प्रकार
की धार्मिक पुस्तकों को सजाने की रीति थी। **पाण्डुलिपि सज्जा**

Illusionism (इल्यूजनिज्म) - भ्रमजनक कला। जिन चित्रों को देख भ्रम की स्थिति
उत्पन्न हो। इन्हें मायावादी चित्र भी कहते हैं। **भ्रमवाद / भ्रामकतावाद**

Illustration (इल्लस्ट्रेशन) - कथा व कहानी के प्रसंग पर आधारित रेखा-चित्र। इन
चित्रों से सन्दर्भ, विषय, प्रेरणा एवं व्याख्या प्रकट की जाती है। इन चित्रों में
विषयानुरूप विचार, कल्पनाओं एवं मनोभावों को प्रकट किया जाता है। एक
प्रकार से किसी विषय को रेखांकन द्वारा दिखाना। जिसमें विचार, कल्पना,
प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप को बनाया जाता है। यह अखबार, मैग्जीन, किताब के कवर,
पोस्टर के लिए बनाये जाते हैं। इनमें मानवता का झलकना आवश्यक है।

दृष्टान्त चित्र

Imaginary Art (इमैजनेरि आर्ट) : मन की कल्पना को रूपायित करना। कलाकार
अपनी कल्पना को कलात्मक रूप प्रदान कर कृति रूप में सँजोता / प्रस्तुत
करता है। **काल्पनिक कला**

Imaginary Form (इमैजनेरि फॉर्म) : इन काल्पनिक रूपों का स्वरूप यथार्थ,
ज्यामितीय, अमूर्त, आलंकारिक एवं परिष्कृत कुछ भी हो सकता है। ये प्राकृतिक
नियम के विरुद्ध भी बनाये जा सकते हैं। चित्रकार अपनी सोच, संवेदना व
कल्पना से इस प्रकार के रूपों का सृजन करता है।

काल्पनिक रूप

Impasto (इम्पेस्टो) - मोटे-मोटे रंगों अर्थात् गाढ़े रंगों के चप्पे/धब्बे (patch) लगाकर
रंगांकन करना। यह एक 'इटैलियन' शब्द है। **स्थूल रंगांकन**

Imperial Painting Office (इम्पिरियल पेन्टिंग ऑफिस) : जापानी कलाकारों की
संस्था जिसका गठन सन् 886 में किया गया था। यह संस्था चित्रकारों को
संरक्षण प्रदान करती थी तथा उनके हितों की रक्षा करती थी। यमातो-ए-शैली के
उन्नयन में इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान था। **इम्पिरियल चित्रण कार्यालय**

Impressionism (इम्प्रेसिनिज्म) - प्रभाववाद आधुनिक कला का प्रारम्भिक स्वरूप

था, जिसमें रचना बौद्धिक कल्पना के रुढ़िबद्ध नियमों से मुक्त थी। इस प्रकार की कला-कृतियों में यथार्थ अंकन न कर आभासात्मक रूपों का अंकन किया जाता है।

यह आधुनिक चित्रकला का सशक्त आन्दोलन था, जिसकी प्रथम प्रदर्शनी अज्ञात चित्रकारों, मूर्तिकारों व रेखा कलाकारों की परिषद् द्वारा सन् 1874 में हुई। यह प्रदर्शनी कटु आलोचना का शिकार हुई। इस आन्दोलन के समर्थक चित्रकारों ने सांसारिक जीवन का चित्रण किया, जो पुरानी घटनाओं, कथानकों, देवी-देवताओं, महापुरुषों के चरित्र आदि पारम्परिक विषय से बिल्कुल भिन्न थे। इन चित्रों में वातावरण व प्रकाश के समूचे प्रभाव को बदलते हुए रूप में विभिन्न रंगों द्वारा दिखाया गया। मानव के दैनिक जीवन की वास्तविकता को चित्रित किया गया, उनके व्यक्तिगत क्षणों, निजी क्रिया-कलापों को दर्शाया गया। प्रभाववादियों ने व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। वे वस्तु एवं उसकी बनावट और बारीकियों में ध्यान नहीं देते बल्कि दृश्य के सर्वसाधारण प्रभाव का ही अंकन करते थे। यह चित्र खुले आकाश और स्टूडियो दोनों में ही बनाये जाते थे। विषय सागर-तट, बगीचे, घुड़दौड़ के मैदान, नाटकगृह, कैफे, बैले, नग्न स्त्रियाँ, रेलगाड़ियाँ एवं स्टेशन, कामगार, मॉडेल, मदिरालय, गिटार वादक, ग्रामीण क्रिया-कलाप एवं प्राकृतिक दृश्य आदि थे। प्रमुख चित्रकार एदुआर्द माने, मरीसों देगा, व्हिसलर, मोने, पिस्सarro, तुलुज लोत्रेक, रेनोआ, सिसले, बेजिल एवं सेजान आदि थे। प्रभाववाद से चित्रकारों का नजरिया बदला। उन्होंने अनुकृति से हटकर अनुभूति को आधार बना चित्रांकन किया, भौतिकता से परे जाकर मानवीय संवेदना को स्थान दिया। प्रभावशाली चित्रकारों ने सर्वाधिक महत्व प्रकाश को दिया।

प्रभाववाद

Imprimatura (इम्प्रिमेटूरा) - रंगीन धरातल या हल्की पारदर्शी रंग की परत चढ़ा उस पर रेखाचित्र का अंकन करना।

सतह रंगांकन

Industrial Art (इन्डस्ट्रियल आर्ट)- वह कला जो औद्योगिक उत्पादनों को सुन्दर बनाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है।

औद्योगिक कला

Indus Valley Civilization (इन्डस वैली सिविलाइज़ेशन) - भारत में ई.पू. 2700 वर्ष से ई.पू. 1700 वर्ष तक सिन्धु घाटी (विभाजन के बाद यह स्थान पश्चिमी-पाकिस्तान में स्थित है) में एक उन्नत सभ्यता थी। जिसके हड़प्पा (हरियूपिया) एवं मोहन जोदड़ो प्रमुख नगर थे। यहाँ भवन-निर्माण में पकी ईंटों का प्रयोग पाया गया। सड़कें समकोण पर एक दूसरे से मिलती हुई हैं। मकानों के दरवाजे गली की ओर स्थित हैं। पानी के लिए कुओं का निर्माण किया गया है। तथा खराब पानी निकास के लिए नालियाँ बनी हैं। यहाँ खुदाई में 11 मूर्तियाँ

दृश्यकला कोश / 61

प्राप्त हुई हैं इनमें मुख्य हैं — दाढ़ी वाले योगी, कोंस्य की नर्तकी (4 सेमी), दो नग्न धड़ आदि । इसके साथ खिलौने हाथी, गेण्डा, सुअर, वृषभ, सीटी वाली चिड़िया, सलाई में चलने वाला बन्दर एवं अनेक अलंकृत मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं । जिन पर मानव, पशु-पक्षी एवं ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हैं । 1200 से अधिक सिलखड़ी पत्थर की मोहरें भी प्राप्त हुई हैं । इन पर व्याघ्र, हिरण, हाथी व लिपि लिखी हुई है । ताम्र मुद्राएँ एवं आभूषण इस उन्नत सभ्यता की कलात्मकता का परिचय देते हैं । इस सभ्यता को खोजने का श्रेय पुरातत्वविद् श्री कनिघम एवं श्री राखाल दास बनर्जी को जाता है । श्री कनिघम ने सन् 1878 में हड़प्पा और श्री बनर्जी ने सन् 1922 में मोहनजोदड़ो में उत्खनन कराया था ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

Ink (इंक) : स्याही एक तरल माध्यम है जो प्राचीन काल से प्रचलित है । मिस्र, चीन व भारत में इसका प्रचलन प्राचीन काल से हो रहा है । यह लिखने के साथ-साथ चित्र बनाने के कार्य में आती है । प्राचीन समय में पक्षियों के पंख, नरकुल, सरकण्डे एवं बाँस की कलम से लेखन, सुलेखन तथा चित्रण का कार्य किया जाता था, परन्तु विकास के क्रम ने धातु की निब का अविष्कार 19वीं शताब्दी में किया । बाद में उसी से लेखन तथा चित्रण कार्य किया जाने लगा । स्याही चित्रण हेतु मुलायम बालों की तूलिका का प्रयोग किया जाता है । सर्वप्रथम काजल जैसे पदार्थ से निर्मित स्याही, बाद में रसायन के प्रयोग से स्याही बनायी जाने लगी । प्रचलित काली एवं नीली स्याही है, परन्तु बाजार में रंगीन स्याही भी उपलब्ध है । इसे 'भसि', इंक तथा रोशनाई भी कहते हैं । चीन एवं जापान में इससे चित्रण की प्रसिद्ध पम्परा रही है । जापान में इसे 'सूमि' कहकर सम्बोधित किया जाता है । यह तेल व पानी दोनों माध्यम पर आधारित मिलती है । प्रिन्टिंग हेतु तेल माध्यम की इंक होती है ।

स्याही

Inlay (इन्ले) - धरातल में विभिन्न वस्तुओं काँच, नगीने, धातुओं के तार आदि द्वारा जड़ कर किया गया कलात्मक कार्य ।

जड़ाऊ कार्य/पच्चीकारी

Inset (इन्सेट) : पुस्तक में अलग से जोड़े गये पृष्ठ, चित्र अथवा मानचित्र ।

अंतर्विष्ट पृष्ठ

Installation (इन्स्टॉलेशन) - खुले स्थान पर विभिन्न वस्तुओं का अधिष्ठापन कर संयोजन करना जो निर्धारित विषय या प्रकरण पर आधारित होते हैं । सत्तर के दशक में अनेक 'इन्स्टॉलेशन' अमेरिका के सार्वजनिक स्थानों पर खूब किये गये । वर्तमान समय में भारत में यह खूब प्रचलित है ।

स्थापन / संस्थापन

Intaglio (इन्टैग्लियो) - आकृति उत्कीर्णन विधि, जिसमें सतह को उकेर कर आकृतियाँ

बनायी जाती हैं और स्याही लगाकर छापी जाती हैं। सतह प्रायः धातु, काष्ठ या लिनोलियम की होती है। यह एक इटैलियन शब्द है। इस पद्धति में डिजाइन को उत्कीर्ण कर (गहरा) शेष भाग समतल रखा जाता है। स्याही लगाकर छापने पर उत्कीर्ण भाग छपने वाली सतह का (कागज के रंग का) शेष भाग स्याही के रंग का छपता है।

तक्षण-चित्रकारी / अन्तः सतह उत्कीर्णन/उत्कीर्णन

Intensity (इन्टेन्सिटी) : रंगों की प्रबलता का अर्थ प्रायः रंगों के चटकपन से लिया जाता है। इसको वर्णतीव्रता भी कहते हैं।

प्रबलता/रंग तीव्रता

Interior Decoration (इंटीरियर डेकोरेशन) - भवनों की आन्तरिक सज्जा की कला।

जिसमें घर या भवन को विभिन्न प्रकार से सुसज्जित किया जाता है। **भीतरीसज्जा**

Intonaco (इन्टोनको) - फ्रेस्को चित्रण में चित्रण कार्य करने से पूर्व, तैयार चूने की भित्ति का अंतिम लेप। धरातल पर चढ़ायी गयी पलस्तर की अंतिम परत जो चूने व महीन संगमरमर चूर्ण को मिलाकर बनायी जाती है।

अंतिम पलस्तर

Irani Art (ईरानी आर्ट) - यहाँ प्रारम्भिक काल के मिट्टी के पात्र मिले हैं, एवं 6वीं शताब्दी में खपड़ों (Tiles), धातुपात्रों पर उत्कीर्णन व वस्त्रों पर उच्च कोटि का चित्रांकन प्राप्त हुआ है। बाद में बढ़ते इस्लामी प्रभाव के कारण कला के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा। इस समय फूल-पत्तियों का आलंकारिक चित्रण खूब होने लगा। पुस्तकों के हाशियों, पर्दों, दीवारों, गलीचों आदि पर भी चित्र बनाये गये। मध्य काल में लघु चित्र शैली एवं सुलेखन कला का विकास हुआ। ईरानी चित्रों के विषय प्रायः रोमानी कविताएँ, खुसरों, शीरी, इस्कंदर नामा, लैला मजनू, कुलीन युवकों, दरबारियों, राजकुमारों एवं साहित्य आदि रहे हैं।

फारसी कला

Itinerant Artist (इटिनेरन्ट आर्टिस्ट) : भ्रमणशील कलाकार जो हमेशा भ्रमण करते हैं और स्थान-स्थान पर अथवा इधर-उधर घूमकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

घुमन्तू कलाकार

Jj

Jaipur School (जयपुर स्कूल) : जयपुर की स्थापना आमेर के कछवाहा शासक महाराज सवाई जयसिंह (सन् 1699-1743) ने की थी। वर्तमान में यह नगर राजस्थान की राजधानी है। यहाँ की चित्रण-परम्परा के साथ-साथ हस्तशिल्प काफी प्रसिद्ध है। यहाँ के महल, मंदिर, भवनों में भित्ति चित्रण की परम्परा उल्लेखनीय है। चित्रों में पुरुष आकृति चुन्तदार जामा-पैजामा, पटका, पगड़ी,

जूतियाँ पहने हुए एवं स्त्री छींटदार घाघरा, अलंकृत किनारों वाली चुनरी एवं आभूषण से युक्त चित्रित है। पुरुष आकृतियाँ लम्बी, गोल चेहरा, मांसल शरीर, मोटे आँठ, कंधे तक केश हैं। स्त्रियाँ भरे शरीर की, गोल चेहरा, मादक नेत्र वाली बनायी गयी हैं। चित्रण-विषय व्यक्ति-चित्र, शिकार, पशु-पक्षी की लड़ाई, खेल, श्री कृष्ण प्रेम-प्रसंग व लीला, दरबारी-वैभव, नायिका-भेद, बारहमासा, राग-रागिनी, दुर्गा सप्तशती, भगवत पुराण, बिहारी सतसई, पौराणिक आख्यान एवं नारी आदि हैं। हाशिये प्रायः लाल अथवा काले बनाये गये हैं। चित्रों, आकृतियों की बहुलता रही है। इस चित्र शैली को ढूँढ़ार चित्रशैली अथवा कछवाहा चित्रशैली कहकर भी सम्बोधित किया गया है। यहाँ लघुचित्रों के साथ बड़े आकार के चित्र भी बनाये गये हैं। पृष्ठभूमि में वास्तु अंकन, घुमड़ते बादल, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों का अंकन है।

जयपुर चित्रशैली

Jap paper (जाप पेपर) - छापने के लिए प्रयुक्त मुलायम-पतला कागज।

महीन कागज

Jawahar Kala Kendra (जवाहर कला केन्द्र): यह बहुकला-शिल्प केन्द्र है जो जयपुर (राजस्थान) के जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर स्थित है। इसकी स्थापना 1986 ई. में हुई और 1991 ई. में पूर्ण रूप से बन कर तैयार हुआ। 8 अप्रैल 1993 में इसका विधिवत् उद्घाटन हुआ। इसकी डिजाइन प्रमुख वास्तुकार **चार्ल्स कोरिया** ने की थी। इसकी डिजाइन की विशेषता है कि यह जयपुर की नागर शैली में बना है तथा नवग्रहों को ध्यान में रखकर भारतीय ज्योतिषी की अवधारणा के अनुरूप इस परिसर की रचना की गयी है। जिसका एक खण्ड खुला है। शेष आठ खण्डों में अलग-अलग संग्राहलय, थियेटर, पुस्तकालय, कला प्रदर्शन कक्ष, कैफेटेरिया, स्टूडियो व हॉस्टल बने हैं। एक खण्ड एक ग्रह की विशेषता को दर्शाता है। उत्तरी खुले भाग में 'शिल्प ग्राम' बना है। भारत की शिल्प विरासत की अमूल्य धरोहर को समेटे यह कला संकुल उल्लेखनीय है। यह केन्द्र कला संवर्धन के लिए सतत प्रयासरत व कृत संकल्पित है। शिल्पग्राम में सम्पूर्ण राजस्थान के ग्रामीण घरों के मॉडल बने हैं। भित्तियों पर राजस्थानी शैली के परम्परागत तथा लोकचित्र बने हैं। केन्द्र सरकार की ओर से प्रतिवर्ष क्राफ्ट मेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। यहाँ पर दो स्थायी दीर्घा, दो रंगायन और कृष्णायन सभागार, मुक्ताकाशीय परिसर, कॉफी हाउस विशेष हैं। गायन-वादन, प्रदर्शनी, संगोष्ठी, फिल्म प्रदर्शन आदि हमेशा होते रहते हैं। इस बहुकला संकुल को राजस्थानी कला के संरक्षण हेतु बनाया गया है।

जवाहर कला केन्द्र

लिए आते वह भक्ति-भावना से प्रेरित इन चित्रों को अपने साथ अवश्य ले जाते। इस शैली के चित्र 1930 ई. तक प्रमुखता से बनाये गये। बाद के चित्रों के विषय सम-सामयिक समाचार व जन-जीवन के दृश्य थे। रेखा-प्रधान चित्रों में तेज-चटक रंगों का प्रयोग किया गया। पद्धति टेम्परा थी। प्रायः दो प्रकार के फलक का प्रयोग कर चित्र बनाये गये। एक-मोटे कागज पर कपड़ा चिपका कर तदुपरान्त अस्तर कर जिन्हें लिपटवा खर्चा/खर्चा पट्टा कहा जाता था और दूसरे-पिक्चर पोस्ट कार्ड सेट के रूप में जिन्हें फिरका कहा जाता था।

कालीघाट चित्रशैली

Kangra School (कांगड़ा स्कूल) : यह चित्रशैली हिमाचल राज्य के कांगड़ा घाटी की प्रसिद्ध लघु चित्रशैली है। 18वीं शताब्दी में पनपी यह चित्रशैली अपनी सुकुमारता के लिए प्रसिद्ध है। महाराजा संसार चन्द्र (सन् 1775-1823) के प्रयासों से इसे दीप्तिमान यौवन प्राप्त हुआ। चित्रों की आकृतियों में स्त्रियों का सलोना चेहरा, सीधी नाक, पतले हिंगुल, छरहरा बदन, लम्बी पेशबाज, दो रंगी लहंगा, चुनरी सहित चित्रित है। तथा पुरुष पेशबाज, पैजामा, पटका, पगड़ी धारण किये हुए, चंचल नयन वाले, भारी शरीर से युक्त अंकित हैं। रेखाएँ कोमल हैं। चित्रण-विषय कृष्ण और बलराम की पराक्रम लीला, गीत-गोविन्द, श्री मद्भागवत, हरिवंश पुराण, शिवपुराण, बारामासा, रागमाला नायक-नायिका एवं सस्सी पुन्नू (स्थानीय विषय) आदि हैं। पृष्ठभूमि में संगमरमरी वास्तु, पशु-पक्षी, गाँवों के दृश्य, पहाड़ी हरीतिमा को दर्शाया गया है। इन चित्रों के हाशिये प्रायः फूल-पत्तियों से युक्त बनाये गये हैं। विषय को कई खण्डों में दिखाया गया है।

कांगड़ा चित्रशैली

Kara-e (कैरा-ए) - चीनी चित्रशैली जिसको जापानी कलाकारों ने परिष्कृत कर नया रूप प्रदान किया। जिसमें दरबारी - जीवन, काव्य और जापान की प्राचीन गाथाओं पर चित्र बनाये गये। यह शैली 9वीं शताब्दी में 'कोसे स्कूल' के कलाकारों द्वारा प्रतिपादित हुई। यह चीनी चित्रशैली जापान की यमातो-ए शैली का प्रारम्भिक स्वरूप थी। चीन से पुनः सांस्कृतिक आदान-प्रदान शुरू होने के पश्चात् इस शैली का महत्व 14वीं शताब्दी में बढ़ा और यामतो-ए शैली उपेक्षित हो गयी। इस शैली में केवल स्याही से अनुरंजित बनाये जाते थे। जिनके विषय व्यक्ति-चित्र, पशु-पक्षियों के चित्र, पुष्पों के चित्र, दृश्य-चित्र एवं आर्चिड, बॉस एवं बेर (फलम) आदि थे।

कैरा-ए शैली

Key (की) - हल्की-गहरी छटाओं का प्रभाव अर्थात् वर्णछटा के प्रभाव का घोटक।

छटा प्रभाव

Key-Sketch (की - स्केच) - कृति का लघु चित्र रेखांकन ।

सूचक चित्र

Kinetic Art (काइनेटिक आर्ट) - गति सम्बन्धी कला जिसमें चलती-फिरती (यंत्र शिल्प)

आकृतियों को सजाया जाता है । इसमें प्रकाश के प्रभाव का महत्व होता है ।

गतिय कला

Kishangarh School (किशनगढ़ स्कूल) - राजस्थान चित्रशैली की एक शाखा किशनगढ़ चित्रशैली है जिसमें राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाओं का चित्रण विशेष है । किशनगढ़ की स्थापना जोधपुर के राजा उदयसिंह के आठवें पुत्र **किशन सिंह** ने सन् 1609 में की थी । इस शैली के प्रवर्तक राजा **राजसिंह** (सन् 1706-48) थे जो स्वयं चित्रकार थे तथा 33 ग्रन्थों की रचना की थी । इनके चित्रशाला के प्रबन्धक प्रसिद्ध चित्रकार **सूर्यध्वज निहाल चन्द्र** थे । राजा राज सिंह के पुत्र **सावंत सिंह** कृष्ण भक्ति परम्परा के कवि एवं चित्रकार थे । आपकी प्रिया एक गायिका थी, जो 'बनी-ठनी' के नाम से मशहूर हुई । उसी के रूप को आधार मानकर किशनगढ़ शैली को एक नया आयाम प्राप्त हुआ । शृंगार भाव से युक्त इन चित्रों में पुरुषाकृति लम्बी, अरुणाभ नयन, पारदर्शक जामे, पैजामें एवं सुसज्जित पगड़ी से युक्त बनायी गयी है । तथा छरहरी स्त्री आकृति दीर्घ नासिका, अरुणाभ नयन, उन्नत उरोज, उन्नत ललाट, धनुषाकार भौंह, पैरों में महावर, कपोल पर लटकते बालों की लड़, हाथ में मेंहदी, मोतियों के आभूषणों से सुसज्जित चोली, लहंगा एवं झीनीदार चुन्नी से युक्त बनायी गयी हैं । चित्रण विषय दरबारी वैभव, कृष्ण प्रेम लीला, गीत गोविंद, भगवत पुराण, राग-रागिनी, बनी-ठनी (राधा) आदि थे । पृष्ठभूमि में पेड़ों से आच्छादित वन, नदी, पहाड़ी, कलरव करते पक्षी, संगमरमर के वास्तु वाली बनायी गयी है ।

किशनगढ़ चित्रशैली

Kitkat (किटकैट) - एक क्लब जिसके सदस्यों के व्यक्ति चित्र 36''x28'' के कैनवस पर चित्रकार **ग्राडफ्रेनेलर** ने बनाये थे । जिस वजह से इस आकार के कैनवस को किटकैट कहा जाता है ।

किरमिच आकार

Knife Painting (नाइफ पेन्टिंग) - चित्रण-छूरी द्वारा चित्रण कार्य जिसमें मोटे-मोटे रंगों के टैक्चर बनते हैं ।

रंग - पट्टिका - चाकू चित्रण

Kotah School (कोय स्कूल) : राजस्थान के हड़ौती क्षेत्र का कोटा जिला जो बूंदी से 35 किलोमीटर दूर स्थित है । इसकी स्थापना सन् 1625 में हुई थी । तत्कालीन बादशाह जहाँगीर ने राजा माधोसिंह हाड़ा की वीरता से प्रसन्न हो यह क्षेत्र जागीर रूप में प्रदान किया था । यहाँ की चित्रण परम्परा का निखरा स्वरूप 17वीं शताब्दी के अंतिम समय में दिखाई दिया । प्रारम्भिक चित्रों में बूंदी शैली का प्रभाव रहा

है। यहाँ पर भी बूंदी की भांति लघु चित्र एवं भित्ति चित्रण की समृद्ध परम्परा थी। अनेक ग्रन्थ चित्रित किये गये। चित्रण विषय महल दृश्य, भागवत, ढोलामारू (स्थानीय विषय) तीज-त्योहार, जुलूस, दरबारी जीवन, रागमाला, शिकार, हाथियों की लड़ाई, नारी एवं राधा-कृष्ण आदि थे। **कोट्ट चित्रशैली**

Kullu School (कुल्लू स्कूल) : हिमाचल प्रदेश का कुल्लू गर्म शॉल के लिए मशहूर है। यहाँ पर नवीं शती के भोजपत्र पर चित्रांकन अवशेष प्राप्त हुए हैं। परन्तु कुल्लू चित्रशैली का विकास 18वीं शताब्दी के मध्य में हुआ। इस शैली में स्थानीय लोक आकारों का समावेश है। **राजा टेढ़ी सिंह** (सन् 1742-67) के समय व्यक्ति चित्र के नमूने प्राप्त हुए हैं। यहाँ लघुचित्रों के साथ-साथ, भित्ति-चित्रण, ग्रन्थ-चित्रण की परम्परा भी रही है। चित्रों में आकर्षक रंगों का प्रयोग व लम्बी आकृतियाँ, फूलों की माला व आभूषण से सुसज्जित बनायी गयी हैं। मोटी नाक, मोटे आँठ, फूले गाल, कजरारे नयन, मोटी भौंहें आकृतियों की पहचान हैं। स्त्री लहंगा, पूरी आस्तीन की चोली, पारदर्शी ओढ़नी मुकैश से युक्त, पाँव में महावर, पुरुष चौबन्दी, जामा, चूड़ीदार पैजामा, धोती व पगड़ी पहने हुए अंकित हैं। चित्रण विषय प्रायः देवी, राम-सीता, कृष्ण-रुक्मणी, नायिका भेद, व्यक्ति-चित्रण, कृष्ण-राधा, भागवत पुराण, महाभारत एवं सामाजिक जीवन है। पृष्ठभूमि में पेड़-पौधे व पशु-पक्षी का अंकन है। रिक्त स्थान अधिक छोड़ा गया है। संयोजन सरल है।

कुल्लू चित्रशैली



Lacquer Painting (लैकर पेन्टिंग) - चीनी-मिट्टी के बर्तनों पर विशिष्ट लेप द्वारा चित्रांकन अथवा सोने - चाँदी की सतह पर लाख द्वारा अलंकरण करना। सोने अथवा चाँदी के पत्तर को लेकर पिघली हुई लाख की रंग-बिरंगी सतह चढ़ा कर मोती-शंख द्वारा अलंकरण कर डिजाइन बनायी जाती थी। इस पद्धति का प्रचलन अब न के बराबर है। जापान में 8वीं शताब्दी नाराकाल में इस विधि का चलन खूब था। **मोमोयामा युग** (1573-1615 ई.) तक इस पद्धति से कार्य हुआ।

प्रलाक्षा-रोगन/लाख चित्रण

Lalit Kala Akademi (ललित कला अकादमी) - उन्नीसवीं शताब्दी में ललित कला अकादमी फ्रांस की उच्च संस्था थी, जिसके माध्यम से कलाकार जनता तक पहुँच सकता था। इस अकादमी का मुख्य कार्य कला-प्रदर्शनी का आयोजन एवं कलाकारों को पुरस्कार देना था। निर्णायक परम्परावादी एवं शास्त्रीय चित्रों वाली

प्रविष्टियों को ही मान्यता प्रदान करते थे ।

सन् 1954 में भारत सरकार ने पूर्ण वित्तपोषित कला, साहित्य एवं संगीत के उन्नयन के लिए अकादमियों की स्थापना की थी। इसी क्रम में चित्रकारों-मूर्तिकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सन् 1954 में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी का गठन हुआ। जिसका वर्तमान कार्यालय नयी दिल्ली स्थित मंडी हाउस के निकट रविन्द्र भवन में है। जिसमें दीर्घा लाइब्रेरी, विक्रय केन्द्र आदि भी हैं।

भारत में यह दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के संवर्धन के लिए विशेष रूप से कार्य करने वाली संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य कलाकारों को संरक्षण देना और उनकी प्रतिभा को बढ़ाना है। तथा कलाकारों को कार्य करने हेतु कार्यकक्ष (Studio) उपलब्ध कराना, कृतियों की वार्षिक प्रदर्शनी एवं बिक्री करना, कार्यशालाओं, कार्यक्रमों, संगोष्ठी, व्याख्यान व प्रदर्शन का आयोजन करना, विशिष्ट कलाकारों को सम्मान प्रदान करना, मोनोग्राफ, पत्रिका आदि को छापना, प्रदर्शनी हेतु गैलरी प्रदान करना होता है। अकादमी के अपने स्वीकृत मानदण्ड होते हैं जो नवीन विचारधारा, मौलिक सृजन एवं परम्परा आदि को प्रोत्साहन देते हैं। यह अकादमी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर की होती है। प्रत्येक राज्य सरकारों द्वारा दृश्य कलाओं के प्रोत्साहन हेतु राज्य ललित कला अकादमी की स्थापना भी की गयी है जो राज्य के कलाकारों को प्रोत्साहन देती है, तथा प्रोत्साहन हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करती है।

ललित कला अकादमी

Lambent Cloth (लैम्बेन्ट क्लॉथ) : झिलमिलाता अथवा चमकता हुआ कपड़ा।

झिलमिला वस्त्र

Lame (लेम) : सोने अथवा चाँदी के धागे से तैयार किया गया वस्त्र। मूलतः यह एक फ्रेंच शब्द है।

जरीकार्य

Landscape Painting (लैण्डस्केप पेन्टिंग) - प्राकृतिक दृश्यों अथवा भू-दृश्यों का चित्रण जिसमें खुले आसमान के नीचे बैठकर प्रकृति को आत्मसात् कर चित्रांकन किया जाता है।

भू-दृश्य चित्रण

Lattice (लैटिस) - लकड़ी, पत्थर पर या तारों का बनाया गया जाली कार्य।

जाली

Layout (ले आउट) - किसी भी रचना का पूर्व प्रारूप, जिस पर रचना आधारित होती है।

नक्शा / खाका

Lay Figure (ले फिगर) : मानवीय ढाँचा, जिसको कपड़े आदि पहनाकर विभिन्न मुद्राओं में रखकर चित्रण किया जाता है। इससे मानवाकृतियों की शारीरिक

संरचना के विविध आयामों का अभ्यास किया जाता है ।

मानवीय पुतला

Leather Painting (लेदर पेन्टिंग) : चमड़े पर बनाये गये चित्र । मृत पशु की खाल को विशेष पद्धति द्वारा तैयार कर चित्रांकन करना । चित्र बनाने हेतु प्राकृतिक तथा वानस्पतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है । दक्षिण भारत में इस प्रकार का चित्रांकन लोकप्रिय है ।

चर्म-चित्र

Liberal Art (लिबेरल आर्ट) - उदारवादी कलाओं में तर्कशास्त्र, ज्यामिति, साहित्य, गणित, खगोल, काव्य, संगीत व चित्रकला आदि आती है ।

उदार कला

Life Drawing (लाइफ़ ड्रॉइंग) - व्यक्ति चित्रण, जिसमें मानव शरीर के प्रत्यक्ष रूप का अंकन होता है, तथा विभिन्न मुद्राओं में मॉडल को बैठाकर रेखांकन किया जाता है ।

जीवन्त रेखांकन

Life Study (लाइफ़ स्टडी) - प्राणी की सम्पूर्ण शरीररचना का अध्ययन, जिसमें मॉडल को विभिन्न मुद्राओं में बैठाकर अंग-प्रत्यंगों का अध्ययन किया जाता है और ड्रॉइंग बनाकर अभ्यास किया जाता है ।

जीवन / जीव / सजीव अध्ययन

Line Drawing (लाइन ड्रॉइंग) - रेखाओं के प्रयोग से बनाया गया चित्र ।

रेखाचित्र/रेखांकन

Line Engraving (लाइन इन्ग्रेविंग) : धातु के पत्तर पर तक्षणी अथवा नुकीली सुई द्वारा बाह्य रेखीय उत्कीर्णन किया जाता है । छपने पर रेखाएँ पृष्ठभूमि के रंग की दिखाई देती हैं ।

रेखा उत्कीर्णन

Line Etching (लाइन ऐचिंग) : ताँबे अथवा जस्ते के पत्तर पर अम्ल प्रतिरोधी ग्राउण्ड लगाने के पश्चात् रेखांकन कर विभिन्न सुइयों द्वारा डिजाइन बना तेजाब द्वारा क्षारित कर ब्लॉक तैयार किया जाता है ।

रेखा निष्कारण

Linocut (लाइनोकट) - लिनोलियम के टुकड़े पर बनाया गया चित्र जिससे छापा जाता है । लिनोलियम में विभिन्न कर्तन औजारों द्वारा डिजाइन तैयार करना । यह छापाकला की एक पद्धति है ।

लीनो छाप चित्र / लीनो कर्तन

Linoleum Engraving (लिनोलियम इन्ग्रेविंग) : छापा चित्र तैयार करने के लिए लिनोलियम का ब्लॉक जो वुड ब्लॉक की तरह इन्ग्रेव कर तैयार किया जाता है । यह पतली प्लेट मुलायम तथा लचीली होती है । आसानी से कटती है । **U** एवं **V** आकार की खाँचा कर्तनी औजार का प्रयोग कर इसे तैयार करते हैं । 19वीं शती के आखिरी में इसकी शुरुआत में हुई थी । लिनोलियम बिछावन में प्रयोग होने वाली एक प्रकार की रबड़ व जूट युक्त चद्दर है ।

लिनोलियम उत्कीर्णन

Linocyn (लीनोक्सिन) - तैल चित्रण में प्रयुक्त अलसी तेल की जमी हुई पपड़ी।

अलसी तेल पपड़ी

Live Painting (लाइव पेन्टिंग) : जीते-जागते मानव को प्रत्यक्ष विभिन्न मुद्राओं में बैठकर चित्र बनाना।

जीवन्त / सजीव चित्रण

Literary Art (लिटरेरि आर्ट) - कहानियों, कथाओं पर आधारित चित्र।

साहित्यिक कला

Lithography (लियोग्राफ़ि) - मुद्रण-विधि, जिसमें पत्थर या जस्ते की प्लेट पर तूलिका, स्याही व लेखनी के प्रयोग से चित्र बनाकर छापा जाता है। लियोग्राफी समतल सतह छपाई प्रणाली है। जिसमें छपाई की प्लेट या पत्थर पर विशेष प्रकार की लिथो पेन्सिल, लिथो इंक तथा लिथो क्रेयान्स का प्रयोग कर सीधी डिजाइन बनायी जाती है अम्ल व गोंद के मिश्रण द्वारा रासायनिक प्रक्रिया कर डिजाइन को स्थायी कर दिया जाता है। कुछ अन्य प्रक्रिया कर, इससे छपाई की जाती है। इस पद्धति की खोज 12वीं शताब्दी के अन्त-में एलोस एनेफेल्डर ने की थी।

शिला मुद्रण

Lobe (लोब) : भवन अलंकरण में गोल या चापदार निकला हुआ खंड या भाग अथवा की गयी सजावट को कहते हैं।

चापालंकरण/सज्जायुक्त गोलाई

Local Art (लोकल आर्ट) : स्थानीय कला, जिसमें देशाचार के तत्व हो तथा जिसमें स्थानीय रंगों एवं सामग्री का प्रयोग किया गया हो। मुख्यतः यह कला लोककला या पारम्परिक कला होती है परन्तु इसका व्यवसायीकरण नहीं होता।

स्थानीय कला

Logogram (लॉगोग्राम) - एकल प्रतीक, जिसमें वाक्यांश अथवा सम्पूर्ण शब्द को चिह्न रूप में प्रस्तुत किया जाता है अथवा वह चिह्न जिसमें सम्बन्धित विषय का प्रतीकात्मक संयोजन होता है।

प्रतीक / शब्द चिह्न

Low Key (लो की) : निम्न कुँजी का तात्पर्य चित्र में छाया, अन्धकार अथवा गहरी छटाओं के प्रभाव दिखाने के सन्दर्भ में लिया जाता है।

निम्न कुँजी

Low relief (लो रिलीफ़) - हल्की उभरी हुई नक्काशी जो सतह से हल्की उठी हुई हो या मूर्ति शिल्प जो सतह से हल्का उठा हुआ हो। इसे Bas Relief भी कहा जाता है।

निम्न उद्भूत / निम्न उभार

Luminosity (ल्यूमिनीऑसिटी) : संदीप्तता का अर्थ प्रायः रंगों की चमक एवं दीप्ति, चमकीलापन, प्रकाशित, जगमगाहट आदि से लिया जाता है। **चमकीलापन**

Mm

Madras Chole Mandal (मद्रास चोल मण्डल) : मद्रास (चेन्नई) के कलाकारों की एक संस्था जो मद्रास के बाह्य क्षेत्र के एक गाँव बसाने के रूप में सन् 1966 में हुई थी। जहाँ पर कलाकार रह कर सृजन कार्य करने लगे। इस 'चोल मण्डल' की स्थापना सन् 1966 में के. सी. एस. पन्निकर ने की थी। **मद्रास चोल मण्डल**

Major Arts (मेजर आर्ट्स) : मानवीय-भावों, आध्यात्मिक-चेतना, सम्प्रेषण, बौद्धिक-क्षमताओं तथा कलात्मक-व्यंजना को ध्यान में रखकर रची गयी अभिव्यक्ति, जिसमें सृजनात्मक एवं मौलिकता का विशेष स्थान होता है। **उच्च कलाएँ**

Major Themes (मेजर थीम्स) : चित्रण के विभिन्न स्वरूप दृश्य-चित्रण, वस्तु-चित्रण, व्यक्ति-चित्रण, मानव-चित्रण, पशु-पक्षी चित्रण आदि में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य होते हैं। उन तथ्यों को ध्यान में रखकर चित्र रचना की जाती है। जैसे- व्यक्ति चित्रण में जिस व्यक्ति का चित्र बना रहे हैं उसके चेहरे के भाव, पहचान एवं उसका चरित्र महत्वपूर्ण होता है। उसी महत्व का ध्यान रखकर ही चित्रण कार्य किया जाता है।

प्रमुख / महत्वपूर्ण विषय

Maki-e (मैकी-ए) : जापान के मोमोयामा काल (सन् 1573-1615 ई.) में यूरोप से सम्पर्क हो जाने के पश्चात् जापानी कलाकार अपनी निजी परम्पराओं को अधिक समृद्धशाली बनाने के लिए चित्रों में पाश्चात्य प्रतीकों का प्रयोग करने लगे। इस मिश्रित शैली को 'मैकी-ए' कहा जाने लगा। यद्यपि इस शैली से बने चित्र उच्चकोटि के नहीं बने। इस समन्वय से चित्र अलंकरणयुक्त न बन कर भद्दे दिखाई दिये, जिसे जापानी लोगों ने अस्वीकार कर दिया।

जापानी-पाश्चात्य मिश्रित शैली

Manav Sangrahalaya (मानव संग्रहालय) : भोपाल (म.प्र.) में स्थित 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय' जो मानव जीवन के विभिन्न पक्षों तथा मानव-जीवन के विकासक्रम को दर्शाता अनोखा है। श्यामलाहिल में प्राकृतिक वातावरण में सुसज्जित 200 एकड़ में फैला संग्रहालय दो भागों में बँटा है। एक भाग में खुले आसमान के नीचे भारत में निवास करने वाली विभिन्न जातियों के रहन-सहन को

दिखाया गया तथा दूसरे में भव्य संग्रहालय भवन बना है। खुले भाग में विभिन्न गाँव की झाँकियाँ दर्शित हैं। संग्रहालय भवन में जनजातियों एवं आदिवासियों के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलू उजागर हैं। साथ में शिल्पों के विभिन्न रूपों की प्रदर्शनी देख मन आश्चर्यचकित हो जाता है।

मानव संग्रहालय

Mandi School (मण्डी स्कूल) : हिमाचल की घाटी मण्डी कला संस्कृति के केन्द्र के रूप में उभरी थी। यहाँ की प्रारम्भिक चित्रशैली में लोककला के तत्वों का समावेश रहा है। राजा केशवसेन (सन् 1595-1637) के समय के चित्र अवशेष में इन्हें देखा जा सकता है। तत्पश्चात् अन्य पहाड़ी शैलियों का प्रभाव इस शैली में दिखाई देता है। 19वीं शताब्दी के चित्रों में अंग्रेजी प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा था। स्थानीय वेशभूषा से सुसज्जित चित्रों में लालित्य का प्रभाव है। इन चित्रों में रंग चटक, रेखाएँ मोटी, आकार सहज बनाये गये हैं। चित्रण-विषय राजदरबार, हमीर हठ, दुर्गा रूप, महालक्ष्मी रूप, शबीह, पौराणिक कथाएँ, शिव एवं कृष्ण लीला आदि हैं। पृष्ठभूमि में वाद्ययन्त्र, वास्तु आदि का अंकन हुआ है। भित्ति चित्रण की यह अनूठी परम्परा मन्दिरों एवं महलों में भी देखने को मिलती है।

मण्डी चित्रशैली

Manikin (मैनिकिन) : यथावत् मानवीय पुतला जिसका प्रयोग दुकान, मॉल, शोरूम आदि में मॉडल के रूप में किया जाता है। इसे Mannikin भी कहते हैं।

पुतला / मानवीय ढाँचा

Mannequin (मैनिकिन) - दुकानों व शोरूमों पर वस्तुओं एवं वस्त्रों को प्रदर्शित करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले पुतले या मूर्तियाँ।

वस्त्र सज्जित पुतला

Manneristic Art (मैनरिस्टिक आर्ट) - इटली के सोलहवीं शताब्दी के स्तम्भ कलाकारों की कृतियों की परावर्त्ती चित्रकारों द्वारा नकल की जाने वाली कला।

रीतिवादी कला

Maqutta (मॉक्विटा) - 'स्केच' को इटैलियन भाषा में मॉक्विटा कहा जाता है।

अल्प-रेखांकन

Marwar School (मारवाड़ स्कूल) : मारवाड़ चित्रशैली को जोधपुर चित्रशैली के नाम से भी जाना जाता है। मारवाड़ शूरवीरों एवं बलदानियों की जन्मभूमि रही है। इस क्षेत्र के प्रमुख नगर जोधपुर, बीकानेर, पोखरण, नागौर आदि हैं। इस क्षेत्र में राठौर राजाओं का राज्य रहा है तथा यहाँ की प्राचीन राजधानी मण्डौर रही है। राठौर राजा राव जोधा जी ने सन् 1458 में जोधपुर को बसाया था। इस क्षेत्र में

जैन धर्म से सम्बन्धित चित्रण की समृद्ध परम्परा रही है। 17वीं शताब्दी के जैन मन्दिरों में भित्ति-चित्रण प्राप्त हुए हैं। यहाँ की चित्रण-शैली में स्थानीय लोक शैली के तत्व पाये गये हैं। इस क्षेत्र के मन्दिरों में सनातन धर्म से सम्बन्धित भित्ति चित्र भी बने प्राप्त हुए हैं। यहाँ के चित्रण विषय ढोला-मारू, भागवत, राग-माला, कृष्ण विषयक, नायक-नायिका, दुर्गा चरित्र, शिव पुराण, रामायण, वीरों की गाथा एवं लोक जन-जीवन आदि हैं। जोधपुर चित्रण परम्परा 17वीं शती से 19वीं शती तक प्रचलित रही। चित्रों की विशेषता पुरुषाकृति की आँख अरुणाम, घनी दाढ़ी-मूँछ, शिखर वाली अलंकृत पगड़ी, जामा - पैजामा, जूतियाँ, मुख शौर्य युक्त बना है। तथा स्त्रियों की आकृति, खंजन नेत्र, दो रंगी घाघरा, बूटीदार चुनरी, केश अलकेलिया वाले एवं अभूषण से युक्त सजी हुई बनायी गयी है। पृष्ठभूमि में मेघ, वृक्ष, वास्तु, पशु-पक्षी आदि का अंकन हुआ है। चित्रों में ऊँट का अंकन विशेष है।

मारवाड़ चित्रशैली

Masking tape (मासकिंग टेप) - रंग के प्रभाव से अप्रभावित रखने वाले क्षेत्र को टेप से चिपका कर ढक दिया जाता है। कार्य पूर्ण होने के पश्चात् प्रभावित क्षेत्र से उसे हटा दिया जाता है।

छद्मावरणीय / प्राच्छादन फीता

Master piece (मास्टर पीस) - उत्कृष्ट कलाकारों की चित्रशैली जिस पर उनका पूर्ण अधिकार हो। उन स्तम्भ कलाकारों की सर्वश्रेष्ठ चित्र को 'मास्टर पीस' कहते हैं।

उत्कृष्ट / श्रेष्ठ कृति

Mastic (मेस्टिक) - वार्निश का एक प्रकार, जो चित्र को चमकदार बनाता है। वारनिश

Maulstick (मॉलस्टिक) : चित्रण करते समय चित्रकार के हाथ टेकने के लिए आधार छड़ी। इस छड़ी को Mahlstick भी कहते हैं।

टेक छड़ी

Medieval Art (मेडिईवल आर्ट) : 500 ई. से 1500 ई. तक के मध्य की कला का कार्यकाल।

मध्ययुगीन कला

Memory Drawing (मेमॅरि ड्राइंग) : अपनी स्मरण-शक्ति/याददाश्त के आधार पर चित्रण या रेखांकन करना।

स्मृति चित्रण/रेखांकन

Mesopotamian Art (मेसोपोटामियन आर्ट) : 5000 ई.पू. दजला-फरात नदियों की घाटी में पनपी सभ्यता जिसका वर्तमान में नाम ईराक है। यह सभ्यता काफी उन्नत थी। इस सभ्यता की कला विशेष महलों, भवनों, मंदिरों, समाधि स्थलों, जिग्मूरतों (सीढ़ीदार पूजा गृह), मूर्तियों, रंगीन भित्ति-चित्रों, पात्रों, खिलौने एवं मुहरों के रूप में प्राप्त हुई है। वेबीलोन के प्रसिद्ध झूले जिनकी गणना विश्व के सात आश्चर्यों में की जाती है, वे यहीं पर स्थित हैं।

मेसोपोटामिया कला

Method (मेथड) : कार्य करने की प्रणाली । विशेष रूप से चित्र, मूर्ति एवं वास्तु रचना के संदर्भ में प्रयुक्त शब्द जिसका अभिप्राय बनाने के तरीके एवं पद्धति से होता है ।

पद्धति

Metal Plate Painting (मेटल प्लेट पेन्टिंग) : हल्की/पतली एल्युमिनियम की चद्दर पर बनाये गये उभड़े (Emboss) चित्र । एल्युमिनियम की चद्दर पर डिजाइन बना ऐम्बॉस यन्त्रों की सहायता से उचित दबाव देकर चद्दर में उभारदार डिजाइन बना, उसे मनमाफिक रंगों (एक्रेलिक/इनेमल) से रंग दिया जाता है । विभिन्न प्रकार के धातु- पत्तों में एचिंग (अम्लांकन), उत्कीर्णन, प्रिन्टिंग द्वारा भी चित्र बनाया जा सकता है ।

धातु पत्तर-चित्र

Metaphysical Painting (मेटैफिज़िकल पेन्टिंग) - वह चित्र जो आध्यात्मिक व तात्त्विक हो ।

पराभौतिक चित्रण

Mewar School (मेवाड़ स्कूल) : मेवाड़ का नामकरण 11वीं शती में हुआ । यह मूलतः एक अंचल है । जिसके अन्तर्गत उदयपुर, नाथद्वारा, चित्तौड़ एवं प्रतापगढ़ आदि जनपद आते हैं । यह क्षेत्र अपनी शौर्य गाथाओं के लिए प्रसिद्ध है । चित्रकला का वास्तविक इतिहास महाराणा कुम्भा (सन् 1443-64) से प्रारम्भ होता है । इस क्षेत्र में हवेली एवं राजमहलों की भित्तियों में बहुतायत से चित्र पाये गये हैं । यहाँ अनेक चित्रित ग्रन्थों की रचना हुई, जिनमें से मुख्य-मुख्य निम्न हैं— कल्पसूत्र, सुपासना, हचरियम्, ज्ञानार्णव, रसिकाष्टक, संगीतराज, गीत-गोविन्द आख्यिका (15वीं शताब्दी), चौर पंचाशिका, ढोलामारू (16वीं शताब्दी), रागमाला, रसिक प्रिया, नायिका-भेद, गीत-गोविन्द, भागवत् पुराण, रस मंजरी, आर्ष रामायण (17वीं शताब्दी), बिहारी सतसई एवं सुन्दर - शृंगार (18वीं शताब्दी) आदि । चित्रविषय राग-रागिनी, रसिकप्रिया, बारहमासा, दरबारी, पौराणिक आख्यान, भागवत, कृष्ण-लीला, शिकार एवं सामान्य लोकजीवन आदि हैं । चित्रों की पुरुष आकृतियाँ गठीली मूँछों से युक्त राजस्थानी बूटीदार जामा वेषभूषा व पगड़ी से सुसज्जित एवं स्त्री आकृति छोटी, विशाल नेत्र, आभूषण से सजी-धजी, बूटीदार चोली, घाघरा से युक्त बनी हुई है । पृष्ठभूमि में अलंकृत पेड़-पौधे, बारीक जालियाँ वाले महल व पशु-पक्षियों का अंकन है । चित्रों को चटकदार हाशियों से सजाया गया है । इस क्षेत्र के पड़ चित्रण की गीतमय प्रस्तुति तथा लोकचित्र भी प्रसिद्ध हैं । चित्र कई खण्डों में विभक्त भिन्न-भिन्न संयोजन से युक्त हैं ।

मेवाड़ चित्रशैली

Mexican Art (मेक्सिकन आर्ट) : सन् 1910 के पश्चात् यहाँ की कला का विकास हुआ । परम्परा एवं आधुनिकता से युक्त इस कला में मानव शरीर का भौतिक

दृश्यकला कोश / 75

सौन्दर्य, दृश्य चित्र, भित्ति चित्र एवं प्राचीन मूर्तियों को स्थान दिया गया। कलाकारों ने मानवीय भावों की अभिव्यक्ति को विशेष स्थान दिया। भित्ति चित्रण का विशेष स्थान था, जिनके विषय सामाजिक चेतना व दर्शन पर आधारित थे।

मेक्सिकन कला

Mezzotint (मेज़ोटिंट) - छापा चित्रों में सतही आभा को क्रमबद्धता में दर्शाना। एक प्रकार से छाया-प्रकाश दिखाने की पद्धति। इस पद्धति में छापा प्लेट तैयार करने के लिए स्टील के रॉकर (औजार) का प्रयोग किया जाता है, जो धातु प्लेट को कण रूप में छेदता है। इस तकनीक की खोज जर्मन के एब्राहम ब्लुटलिंग ने 17वीं शती में की थी।

क्रमबद्ध छटा उत्कीर्णन

Miniature (मिनिअचर) - लघु चित्रण जो हस्तलिखित पुस्तक (पाण्डुलिपि) को सजाने के लिए बनते थे। छोटे आकार के चित्रों को भी कहा जाता है।

लघु चित्र

Minor Arts (माइनर आर्ट्स) : उपयोग का ध्यान रख कुशलता पूर्वक रची गयी सुन्दर कृति जो अलंकरण आधारित हो तथा जिनमें अनुकृति का योग हो। इस कला के अंतर्गत एक वस्तु से मिलती - जुलती अनेक कृतियाँ बनायी जाती हैं।

गौण कलाएँ

Mixed media (मिक्सड मीडिया) - नवीनता लाने के उद्देश्य से विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर या विभिन्न रचना सामग्री का उपयोग कर जो कृति बनायी जाये।

मिश्रित माध्यम

Model (मॉडल) - वस्तुओं को सम्मुख रख या व्यक्ति को सामने बिठा कर चित्रण करने की पद्धति।

प्रतिरूप / प्रतिकृति

Modelling (मॉडलिंग) - प्रतिकृति जो प्रायः मूर्तिकला एवं चित्रकला दोनों में बनायी जाती है। मूर्तिकला में मॉडलिंग का प्रमुख रचना माध्यम POP व गीली मिट्टी है और चित्रकला का प्रमुख माध्यम पेन्सिल, चाक इत्यादि है।

प्रतिरूपण/अनुकृति

Modern Art (मॉडर्न आर्ट) - स्वतन्त्र रूप से अपनी अभिव्यक्ति कर कलाकार निजी शैली को जन्म देता है। इस कला में विषय व माध्यम में नवीनता का होना आवश्यक समझा जाता है। सन् 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के बाद इसका बीजारोपण प्रारम्भ हो गया था। परन्तु आधुनिक चित्रकला का प्रारम्भ उन्नीसवीं शती के मध्य से ही माना जाता है। शास्त्रीयता से हटकर नवीन, प्रयोगात्मक, सृजनात्मक, मौलिक संयोजन का अंकन तथा विषय, माध्यम, शैली में नवीनता आधुनिक कला कहलायी। चित्रकला में स्वतन्त्रता का उद्घोष यहीं से माना जाता है। इस काल का आरम्भ सन् 1850 ई० से हुआ। यह कोई एक कला शैली नहीं बल्कि सन् 1850 के बाद अनेक कलावादों ने जन्म लिया, यह उन सभी का

सामूहिक रूप है। फ्रांस में ललित कला अकादमी सर्वोच्च संस्था थी, जिसके द्वारा कोई कलाकार जनता तक पहुँच सकता था। सन् 1863 ई० में यहाँ की राष्ट्रीय प्रदर्शनी में बहुतायत में चित्र अस्वीकृत हुए जो स्वतन्त्र व नवीन विचारों से युक्त मौलिक अभिव्यक्तियाँ थी। ये वे चित्र थे जो स्वच्छन्ततावाद, नवशास्त्रीयतावाद एवं यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करते थे। यहाँ के कलाकारों ने तत्कालीन अकादमी के अधिकारियों की सोच एवं नीतियों के विरोध में अस्वीकृत चित्रों की प्रदर्शनी लगायी, व्यापक प्रतिक्रिया हुई, प्रगतिशील कलाकारों की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का मौका मिला और आधुनिक कला का इतिहास यहीं से आरम्भ हुआ। यहाँ यह अवगत हो कि आधुनिक कला का मुख्य केन्द्र फ्रांस ही रहा है और अधिकांश कला आन्दोलन यहीं से प्रारम्भ हुए।

आधुनिक कला

Monochromatic Painting (मोनोक्रोमेटिक पेन्टिंग) : एक रंग के विभिन्न उपवर्णों (Tones) के प्रयोग द्वारा जो चित्र बनाया जाता हो। इस प्रकार के चित्र में छाया-प्रकाश को हल्की तथा गहरी रंगत द्वारा दिखलाया जाता है।

एक वर्णीय चित्र

Monogram (मॉनोग्राम) - एक दूसरे से गुँथे हुए अनेक अक्षर जो पहचान के रूप में प्रतीकात्मक संयोजन होते हैं। यह एक प्रकार की व्यापारिक छाप होती है। दो या अधिक अक्षरों से युक्त प्रतीकात्मक संयोजन, जो प्रायः नाम के प्रथम अक्षर से शुरू होता है तथा जिसमें अक्षर एक-दूसरे से मिलाकर या गुँथे हुए या ढके हुए (Over lap) अथवा चढ़े हुए बने हों। यह प्रायः कागज पर प्रिण्ट किये जाते हैं अथवा कपड़े पर काढ़ कर बनाये जाते हैं।

गुम्फाक्षर

Monograph (मोनोग्राफ) : जिल्दबन्दी पुस्तक अथवा प्रबन्ध जिसमें सचित्र एक विषय अथवा एक कलात्मक शैली या एक कलाकार की सम्पूर्ण व विस्तृत जानकारी हो।

प्रबन्ध/एकल मौलिक ग्रन्थ

Monolith (मॉनोलिथ) - एक बड़े पत्थर को तराश कर बनाया गया वास्तु, खम्भा अथवा मूर्ति।

एकाक्षम

Monotype (मॉनोटाइप) - छापाचित्र मुद्रित करने की एक विधि। कम्पोज करने वाली मशीन।

मुद्रण यन्त्र/एकल प्रारूप/एक मुद्र

Montage (मॉन्टाज) - विषयवस्तु की अभिव्यक्ति छपे चित्रों या फोटोग्राफों को काट-छाँट कर चिपकाकर की जाती है।

फिल्म-संग्रथन/संग्रथन चित्र

Monument (मॉन्युमेन्ट) - चिरस्मरणीय ऐतिहासिक महत्वपूर्ण स्मारक जो प्रायः

उत्कृष्ट, आदर्श, विशाल, स्थायी गुणों वाले होते हैं ।

स्मारक

Mosaic (मोज़ेइक) - दीवार व फर्श पर रंगीन शीशे, रंगीन संगमरमर, सीमेण्ट व अन्य टिकाऊ रचना सामग्री द्वारा जमाकर सजाने की कला । इसे मणिकुट्टिम भी कहा जाता है ।

पच्चीकारी

Motif (मोटिफ) - प्रधान विचार से चित्र की परिकल्पना अथवा बार-बार या पुनरावृत्ति द्वारा अंकित किये जाने वाला रूप ।

अभिरचना / अनुकल्प / रूपांकन

Mottle (मॉटल) : धब्बेदार अथवा रंग-बिरंगे वस्त्र के सन्दर्भ में प्रयुक्त शब्द । मूलतः चिल्लीदार (चित्तकबरे) कपड़े को कहते हैं ।

चिल्लीदार अभिरचना

Mould (मोल्ड) - मूर्ति बनाने का साँचा या साँचों में ढालना ।

गढ़ना / साँचा

Moulding (मोल्डिंग) : साँचे द्वारा ढालने का कार्य । साँचे में किसी भी प्रकार के आभूषण, पात्र एवं मूर्तियों को गढ़ने के सन्दर्भ में प्रयुक्त शब्द । जिसमें तैयार साँचे द्वारा मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, सीमेण्ट एवं विभिन्न धातुओं के प्रयोग से रचना/कृति/वस्तु तैयार की जाती है ।

साँचे में ढली वस्तु/ढलाई कार्य

Mounting (माउन्टिंग) - वस्तु चित्र, जलरंग चित्र, पेस्टल चित्र, चाक चित्र, रेखा चित्र, फोटो व छपा चित्र आदि के लिए मोटे-कड़े कागज या दफती के चौखटा की जरूरत रहती है, ताकि चित्र काँच की रगड़ से खराब न हो और सुरक्षित रहे ।

मढ़ाई

Mural (म्यूरल) - दीवार (भित्ति) सजाने की कला जिसमें स्थायित्व का योग हो इन्हें किसी भी माध्यम से बनाया जा सकता है । ये अन्तःसतह, उभार सतह एवं समतल सतह पद्धति के बनाये जाते हैं । इन्हें फ्रेस्को, टेम्परा, एफ्रेलिक, सीमेण्ट, टायल्स, मारबल, काष्ठ, फाइबर, धातु, प्लास्टर ऑफ पेरिस, रद्दी सामान व टेराकाटा आदि किसी भी माध्यम व पद्धति का प्रयोग कर बनाया जाता है ।

भित्ति चित्रण-कला

Mural Painting (म्यूरल पेन्टिंग) : दीवार पर चित्रण कार्य अथवा किसी पट्ट पर चित्रण कर दीवार पर स्थायी करना । भित्ति-चित्रण का माध्यम एफ्रेलिक, जल रंग, तैल रंग, टेम्परा, फ्रेस्को एवं डिस्टेम्पर आदि होते हैं ।

भित्ति-चित्र

Mughal School (मुगल स्कूल) - मुगल स्कूल की चित्रकला । मुगल सम्राज्य के जन्म, उत्थान एवं पतन के साथ सन्निहित है । मुगल कला, दरबार की इच्छा व रुचि से विकसित हुई थी । मुगलिया कलम भारतीय लघु-चित्र और ईरानी चित्रकला का मिश्रण थी । इसके चित्रण विषय रामायण, दशावतार, कृष्ण चरित, महाभारत, लोक कथानक, दरबारी शान-शौकत, शबीह चित्र, शिकार, शाहनामे व उनकी

व्यक्तिगत रुचियों से सम्बन्धित थे। यह कला सन् 1526 से सन् 1658 तक खूब फली फूली।

तुर्क पिता एवं मंगोल माता का पुत्र बाबर (सन् 1526-30) 11 वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा, तब से मुगल काल का बीजारोपण हुआ। बाबर प्रकृति-प्रेमी था इसकी लिखी पुस्तक 'बाबर नामा' प्रसिद्ध है। बाबर के पश्चात् बड़ा पुत्र हुमायूँ (सन् 1530-56) गद्दी पर आसीन हुआ। हुमायूँ कुशल इतिहासवेत्ता, धर्म एवं साहित्य में रुचि रखने वाला कलाप्रिय शासक था। इसने ईरान से दो कलाकार मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस्समद को अपने यहाँ आमन्त्रित कर चित्रकारी करवायी थी। हुमायूँ के पोथीखाने में अनेक सचित्र पुस्तकें थीं, जिसमें 'हम्जानामा' मुख्य थी। हुमायूँ के बाद अकबर (सन् 1556-1605) 12 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। अकबर उदार स्वभाव का राजा था। इसने दीन-ए-इलाही मत एवं सुलह-ए-कुल की नीति चलायी। इसके दरबार में अनेक हिन्दू विद्वान थे। इसकी पत्नी जोधाबाई हिन्दू राजघराने से थी। अकबर ने भारत की संस्कृति को आधार बना इसके उन्नयन का प्रयास किया। अनेक भारतीय ग्रन्थों का फारसी अनुवाद करवाया एवं अनेक सचित्र पुस्तकों की रचना करवायी। प्रमुख ग्रन्थ हम्जानामा, खमसा निजामी, रामायण, शाहनामा, तैमूरनामा, तारीखे-अल्फी, रज्मनामा एवं अकबरनामा थे। इस समय शबीह चित्रण, सामाजिक चित्रण व दरबारी चित्रण हुआ। अकबर के पश्चात् जहाँगीर (सन् 1605-27) शासक बना। चित्रकला से अटूट लगाव उसको अपने पिता से विरासत में प्राप्त हुआ। जहाँगीर प्रकृति तथा पशु-पक्षी प्रेमी था। इसलिए इस समय इस विषय पर खूब कार्य हुआ। इसके अतिरिक्त जनजीवन, सूफी-संत, शबीह, दरबारी जीवन आदि का चित्रण हुआ। हाशियों का प्रयोग अलंकरण हेतु किया गया। प्रसिद्ध पुस्तक 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' थी। प्रसिद्ध चित्रकार 'मसूर नक्काश' था। जहाँगीर के पुत्र शाहजहाँ (सन् 1628-58) के गद्दी पर बैठते ही चित्रों में मुगल वैभव का नया रूप प्रस्तुत हुआ। 'स्याह कलम' से शबीह बनायी गयी थी। इस समय के शबीह सुन्दर बने। इसके अतिरिक्त चित्र राजदरबार, हरम में स्त्रियों, संत-महात्मा, यवन-सुन्दरियाँ, रति दृश्य एवं संगीत आनंद आदि के बनाये गये। शाहजहाँ की चित्रकला की अपेक्षा वास्तुकला में रुचि अधिक थी। इसने आगरा का किला, ताजमहल, लालकिला, जामा मस्जिद (दिल्ली) आदि श्रेष्ठ इमारतें बनवायी थी। शाहजहाँ के पश्चात् औरंगजेब (सन् 1658-1707) के आते ही मुगलकला का पतन शुरू हो गया। मुगल चित्रकला दरबार की इच्छा के अनुरूप विकसित हुई थी। एक चश्म चेहरा, जामा फ़िलदार, पैजामा, पगड़ियाँ छज्जेदार, स्त्रियाँ पारदर्शी ओढ़नी, लहँगा

घेरदार, ब्लाउज, आभूषण आदि पहने बनायी गयी। हाशियों, फूल-पत्तियों की अलंकारिता चित्रों की विशिष्टता को दर्शाती है। पृष्ठभूमि में बाग-बगीचा, सरोवर, राजमहल के आन्तरिक व बाह्य दृश्य एवं फव्वारे आदि बनाये गये थे।

मुगल शैली

Museum (म्यूज़ियम) - संग्रहालय जहाँ दुर्लभ, ऐतिहासिक, प्राचीन वस्तु, साहित्य, चित्र, मूर्ति आदि को संग्रहीत कर सुरक्षित रखा जाता है और जनता के शोध, अध्ययन एवं ज्ञान-प्राप्ति हेतु अवलोकनार्थ खोला जाता है। यह वह भवन होता है जहाँ पुरातात्विक, ऐतिहासिक, पौराणिक, विचित्र, अनोखी एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह किया जाता है। इसको अजायबघर भी कहते हैं। संग्रहालय शोधकर्ताओं, पर्यटकों, इतिहासविदों, जनता एवं संग्रहकर्ताओं के लिए उपयोगी, महत्वपूर्ण तथा ज्ञानवर्धक होते हैं। यह भवन प्राचीन वस्तुओं को देखने समझने व जानकारी प्राप्त करने का अच्छा स्थान है।

एक प्रकार से सांस्कृतिक सम्पदा, प्राचीन कृतियाँ, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहर आदि को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का यह संग्रहालय/केन्द्र बहुउद्देशीय होते हैं। संग्रहालयों का उद्देश्य संग्रहीत वस्तुओं का प्रदर्शन करना, रख-रखाव करना एवं शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना है। यहाँ पर समय-समय पर अधिकृत विद्वानों द्वारा गोष्ठी, व्याख्यान, अभिरुचि पाठ्यक्रम एवं कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। यहाँ पर उच्च स्तरीय पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, विभिन्न संग्रह-दीर्घाएँ, छायाचित्र अनुभाग एवं प्रकाशन विभाग होते हैं। भारत में प्रथम संग्रहालय कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) में एशियाटिक सोसाइटी बंगाल द्वारा सन् 1814 में स्थापित किया गया, जिसका नाम भारतीय संग्रहालय है। उत्तर प्रदेश का प्रथम संग्रहालय 'राज्य संग्रहालय' सन् 1863 में लखनऊ में 'सीखचे वाली कोठी' में था। यह भारत का पांचवाँ संग्रहालय था। इसी क्रम में सन् 1851 में 'मद्रास लिटरेरी सोसाइटी' से आर्थिक भूगोल संग्रहालय, सन् 1851 में 'विक्टोरिया संग्रहालय, कराची, सन् 1857 में त्रिवेन्द्रम संग्रहालय, त्रिवेन्द्रम, सन् 1857 में बड़ोदा कला संग्रहालय, बड़ौदा, नागपुर संग्रहालय, नागपुर सन् 1868 में दिल्ली नगरपालिका संग्रहालय की स्थापना हुई।

उत्तर प्रदेश में महत्वपूर्ण संग्रहालय निम्न है—

1. राज्य संग्रहालय, लखनऊ (स्थापित सन् 1863)
2. इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद (स्थापित सन् 1931)
3. भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (स्थापित सन् 1920)
4. राम-कथा संग्रहालय, अयोध्या (स्थापित सन् 1988)

5. बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर (स्थापित सन् 1988)
6. राजकीय संग्रहालय, झाँसी (स्थापित सन् 1978)
7. कन्नौज संग्रहालय/ राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज (स्थापित सन् 1996)
8. गुरुकुल कांगड़ी पुरातत्व संग्रहालय, हरिद्वार (स्थापित सन् 1945)
9. पं. गोविन्द बल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय, अल्मोड़ा (स्थापित सन् 1979)
10. राजकीय संग्रहालय, मथुरा (स्थापित सन् 1874)
11. लोककला संग्रहालय, लखनऊ (स्थापित सन् 1989)
12. जनपदीय संग्रहालय, सुल्तानपुर (स्थापित सन् 1989)
13. राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर (स्थापित सन् 1995)
14. कानपुर पुरातत्व संग्रहालय, कानपुर (स्थापित सन् 1999)

(वर्तमान में बिठूर में स्थानान्तरित)

संग्रहालय/अजायबघर

Mycenean Art (माइसीनियन आर्ट) : यूनान के पेलोपोनीसस नगर में पनपी भवन व पात्रों की कला जो ई.पू. 1600 से 1100 ई.पू. तक अस्तित्व में रही। इस कला में अलंकारिता को विशेष योग था। प्रथम चरण प्राचीन युग (1600-1500 ई. पू.) में समाधियों से प्राप्त चित्रित पात्र एवं भित्तिचित्र में कीट का प्रभाव था। मध्य युग (1500-1400 ई.पू.) में भित्तिचित्र बने, विषय युद्ध, धार्मिक जुलूस थे तथा अन्तिम युग (1400-1100 ई.पू.) में भित्तिचित्रों के विषय पवित्र स्थल, पशु युद्ध, जुलूस, आखेट, युद्ध आदि थे। इन चित्रों की सजीवता देखते बनती है।

माइसीनियन कला

En

Nabis Painter (नाबि पेन्टर) : ये कलाकार प्रतीकवाद का समर्थन करते थे, परन्तु उनके सिद्धांत का पालन नहीं करते थे। हिब्रू भाषा का शब्द 'नबी' जिसका अर्थ धर्मदूत या पैगम्बर होता है। यह नाम कवि 'काजालि' ने प्रदान किया था। उन्सर्वी शताब्दी के अन्तिम चरण में सन् 1892 में नबी कलाकारों का उदय हुआ और इनकी प्रथम प्रदर्शनी इसी वर्ष हुई। इन कलाकारों ने रेखात्मक आकारों में पूर्णतः सपाट रंगीन एवं आलंकारिक आकृतियों की रचना की। विषय अधिकांशतः ऐन्द्रिय अनुभूत एवं भावनाओं पर आधारित, दैनन्दिन जीवन के सामान्य क्षणों के चित्र थे। प्रमुख चित्रकार मोरिस देनी, फेलिक्स वालेट्टन, एद्वार वीयार, पियरे बोन्नार रान्सों, पॉल गेसेरुसिय तथा वाल्लोतों थे।

नाबि कलाकार

Nails (नेल्स) - खूटियाँ जो ईजल पर लगायी जाती हैं, जिस पर कैन्वस रखकर चित्र

बनाया जाता है। जिन्हें सुविधानुसार ऊपर-नीचे भी लगाया जाता है। **किल्ली/बूँटी Naive Painters (नेईव पेन्टर्स)** - वह चित्रकार जिन्होंने कहीं से कोई प्रशिक्षण न प्राप्त किया हो, न अध्ययन किया हो व स्वयंभू चित्रकार हो। **सहज चित्रकार**

Narrative Art (नैरेटिव आर्ट) - कथा-चित्रण जिसमें कथा-आधारित प्रसंग पर वर्णनात्मक चित्र बनाये जाते हैं। **कथाचित्र आख्यान कला**

National Gallery of Modern Art (नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट): यह आधुनिक कला संग्रहालय है, जो नयी दिल्ली में इंडिया गेट के निकट है। इसमें सन् 1850 से आजतक के विख्यात समकालीन कलाकारों की कला-कृतियों का संग्रह है। विशेषरूप से भारतीय आधुनिक कलाकारों की 16 हजार से अधिक बहुमूल्य उत्कृष्ट कला-कृतियाँ यहाँ पर संग्रहीत हैं। यह सांस्कृतिक मंत्रालय के अधीन है। इसकी स्थापना 19 मार्च 1954 को जयपुर हाउस में की गयी थी। इसकी दो अन्य शाखाएँ मुम्बई व बंगलौर में स्थित हैं। 150 वर्षों की समकालीन कला-धरोहर को समेटे इस संग्रहालय में पारम्परिक, लोक, जनजातीय, विशिष्ट शैली के चित्र मूर्ति एवं ग्राफिक्स आदि हैं, अन्तर्राष्ट्रीय कलाकारों का भी संग्रह है। इस संग्रहालय का मुख्य कार्य शैक्षिक दायित्व व भारतीय समकालीन कला को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करना है। इस हेतु यहाँ की कला-दीर्घा में प्रदर्शनियों का आयोजन, व्याख्यान, दृश्य एवं श्रव्य माध्यम द्वारा, देश-विदेश के कलाकारों की प्रदर्शनी, गोष्ठियाँ, समीक्षाएँ, कार्यशाला एवं सम्मेलन का आयोजन होता रहता है। यहाँ एक वृहत् पुस्तकालय है, जहाँ कला-इतिहास की विभिन्न पुस्तकें उपलब्ध हैं। **राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय**

Naturalism (नैचुरलिज़्म) - वह चित्र जो समाज की वर्तमान स्थिति का द्योतक हो, सामयिक हो। आदर्शवादिता, कल्पनाशीलता व ऐतिहासिक विषय से बिल्कुल भिन्न। **प्रकृतिवाद/नैसर्गिकतावाद**

NEA (एन ई ए) - National Exhibition of Art (राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी) इस कला प्रदर्शनी का आयोजन प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली द्वारा किया जाता है। इस प्रदर्शनी में भारत के समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों का प्रदर्शन होता है। **राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी**

Neo-classicism (नैओ-क्लैसिज़्म): 18वीं शताब्दी के मध्य में समकालीन फ्रेंच कला पर ग्रीक कला का प्रभाव परिलक्षित होने लगा था। इस समय इटली में उत्खनन का कार्य हो रहा था। उत्खनन से प्रचुर मात्रा में प्राचीन ग्रीक व रोमन मूर्तियाँ निकल रही थीं। इस ग्रीक कला के आदर्श मानव शरीर सौन्दर्य को आधार बना

कर यहाँ के चित्रकारों ने चित्रकला की एक नयी शैली विकसित की, जिसमें ग्रीक पुराणों अथवा रोमन कथाओं के विषयों को आधार बनाया। इस शैली के प्रवर्तक फ्रेंच चित्रकार **जाक् दाविद्** थे। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस कला का पूर्ण यौवन भरा रूप प्रकट हुआ।

नव्य अभिजातवाद/नवशास्त्रीयतावाद

Neo-Impressionism (निओ-इम्प्रेशनिज्म) : प्रभाववाद के प्रक्रिया स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में इस आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। सन् 1886 से 1890 ई० तक चले इस आन्दोलन में प्राचीन फ्रांसीसी शास्त्रीय परम्पराओं को फिर से अपनाने की कोशिश की गयी। सर्वप्रथम 1884 ई. में **Salon Des Artistes Independants** प्रदर्शनी में **जार्ज स्यूरा** का चित्र 'स्नान स्थल' को देख 'फेलिफ्रेनिजो' ने इस शैली को नव प्रभाववाद नाम दिया। दृढ़ आकृतियों की तरह रूपों को संयोजित किया गया, वस्तुओं को व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर तथा प्रकृति रूपों को बौद्धिक क्षमता के अनुसार रचा गया, रूपात्मक संयोजन पर ध्यान दिया गया, दृश्यों को सीधा चित्रित किया जाने लगा। इस शैली में तकनीक पर विशेष ध्यान दिया गया। जैसे- विशुद्ध मूल रंग-बिन्दुओं द्वारा रंगांकन करना, धरातल में रंग भरने के बजाय बिन्दु, कामा, छोटी-छोटी रेखाओं से टैक्श्चर युक्त बनाना आदि। इस आन्दोलन को चित्रकार **जार्ज स्यूरा** ने जन्म दिया था तथा प्रमुख चित्रकार **सिनाक** तथा **कामीय पिस्सarro** आदि थे। इस आन्दोलन को नव-आभासवाद, बिन्दुवाद एवं विभाजनवाद भी कहकर सम्बोधित किया गया।

नव प्रभाववाद

Neo-Plasticism (निओ-प्लैस्टिसिज्म) : घनवादी शैली से एक कदम आगे वस्तु निरपेक्ष रूपाकारों का सृजन करना अर्थात् सरलीकृत त्रिभुज, आयत आकारों की रचना मूल रंगों में करना। इस आन्दोलन के कलाकारों का उद्देश्य था — काल्पनिक आलंकारिक रूपों का सृजन करना, रूपों को वस्तुनिरपेक्ष बनाना, प्रकृति दृश्यों को ज्यामितीय विधि से आड़ी-खड़ी-बेड़ी (तिरक्षी) रेखाओं द्वारा बनाना आदि-आदि। इस आन्दोलन के मुख्य प्रवर्तक **पियर मोन्ड्रिज** ने इसकी शुरुआत सन् 1917 में की थी। इस आन्दोलन का सुनिश्चित रूप सन् 1920 में स्पष्ट हुआ। इस शैली का नाम नवलचीलवाद के नाम से भी जाना जाता है।

नवीन रूपवाद

Neo-Realism (निओ-रिअलिज्म) : इस वाद का घोषणापत्र सन् 1960 में कला समीक्षक **पियर रेस्तानि** एवं कलाकार **ईव क्लेअँ** ने मिलान (पेरिस) में प्रकाशित किया और इसकी प्रथम प्रदर्शनी 'दादा से 40 अंश ऊपर' का आयोजन पियर रेस्तानि की कला वीथिका में किया गया। इस वाद के कलाकारों का सामाजिक

सत्यता की स्थिति को प्रकाशित करना ही उद्देश्य था। यह कलाकार की आन्तरिक पीड़ाओं की अभिव्यक्ति थी। जैसे- विवस्त्र स्त्री मॉडल्स के शरीर पर रंग लगा कैनुवस पर लुढ़का चित्र बनाये। ईव क्लेऑ का यह चित्र स्त्री शरीर के सम्बन्धों पर तिरस्कार था। प्रथम प्रदर्शनी में भाग लेने वाले प्रमुख चित्रकार क्लेऑ, सेसार, बाल्दाच्चिनी, रेस्से फ्रान्स्वा घुफ्रे एवं ज्यॉ तिनवेलि थे। इस वाद को Neo-Dadaism भी कहा जाता है।

नव यथार्थवाद

Neutral Grey (न्यूट्रल ग्रे) - काले और सफेद के मिश्रण से प्राप्त रंग।

तटस्थ धुमैला/उदासीन धूसर

Nimbus (निम्ब्स) - प्रभामण्डल जो महान विभूतियों, देवताओं व संतों के शीर्ष के पीछे चारों ओर दिखाया जाता है।

प्रभा-मण्डल

Non Professional Artist (नॉन प्रोफेशनल आर्टिस्ट) : गैर पेशेवर कलाकार जो अपना शौक पूरा करने के लिए कलाकृतियों की रचना करते हैं। जिनका व्यवसाय, पेशा, वृत्ति, धन्धा कुछ और होता है।

अव्यवसायिक कलाकार

Nude study (न्यूड स्टडी) - इसके अन्तर्गत पूर्ण नग्न मानव शरीर के अंग-प्रत्यंग, माँसपेशियों तथा मुद्राओं आदि का अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में पढ़ रहे कलाछात्रों एवं कलाकारों के लिए दिगंबर शरीर रचना-ज्ञान अति आवश्यक है।

नग्न रूप अभ्यास/अध्ययन

00

Obelisk (ऑबेलिस्क) : चौखूँटा नोकदार स्तम्भ-चिह्न।

स्तम्भ चिह्न

Object Paintings (ऑब्जेक्ट पेन्टिंग) - वस्तुओं के समूह का चित्रण जिसमें निर्जीव पदार्थों का अध्ययन किया जाता है। इसे **Still life** (वस्तु चित्रण या पदार्थ चित्रण) कहा जाता है। इस चित्रण में चित्रकार विषय वस्तु की उपेक्षा कर उसके तकनीकी पक्ष पर ज्यादा ध्यान देता है।

वस्तुनिष्ठ चित्रण

Official Bureau of Painting (ऑफिशियल ब्यूरो ऑफ पेन्टिंग) : जापान के कलाकारों की संस्था जिसका गठन 701 ई. में हुआ था। यह वह संस्था है जिसने 8वीं व 9वीं शताब्दी में जापान के धार्मिक स्थलों एवं राजमहलों में चित्रांकन का कार्य किया था। इस संस्था में प्रवीण कलाकारों के साथ साधारण चित्रकार कार्य करते थे। विश्व प्रसिद्ध होरियूजी मंदिर की भित्तियों को इसी संस्था के कलाकारों ने

अलंकृत किया था। इस संस्था का विघटन सन् 808 में हो गया था।

अधिकारिक चित्रण केन्द्र

Offset (ऑफ़सेट) - मुद्रण विधि, जिसमें छपाई ठप्पों द्वारा न होकर सीधी होती है।

Offset Lithography (ऑफ़सेट लिथोग्राफी) : अनुचित्रित मुद्रण, जिसमें एक मूल आलेख द्वारा अनेक प्रिन्ट निकाले जाते हैं। यह मूल आलेख धातु-पत्र के विशेष विधि-प्रयोग से तैयार किया जाता है अथवा कम्प्यूटर द्वारा मास्टर निकाल कर छापा जाता है।

अनुछाया चित्रण

Oil Colour (ऑइल कलर) : वह रंग जिनका माध्यम तेल हो। तेल अलसी, तारपीन, गरी, पोस्ता, मिट्टी का तेल आदि कुछ भी हो सकते हैं परन्तु प्रचलित माध्यम अलसी व तारपीन ही है। 15वीं शताब्दी से यह माध्यम प्रचलन में है। ये रंग लोकप्रिय व विश्वव्यापी है। इनसे बने चित्रों में स्वाभाविक चमक रहती है। ये ट्यूब के रूप में उपलब्ध हैं। इन रंगों का अविष्कार 'जॉन वान आइक' एवं 'ह्यूबर्ट वान आइक' दो भाइयों ने किया था, जो 'फ्लैंडर्स' (नीदर लैण्ड) के निवासी थे।

तैल रंग

Oil Copal (ऑइल कोपल) : तैल-चित्रण में प्रयोग होने वाला माध्यम (Medium) है। इसको अलसी तेल के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। इसका प्रभाव बिल्कुल अलसी तेल की भाँति है। इससे बनाये गये चित्र जल्दी सूखते हैं। यह चित्र की चमक को बढ़ाता है।

ऑयल कोपल

Oil Cup (ऑइल कप) - तैल-चित्रण हेतु अलसी व तारपीन का तेल रखने का पात्र। इसे Dipper भी कहा जाता है।

तैल-पात्र

Oil Sketching Paper (ऑइल स्केचिंग पेपर) : तैल-चित्रण के लिए उपयुक्त कागज। तेल प्राइम से इसकी सतह बनी होने के कारण, रंग शोषित नहीं होते। विभिन्न उभार वाले कर्णों में उपलब्ध, यह बाजार में मिलते हैं। इस पर बनाये तैल चित्र लम्बी अवधि तक सुरक्षित रहते हैं और इनके रख-रखाव में सुविधा रहती है।

तैलिया कागज

Old Master (ओल्ड मास्टर) - पुराने प्रतिष्ठित उत्कृष्ट, निपुण व उस्ताद कलाकार जिन्होंने नवीन शैली का जन्म दिया हो, उन कलाकारों के चित्र व अपने समय (काल) का प्रतिनिधित्व करने वाले परम्परागत शैली चित्र।

पुरानी कलाकृति/पुराने उस्ताद कलाकार

One Man Show (वन मैन शो)- किसी कलाकार द्वारा अपनी कलाकृतियों, अपने सृजन एवं कलात्मक कार्य की एकल प्रदर्शनी करना । **एकल प्रदर्शनी**

Opaque Colour (ओपेक कलर) - अपारदर्शी प्रभावयुक्त जलरंग जो सफेद रंग मिश्रण से प्राप्त होते हैं । **अपारदर्शी रंग**

Op Art (ऑप आर्ट) - वह चित्र जिसे देखने मात्र से दृष्टि भ्रमित हो जाय । चित्र हिलता-डुलता दिखायी दे । एक प्रकार से विशिष्ट तकनीक द्वारा चित्रित ज्यामितीय रूपों की विभिन्न आकृतियाँ, जिनको एकटक देखने से नेत्र नियंत्रण में नहीं रह पाते और चित्रित आकृतियाँ, चलायमान, हिलती-डुलती व झिलमिलाती प्रतीत होती हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता । इस कला का आरम्भ हालैण्ड निवासी **विक्टर वासारेली (Victor Vasarely)** ने पेरिस में सन् 1940 में किया था । इस कला का दूसरा प्रसिद्ध इंगलिश कलाकार **ब्रिजेट रिली (Bridget Riley)** और अमेरिकन कलाकार **रिशर्ड आनुस्कीवित्स** थे । **दृष्टिगत कला**

Open Air Painting (ओपन एअर पेन्टिंग) : किसी भी रचना को कला-कक्ष में न कर खुले स्थान पर करना । आमतौर पर प्रकृति-चित्रण इस प्रकार से खुले आकाश के नीचे किये जाते हैं, परन्तु अधिकांश कलाकार अपनी अभिव्यक्ति को भी खुले आकाश के नीचे करना पसंद करते हैं । **मुक्तांगण/मुक्ताकाशीय चित्रण**

Opera (ऑपेरा): गीतात्मक नाट्य प्रस्तुति ।

गीत-नाट्य

Opera House (ऑपेरा हाउस) : अभिनयादि की गीत - संगीतमय प्रस्तुति का स्थान अथवा प्रेक्षागृह । **रंगशाला/रंगगृह**

Optical Illusion (ऑप्टिकल इलूज़न) : दृष्टिभ्रामक कला, जिसमें प्रत्यक्ष जो दिखायी देता है, वह होता नहीं है । यह दृष्टि-भ्रम पृष्ठभूमि के कारण भी हो सकता है और आकृति प्रमाण के कारण भी । **दृष्टि भ्रामक कला**

Optical Mixture (ऑप्टिकल मिक्सचर) - नेत्रों पर आस-पास वाले रंगों का वह छद्म प्रभाव जो निश्चित दूरी से देखने में होता है । जैसे पीला व नीला अगल-बगल, आस-पास लगे हों तो हरे रंग का प्रभाव दिखाई देने लगता है । **दृष्टिजन्य मिश्रण**

Organization (ऑर्गनाइज़ेशन) : संगठन अथवा संस्था जो मानव, समाज, शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल, स्वास्थ्य, सेवा, सामाजिक परम्परा, आवासन (गृह निर्माण संघ) आदि के लिए कार्य करती है । यह एक सामूहिक समिति अथवा मंडली या दल होता है, जो निर्धारित कार्यक्रम/कार्य सम्पन्न करता है । इनके

अपने नियम विधान होते हैं। यह एक व्यवस्था के तहत सामूहिक कार्य करती है।

संस्था/संगठन/संस्थान

Ornamental Form (ऑनमेन्टल फॉर्म) : काल्पनिक सौन्दर्य से परिपूर्ण रूप जिसमें सांसारिक रूपों को सौन्दर्य प्रदान करने के उद्देश्य से बढ़ा-चढ़ा कर अथवा लय-गति देकर रेखाओं को बनाया जाता है, जिससे रूपों में कृत्रिम सौन्दर्य उत्पन्न होने लगता है। ये रूप आलंकारिक होते हैं। इन रूपों का वैचारिक महत्व नहीं होता।

आलंकारिक रूप

Orphism (ऑर्फिज़्म) : घनवाद के उत्तर काल में इस आन्दोलन का अभ्युदय हुआ। इस आन्दोलन के चित्रकार घनवाद को गतित्वदर्शी रूप देना चाहते थे। इस हेतु उन्होंने फाव रंगों की चमक एवं घनवाद के आकार सौन्दर्य का समन्वय किया। एक प्रकार से इस आन्दोलन में रंग सौन्दर्य से परिपूर्ण घनवादी रचनाएँ की जाती थी। इसका प्रारम्भ सन् 1912 में हुआ था, इसके प्रणेता रॉबर्ट देलोने थे जिन्होंने चमकीले रंग का अनोखा प्रयोग कर स्वाभाविक निरपेक्ष सौन्दर्य गुणों को समाहित करते हुए चित्र बनाये थे। अन्य प्रमुख चित्रकार मॉर्गन रसेल, कुपका, मैकडोनेल्ड राइट एवं सोनिया टर्क आदि थे। इसका नामकरण अपोलिनेर ने आलोचनावश किया था।

सुरीलवाद

Oudh School (अवध स्कूल) : अवध क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) के नवाब, कला के कद्रदान थे। उनके दरबार में कलाकारों को प्रश्रय प्राप्त था। सन् 1775 में अवध के चौथे नवाब आसुफुद्दौला (सन् 1775-97) ने फैजाबाद से राजधानी को स्थानान्तरित कर लखनऊ में स्थापित की। नवाबों के समय लखनऊ में मीनाकारी, चिकनकारी, बिदरी कार्य, हाथी दाँत कला एवं चित्रकला प्रसिद्ध थी। यहाँ पर बने चित्र अवध स्कूल के नाम से जाने जाते हैं। यह चित्रशैली उत्कृष्ट थी। इस पर मुगलिया व पहाड़ी शैली का प्रभाव था। स्त्री बूटीदार गरारा, पैजामा, पारदर्शी चुनरी एवं आभूषण से युक्त बनायी गयी हैं। पुरुष आकृतियाँ कुर्ता, फ़िलदार लम्बा जामा/चोंगा, सर में पगड़ी, रत्नों के आभूषण धारण किये बनाये गये हैं। नवाबों एवं बेगमों की पोशाक भव्य रत्नों, मोतियों से सुसज्जित सिल्क कपड़े की बनी हैं, साथ ही रत्नजड़ित मुकुट पहने हैं। विषय दरबारी जीवन, शबीह, बेगमों के चित्र, हरम, रति दृश्य, जुलूस, स्मारक, संगीत गोष्ठियाँ एवं जन-जीवन आदि हैं। इन चित्रों में छाया-प्रकाश का प्रभाव दिखाई देता है। हाशिये सादे व फूल-पत्ती से अलंकृत दोनों प्रकार के बनाये गये हैं। चित्रों की पृष्ठभूमि गोमती नदी, महल का वास्तु, धुमड़ते - उमड़ते बादल, फूलों के पेड़ से अच्छादित बगीचे एवं दूर-दूर तक के दृश्य अंकित हैं। नवाब सुजाउद्दौला (सन् 1754-75) के

दृश्यकला कोश / 87

समय फैजाबाद के दरबारी जीवन के कुछ चित्र भी प्राप्त हुए हैं। अवध के अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह (सन् 1847-56) थे, जो एक कविहृदय थे। इन्होंने लखनऊ में बाग - उद्यान बनवाये। यह काफी रंगीन मिजाज के नवाब थे। इनके अन्तरंग दृश्य-चित्र एवं इनका पोर्ट्रेट काफी प्रसिद्ध है।

अवध चित्रशैली

Outline (आउट लाइन) - किसी वस्तु, आकृति का खोंका खींचना अथवा रूपरेखा बनाना। **बाह्य रेखांकन**

Over Painting (ओवर पेन्टिंग) : चित्र में आवश्यकता से अधिक किया गया रंगांकन कार्य, जिससे चित्र में दोष उत्पन्न होने लगता है। चित्र सौन्दर्यहीन दिखाई देता है। **आधिक्य चित्रण**

Over work (ओवर वर्क) - मूर्ति या चित्र पूर्ण होने के पश्चात् उनमें अनावश्यक कार्य करने से यह दोष उत्पन्न होने लगता है। **अति या अधि काम/रचना**

Pp

Pageant (पेजेंट) : शोभायात्रा, जो विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक अवसरों पर निकाली जाती है। इस शोभायात्रा में विभिन्न झाँकियाँ अथवा सवारियाँ रहती हैं, जो किसी पौराणिक आख्यान, कथा, सामाजिक चेतना, महापुरुष की जीवनी एवं देश प्रेम की घटना पर आधारित होती है। इन झाँकियों में कथानक के अनुसार पात्र की वेशभूषा, प्रसाधन एवं साज-सामान होते हैं। पृष्ठभूमि का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह चलायमान, स्वांग-तमाशा वाली अथवा केवल सजावट वाली या सजी हुई स्थिर होती है। इन झाँकियों में कलात्मकता का विशेष योग रहता है। ये जुलूस रूप में होती हैं। **झाँकी/सवारी**

Pahari School (पहाड़ी स्कूल) - हिमालय की पहाड़ी वादियों में 18वीं शती में पनपी चित्र परम्परा जो पहाड़ी स्कूल के नाम से प्रसिद्ध है। मुगल सम्राज्य के पतन के पश्चात् चित्रकारों को नया संरक्षक खोजने हेतु पहाड़ों की ओर उन्मुख होना पड़ा। पहाड़ी राजाओं-महाराजाओं ने इन कलाकारों का सम्मान करते हुए इन्हें संरक्षण प्रदान किया। पहाड़ी चित्रकला के नाम पहाड़ी क्षेत्र के अनुसार प्रसिद्ध हुए। पहाड़ी कला के मुख्य केन्द्र नूरपुर, बिलासपुर, सुकेत, जसरोटा, मनकोट, बसोहली, जम्मू, गढ़वाल, कांगडा, गुलेर, मण्डी, कुल्लू, चम्बा एवं नालगढ़ आदि थे। शान्त पहाड़ी वातावरण में अंकित चित्रों के परिधान व बोलचाल में मुगलिया छाप रही है। विषय महाभारत, दुर्गा-सप्तसती, जयदेव कृत व केशवकृत

‘रसिकप्रिया’ तथा बिहारी कृत ‘सत्सई, रामायण, गीत-गोविन्द, बारामासा, राग-रागिनी, श्रीमद् भागवत, नायिका भेद, मुगलिया आदि थे। इन विषयों पर अनेक चित्र बनाये गये। इन चित्रों में दृश्य सौन्दर्य विशेषता है। इस शैली को स्वतन्त्र एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसको ‘पहाड़ी कलम’ एवं ‘पहाड़ी शैली’ कहा जाता है।

पहाड़ी चित्रशैली

Painting (पेन्टिंग) : किसी भी रचना में जब रंगों का प्रयोग किया जाता है तब वह रचना रंग-चित्र (पेन्टिंग) कहलाती है। यह रचना परिचित-अपरिचित रूपाकारों का समूह होता है जो धार्मिक, काल्पनिक, प्रतीकात्मक, यथार्थ कुछ भी हो सकते हैं। पेन्टिंग में चित्रकार अपनी भावनाओं, कल्पनाओं को साकार करता है और अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करता है।

चित्र/चित्रकारी/रंगचित्र

Painting Knife (पेन्टिंग नाइफ़) - स्टील की लचकदार कन्नी आकार का चाकू जिससे चित्रण कार्य किया जाता है।

चित्रण कन्नी

Palanquin (पैलनक्वीन) : पुराने समय में शादी के अवसर पर दुल्हन को विदा करने हेतु प्रयोग में आने वाली सवारी, जिसे चार कहार (जाति विशेष) कंधे पर उठा कर चलते थे। इनके हाथ में एक टेक रहती थी, जो पालकी को सहारा देने के लिए होती थी। यह बॉक्स रूप में दो तरफ से खुली हुई बनी रहती थी, इस पर दोनों तरफ अलंकृत मेहराब बनी रहती थी, जिस पर सुन्दर सा पर्दा पड़ा रहता था। यह पालकी एक लम्बे-मोटे बाँस के सहारे टिकी रहती थी, जिसके द्वारा कहार कंधे पर उठाकर इसको चलते थे।

पालकी/डोली

Palette (पैलैट) : रंग मिश्रण करने की तख्ती। रंगों को ट्यूब से निकाल कर, मिश्रित करने के लिए, रंग-शृंखला बनाने के लिए एक पात्र की आवश्यकता होती है। इस हेतु सबसे उपयुक्त होती है Palette। यह लकड़ी, प्लास्टिक एवं स्टील धातु की तैयार मिलती है, परन्तु तैल-चित्रण हेतु सबसे अच्छी लकड़ी की पारम्परिक अंगूठे से पकड़ने वाली एवं जल-चित्रण के लिए प्लास्टिक की अच्छी मानी जाती है। वैसे तो चित्रकार सुविधानुसार काँच, संगमरमर, सनमाइका को भी पैलेट के रूप में प्रयोग करते हैं।

रंग-पट्टिका/छुरी

Palette Knife (पैलैट नाइफ़) - पैलेट पर रंग मिश्रित करने या पैलेट के रंगों को साफ करने के लिए प्रयुक्त होने वाला लचकदार चाकू।

रंग-पट्टिका छुरी

Panel (पैनल) - तैल-चित्र बनाने की लकड़ी की तख्ती अथवा स्थायी धरातल जैसे — दीवार या छत का हिस्सा जिस पर शिल्प कार्य किया गया हो। चौखटा लगाने को भी कहते हैं।

फलक/तख्ता/पट्टिका

Papier Mache (पेपिएर मैशे) - रद्दी कागज, विभिन्न प्रकार की मिट्टी, खड़िया, मेथी व बन्धक रूप में गोंद, सरेस या कोई एडहेसिव आदि मिलाकर बनायी जाती है। इसको अन्य प्रकार के मिश्रण (क्षेत्रीय उपलब्धता के आधार पर) से भी बनाया जाता है। तत्पश्चात् इससे मुखौटे, विभिन्न कृतियाँ व वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। **कुट्टी/लुगदी की वस्तु**

Pastel (पेस्टल) : शुष्क रंग वर्तिका, जिनसे वस्तु-चित्रण, पोर्ट्रेट एवं दृश्य-चित्रण बनाये जाते हैं। चित्रण कार्य के लिए मुलायम पेस्टल उपयुक्त होते हैं। इस माध्यम से बने चित्रों के रख-रखाव में सावधानी अपेक्षित है। चित्रण हेतु आधार के लिए पेस्टल कागज का प्रयोग किया जाता है। पेस्टल चित्रण का प्रारम्भ 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांस में हुआ था। आजकल ऑयल पेस्टल रंग का प्रयोग ज्यादा हो रहा है। पेस्टल चार प्रकार के होते हैं - कठोर पेस्टल, मुलायम पेस्टल, ऑयल पेस्टल एवं पेन्सिल पेस्टल। **शुष्क रंग वर्तिका/पेस्टल**

Patch work (पैच वर्क) - रंगों को धब्बे रूप में लगाकर चित्र बनाने की विधि। प्रभाववाद का आरम्भ ऐसे चित्रों से ही हुआ था। **चप्पाकारी / चिल्ली / धब्बा कार्य**

Pattern (पैटर्न) - अभिरचना अथवा आलंकारिक रचना जिसमें एक प्रतीक या डिजाइन को बार-बार दोहराया जाये या उसका अनुकरण किया जाये। जैसे- वस्त्र, कालीन व साड़ी पर बने रूप। **प्रतिरूप/अभिरचना / अनुकरण**

Pearl Colour (पर्ल कलर) : मोती युक्त चमक वाले रंग जो विशेष प्रदीप्त प्रभाव वाले होते हैं। इनका माध्यम जल होता है। **सीपी रंग**

Pedestal (पैडिस्टैल) : लकड़ी, सीमेण्ट अथवा पत्थर की बनी विभिन्न ऊँचाई वाली वर्गाकार चौकी जो किसी भी मूर्ति शिल्प रखने के लिए नीचे का आधार होती है। **आधारिका/मूर्ति आधार**

Pelmet (पेल्मिट) : पर्दा टाँगने की रॉड को छुपाने अथवा सजाने के लिए वस्त्र या लकड़ी का लटक आवरण अथवा झब्बा। **पर्दा पोश/पर्दा ढकना/लटकीला**

Pencil (पेन्सिल) : सन् 1662 ई. में पहली बार ग्रेफाइट पेन्सिल बनी। पेन्सिल बनाने की सर्वप्रथम कम्पनी का श्रेय फेबर (Faber) को जाता है जिसकी स्थापना सन् 1761 ई. में हुई थी। पेन्सिल एक उपयुक्त माध्यम है स्केचिंग, ड्राइंग एवं डिजाइनिंग का। यह तीन समूह में उपलब्ध है H, B एवं चारकोल। H समूह जिसका तात्पर्य Hard से है तथा B समूह जिसका तात्पर्य मुलायम अथवा Black से हैं एवं चारकोल पेन्सिल जो अत्यधिक काली होती है। **पेन्सिल**

Performing Arts (पेर्फार्मिंग आर्ट्स) - वह कलाएँ जिनकी प्रस्तुति मंच पर दर्शकों के समक्ष की जाय। जैसे - काव्यकला, अभिनय, संगीत एवं नृत्यकला आदि। इन्हें मंचीय कला भी कहा जाता है। प्रदर्शनकारी कलाएँ

Perspective (पेर्सपेक्टिव) : नेत्रों द्वारा ग्रहण किया जाने वाला एक प्रभाव जिसमें दूर की वस्तु छोटी और निकट की वस्तु बड़ी तथा दूर की वस्तु धुँधली एवं पास की वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है। नेत्रों को ऐसा अनुभव परिप्रेक्षीय प्रभाव के कारण होता है। इसी प्रभाव का ध्यान रख चित्रण कार्य किया जाता है। यह प्रभाव दो प्रकार का होता है अकाशीय परिप्रेक्ष्य व रैखिक परिप्रेक्ष्य। धार्मिक चित्रण में परिप्रेक्ष्य का ध्यान नहीं रखा जाता है। दूरदृश्यलघुता/परिप्रेक्ष्य

Petroglyph (पेट्रिग्लिफ़) : पत्थर पर उकेर कर बनायी गयी प्रतिमा या शिल्पाकृतियाँ शिलोत्कीर्णन

Photograph (फोटोग्राफ) - कैमरे द्वारा खींचकर बनाया गया चित्र जिसमें यथावत् अंकन होता है। इसे तस्वीर, छायाचित्र, छविचित्र या प्रकाश चित्र कहा जाता है। आलोक चित्र

Photography (फोटोग्राफी) : फोटो खींचने की कला। उन्नीसवीं शती के अन्तिम चरण में फोटोग्राफी का अविष्कार हुआ, इसके अविष्कार से कला-जगत ने नये सिरे से विचार करना प्रारम्भ कर दिया। क्योंकि व्यक्ति-चित्रण, दृश्य-चित्रण, सादृश्य मूलक चित्रण को कैमरे ने चुनौती पेश कर दी थी। प्रतिच्छवि बनाने के महत्व को कम कर दिया था। उपरोक्त चित्रण चित्रकार को समाज में एक पहचान दिलाते थे। फोटोग्राफी के विकास ने जन-सामान्य तक अपनी स्मृति को सुरक्षित रखने का साधन सुलभ कर दिया। फोटोग्राफी शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों Photo व Graphics से मिलकर बना है। प्रारम्भिक कैमरा 'ऑबस्कुरा' था। सर्वप्रथम सन् 1470 में लियोनार्डो दा विन्ची ने इस कैमरे का अविष्कार किया। सन् 1558 में इसमें लेन्स लगाने की परिकल्पना जियोवनी डेला पोर्टा ने की। सन् 1665 में इसका छोटा रूप विकसित हुआ। सन् 1816 में फ्रॉंसीसी जोसफ निसफोर नीप्से ने प्रथम बार प्रकाश संवेदी सामग्री सिल्वर क्लोराइड से फोटोग्राफ का निर्माण किया था। सन् 1839 में ब्रिटेन के विलियम हेनरी फॉक्स हालबॉट ने Negative का प्रयोग कर कॉन्टेक्ट प्रिन्ट बनाया। सन् 1888 में अमेरिकी जार्ज ईस्टमैन द्वारा Kodak कैमरे का निर्माण किया। इसके पूर्व सन् 1880 में इन्होंने रोल फिल्म का भी निर्माण किया था। सन् 1937 में Afa दृश्यकला कोश / 91

कम्पनी द्वारा रंगीन निगेटिव बनाये जाने लगे। सन् 1947 ई. में डॉ. एडविन एच ने 'पोलाराइड' कैमरे का अविष्कार किया, जिससे तत्काल फोटो बन जाते थे। सन् 1963 में प्रथम बार रंगीन फिल्म का प्रयोग कैमरे में किया गया। भारत में पहला फोटो स्टूडियो कलकत्ता में सन् 1849 में खुला।

छवि/छाया चित्रांकन

Photo Montage (फोटो मॉन्टाज) : फोटो को काट-काट कर बनाया गया समुच्चित-चित्र संयोजन।

फिल्म संग्रन्थन

Pictography (पिक्टोग्राफ़ि) : चित्रलिपि कला, जिसमें अक्षरों का प्रयोग न कर चित्र-सदृश अक्षरों का प्रयोग किया जाता है। यह लिपि प्राचीन मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम थी। प्राचीन शिलालेखों एवं भित्तियों पर यह चित्राकृतियाँ गूढ़ाक्षर लिपि के सदृश अंकित हैं।

चित्रलेखन कला

Picture Gallery (पिक्चर गैलरी) - चित्र प्रदर्शन का स्थान अर्थात् चित्रदीर्घा, चित्र वीथिका।

चित्रशाला

Picture Varnish (पिक्चर वार्निश) : चित्र को सुरक्षित रखने एवं चमक प्रदान करने के लिए द्रव पदार्थ। चित्र, पूर्ण रूप से बन जाने पर इसका प्रयोग किया जाता है।

Pilaster (पिलैस्टैर) : भवन की भित्ति पर बनाया गया अर्ध-उभार खम्भा। अर्ध स्तम्भ

Planography Process (प्लेनोग्राफ़ि प्रोसेस) : छापाकला की पद्धति जिसमें समतल सतह प्रणाली तकनीक का प्रयोग कर छपाई की जाती है। अश्ममुद्रण एवं सिल्क स्क्रीन छपाई में इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

समतल सतह प्रणाली

Plaster Casting (प्लास्टर कास्टिंग) - प्लास्टर ऑफ पेरिस द्वारा किसी मूर्ति-शिल्प की अनुकृति को ढालना।

ढलाई विधि/कार्य

Plastic Art (प्लास्टिक आर्ट) - वह कला, जिसमें रूप प्रदान करने वाला गुण हो अर्थात् पदार्थ अपना अस्तित्व खोकर अन्य रूप में समाहित हो जाए। सुघट्य/रूपप्रद कला

Playwright (प्लेराइट) - नाटकों को लिखने वाला लेखक।

नाटककार

Plinth (प्लिन्थ) : खम्भे का चौखूँटा आधार अर्थात् निचला भाग जो चौकोर हो तथा खम्भे से चारों तरफ चौड़ाई में अधिक हो।

वर्गाकार आधार

Podium (पोडियम) : मंच में स्थित चौकी जो कमर से लेकर वक्ष तक की ऊँचाई वाली होती है, जिसके पृष्ठभूमि में अथवा पीछे खड़े होकर मंच संचालनकर्ता, वक्ता, अतिथि, विशेषज्ञ आदि अपना सम्बोधन करता है। इसमें एक माइक भी लगा रहता है।

मंच-पीठिका

Porcelain (पॉर्सलिन) - चीनी मिट्टी के पात्र एवं खिलौने बनाने में प्रयोग होने वाली एक प्रकार की मिट्टी। **चीनी-मिट्टी**

Porch (पॉर्च) : घर के प्रवेश द्वार पर, ड्योढ़ी पर, बरामदा में, खम्बों के सहारे यह मण्डप बनाया जाता है। जिसमें चारों ओर खुला भाग परन्तु ऊपर से ढका रहता है। **बरसाती/द्वार मण्डप**

Portal (पॉर्टल) : भवन के मुख्य द्वार पर बनायी जाने वाली मेहराब जो फाटक अथवा प्रवेशद्वार में बनी होती है। **प्रवेश द्वार/सिंहद्वार / द्वार मण्डप**

Pop Art (पॉप आर्ट) - वह कला जिसमें विज्ञापन, कथा-चित्रों, समाचार-पत्रों, कॉमिक-चित्रों एवं पैकिंग लेवलों आदि के आधार पर अंकन हुआ हो। एक प्रकार से व्यावसायिक कला के सभी पक्षों का प्रयोग किया गया हो। सपाट आकृतियों से सृजित, जनता को आकर्षित करने वाली प्रचलित कला अथवा समकालीन समाज के भौतिक जीवन को समर्पित कला। जिसका उद्भव इंग्लैण्ड में सन् 1956 में हुआ। इस कला में ललित कला और व्यावसायिक कला में भेद समाप्त हुआ। प्रमुख कलाकार वास्तुकार **ऑलिसन, स्मिथसन, मूर्तिकार पाओलौत्सि (Paolozzi Eduardo)**, चित्रकार **हेमिल्टन पीटर ब्लेक, पीटर फिलिप्स, जो टिल्सन (Joe Tilson)** एवं **कियाज विशेष** थे।

इंग्लैण्ड में इसकी प्रथम प्रदर्शनी 'कल की दुनिया' **व्हाइट चैपल कला-दीर्घा** में सन् 1956 में हुई थी। समाज को समर्पित इस कला का सन् 1960 में अमेरिका में खूब प्रचार हुआ। यहाँ के प्रसिद्ध पॉप कलाकार **राबर्ट रोशेन बर्ग** थे। जिन्होंने सन् 1955 में प्रदर्शित एक चित्र में फोटोग्राफ व अखबार की कतरन का प्रयोग किया था। अन्य प्रतिष्ठित कलाकार **रिशर्ड लिन्ड्नेर, जास्पेर जान्स, ऑण्डी वारहोल, रॉय लिश्टेनश्टाइन, टॉम वेसेलमान, जेम्स रोसेन्किवस्ट, जिम डाइन, राबर्ट इण्डियाना** एवं **क्लास ओल्डेनबुर्ग** थे। **जनप्रिय/सर्वप्रिय कला**

Portfolio (पॉर्टफोलिओ) - कागज पर बने चित्र, दस्तावेज, खुले कागज व नक्शा आदि रखने का थैला अथवा चमड़े का बैग। **पेटिका/बस्ता**

Portrait (पॉर्ट्रेट) - मानव के वक्ष तक के हिस्से का बना चित्र अथवा मूर्ति। इसे शबीह कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। **आवक्ष चित्र/व्यक्ति चित्र**

Pose (पोज़) : विभिन्न मुद्राओं व भाव-भंगिमाओं में चित्र बनवाने अथवा फोटो खिंचवाने के लिए खड़े होना या बैठना अथवा लेटना। **मुद्रा**

Post Impressionism (पोस्ट इम्प्रेसनिज़्म) : वैयक्तिक विचारों से प्रेरित कला जिसमें

आन्तरिक अनुभूतियों का अंकन हुआ। प्रभाववाद के विरोध में इस आन्दोलन की शुरुआत हुई। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य कला में अधिक से अधिक रूपात्मकता का समावेश कराना तथा विषय-वस्तु पर ध्यानाकर्षित कराना था। वर्ष 1910 में 'माने तथा प्रभावोत्तर कलाकार' प्रदर्शनी इंग्लैंड में आयोजित हुई जिसने कलाकारों के बीच हलचल मचा दी, उन्हें सोचने पर विवश कर दिया और वह बाह्य जगत से हटकर आन्तरिक सत्य की खोज में चित्रांकन करने लगे। इन कलाकारों ने एक नवीन शैली विकसित की, जिसमें तूलिका घातों द्वारा वस्तु को व्यक्त किया गया, प्राकृतिक रूपों को ज्यामितीय आकृतियों में ढाला गया, कल्पना व डिजाइन के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये गये। प्रमुख चित्रकार विन्सेण्ट वान, सेज़ान, वान गॉग, पाल गागिन, गोँव, स्यूरा तथा सेज़ान थे।

उत्तर प्रभाववाद

Poster (पोस्टर) - विभिन्न प्रकार के प्रचार का चित्र, जिसमें आकर्षित करने के समस्त गुण समाहित हों।

इशतहार/विज्ञापन

Pothi Painting (पोथी पेन्टिंग) - मध्य काल में पाल व जैन शैली में पोथियों का निर्माण वृहद् संख्या में हुआ है। इन पोथियों पर सुन्दर लेखन के साथ चित्रांकन कार्य भी किये गये। काली स्याही से बने चित्र की आकृतियाँ भावहीन, नुकीली लम्बी नाक, छोटी ठुड्डी, बड़ी-बड़ी आँखें, एक चश्म चेहरा बनाया गया है। रंग चटकीले लगाये गये हैं। विषय बौद्ध धर्म, जैन धर्म व वैष्णव धर्म के देवी-देवताओं से सम्बन्धित हैं, जो ताड़पत्र व कागज पर लिखे गये हैं।

लघु/छोटी पुस्तक चित्रण

Prehistoric Art (प्रीहिस्टोरिक आर्ट) - ई० पू० 40,000 से 4000 तक के बीच की कला, जिनके कला-अवशेष गुफा-चित्र रूप में प्राप्त हुए हैं।

प्रागैतिहासिक कला

Pre-Raphaelitism (प्री-राफेलाइटिज्म) : दृश्यकलाओं में सुधार की दृष्टि से इंगलिश कलाकारों ने इस आन्दोलन का सूत्रपात किया। जिसमें छाया-प्रकाश के शास्त्रीय नियमों को त्याग, सीधे प्रकृति का अध्ययन किया तथा अलंकरण आदि से बचे। इंग्लैण्ड में सन् 1840 ई. में कलाकारों के एक समूह ने इस आन्दोलन का सूत्रपात किया जिसके तहत शास्त्रीय परम्पराओं को चुनौती दी तथा मौलिक गम्भीर विषयों को चुना। इस दल के सभी चित्रकार सीधे प्रकृति, साहित्य तथा इतिहास का अध्ययन करने लगे और चरित्रगत विशेषताओं से पूर्ण मुखाकृतियों तथा प्रकृति के पर्याप्त विवरणात्मक चित्र बनाने लगे। इस दल के कलाकारों ने प्राक् रैफेलवादी बन्धु संघ की स्थापना सन् 1848 में की। यह दल अपने देश में कला की उत्तम तथा नवीन परम्पराएँ स्थापित करना चाहता था। इस कला प्रवृत्ति

के मुख्य कलाकार विलियम होलमन हण्ट, जॉन एवरेट मिलैस एवं दान्ते राजैटी थे।

प्राक्-रैफेलवाद

Primary Colour (प्राइमरी कलर) : प्रथम श्रेणी के रंग लाल, पीला और नीला होते हैं। ये आधारभूत रंग-द्रव्य (Pigment) होते हैं। जो किसी मिश्रण से नहीं बनते बल्कि इनके मिश्रण से अनंत रंगों का संसार बनता है। इन्हें मूलभूत रंग, मौलिक रंग कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।

प्राथमिक रंग

Priming (प्राइमिंग) - चित्र सतह तैयार करने हेतु प्राथमिक लेप या अस्तर लगाना। जिससे सतह रंग न सोख सके।

प्राथमिक अस्तर

Primitive Art (प्रिमिटिव आर्ट) - आदिम जातियों द्वारा रची गयी कला।
आदिकालीन/आदिम कला

Principal Elements (प्रिंसिपल एलीमेन्ट्स) : दृश्य कलाओं में रचना तत्व-बोध का महत्व सर्वोपरि है। इन्हीं तत्वों के आधार पर कलात्मक रचनाएँ की जाती हैं। यह प्रधान तत्व हैं— रंग, रेखा, रूप, वयन, उपवर्ण एवं अन्तराल।

प्रधान तत्व / अवयव

Profile (प्रोफाइल)- एक चश्म चेहरा जिसमें मानवमुख के पार्श्व भाग का चित्रांकन होता है। इस प्रकार के चित्रों में प्रायः एक कान, एक आँख व चेहरे का आधा हिस्सा दिखाई देता है।

पार्श्व चित्र

Progressive Artist Group (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप) : बम्बई (मुम्बई) के कलाकारों की संस्था जिसको छः कलाकारों ने सन् 1948 में स्थापित किया था। यह कलाकार थे—एफ.एन.सूजा, एस.एच.रजा, के.एच.आरा, एच.ए.गाडे, एम.एफ. हुसैन एवं मूर्तिकार एस. के. बाकरे। इस संस्था की सर्वप्रथम प्रदर्शनी 7 जुलाई 1949 को बम्बई आर्ट सोसाइटी के सेलून (बम्बई) में हुई थी। इन कलाकारों का ध्येय था कि कला को एक नयी दिशा प्रदान करें। अमूर्तन को आदर्श मानकर इन कलाकारों ने रचनाएँ कीं। सन् 1950 में कलकत्ता के कलाकारों के साथ संयुक्त प्रदर्शनी बम्बई में करने के पश्चात् इसकी दूसरी प्रदर्शनी 6 सितम्बर 1952 को हुई। इसके पश्चात् इस समूह का 1952 में विघटन हो गया। ये सभी कलाकार आधुनिक कला के प्रथम पंक्ति के कलाकार हैं। कम समय में इस समूह ने दो बड़ी प्रदर्शनियाँ कर ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस संस्था से जुड़े कलाकारों ने पश्चिमी कला शैलियों से प्रेरणा ली थी और कला को नयी दिशाएँ दीं। इस संस्था को संक्षिप्त में 'पैग' कहकर सम्बोधित किया जाता है। इस संस्था का उद्देश्य "हम आगे जाना चाहते हैं" को ध्यान में रखकर किया गया था। अन्य प्रमुख कलाकार ए.ए.रायबा,

भानु स्मार्त, वी.एस.गायतोडे, जी.एम.हजारनीस, कृष्ण खन्ना, राजोपाध्याय एवं एम. छपर थे । प्रगतिशील कलाकार दल

Psychedelic Art (साइकिडेलिक आर्ट) : यह कला प्रकाशीय प्रभाव एवं गति पर आधारित है, जिसमें यन्त्रों की तकनीक का प्रयोग किया जाता है । इस कला में अद्भुत एवं अलौकिक रूपों का सृजन एवं दर्शन होता है । बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इसका चलन खूब हुआ । मनोक्रियात्मक कला

Psychedelic Painting (साइकिडेलिक पेन्टिंग) -मानसिक गतिविधियों के आधार पर बनाया गया चित्र । इसे मनोवर्धक चित्र कहा जाता है ।

अतीन्द्रिय एवं रहस्यमयता से ओत-प्रोत इन कलाओं में नशे की अवस्था जैसा अनुभव प्राप्त होता है । चित्रकार विचित्र प्रभाव उत्पन्न करता है । जैसे — पानी तथा तेल के मिश्रित घोल को कैनवस पर फेंक कर नये प्रभावों को उत्पन्न करता है । प्रसिद्ध चित्रकार अमेरिका के रूडी स्टर्न, जैकी कैसेन, डेविड शिलर एवं रिचर्ड एल्ट्रोफ थे । मनोक्रियात्मक / चेतना प्रसारी चित्र

Pure colour (प्युरै कलर) : वे पाँच रंग जो प्रायः एक दूसरे के सम्मिश्रण से नहीं बनते, बल्कि इनके मिश्रण से दूसरे अन्य रंग बनते हैं । ये रंग हैं— लाल, पीला, नीला, काला एवं सफेद । इन्हें मूल रंग (Main colour) भी कहते हैं । शुद्ध रंग

Purism (प्युरैज्म) : इस आन्दोलन की शुरुआत पेरिस में सन् 1918 में वास्तुकार ल कोर्बुसिए एवं चित्रकार आमेदी ओजाफ़ों ने की थी । यह आन्दोलन घनवाद का ही विशुद्ध रूप था, जिसमें घनवादियों की तरह आलंकारिक वृत्तियों का प्रयोग नहीं किया गया था, बल्कि विशुद्धतावाद ने चित्रकला में वस्तुनिरपेक्षता का महत्व बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । इसका महत्व सन् 1920 से 1925 तक यूरोप तथा अमेरिका में खूब रहा । विशुद्धतावाद

0q

Quill Pen (क्विल पेन) - पक्षियों के पंख की कलम । प्राचीन ग्रन्थों का लेखन एवं चित्र रचना इसी से की जाती थी । पंख लेखनी

Rr

Ragmala Painting (रागमाला पेन्टिंग) - संगीत के राग-रागिनियों के भावात्मक

सन्दर्भों का चित्रण दक्खिनी, पहाड़ी एवं राजस्थानी शैली में खूब हुआ है। प्रत्येक राग को पुरुष व उसकी पाँच रागिनियों को स्त्री रूप में (नायक-नायिका) माना जाता है। इन्हीं के अनेक रूपों का चित्रण हुआ है।

रागमाला चित्र

Rajasthan School (राजस्थान स्कूल) - राजस्थानी चित्रकला का विकास चार केन्द्रों में हुआ मेवाड़, मारवाड़, हड़ौती व ढूँढ़ाड़। इन केन्द्रों की प्रमुख कलम जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोट, बूँदी एवं किशनगढ़ आदि हैं। राजस्थानी चित्र-परम्परा से भारतीय चित्र-परम्परा को एक नया बल मिला था। कुछ विद्वानों ने इसे 'राजपूत चित्रकला' नाम दिया। इस शैली के मुख्य विषय छवि-चित्र, रागमाला, गीत गोविन्द, रसिक प्रिया, भागवत पुराण, महाभारत, रामायण, नायिका भेद, बारहमासा, पुराण कथाएँ, शिवपुराण, नाथपन्थ व कृष्ण-लीला इत्यादि रहे हैं। यह चित्रशैली 16वीं शती से 18 वीं शती तक खूब फली-फूली। राजस्थान शूरवीरों की धरती रही है। यहाँ के राजा वीर पुरुष थे परन्तु कोमल हृदय के स्वामी, कला-प्रिय एवं भक्ति भावना से ओत-प्रोत थे। यहाँ पर वास्तुकला एवं मूर्तिकला के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 15वीं शती में लिखे गये। इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर यहाँ निर्माण कार्य हुआ। इससे प्रतीत होता है कि राजस्थान 15वीं शताब्दी में कला का अद्भुत केन्द्र था। कागज की कई परत चिपका कर (वसली), उन पर चित्र बनाने की परम्परा थी। एक चश्म चेहरा, चुनरी, लहँगा, जामा, पटका साफा, आभूषण, मेहँदी, महावर से सुसज्जित मानव आकृतियों के साथ पृष्ठभूमि में सरोवर, आसमान, वास्तु, पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों एवं फूलों का अंकन हुआ है। चमकदार रंगों का प्रयोग इनमें सौन्दर्य-वृद्धि करता है। सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग सन् 1765 ई. में मिले शिलालेख से होता है। हवेली, किला एवं राजप्रसाद की भित्तियों, चित्र एवं ग्रन्थों में इस शैली का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है।

राजस्थान चित्रशैली

Rampart (रैम्पाट) : गढ़, दुर्ग, महल अथवा किले की रक्षा के लिए बनायी गयी चारों तरफ ऊँची व बड़ी दीवार।

चहारदीवारी / परकोट / प्राकार

Rayonism (रेऑनिज्म) : इस आन्दोलन का प्रारम्भ सन् 1913 में हुआ था। इसके प्रवर्तक रशियन कलाकार मिखाइल लारियोनोव एवं उनकी पत्नी नाताल्या थीं। प्राकृतिक दृश्यों तथा मानवाकृतियों के रूपों को किरणों के समान रेखाओं से बनाना इस आन्दोलन की विशेषता थी। ये रचनाएँ प्रकाश शलाकाओं से निर्मित जैसी दिखाई देती थीं। यह आन्दोलन बहुत अधिक समय तक नहीं चल पाया, परन्तु इनके प्रभावों का रंग-मंच में खूब प्रयोग हुआ।

किरणवाद

Re created (रीक्रिएटेड) : किसी वस्तु को अपनी रचना-क्षमता के अनुसार पुनः सृजित

करना । जो प्रत्यक्ष है, उसको कलाकार यथावत् न बनाकर अपनी सोच व क्षमता के अनुसार सृजित करता है ।

पुनः सृजन

Realism (रिअलिज्म) : 19वीं शताब्दी के मध्य में पेरिस के चित्रकारों ने प्राचीन शास्त्रीय नियमों को त्यागकर मानव के समकालीन दैनन्दिन जीवन का चित्रांकन किया था । चित्रकारों ने समाज का जैसा रूप देखा वैसा ही चित्रित किया । यह एक आन्दोलन के रूप में विकसित हुआ । इस आन्दोलन के प्रमुख चित्रकार गुस्ताव कुर्बे एवं ओनोरे दोंमिए थे ।

यथार्थवाद

Realistic Art (रिअलिस्टिक आर्ट) - यथार्थवादी चित्रण जिसमें यथावत् चित्रण किया जाता है तथा छाया-प्रकाश का विशेष योग रहता है । इस प्रकार के चित्रण में मानव के सामान्य जीवन को चित्रित किया जाता है ।

यथार्थवादी कला

Realistic Form (रिअलिस्टिक) : वास्तविक रूप, प्राकृतिक रूप, स्वाभाविक रूप नैसर्गिक रूप, यथातथ्यपरक रूप या संसारिक वस्तुओं का हू-ब-हू (यथावत्) अंकन करना, यथार्थ रूपांकन है । यथार्थ रूपों में छाया-प्रकाश का विशेष महत्व होता है ।

यथार्थ रूप

Reduced Copy (रिड्यूस कॉपी) : किसी भी कलाकृति की लघु प्रतिलिपि तैयार करना ।

लघु प्रतिकृति

Reel (रील) : फोटो खींचने के लिए प्रयोग में आने वाली रील जिसे फोटो खींचने के उपरान्त प्रक्रिया (Process) द्वारा धोया जाता है, तत्पश्चात् इस प्राप्त निगेटिव से फोटो तैयार की जाती है । धागे की रील को भी कहते हैं ।

रील/वरखी

Regional Art Centre (रीजॅनल आर्ट सेन्टर) : समकालीन कला के प्रोत्साहन हेतु राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली ने भारत के विभिन्न राज्यों में पाँच क्षेत्रीय केन्द्रों की स्थापना की । इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था कि क्षेत्रीय कला व क्षेत्रीय कलाकारों को संवर्धन प्रदान करना । यहाँ पर दृश्यकला के विकास के लिए प्रशिक्षण एवं अभ्यास कक्ष है, जहाँ मूर्तिकला, चित्रकला, प्रिन्ट निर्माण, मृत्तिका शिल्प आदि विधाओं में कलाकार कार्य करते हैं । यह केन्द्र, कला के उन्नयन के लिए व्याख्यान, प्रदर्शन, कार्यशाला, प्रदर्शनी, गोष्ठी एवं डाक्यूमेन्ट्री आदि का आयोजन करता रहता है । भारत में यह केन्द्र लखनऊ (उत्तर प्रदेश), कोलकाता (पं.बंगाल), चेन्नई (तमिलनाडु), नयी दिल्ली एवं भुवनेश्वर (उड़ीसा) में स्थित है । लखनऊ में इस केन्द्र की स्थापना सन् 1984 में हुई थी ।

राष्ट्रीय कला केन्द्र

Regionalism (रीजनलिज़्म): आँचलिक चित्रण जिसमें स्थानीयता का प्रभाव हो। इस प्रकार के चित्रण में परम्परागत अथवा लोक-तत्वों का सामवेश रहता है।

क्षेत्रीयतावाद

Relief Method (रिलीफ़ मेथड): छापाकला की वह पद्धति जिसमें छपने वाली सतह उठी हुई होती है, शेष पृष्ठभूमि को उत्कीर्ण कर हटा दिया जाता है। यानी दबा रखा जाता है। इस प्रकार की प्लेट से छापने पर रोलर द्वारा स्याही उठी हुई सतह पर लगती है और यही भाग कागज पर छपकर अपना प्रभाव देता है। काष्ठ उत्कीर्ण, लिनोलियम उत्कीर्ण, रबड़ उत्कीर्ण द्वारा इस प्रकार के ब्लॉक तैयार कर छपाई की जाती है।

उभार सतह उत्कीर्ण पद्धति

Relief Work (रिलीफ़ वर्क) - उभार मूर्ति जो अपने समतल या धरातल से उठी हुई हो। यह दो प्रकार की उच्च उभार (High relief) एवं हल्का उभार (Low relief) वाली होती है।

उभारदार आकार

Renaissance (रिनेसॉ): 14वीं से 16वीं शती के मध्य इटली में रोम व ग्रीक की प्राचीन शास्त्रीय कलाओं का तत्कालीन कलाओं पर प्रभाव पड़ा। नवीन कलाकृतियों में प्राचीन कलाकृतियों के अवशेष से अनुकृति द्वारा सहायता ली गयी। यह कला-परम्परा इटली से शुरू हो पूरे यूरोप में फैल गयी। यह कला पुनर्जागरण कालीन कला कहलायी। यह कला भौतिकवादी व यथार्थवादी थी। भावपूर्ण चित्र बनाये गये। श्रेष्ठ कृतियों की रचना इसी युग में हुई। यह काल दो भागों में आरम्भिक नव जागरण काल (Early Renaissance 1320/1420 - 1500) तथा उच्च नव जागरण काल (High Renaissance 1500-1527) में विभक्त हुआ। पुनरुत्थान काल की कला वास्तु, मूर्ति तथा चित्र तीनों में दिखायी दी। वास्तुकार **लिओन बतिस्ता अलवर्ती** (Leon Battista Alberti), **माइकेलोज़ो** (Michelozzo, 1396-1472), मूर्तिकार **लोरन्जो विबर्ती** (1378-1455), **ब्रूनेलेशी**, **दोना तल्ली** (1386-1466) व **वैरोच्चिओ** (1435-88) प्रमुख थे। आरम्भिक नव जागरण काल के प्रमुख चित्रकार **माइकेल एंजिलो** (Michelangelo, 1475-1564), **रैफेल** (Raphael, 1483-1520), **ज्योर्जिओन** (Giorgione, 1476-1510), **टिशियाँ** (Titian, 1487-1576), **कैरेज्जियो** (Correggio, 1494-1534), **लोरन्जोलोत्तो** (Lorenzo Lotto, 1480-1556), **लिओनार्दो दा विन्ची** (Leonardo da Vinci, 1452-1519) आदि थे, जिन्होंने यथार्थवादी चित्रण को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया। इस काल को इटालियन पुनर्जागरण भी कहा जाता है। अन्य प्रमुख चित्रकार **मासाच्चिओ** (Masaccio, 1401-28), **फ्रा एन्जेलिको** (Fra Angelico, 1387-1455), **दोमेनिको वेनेज़ियानो** (Domenico Veneziano), **पाओलो उच्चेल्लो** (Paolo Uccello, 1396-1475), **फ्रा फिलिप्पो लिप्पी** (Fra Filippo Lippi, 1406-69),

अन्द्रिया देल कस्तानो (Andrea del Castagno, 1423-1457), पिएरो देला फ्रान्सेस्का (Piero Della Francesca, 1410-92), सान्द्रो बोत्तिचेल्ली (Sandro Botticelli, 1445-1510), आन्तोनिओ पोलैउओलो (Antonio Pollaiuolo, 1432-98), दोमेनिको गिर लैन्डिओ (Domenico Ghirlandio, 1449-94), अन्द्रिया मान्तेना (Andrea Mantegna, 1431-1506), जिओवन्नी बेल्लिनी (Giovanni Bellini, 1430-1516) व एन्तोनेल्लो द मस्सीना (Antonello da Messina, 1430-79) थे। यह सभी चित्रकार प्रारम्भिक पुनरुत्थान काल के थे। **पुनरुत्थान काल**

Renaissance India (रिनेसॅन्स, इन्डिया) : कलकत्ता में सन् 1864 में सरकारी कला विद्यालय की स्थापना हुई। सन् 1896 में कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल ई. बी. हैबेल ने एक नवीन कला-आन्दोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने अवनीन्द्र नाथ टैगोर के साथ मिलकर भारत की सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य कला के माध्यम से किया। ई.बी. हैबेल ने भारतीय कलाकारों से कहा की भारतीय कला में अपार सम्भावनाएँ हैं, जिन्हें अपनाओ। ऐसे उन्होंने इस कला से प्रेरणा ग्रहण करने को उत्साहित किया। अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने चीनी-जापानी कला का ज्ञान प्राप्त कर एक नवीन भारतीय चित्रशैली को जन्म दिया, जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस कला-आन्दोलन का प्रारम्भ बंगाल से हुआ। इसको बंगाल स्कूल के नाम से भी जाना जाता है। इस स्कूल ने भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान की अलख जगायी तथा भारतीय कलाकारों को प्रोत्साहित किया। चित्रकारों ने परम्परागत चित्रांकन को आधार बनाकर अपने मानस पर अंकित भावों को चित्र पर रूपायित किया। इस प्रकार भारतीय चित्रकला का स्वरूप नये रूप में उभरा। पुनरुत्थान में टैगोर परिवार का योगदान अविस्मरणीय है। यह कला आन्दोलन 20वीं सदी के मध्य तक चला। **पुनर्जागरण काल (भारत)**

Rendering (रेन्डरिंग) - वस्तु, आकृति व रूपों को यथार्थ न दिखा अपनी तरह से परिवर्तित कर, साधारणीकृत या रचनात्मक कर रचना की जाय तो अनुर्जकन होता है। यह माध्यम से अनुप्रेरित होता है। इसमें रेखा, रंग, रूप, तान, टैक्चर व अन्तराल आदि को बदल कर अनुर्जकन के अलग-अलग प्रभाव प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार के चित्रण में सृजन की अपार सम्भावना होती है। **अनुवाद/अनुर्जकन**

Repetition (रिपिटिशन) : कलाकृति में रंग, रेखा व रूपों को दोहराना अथवा उनकी पुनरावृत्ति करना। **पुनरावृत्ति**

Replica (रिप्लेका) - प्रतिकृति या प्रतिचित्र यथावत् बनाना या हू-ब-हू नकल करना। चित्र या मूर्ति की दूसरी प्रति ऐसी बनाना जो बिल्कुल असली लगे अथवा असली-नकली का भेद न हो पाये। **प्रतिकृति/अनुकृति**

Répousse(रिपूसे) - प्लास्टर ऑफ पेरिस से उभार कर डिजाइन अथवा कृति बनाना जैसे- फोटोफ्रेम में लकड़ी के ऊपर **POP** से उभरी डिजाइन बना कर, रंग/पेन्ट द्वारा एक जैसा बना देते हैं। जिससे प्लास्टर ऑफ पेरिस का उभार वाला भाग लकड़ी का हिस्सा दिखाई देने लगता है।
उभारदार/सजावट

Reproduction (रीप्रॉडक्शन) - किसी भी कृति की अनुकृति कर प्रतिकृतियाँ बनाने को कहते हैं।
प्रतिकृति/प्रतिरूपण

Restoration (रिस्टोरेशन) - किसी कृति का पुनरुद्धार जिसमें कृति की मरम्मत, टूट-फूट ठीक करना आदि रहता है। इस प्रक्रिया से कृति पुनः अपनी पूर्व अवस्था में आ जाती है।
पूर्व स्थिति / पुनर्निर्माण

Road Sign (रोड साइन) : मार्ग संकेत जिनमें तीन मूल आकार बने होते हैं। Δ त्रिकोण (Triangle), $\bigcirc$ वृत्त (Round), $\square$ वर्ग (Square) जिनके द्वारा समस्त सूचनाएँ व जानकारी दी जाती हैं। Δ त्रिकोण का तात्पर्य चेतावनी (warning), $\bigcirc$ वृत्त का तात्पर्य निषेध, मनाही (Interdiction) और $\square$ वर्ग का तात्पर्य सूचना, जानकारी (Information) होता है। इन्हीं आकारों के मायने के अनुरूप अन्य संकेत, इन सम्बन्धित आकारों में बने रहते हैं।
मार्ग संकेत

Roccoco Style (रॉकोको स्टाइल) : फ्रांस की कलाशैली जो 18वीं शताब्दी में प्रचलित हुई। मूलतः यह शैली दरबारी थी तथा वास्तुकला से प्रभावित थी। अलंकरण-वृत्ति से ओत-प्रोत इस कला-शैली का प्रभाव आन्तरिक सज्जा, मूर्ति, चित्र एवं फर्नीचर आदि में झलकने लगा था। इस शैली के प्रवर्तक वास्तुकार **रोबर्ट द कोटी व जिलैस मेरी ओपेनार्द** थे। कई-कई मंजिलों के भवन बड़ी-बड़ी खिडकियाँ, बड़े-बड़े दरवाजों से युक्त थे। छतों में भीतर की ओर गोलाई बनायी जाती थी और भीतरी दीवारों में उभरी हुई पट्टियाँ सजावट के साथ बनायी जाती थीं। आवक्ष व्यक्ति प्रतिमाएँ सीसे (धातु) एवं संगमरमर की बनायी गयीं जो शासकों के महलों आदि में रखी गयी थीं। चित्र में 'वीनस' एक अप्सरा के रूप में चित्रित की गयी। पोर्सीलेन (Porcelain) माध्यम में लघु मूर्तियाँ इस शैली की विशिष्टता थी।
रोकोको शैली

Rocker (रॉकर) : छापाकला की मैजोटिन्ट पद्धति का एक उपकरण, जो अर्धवृत्ताकार होता है और जिसके किनारों पर नुकीले दाँतुएँ बने होते हैं। इसके द्वारा धातु प्लेट की सतह पर बिन्दुओं के रूप में छोटे-छोटे छेद बनाये जाते हैं। जिससे छापा चित्र में रंगत प्राप्त की जा सके। प्लेट को छेदने के लिए **Roulette** (छेदक चक्र) का प्रयोग भी किया जाता है।
वक्रमुखी छिद्रक/सन्दोलनी

Roman Art (रोमन आर्ट) : रोमन कला का इतिहास ई.पू. तीसरी शती से प्रारम्भ हो चौथी ई. तक लगभग 700 वर्षों तक रहा है। रोमन कला के अन्तर्गत महल, मन्दिर, स्मारक, मूर्तियाँ, भवन, प्रेक्षागृह, बेसिलिका, विजय तोरण द्वार, फव्वारे,

स्नानगृह, उद्यान, स्तम्भ युक्त मार्ग आदि ईंट, पत्थर, काष्ठ एवं संगमरमर के बनाये गये। भौतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण नमूने उक्त कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। मणिकुट्टिम से सज्जित भित्तियाँ तथा फ्रेस्को चित्रण बहुतायत से बनाये गये। मूर्तियों के माध्यम संगमरमर एवं कांस्य थे, जिनमें मुख्य-मुख्य शिल्प सूर्य, हरक्यूलीस, किन्नर, परियाँ, वीनस, व्यक्ति चित्र, आगस्तस एवं अश्वारोही की प्रतिमाएँ हैं। इस युग के श्रेष्ठ चित्रों के विषय ग्रामीण जीवन, ऐतिहासिक घटना, विवाह, प्राकृतिक दृश्य-चित्रण, मिथकीय दृश्य, न्याय, सन्त, महाकाव्यों के कथानक आदि थे। इस काल के आभूषण, चाँदी के सिक्के, काँसे की तश्तरियाँ भी खुदाई से प्राप्त हुए हैं।

रोमन कला

Romanesque Art (रोमनेस्क आर्ट) : फ्रांसिसी वास्तुकला जो 11वीं व 12वीं शती में प्रचलित थी। इस शैली के अन्तर्गत गिरजाघरों व दुर्गों का निर्माण किया गया। जो प्राचीन रोम के वास्तुशिल्प पर आधारित थे। गोल मेहराब एवं मोटी-मोटी दीवारें इस शैली की विशेषता थी। भवनों में खम्भों के स्थान पर बड़ी-बड़ी सन्त-महात्माओं की मूर्तियाँ (Architectural Sculpture) लगाना इस कला की विशिष्टता थी। चित्रों में भी लम्बी-लम्बी मूर्तियों वाले प्रभाव थे। पूजा-गृहों में सुन्दर-सुन्दर उत्कीर्ण शिल्प बनाये गये। चर्च के प्रवेश-द्वार, द्वार-शीर्ष, स्तम्भ आदि स्थान मूर्तियों से सुसज्जित किये गये। इस कला का विस्तार इटली, जर्मनी, स्पेन तथा इंग्लैण्ड तक हुआ। इस समय के भित्ति - चित्र, रंग एवं फ्रेस्को पद्धति दोनों माध्यम से बने। इस समय के बने चित्रों के विषय ईसा मसीह से सम्बन्धित एवं युद्ध आदि थे।

रोमनेस्क कला

Romanticism (रोमैन्डिसिज़्म) - शास्त्रीय कला के विपरीत जिसमें कलाकार अपने निजी अनुभवों, भावों, कल्पना और नाटकीयता को स्थान देता है। चित्रकार द्वारा परम्परागत आदर्शों यानी शास्त्रीयता का त्याग कर, स्वतन्त्र रूप से नैसर्गिक भावनाओं को जाग्रत कर सहज रूप से कल्पित कथाओं, परी-कथाओं एवं साहसिक घटनाओं का चित्रण करना था। इन चित्रों में चटकीले रंग, लयात्मक रेखांकन, दूरदृश्यलघुता व अंकन पद्धति का अतिरंजित प्रयोग किया जाता था। इस वाद के सिद्धान्त दार्शनिक ज्यां जाक रूसो के अनुरूप थे और इस कला के प्रवर्तक फ्रेंच कलाकार तेओदोर जेरिको एवं ओजेन देलाक्रा थे। इस का अभ्युदय 19वीं सदी के आरम्भ में हुआ था। इस वाद को स्वच्छन्दतावाद के नाम से भी जानते हैं।

रुमानीवाद, रोमांसवाद

Rubber cut (रबर कट) : छापा चित्रण का रबड़ ब्लॉक। लिनोलियम की भाँति ही इसे तैयार किया जाता है, परन्तु यह लिनोलियम की अपेक्षा मुलायम होता है। इसलिए इसे उत्कीर्ण करते समय कुछ तकनीकी सावधानियों का ध्यान रखना

आवश्यक है। रबड़ शीट लचीली होने के कारण इस पर दाब पड़ते ही डिजाइन के बने हुए किनारे लचक सकते हैं। इसके बचाव हेतु रबड़-कर्तन करते समय डिजाइन को थोड़ा मोटा- चौड़ा बनाया जाता है। रबड़ चद्दर (शीट) अत्यधिक मुलायम से कठोर तक की श्रेणी में उपलब्ध रहती है। आवश्यकता अनुसार उपयुक्त रबड़ शीट खरीदनी चाहिए। ब्लेड, नाइफ, V खाँचा कर्चन (काटनी) यंत्रों का प्रयोग कर इसे उकेरा जाता है। ब्लॉक तैयार हो जाने के पश्चात् छापने की विधि 'लीनो' वाली ही अपनायी जाती है।

रबड़ कर्तन



Sable Brush (सेबल ब्रश) : सेबल एक नेवले के आकार का माँसभक्षी पशु होता है।

जिसके बालों से मुलायम तूलिका बनती थी। अब मुलायम बालों की तूलिकाएँ बछड़े, बकरी, नेवले, गिलहरी, मिक, पोल कैट, लोमड़ी, हिरण, गाय, मंगूश एवं ऊँट आदि के बालों से बनती हैं। इन सभी के बालों से निर्मित तूलिकाओं को प्रचलित शब्द 'सेबल ब्रश' के नाम से जाना जाता है।

मुलायम बालों की तूलिका

Sadang (षडंग) - भारतीय चित्रकला के छः अंग अर्थात् चित्र बनाने के प्राचीन भारतीय कला सिद्धान्त जिनकी रचना ई० पू० में हुई थी। वात्स्यायन रचित भारतीय ग्रंथ कामसूत्र के प्रथम अधिकरण के तृतीय अध्याय की टीका 'जय मंगला' में 11-12वीं शताब्दी के जयपुर नरेश के सभापण्डित यशोधर पण्डित ने चित्रकला के छः अंग बताये। कामसूत्र में वर्णित 64 कलाओं में चौथे नम्बर पर चित्रकला के षडंग का उल्लेख है।

आलेख्यमिति।

रूपभेदाः प्रमाणनिभावलावण्ययोजनम्।

सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम्।।

भारतीय चित्रकला के ये छः अंग निम्न हैं —

1. **रूपभेद** — रूप के भेदों का अध्ययन। शैली आधारित रूप यथार्थ, आलंकारिक, शास्त्रीय तथा मिले-जुले होते हैं।
2. **प्रमाण** — रूपों का अनुपात प्रमाण जो चारित्रिक विशेषताओं एवं वस्तुओं के गुण पर आधारित होता है।
3. **भाव** — भाव-भंगिमा के अनुसार शरीर की स्थिति एवं चेष्टाएँ होना आवश्यक है।
4. **लावण्य** — सौन्दर्य आधारित लावण्य-योजना का होना आवश्यक है। लय-प्रवाह लावण्य की सृष्टि करते हैं।

5. सादृश्य — प्राकृतिक आकृतियों के उपमानों का ध्यान रखकर अंग-प्रत्यंग की रचना ।

6. वर्णिका भंग — सामग्री, रंग-विधान एवं तूलिका के प्रयोग का ध्यान रखा जाता है ।
इस प्रकार षडंग के सिद्धान्त का पालन कर चित्र-रचना करने से चित्र उत्कृष्ट तैयार होता है ।
चित्रकला के छः अंग

Salon (सैलॉन) : चित्र प्रदर्शित करने का स्थल । सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस की रॉयल अकादमी अपने सदस्यों की चित्र-प्रदर्शनी लूब संग्रहालय में 'सेलॉ द अपोलो' में आयोजित करते थे । इसी स्थान को 'सेलॉन' कहकर सम्बोधित किया जाता था । वार्षिक सामूहिक प्रदर्शनी के लिए उपयोग में लाये जाने वाला शब्द जो फ्रांस में प्रदर्शनी कक्ष प्रचलित है ।

Salon des Refuses (सैलॉन डे रिफ्यूजे) - प्रतिष्ठित और सृजनशील कलाकारों की अस्वीकृत कलाकृतियों की प्रदर्शनी जिसे नेपोलियन -III ने 1863 ई. में वार्षिक प्रदर्शनी Salon के विरोध में आयोजित करने की स्वीकृति दी थी ।

फ्रांस में 'रायल अकादमी' संस्था राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी आयोजित करती थी । इस संस्था के अधिकारी एवं निर्णायक परम्परागत सोच वाले थे । संस्था द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के प्रसिद्ध होने के कारण अधिकाधिक कलाकार इसमें भाग लेते थे । सन् 1863ई. में इस वार्षिक प्रदर्शनी के निर्णायकों ने लगभग 4000 से अधिक कृतियों को अस्वीकृत कर दिया था । ये वे चित्र थे जिनमें कलाकारों ने शास्त्रीय परम्परा से हटकर स्वतन्त्र विचारों से प्रेरित हो अभिव्यक्ति की थी । चित्र अस्वीकृत होने से कलाकारों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई । उन्होंने संयुक्त रूप से अपनी बात तत्कालीन सम्राट् नेपोलियन तृतीय तक पहुँचायी । उनकी मध्यस्थता से इन कलाकारों को स्वतन्त्र प्रदर्शनी करने का अवसर प्रदान किया गया । अकादमी द्वारा अस्वीकृत लगभग 600 चित्रों को छोड़कर शेष सभी चित्रों की प्रदर्शनी, राष्ट्रीय प्रदर्शनी वाले भवन में आयोजित की गयी । इस प्रदर्शनी को देखने के लिए दर्शक उत्सुक थे । प्रदर्शनी देखने के पश्चात् दर्शकों की व्यापक प्रतिक्रिया हुई । उन्होंने प्रदर्शनी को नकार दिया । उन्हें अधिकांश चित्र पसंद नहीं आये । लेकिन इस घटना से प्रगतिशील कलाकारों को अपनी स्वतन्त्र प्रदर्शनी करने की राह मिल गयी । इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले प्रमुख कलाकार फान्तिन-लातूर, पिस्सarro, माने, सेज़ान, व्हिसलर एवं बुदिन थे । यहीं से आधुनिक कला का स्वतन्त्र इतिहास प्रारम्भ माना जाता है ।
अस्वीकृत चित्र प्रदर्शनी

Sanguine (सैंग्विन) : चित्र बनाने का एक माध्यम, जो लाल-भूरी रंग की आयन-ऑक्साइड चौकोर स्टिक होती है, जिससे चित्रांकन किया जाता है । 14वीं

शताब्दी की समाप्ति में इसकी शुरुआत हुई थी ।

रक्त-वर्णबत्ती/सैंगिन

Santi Niketan (शान्ति निकेतन) : कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) से 180 किलोमीटर दूर वीरभूमि में स्थित प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है । इसकी परिकल्पना नोबल पुरस्कार प्राप्त रविन्द्र नाथ टैगोर (1861-1941 ई.) ने की थी । इसका प्रारम्भिक स्वरूप (1863 ई.) आश्रम के ध्यान केन्द्र के रूप में था । यह स्थान नैसर्गिक वातावरण से युक्त, प्राकृतिक छाटा से परिपूर्ण व हरियाली वाला है । रविन्द्र नाथ टैगोर ने अपना निवास यहीं पर बनाया था और कालजयी रचनाएँ कीं । इनके पिता देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 7 एकड़ में आश्रम 1863 ई. में शुरू किया था । 22 दिसम्बर 1901 को रविन्द्र नाथ टैगोर ने 5 छात्रों को लेकर गुरुकुल प्रणाली का एक स्कूल 'ब्रह्मचर्य आश्रम' शुरू किया । बाद में यही 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । सन् 1921 में इसे राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ । इस शिक्षण संस्थान में सामाजिक विज्ञान, ललितकला, संगीतकला, शिक्षा, कृषि एवं ग्रामीण पुनर्निर्माण आदि विषयों की पढ़ाई होती है । छात्रावास की सुविधा युक्त यह प्रांगण अद्वितीय है । यहाँ पूर्वी एवं पश्चिमी का समन्वय देखने को मिलता है । 'पौष मेला' एवं 'बसन्त उत्सव' यहाँ धूमधाम से मनाये जाते हैं । जिनमें शिल्प मेला, लोक-नृत्य लोक-गायन आदि होते हैं । यहाँ पर बंगाल पर्यटन विकास निगम द्वारा अतिथि गृह बनाया गया है । जहाँ पर पर्यटक रुक सकते हैं । आज छः हजार छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

शान्ति निकेतन

Sarcophagus (सार्कोफ़गस) : एक ग्रीक शब्द जो पत्थर द्वारा निर्मित कलात्मक शव पेटिका अथवा मकबरे के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है ।

प्रस्तर शव पेटिका

Saturation (सेचुरेशन) : सन्तृप्ति जिसका अर्थ है गाढ़ा, घनीकृत या विशुद्ध रंग आदि ।

सन्तृप्ति

Scenery (सीनरि) : सीनरी का तात्पर्य प्राकृतिक दृश्य चित्रण से लिया जाता है तथा दूसरा अभिप्राय मंच सज्जा से लिया जाता है ।

प्राकृतिक चित्रण/मंच सज्जा

School (स्कूल) - एक स्थान, एक विशेषशैली में कार्य करने वाले कलाकारों के समूह को कहते हैं । यह चित्रकला की विशिष्ट शैली होती है, जिसमें परम्परागत तरह से चित्र बनाये जाते हैं, जैसे- Jaipur School आदि । यह शब्द विशेष पारम्परिक कला के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है ।

शैली /परिपाटी/कलम

Sconce (स्कॉन्स) : दीवार में दीया/मोमबत्ती रखने का बनाया गया आधार अथवा दीवार पर लगाने या टाँगने वाला बत्तीदान ।

चिरागदान/दीवारगीर

Scraper-Board (स्क्रैपर बोर्ड) : विशेष प्रकार का तख्ता/फलक जिसकी सतह पर चीनी मिट्टी की परत चढ़ी होती है । इस परत के चढ़े होने के कारण इसकी सतह चिकनी होती है । सफेद एवं काली सतह में उपलब्ध यह बोर्ड छापा-चित्रण के लिए

ब्लॉक बनाने के कार्य आता है। इस पर उत्कीर्णन करने हेतु तेज धार वाले औजारों की आवश्यकता रहती है एवं सावधानी अपेक्षित है। **खुरचनी फलक**

Scratch Painting (स्केच पेन्टिंग) - खुरच-खुरच कर बनाया गया चित्र। जिसमें रंग लगाने के उपरान्त मनमाफिक प्रभाव देने के लिए खुरचा जाता है। इस तकनीक से रंग खुरचने से चित्र की पृष्ठभूमि झलकने लगती है। इसे **Scrapper painting** भी कहते हैं। **खुरचनी-चित्र**

Scrawal (स्क्रॉल) : घसीट वाली लिखावट। जल्दी-जल्दी लिखने से घसीट वाली लिखावट बनती है। **घसीट लिखावट**

Screen Expose (स्क्रीन एक्सपोज़) : छन्नी (स्क्रीन) के प्रयोग से चित्र बनाना। रेशमी कपड़े (छन्नी) में 3 से 4 बार अच्छी प्रकार से P.V.A. फैला कर धूप में सुखाने के पश्चात् अँधेरे कमरे (Dark Room) में ले जाते हैं और इसमें पानी में घुले हुए बाइक्रोमेट की तह को फोम के टुकड़े द्वारा पूरी सतह में लगाते हैं तथा सूखने के लिए रख देते हैं। स्क्रीन सूखने के पश्चात् इसके ऊपर ट्रेसिंग कागज पर बनी डिजाइन उल्टी रखकर ऊपर से धूप दिखाकर एक्सपोज कर, गर्म पानी से धोकर फिर ठण्डे पानी से धोकर सुखाकर, स्क्रीन स्टैंड पर लगाकर, स्कवजी द्वारा छापते हैं। स्क्रीन एक्सपोज करने के लिए तैयार फिल्म बाजार में भी मिलती है। **छन्नी-उद्भासित चित्रण**

Screen Painting (स्क्रीन पेन्टिंग) : पर्दा चित्रण जो टाँगे जाने वाले होते हैं। ये कपड़े पर विशेष लेप लगाये जाने के पश्चात् बनाये जाते हैं। भारत, चीन एवं जापान में इस प्रकार के चित्र बनाये जाने की परम्परा प्राचीन काल से है। जापान के **हियान काल** (794-1185ई.) में यमातो-ए शैली के अलंकृत पर्दे आज भी अवशेष रूप में हैं। **मोमायामा काल** (1573-1615ई.) में वैभव प्रदर्शन करने के लिए, शोभा यात्रा में, उद्यानों में गोष्ठियाँ आयोजित करने में, राजमहलों आदि में उत्कृष्ट आलेखन से सुसज्जित पर्दों को लगाया जाता था। भारत में इस प्रकार के पर्दे-चित्र धार्मिक आस्था व प्रयोजन से जुड़े हैं। नाथद्वारा (उदयपुर) में इस प्रकार के चित्रित पर्दों का प्रयोग श्रीनाथ भगवान की मूर्ति के पीछे टाँग कर किया जाता है। कुमाऊँ अंचल में इस प्रकार के चित्र (पट्टा) बनाकर, पूजनकर, उनको विसर्जन करने का प्रावधान है। **पर्दा चित्र**

Scroll Painting (स्क्रॉल पेन्टिंग) - कपड़े या कागज पर बने कुण्डल चित्र जिन्हें लपेट कर रखा जा सकता है। यह गाथा, दृष्टान्त कथा व विषय आधारित चित्र होते हैं। चीन, जापान और भारत में इस प्रकार के चित्र बहुतायत से बने हैं। **कुण्डल चित्र**

Sculptor (स्कल्पटर) - अपनी कल्पना को मूर्ति रूप देने वाला मूर्तिकार। अथवा दृश्यकला शब्दावली / 106

विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर मूर्ति रचना करने वाला । **मूर्तिकार / शिल्पकार**

Sculpture (स्कल्पचर) - मूर्तिशिल्प का त्रिआयामी भौतिक रूप । **मूर्ति/मूर्तिकला**

Scumble (स्कम्बल) : चित्र को कपड़े से पोंछकर रंग हल्का करने को कहते हैं । इस पद्धति को पुचारा कहा जाता है । गीले कपड़े से पोताई करने अथवा जमीन पर रगड़ कर पोंछ लगाने को भी कहते हैं । **पुचारा पद्धति**

Scumbling (स्कम्बलिंग) : यह चित्रांकन करने की एक तकनीक है, जिसमें चित्र के रंग सूख जाने के पश्चात् उसके ऊपर गाढ़े रंग की अपारदर्शी मोटी परत को कहीं-कहीं ऐसे लगाया जाता है कि आधार का रंगांकन कहीं-कहीं से झलकता व दिखता रहे । **पुचारा पद्धति**

SEA (एस ई ए) - State Exhibition of Art (राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी) भारत के प्रत्येक राज्य में प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन होता है । जिसको राज्य ललित कला अकादमी आयोजित करती है और प्रत्येक चौथे वर्ष में यह अकादमी All India Exhibition आयोजित करती है । अकादमी के मापदण्डों पर आधारित कृतियों का चयन हो, यह प्रदर्शनी होती है ।

राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी

Sea Scape (सी स्केप) : समुद्री दृश्य-चित्रण जिसमें समुद्री तट, लहर, बन्दरगाह, नाव, जहाज एवं समुद्री जीव-जन्तुओं आदि के दृश्यों का चित्रण किया जाता है ।

समुद्री दृश्य

Secco Fresco (सेक्को फ्रेस्को) : दीवार की शुष्क सतह पर किया गया फ्रेस्को चित्रण । जिसका धरातल चूने एवं संगमरमर के चूर्ण से तैयार किया जाता है और सतह सूख जाने के पश्चात् चित्रण कार्य किया जाता है । इस पद्धति में खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता है । शुष्क सतह होने के कारण जल-रंग शोषित हो जाते हैं और भित्ति पर स्थायी हो जाते हैं । **लेपचित्र/फ्रेस्को शुष्क पद्धति**

Secondary Colour (सेकेंडरी कलर) : दो प्रथम श्रेणी रंगों के मिश्रण से बने रंग, लाल-पीला = नारंगी, पीला-नीला = हरा, नीला-लाल = बैंगनी । इस प्रकार ये रंग होते हैं—नारंगी, हरा एवं बैंगनी । इन्हें द्वितीय श्रेणी के रंग कहा जाता है ।

द्वितीयक रंग

Section d'ore (सेक्सयों दोरे) : सन् 1912 में पेरिस की कला वीथिका बोएुति में एक कला-प्रदर्शनी का आयोजन हुआ, जिसका नाम 'सेक्सयों दोरे' रखा गया । इस प्रदर्शनी में नव-विचारों के चित्रकारों ने भाग लिया था जो 'सेजान' की कला से प्रभावित थे । चित्रकारों ने ज्यामिति के कलात्मक पहलू पर विचार किया जिसमें वर्ग के विभाजन से प्राप्त अनुपात को आदर्श मान (करीब 5/8) चित्रण किया ।

‘सेक्स्यों दौरे’ को ‘सुवर्ण अवच्छेद’ कहा जाता है, जिसे प्राचीन काल में आदर्श अनुपात माना जाता था। इस प्रदर्शनी से कला में वस्तुनिरपेक्षता का महत्व बढ़ा। इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले चित्रकार पिकाबिया, ग्रीस, घुशां, लेजे, वियो, मेजिंजे, देलोने, मारी, मार्शा, ला फ्रेस्नाय, मारी लोरांसैं एवं मार्कुसिस आदि थे। स्वर्णिम अनुपात **Self Portrait** (सेल्फ पोर्ट्रेट) - कलाकार द्वारा अपने स्वयं का रूपचित्र या मूर्ति को बनाना। **आत्म चित्र**

Semi Realistic Form (सेमि रियलिस्टिक फॉर्म) - अर्ध-यथार्थ जिसमें यथार्थवादी व अमूर्त शैली का मिश्रण होता है। ये रूप न तो बिल्कुल स्पष्ट बनाये जाते हैं और न ही बिल्कुल सूक्ष्म। ये आसानी से पहचान में आ जाने वाले रूप होते हैं। **अर्ध-यथार्थवादी रूप**

Sepia (सीपिया) : रंग का एक प्रकार जो बदामी-भूरा होता है। **बदामी भूरा रंग**

Serigraphy (सेरिग्राफी) - छापाकला की एक पद्धति, जिसमें रेशम के जालीदार कपड़े पर न छपने वाले स्थान पर अपारगम्य द्रव्य की परत चढ़ाकर संवेदी फिल्म अथवा प्रकाश पद्धति का प्रयोग कर, स्क्रीन तैयार कर छापाई कार्य किया जाता है। इसका व्यावसायिक नाम **Silk Screen** है। **रेशमी छनी चित्रण / क्षेपांकन पद्धति**

Sessional Work (सेशनल वर्क) : दृश्य कलाओं की शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं का सत्र कार्य अथवा वार्षिक प्रयोगात्मक कार्य। जिस कार्य को सत्र अथवा वार्षिक परीक्षा में दिखाना पड़ता है। इस सृजनात्मक काम को **Plate** कह कर भी सम्बोधित किया जाता है। **सत्र-कार्य**

Sezession (सेजेस्योन) : जर्मन के नवविचारों के कलाकारों का मण्डल, जो सन् 1910 में बर्लिन में प्रतिस्थापित हुआ। जिसका उद्देश्य प्रभाववादी सिद्धान्तों का विरोधकर सहज प्रकृति की कला को प्रोत्साहित करना था।

जर्मनी कलाकार दल

Sgraffito (सेग्रेफ़िटो) - चित्रण विधि जिसमें रंग की ऊपरी पर्त को खुरचकर, नीचे लगे रंगों का प्रभाव दिखाया जाता है। **सतह आभास**

Shade (शेड) : किसी रंग का उपवर्ण, जिसके गहरे रंग बनाये जाते हैं। यह गहरा रंग किसी रंग में काले रंग के विभिन्न आनुपातिक मिश्रण से अथवा किसी अन्य गहरे रंगों के मिश्रण से प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार के गहरे रंग बनाने से उक्त रंग का मान घट जाता है। एक प्रकार से चित्रित वस्तुओं पर छायांकन करना जिससे वस्तुओं का ठोस प्रभाव दिखाई देता है। **गहरा रंग/छाया**

Shelter Home (शेल्टर होम) : आश्रयहीन को शरण देने के उद्देश्य से बनाये गये निवास-गृह। जहाँ असहाय, गरीब, आसराहीन, पथिक, निराश्रय आदि को पनाह

दी जाती है व उनके रहने की उचित व्यवस्था की जाती है ।

आश्रय गृह

Shilpgram (शिल्प ग्राम) : भारत में पर्यटन कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अथवा इन सबका विकास करने के उद्देश्य से शिल्प ग्रामों की स्थापना दिल्ली, लखनऊ, आगरा (उ.प्र.), खजुराहो (म.प्र.), उदयपुर, जयपुर, जोधपुर (राजस्थान), अहमदाबाद, बड़ौदा (गुजरात), हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश), गुवाहाटी (असम), एवं सावंतवडी (महाराष्ट्र) सहित कई स्थानों पर भारत सरकार द्वारा की गयी । इनकी स्थापना का उद्देश्य भारतीय ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर को सँजोना व उनसे देश-विदेश के नागरिकों को रू-ब-रू कराना है । इस प्रकार के ग्रामों की स्थापना से देश में ग्रामीण परिदृश्य, लोककलाएँ, जनजातीय कलाएँ, शिल्प कलाएँ, पारम्परिक कलाएँ एवं संस्कृति संरक्षित हो रही है, तथा इनसे सभी परिचित हो रहे हैं और इनके माध्यम से जन-जागृति व प्रचार-प्रसार हो रहा है । इस प्रकार की योजना से लुप्त हो रही भारतीय कलाओं को संरक्षण प्रदान हुआ है, एवं वह पुनः उन्नयन के पथ की ओर अग्रसर हुई है ।

शिल्प गौव

Shilpi (शिल्पी) - उत्तर भारत के चित्रकारों की प्रमुख संख्या जिसका गठन कानपुर के प्रगतिशील कलाकारों ने सन् 1966 में किया गया था । इस संस्था के संस्थापक प्रो. श्री प्रकाश थे । इस संस्था की प्रथम प्रदर्शनी सन् 1966 में 'बाल निकुंज', कानपुर में आयोजित हुई । प्रमुख चित्रकार प्रो.सी. बरतारिया, डॉ. राम कंवर, डॉ. एस. एन. सक्सेना, डॉ. मकबूल अंसारी, डॉ. प्रेमा मिश्रा, विश्वनाथ खन्ना, डॉ. अभय द्विवेदी, नन्दू खन्ना, रूप नारायण बाथम, कामता प्रसाद, भोला नाथ सिंह, देवेन्द्र सिंह परमार, राजेन्द्र निगम, डॉ. दिनेश मिश्रा, डॉ. प्रेम कुमारी मिश्र, विमला रोहतगी, आर. सोनकर, सी. मेहता, कोनिका बनर्जी, डॉ. रामेश्वर वर्मा, पुष्पा गुप्ता, उपेन्द्र तिवारी, सतीश शर्मा, बेचेलाल, कपिल खरे, दिनेश नाग, राम गुप्ता, राधारमण तिवारी, डॉ. राजेन्द्र बाजपेई, के. शंकर, सरला सिंह, डॉ. एस. पी. सक्सेना, डॉ. रेखा निगम, जगत सिंह सैनी, नरेश माथुर, बी. नरूला, एन.के. गैरोला, श्री भार्गव, पी.एन. पंजवानी, डॉ. शशि माथुर, डॉ. आई.बी. रूबिन (इलियास), रतन टण्डन, सुरेन्द्र प्रताप सिंह, आर.ए. हैदर, उर्मिला पुरी, कृष्ण कान्ती शर्मा, मो. सलीम, रमेश पाण्डे, कान्ती मोहन झाँ थे । तथा बाद के अन्य कलाकार अशोक भौमिक, डॉ. चित्रा शर्मा, डॉ. आर.के. शर्मा, डॉ. के. मोहन, डॉ. पूर्णिमा तिवारी, डॉ. अंजली विसारिया, डॉ. योगेन्द्र देव सिंह, डॉ. बृजेश कटियार, डॉ. प्रहलाद सिंह, डॉ. दीपा पाठक, डॉ. गीता मिश्रा, डॉ. हृदय गुप्ता, डॉ. अजय पाठक, डॉ. नीलम यादव, अजय सिंह नेगी, योगिता कटियार, स्मृति पुरवार, नरेन्द्र सिंह, सीमा मिश्रा, वर्षा मिश्रा, सीमा मकबूल, अंजली गुप्ता, अलका टण्डन,

रानी खन्ना आदि थे, जिन्होंने उ.प्र. की कला को नयी गति प्रदान की। इस संस्था की अन्तिम प्रदर्शनी 1998 में हुई थी।

शिल्पी संस्था

Shilpi Chakra (शिल्पी चक्र): दिल्ली में 25 मार्च 1949 को इस संस्था का गठन के.एस.कुलकर्णी, केवल कृष्ण, बी.सी.सान्याल, धनराज भगत एवं प्राणनाथ भागो ने किया था। अन्य सदस्य कलाकार के.सी.आर्यन, दमयन्ती चावला, हर कृष्ण लाल, जया अप्पा स्वामी, बृजमोहन भनौत, श्री निवास पण्डित, दिनकर कौशिक, सतीश गुजराल, राजकुमार, विशम्भर खन्ना, अविनाश चन्द्र, रामेश्वर ब्रूटा, अनुपम सूद, जगमोहन चोपड़ा एवं परमजीत सिंह थे। जिन्होंने इस संस्था के माध्यम से एक कला-आन्दोलन का सूत्रपात किया था।

शिल्पी चक्र

Shooting (शूटिंग): फिल्म का छायांकन करना अथवा चलचित्र बनाने के लिए फोटो फिल्माना या खींचना। यह फिल्मांकन स्टूडियो, सेट (दृश्यबन्ध) में, बाह्य क्षेत्र, खुले मैदान या भवनों आदि में किया जाता है। गोली चलाने के सन्दर्भ में भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

फिल्मांकन/फिल्माना

Short Film (शार्ट फिल्म): संक्षिप्त रूप में बनायी गयी फिल्म। ऐसे चल-चित्र प्रेरक कहानियों पर, किसी घटना पर, जागरूकता के लिए, मानवीय आधार पर तथा शिक्षा आदि पर बनाये जाते हैं।

लघु चल-चित्रण

Shoso-in (शोसो-इन): एक कला-भण्डार, जिसका पूरा नाम इम्पीरियल ट्रेजरी ऑफ पेन्टिंग (The Imperial Treasury of Painting) था। तथा इसकी स्थापना नाराकाल सन् 760 ई. में हुई थी। तत्कालीन सामग्री कोमयू (701-765 ई.) ने अपने पति सम्राट शोमू की याद में टोडाई-जी स्थित बुद्ध मंदिर के प्रांगण में इसका निर्माण करवाया था, तथा उपहार स्वरूप सम्राट की बहुमूल्य निधियाँ इस संग्रहालय में दी थी। यह लकड़ी का विशाल कक्ष था। बाद में इसके कोश की और वृद्धि हुई। इसमें दस हजार से भी अधिक कृतियाँ संग्रहीत हैं।

शोसो-इन संग्रहालय

Siccative (सिकेटिव) - चित्र को जल्दी सुखाने हेतु माध्यम तेल या वारनीश में मिलाये जाने वाला पदार्थ। जैसे - इनैमल पेण्ट में पेट्रोल मिलाने से रंग जल्दी सूखता है।

सुखाने वाला

Sienese Style (सिएना स्टाइल): सिएना (इटली) की ईसाई कला जो 200 वर्षों तक अस्तित्व में रही। इस शैली का प्रथम प्रणेता कलाकार दूशियो (Duccio de Buoninsegna, 1255-1319 ई.) था। इस का बनाया 'मैडोना' का विशाल चित्र प्रसिद्ध है। इस चित्रकार के पश्चात् साइमोन मार्तिनी (Simone Martini, 1284-1344 ई.) पीत्रो लोरेन्जिती तथा एम्ब्रोजियो लोरेन्जिती ने इस शैली में कार्य किया। मार्तिनी ने भी दूशियो की भांति सिएना टाउन हाल के लिए इसी विषय का चित्र

बनाया था। इसकी अगली कृति 'संत लुई' थी, जो नेपिल्स में बनी थी। 1328 ई. में इस कलाकार ने टाउन हाल में घुड़सवार का चित्र अंकित किया। यह चित्र अद्भुत है। पित्रो लोरेन्जिल्ली ने दैनिक जनजीवन का चित्रण किया तथा एम्ब्रोजियो ने दृश्य चित्रण का अधिकांश चित्रण किया। भिन्न दृष्टिकोण से बनाये गये चित्र सिएना शैली के नाम से प्रसिद्ध हुए। यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि 13 वीं-14 वीं शती की इस शैली को विरासत में बाइजेन्टाइन एवं गोथिक कला के उच्च आदर्श प्राप्त हुए थे।

सिएना शैली

Sign (साइन) : ये प्रायः संकेत-चिह्न या प्रतीक होते हैं। जिसमें सांकेतिक रूपों, निशानों का प्रयोग होता है। इनके अभिप्राय अथवा अर्थ आसानी से समझ में आ जाते हैं। जैसे—खेलों के चिह्न (Sports signs), मार्ग चिह्न (Road signs) आदि।

संकेत

Signature (सिगनेचर) - किसी कलाकार की व्यक्तिगत शैली जो विशिष्टता लिए होती है। ऐसे कलाकारों की कृति देखकर पहचान में आ जाती है।

हस्ताक्षर/शैली

Significant Form (सिगनिफिकैन्ट फॉर्म) : कला के सौन्दर्य की विवेचना में सादृश्य नैसर्गिक रूप की अपेक्षा अर्थगर्भित रूपों का विचार महत्वपूर्ण होता है। आधुनिक कला में यह अनिवार्य गुण तत्व माना गया है।

अर्थपूर्ण/अभिव्यंजक रूप

Sikh School (सिख स्कूल) : सिख समुदाय के धार्मिक गुरुओं की शिक्षा एवं राजाओं के जीवन पर बनाये गये चित्र। इस शैली का उद्भव मुगल सल्तनत के पतन के पश्चात् पंजाब के मैदानी क्षेत्रों एवं पहाड़ी क्षेत्रों कांगड़ा, गुलेर, चम्बा, कुल्लू व मण्डी आदि में हुआ, इस शैली के चित्र, भित्तियों एवं कागज पर बनाये गये। इस कला के संरक्षक महाराजा रणजीत सिंह थे।

सिख चित्रशैली

Silhouette (सिलुएट) : रूपरेखा चित्र बनाना अथवा छाया-चित्रण करना। यह एक फ्रेंच शब्द है।

छाया-चित्रण

Silk Screen Printing (सिल्क स्क्रीन प्रिंटिंग) : छपाई की एक पद्धति जो समतल सतह प्रणाली - विधि पर आधारित है। लकड़ी के चौखटे पर सिल्क कपड़े को कसकर, विभिन्न विधियों के प्रयोग से स्क्रीन को तैयार करते हैं। आजकल प्रकाश-संवेदी फिल्म द्वारा इसे तैयार करते हैं। तत्पश्चात् स्कूईजी द्वारा इस तैयार स्क्रीन से छपाई की जाती है। 20 वीं शती के प्रारम्भ में यह विधि इंग्लैण्ड में विकसित हुई। यह पद्धति 'सैरीग्राफी' के नाम से प्रचलित है।

सिल्क छनी छापा चित्रण

Silver Screen (सिल्वर स्क्रीन) : सिनेमा हाल का पर्दा जिस पर फिल्म (चलचित्र) दिखायी जाती है।

रजत पट

Simple Form (सिम्पल फॉर्म) : सरल रेखाओं द्वारा सहज रूपों का अंकन, सरल रूप हैं। ये रूप ग्रामीणों एवं आदिवासी जनों द्वारा अधिकांशतः बनाये जाते हैं। स्वाभाविकता से युक्त इन रूपों का अंकन मांगलिक अवसरों, सजावट, पर्वों, रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों एवं अनुष्ठान आदि में किया जाता है। बच्चों द्वारा रचित रूप भी सरल रूप की श्रेणी में आते हैं।

सरल रूप

Simplification (सिम्पलीफिकेशन) - आकारों का सरलीकरण किया जाना।

सरलीकरण

Simplify (सिम्प्लिफाई) : किसी भी रूप को सरलीकृत करना। यह रूप सरल व सहज होते हैं।

सरलीकरण

Sistine Chapel (सिस्टाइन चैपल) : इटली का गिरजाघर जिसकी भीतरी/अन्दरूनी छत पर प्रसिद्ध चित्रकार **माइकेल एन्जेलो** (सन् 1475-1569) ने सृष्टि - रहस्य सम्बन्धी विश्व प्रसिद्ध चित्र सन् 1508-09 में बनाये थे।

गिरजाघर

Sizing (साइजिंग) - चित्र बनाने हेतु सतह तैयार करने की प्राथमिक मापन विधि जिसमें चित्र की माप निर्धारित कर, चौखटा बनाना, उस पर किरमिच चढ़ाना व रन्ध्र भरने हेतु सरेस, गोंद या व्हाइट एडहेसिव लगाना शामिल होता है।

मापन

Sketch (स्केच) - आभास चित्र जिसको कम से कम समय अर्थात् शीघ्रता पूर्वक कम से कम रेखाओं द्वारा पूर्ण किया जाता है। ये रेखाचित्र पूर्णतः स्पष्ट (यथार्थवादी) नहीं होते। इस प्रकार के रेखांकन में रेखाएँ **Overlap** भी हो जाती हैं। एक स्केच को 3 से 4 मिनट में बना लिया जाता है।

संक्षिप्त/अल्प रेखांकन

Sketcher (स्कैचर) : रेखा-चित्र बनाने वाला चित्रकार। ये कहानियों, कथानक, कविता, उद्धरण, विषयाधारित, पाठ्य-पुस्तक आदि के लिए रेखांकन करने वाले होते हैं। किसी घटना में वांछित का रेखांकन बनाने वालों को भी कहते हैं।

रेखा चित्रकार

Sona Shops (सोना शॉप्स) : 'हैण्डीक्राफ्ट एण्ड हैण्डलूम एक्सपोर्ट कारपोरेशन' द्वारा **SONA** नाम से बहुत सी दुकाने खोली गयीं, जिनमें उच्च गुणवत्ता के भारतीय हस्तशिल्प बिक्री हेतु रखे गये। यह कार्य श्रीमती पुपुल जयकर ने किया। इन दुकानों से यह फायदा प्राप्त हुआ कि विदेशों में भारतीय हस्तशिल्प कला के खरीददार प्राप्त हुए।

सोना दुकान

Souvenir (सोवैनियर) : किसी भी संगोष्ठी अथवा कार्यक्रम से सम्बन्धित विवरणात्मक छापी गयी सचित्र स्मृति-पुस्तिका। जो प्रसिद्ध व्यक्ति, राजनीतिक दल,

सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगोष्ठी, समारोह, खेल-कूद, घटना एवं संस्था आदि से सम्बन्धित स्मृति को सँजोने के लिए यादगार स्वरूप निकाली जाती है। **स्मारिका**

Spatier Painting (स्पैटियर पेन्टिंग) : कड़े बालों वाले ब्रशों द्वारा अथवा एयर ब्रश द्वारा रंगों का छिड़काव कर जो चित्र बनाये जाते हैं। इस प्रकार के चित्रण में मनमाफिक परिणाम पाने के हेतु चित्र के किसी-किसी भाग में Masking tape का प्रयोग किया जाता है। **छिड़काव चित्र**

Spectrum Palette (स्पेक्ट्रम पैलेट) - इन्द्रधनुषी रंगक्रम जो विशुद्ध रंग होते हैं। **वर्णक्रम**

Spontaneous Painting (स्पोन्टेनियस पेन्टिंग) - स्वतःस्फूर्त चित्रण जिसमें रंग फैलाने से स्वतः रूपों का सृजन होता है। **स्वाभाविक / नैसर्गिक चित्रण**

Spray Painting (स्प्रै पेन्टिंग) : फुहार यन्त्र द्वारा अथवा पिचकारी के प्रयोग से चित्र बनाना। चित्राधार पर रेखांकन करने के पश्चात् जो क्षेत्र नहीं रंगना उस पर मस्किंग टेप लगाकर, शेष भाग में फुहार यन्त्र द्वारा रंगों का छिड़काव कर चित्र बनाया जाता है। यह फुहारना की प्रक्रिया विभिन्न भागों में अलग-अलग अपनानी पड़ती है। इस प्रक्रिया में वयनयुक्त प्रभाव दिखाई देते हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया में हल्के से गहरे रंग करने पड़ते हैं। **फुहार चित्रण**

Squeegee (स्कूईजी) - रंग चलाने की लकड़ी की पट्टी जिसकी कगर पर रबड़ की गोटा लगी रहती है। इस उपकरण की सहायता से स्क्रीन प्रिन्टिंग की जाती है। **रबड़ बेलन**

Stained Glass (स्टेन्ड ग्लास) - रंगीन काँच चित्र। जिसको रंगीन काँच के टुकड़ों से संयोजित कर अथवा प्लेन काँच में रंगाकन कर अभिरंजित किया जाता है। चित्रित काँच का प्रयोग खिड़की, दरवाजे, पार्टिशन में किया जाता है, जिससे छनकर आने वाला प्रकाश विशेष अनुभूति देता है। यूरोप में इस प्रकार के काँच चित्रों का प्रयोग गौथिक गिरजाघर एवं कैथीड्रल में खूब किये गये।

अभिरंजित काँच/काँच अभिरंजना / रंगीन शीशा चित्रण

Statue (स्टैचु) : किसी भी प्रकार के देवता, मानव एवं पशु की मूर्ति। इसको बुत भी कहते हैं। यह त्रिआयामी बनायी जाती है, तथा बिना सहारा लिये खड़ी रहती है। **मूर्ति/प्रतिमा**

Steel Engraving (स्टील इन्ग्रेविंग) : स्टील प्लेट को उत्कीर्ण कर ब्लॉक तैयार करना। यह अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है। इसको तक्षणी द्वारा उकेरित कर तैयार किया जाता है। सख्त सतह होने के कारण यह प्रणाली जटिल है। **स्टील उत्कीर्णन**

Stencil Brush (स्टेन्सिल ब्रश) - स्टैन्सिल से छापने के लिए गोल-सख्त, छोटे हत्ये वाला ब्रश । **क्षेपांकन तूलिका**

Stencil Painting (स्टेन्सिल पेन्टिंग) : पतले धातुपत्तर अथवा मोटे कागज (कार्डशीट) पर कटा हुआ अक्षर एवं डिजाइन जिसको विभिन्न चाकू अथवा कैंची के प्रयोग से काटा जाता है । तत्पश्चात् नीचे रखी सतह/तल पर रखकर, पेण्ट ब्रश अथवा स्टेन्सिल ब्रश की सहायता से छापा जाता है । मूलतः इस प्रकार के खाका का प्रयोग व्यावसायिक उपयोग के लिए किया जाता है । परन्तु समकालीन कलाकार इस प्रकार के खाकों के प्रयोग द्वारा चित्र सृजित कर रहे हैं ।

निकृंत/खाका चित्रण

Sticker (स्टिकर) : चिपकने वाला कागज, पर्ची, पट्टी, मुद्रित विज्ञापन - परचा एवं चिट जिसके पीछे चिपचिपा पदार्थ लगा रहता है, जो किसी भी सतह पर चिपकाने के लिए उपयुक्त होता है । **अंकितक/चेपदार/चिपकवाँ कागज**

Still Life (स्टिल लाइफ) - निर्जीव वस्तुओं के समूह का चित्रांकन । इसे **Still lives** भी कहा जाता है । **स्थिर वस्तु चित्रण**

Stipple (स्टिपल) - बिन्दु चित्रण, जिसमें विभिन्न आकार प्रकार के बिन्दुओं व विभिन्न रंगों के बिन्दुओं को लेकर चित्र बनाते हैं । **बिन्दु चित्रण**

Story Illustration (स्टोरी इल्लस्ट्रेशन) - कहानी पर आधारित धारावाहिक चित्र । **कथाचित्र**

Straw Art (स्ट्रॉ आर्ट) : घास-फूस की कला । पुआँल, पयाल, सिक्की घास, सेठा काष्ठ, सिरकी, तिनका द्वारा कलाकृति निर्मित करना । इस प्रकार की कला हस्तकला के अन्तर्गत आती है । इसमें उपयोगी तथा सजावटी कृतियाँ तैयार की जाती हैं । **तिनका/घास-फूस कला**

Stretcher (स्ट्रेचर) - चित्र बनाने हेतु कैन्वस कसने का चौखट । **चौखट**

Stucco (स्टैको) : चूना एवं संगमरमर चूर्ण का महीन पलस्तर जिसका प्रयोग फ्रेस्को पद्धति में किया जाता है । इस विधि को गचकारी कहते हैं । **पलस्तर**

Studio (स्टूडियो) - कला-कक्ष जहाँ बैठकर कलाकार अपनी कृतियों का सृजन करता है । **प्रसारण कक्ष/चित्रण कक्ष/शिल्पशाला**

Stamp (स्टैम्प) - कागज का नोकीली नोक (शंकु) रूप जिसके द्वारा पेस्टल रंगों को, चारकोल को, पेन्सिल द्वारा दी गयी शेंडिंग को आपस में मिलाने हेतु उपयोग में लाया जाता है । इसके प्रभाव प्रभावशाली होते हैं । **कागज की बत्ती**

Style (स्टाइल) - किसी भी परम्परागत चित्र या कलाकार की व्यक्तिगत शैलीगत विशेषता को शैली कहा जाता है। ये शैलीगत चित्र व्यक्तिगत, स्थान, जाति एवं समूह पर आधारित होते हैं। शैलीगत विशेषता के आधार पर इनके रूपों की बनावट में साम्य होता है। इन्हें 'स्कूल' चित्र भी कहा जाता है। **शैली**

Styler (स्टाइलर) : उत्कीर्ण करने का एक औजार जिसके द्वारा सतह को खोदकर आकृति बनायी जाती है। **नुकीला उत्कीर्णन उपकरण**

Sumi-e (सुमि-ए) - जापान में स्याही-चित्रण की विधि को कहते हैं, जो 'केनो स्कूल' की देन थी। अधिकांश जापानी चित्रकार **सुमि** अर्थात् स्याही से चित्रण करना पसन्द करते हैं। स्याही को यहाँ पर सुमि कहते हैं और इससे बने चित्र की शैली को 'सुमि-ए' कहकर सम्बोधित किया जाता है। स्याही-चित्रण प्राचीनकाल और मध्यकाल में प्रचलन ज्यादा रहा, विशेष रूप में आशिकागा काल (1338-1573 ई.) में। परन्तु अभी भी वहाँ यह चित्रांकन प्रसिद्ध है। स्याही से बनाये गये चित्र जापानी कला की आत्मा है। जापानियों का विश्वास है कि रंग इन्सान को धोखा दे सकते हैं, परन्तु 'सुमि' नहीं। इसके द्वारा चित्रांकन कठिन कार्य है क्योंकि इसमें सुधार की सम्भावना नहीं रहती, इसीलिए चित्रकारों को बहुत सावधानी पूर्वक आघात लगाने पड़ते हैं। 'सुमि' ठोस तत्व होता है जिसे कतिपय पौधों को जलाकर, उसके चूर्ण में गोंद मिलाकर तैयार किया जाता है, फिर इसे पानी द्वारा पत्थर पर घिसकर, चित्रांकन हेतु तरल रूप में बनाया जाता है। स्याही 'वाश' (जल स्याही माध्यम) के माध्यम से बने चित्र को जापानी भाषा में 'स्वी बोक्कू' कहा जाता है। केनो स्कूल के चित्रकार सुमि के माध्यम से छाया-प्रकाश का आकर्षक प्रभाव चित्र में उत्पन्न करते थे। इस प्रकार के चित्रांकन को यहाँ 'बोक्कु शोकू' (Boku shoku) कहा जाता है। **सुमि-ए शैली**

Summer Camp (समर कैम्प) : ललित कलाओं की गतिविधियाँ एवं खेल आदि को आयोजित करने के उद्देश्य से अथवा बच्चों में सृजनात्मकता जागृत करने के उद्देश्य से स्कूल, कालेज, संस्थान आदि में गर्मी की छुट्टियों में, इस प्रकार के ग्रीष्म कालीन शिविर आयोजित किये जाते हैं, जिनसे छात्र-छात्राओं/प्रतिभागियों का रुझान रचनात्मकता व खेलों की ओर होता है तथा वे अपनी सृजनात्मक क्षमता की पहचान कर उन्हें नया रूप प्रदान करते हैं। **ग्रीष्म-कालीन शिविर**

Sunday Painter (सैंडे पेन्टर) - वह शौकिया कलाकार जो कभी-कभी स्वान्तः सुखाय के लिए चित्र बनाते हैं। **शौकिया चित्रकार**

Sunk Relief (सैंड्र रिलीफ़) : डूबा हुआ उभारदार उत्कीर्ण कार्य। इस पद्धति से तल की सतह में आकृति की सीमा-रेखा को अंकित कर, नुकीले औजार से रेखा उत्कीर्ण कर, अतिरिक्त भाग को हटा देते हैं, तत्पश्चात् आकृतियों के किनारे गोल

कर दिये जाते हैं। मिस्र के पिरामिडों की भित्तियों, ताबूतों आदि में इस प्रकार को तकनीक का प्रयोग किया गया है। इस विधि से सतह के नीचे धँसी हुई, उभारदार निचली आकृति बनायी जाती है।

धँसी हुई/ढूबी हुई उभारदार आकृति

Suprematism (सुप्रीमैटिज्म) : मास्को का एक कला-आन्दोलन जिसका, सूत्रपात सन् 1913 में प्रणेता **काज़ीमीर मालेविच** द्वारा किया गया था। इस आन्दोलन से जुड़े कलाकारों का उद्देश्य था-वस्तुओं के बाहरी सादृश्य को त्याग उनकी अनुभूति को व्यंजित करने का विचार, कला में रंग-संवेदना के महत्व की ओर ध्यान देना, विशुद्ध ज्यामितीय रूपों की सर्वोच्चता प्रदान करना आदि-आदि। काज़ीमीर मालेविच ने श्वेत पृष्ठभूमि पर कलावर्ग अंकित कर विशुद्ध ज्यामितीयता का परिचय दिया था। इसके अतिरिक्त यह आन्दोलन मशीनी सभ्यता से प्रभावित हुआ तथा इसकी रचना में लोहा, काँच व इस्पात का प्रयोग किया गया।

सर्वोच्चतावाद

Supports (सॅपोट्स) - चित्र-आधार या धरातल जैसे - लकड़ी का फलक, भित्ति, कैन्वस, हार्डबोर्ड, सिल्क, चमड़ा व कागज आदि।

सतह / धरातल/आधार

Surrealism (सॅररीअलिज्म) : प्रथम महायुद्ध की विभीषिका से प्रभावित हो, निराशा, अवसाद, भय एवं चिन्ता की मनःस्थिति से उबर कर दादावादी कलाकारों ने इस आन्दोलन को जन्म दिया। उन्होंने विचित्र कल्पना, मिथ्या प्रतीक, स्वप्न के स्वरूप, स्वतंत्र प्रेरणा, चमत्कारिक अनुभव व रहस्यात्मक रूपों को, अंकन का आधार बनाया। एक प्रकार से यथार्थ के विपरीत जाकर अपनी कल्पना को नया रूप प्रदान करना, उद्देश्यहीन विचार से परिपूर्ण चित्र बनाना ही अति यथार्थवादियों की परिकल्पना थी। जैसे-ठोस वस्तुओं का पिघलना, पंखदार प्याला, आर-पार देखी जाने वाली फर्श आदि। उन्होंने नये ढंग से जीवन पद्धति के नये रूप को प्रस्तुत किया। इस आन्दोलन की शुरुआत सन् 1918 से हुई थी। चित्रकार **आन्द्रे ब्रेतन** इस आन्दोलन के प्रवर्तक थे, जिन्होंने पेरिस में इस आन्दोलन की विधिवत् शुरुआत सन् 1924 में घोषणा-पत्र प्रकाशित कर की थी। अनेक उतार-चढ़ाव से होते हुए यह आन्दोलन सन् 1960 तक चला। यह आन्दोलन फ्रांस के अतिरिक्त **अमेरिका, कनाडा, बेल्जियम, आस्ट्रिया, ब्राजील, ग्वेटमाला, चिली एवं यूनान** तक फैला। इस आन्दोलन के मुख्य चित्रकार **चिली निवासी मैत्ता एकरेन, स्पेनिश जोन माइरो तथा होन मीरो, मॉक्स एन्सर्ट साल्वाडर डाली, इवतांग्वी एवं पॉलक्ली** थे।

अतियथार्थवाद कला

Sweeten (स्वीटेन) - जलरंग तकनीक में रंगांकन करने के साथ-साथ जल द्वारा किनारों को कोमल करना।

मधुर/हल्का/मृदु करना

Sweetener (स्वीटनर) - जलरंग पद्धति में किनारों को कोमल करने की मुलायम तूलिका।

मृदु/मुलायम तूलिका

Swag (स्वैग) : पूजन-स्थल, मन्दिर, भवन के मुख्य द्वार, उत्सव द्वार एवं मेला प्रवेश द्वार में ऊपर की ओर लगने वाले तोरण-झालर अथवा वन्दनवार। ये मंगल कामना, सजावट एवं शुभता के उद्देश्य से लगाये जाते हैं। **वन्दनवार/तोरण-झालर**

Symbol (सिम्बल) - प्रतीक और संकेत के प्रयोग से या इनके आधार पर रचित चित्र। इसका श्रेष्ठ उदाहरण है भारतीय परम्परा के लोकचित्र, जिसमें प्रतीकों के माध्यम से चित्र रचना की जाती है।

व्यक्ति तथा वस्तु की सूक्ष्म परिकल्पना जिसमें समानार्थी रूप बनाये जाते हैं। जो आसानी से प्रत्येक द्रष्टा को समझ में आ जाते हैं। ये रूप विशेषता पर आधारित होते हैं। जैसे— (क्रॉस) ईसा मसीह का और  (स्वस्तिक) गणेश जी अथवा शुभ का प्रतीकात्मक रूप है। राजनीतिक पार्टियों के अपने-अपने सिम्बल होते हैं, जिससे उनकी पहचान होती है। प्रतीक (Symbol) के अनेक प्रकार चित्रलिपि, आद्याक्षर, हस्ताक्षर, चिह्न आदि होते हैं।

भावद्योतक / संकेत / प्रतीक चिह्न

Symbolism (सिम्बलिज्म) : यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में जापानी कृतियों के आगमन से, यहाँ कार्यरत कलाकारों को एक नयी दिशा मिली। क्योंकि इन जापानी कृतियों में प्रतीकों का विशेष प्रस्तुतीकरण था। इससे प्रेरित हो यूरोपीय कलाकारों ने प्रतीकवादी चित्रों का अंकन प्रारम्भ किया। ये चित्र वस्तुपरक नहीं बल्कि आत्मनिष्ठ थे। चित्रकार स्वप्नों, कल्पनाओं के अनुभव तथा अदृश्यता को प्रतीकात्मक रूपों में व्यक्त करने लगे तथा अनेक प्राचीन एवं आदिम शैलियों के चिह्नों का प्रयोग अपनी कृति में करने लगे। इस प्रकार निर्मित कृतियाँ आन्तरिक अनुभूति से प्रेरित थीं। इस आन्दोलन का प्रारम्भ सन् 1885 में हुआ था। इस कलावाद के प्रवर्तक चित्रकार पाल गागिन तथा एमिल बर्नाड थे और इसके प्रमुख चित्रकार मोरिस देनी, गुस्ताव मोरो, ओदिलों, रेदों एवं गोग्वं थे।

प्रतीकवाद

Symmetry (सिमिट्री) - रचना के एक भाग में जो अंकन हुआ हो वही अंकन दूसरे भाग में भी हो तो सममिति कहलाती है। यह आलेखनों में विशेष रूप से दिखायी देती है।

सममिति

Tt

Tactile (टैकटाइल) : बनावट अथवा वयन जिसका ज्ञान स्पर्श से होता है। **स्पर्शनीय**

Tambour (टैम्बुअर) : पतली लकड़ी का गोल ढाँचा जो माप में छोटे आकार वाला

होता है। इस फ्रेम से वस्त्रों में कढ़ाई (गुलकारी) की जाती है। एक फ्रेम के अन्दर दूसरा फ्रेम रहता है। इन्हीं दोनों के बीच में कपड़े को कसते हैं, जिससे कपड़े में तनाव आ जाता है तदुपरान्त इस पर सुई द्वारा कढ़ाई करते हैं।

कारचोब/कढ़ाई का गोल ढाँचा

Tantric Painting (टैन्ट्रिक पेन्टिंग) : तन्त्र अनुष्ठान में बनने वाले विशेष चिह्न, धार्मिक चिह्न एवं मन्त्र शब्दों आदि से निर्मित चित्र, जो रहस्यात्मक होते हैं। धार्मिक आस्था-विश्वास से पूर्ण इन चित्रों में मनोकामना पूर्ण होने का उद्देश्य छिपा रहता है। समकालीन चित्रकार इन प्रतीकों का प्रयोग कर चित्र-रचना कर रहे हैं।

तांत्रिक चित्रण

Tape (टेप) - कागज, प्लास्टिक अथवा कपड़े की पट्टी जिस पर एक तरफ चिपकने वाला पदार्थ (gum agent) लगा रहता है। इनका उपयोग विभिन्न कार्यों में होता है। ये बाज़ार में विभिन्न रूपों गमटेप (Gum tape), सेलोटप (Cello tape), मास्किंग टेप (Masking tape) इत्यादि में उपलब्ध रहते हैं।

माप/चिपक फीता

Tapestry (टैपेस्ट्री) - आन्तरिक सज्जा हेतु अलंकृत पर्दा अथवा चित्रित कपड़ा।

चित्र यवनिका/परदा चित्र

Tattoo Art (टैटू आर्ट) : शरीर श्रृंगार की कला जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों में चित्र, नाम, प्रतीक, संकेत, निशान, आलेखन, पहचान-चिह्न, आदि गोदे जाते हैं। ग्रामीण परिवेश एवं जनजातियों में विशेष प्रिय कला जो उनकी अपनी निजी पहचान के लिए है। अब गोदना, फैशन हो गया है। शहरी लोग शरीर अलंकरण के लिए इन्हें अपने विभिन्न अंगों में गुदवाते हैं। कष्टकारी पद्धति होने के पश्चात् यह लोकप्रिय है। जीवनपर्यन्त यह चित्र शरीर में बने रहते हैं। स्त्रियों में विशेष प्रचलित इस कला को काजल व गोंद मिश्रण से सुई अथवा काँटे द्वारा गोद-गोद कर शरीर के विभिन्न भागों में बनाया जाता है। अब बाज़ार में तैयार स्टीकर उपलब्ध है जो कुछ समय के लिए, शौक पूरा करने के उद्देश्य से लगाये जाते हैं।

गोदना कला

Tea Ceremony (टी सेरिमॉनि) : चाय-कक्ष जो जापान, क्योटी नगर (मोरामाची) के सिल्वर पैविलियन नामक उद्यान में स्थित था। जिसको सो-आमी तथा शुको ने सन् 1485 से 1525 के मध्य में सैनिक शासक 'योशीमाशा' से कहकर निर्मित करवाया था। सो-आमी आर्मी परिवार का चित्रकार था, जो दृश्य चित्रांकन में निपुण था। शुको एक पुजारी था। इस कक्ष को बड़े रुढ़िवादी तरह से सौन्दर्य का ध्यान रख सजाया गया था। यहाँ के नियम कठोर थे। यहाँ आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इन नियमों का पालन करना पड़ता था। इस कक्ष में कलाकार अपने चित्र को दिखाते, उस पर आगन्तुक चर्चा करते, बाद में आगन्तुकों को

चाय-नाश्ता कराया जाता। इस कक्ष में सजी हुई प्रत्येक वस्तु, पात्र, फर्नीचर एवं पर्दा सजावटी व अलंकृत थे। इस स्थान से वास्तु-शिल्पियों, चित्रकारों तथा उद्यान-आलेखकों ने प्रेरणा ग्रहण कर सृजन के नये-नये आयाम स्थापित किये।

चाय-पान उत्सव

Technique (टेक्नीक) - तकनीक का प्रयोग कर, बनायी गयी कलाकृति। **तकनीक**

Tempera (टेम्परा) - दृढ़ीभूत चित्रण, जिसमें रंगों के साथ माध्यम के रूप में पायस का प्रयोग होता है। श्रेष्ठ पायस अण्डे की जर्दी (yolk) एवं सफेदी (Albumen) है। तैलरंगों के अविष्कार से पहले इसी रंग पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इसके प्रभाव अपारदर्शी होते हैं। इस पद्धति से चित्रण सभी प्रकार की सतह में हो सकता है तथा रंग वानस्पतिक, रासायनिक तथा खनिज कोई भी हो सकता है।

दृढ़ीकृत चित्रण

Tepstry (टैपिस्ट्री) : परदे एवं फर्नीचर आदि के लिए मोटा रंग-बिरंगा व अलंकृत कपड़ा जिसमें बेलबूटे, ज्यामितीय डिजाइन एवं उद्गत डिजाइन बनी होती है।

चित-कम्बल

Terrace (टैरेस) : भवन की खुली छत, किसी खण्ड का खुला स्थान अथवा छज्जा।

बरामदा/खुली छत

Terracotta (टैराकोटा) - पकी हुई मिट्टी की मूर्तियों के सम्बन्ध में प्रयुक्त शब्द। जिन मूर्ति-शिल्पों में पकने के पश्चात् किसी भी प्रकार का कोई रंग नहीं किया जाता हो। एक प्रकार से पकी मिट्टी की कलात्मक वस्तुओं के संदर्भ में भी इस शब्द का प्रयोग होता है।

पक्की मिट्टी/मृण्मूर्ति

Tertiary Colour (टर्शरि कलर) : द्वितीय श्रेणी के दो रंगों से मिलकर तीन तृतीय श्रेणी के रंग, नारंगी + बैंगनी = रसेट (Russet), बैंगनी - हरा = सितरिन (Citrine), हरा - नारंगी = ऑलिव (Olive) बनते हैं।

तृतीय श्रेणी के रंग

Textile Designing (टेक्सटाइल डिजाइनिंग) : वस्त्र-रूपांकन की कला। वस्त्रों को बनाने व सजाने की कला। इस कला में वस्त्रों की सिलाई, बुनावट एवं मुद्रित कर विभिन्न रचनात्मक डिजाइन तैयार किये जाते हैं। जीवन में विभिन्न उद्देश्य पूर्ण करने वाले वस्त्र, कालीन, पर्दे, चादर, तौलिया, मेजपोश, कमीज, कुर्ता-कुर्ती, लेडीज सूट, साड़ी, गाउन, ओढ़नी, लहंगा-चुनरी, चोली, लुंगी की सिलाई, बुनाई, कटाई, रंगाई, छपाई आदि में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमें बनाये जाने वाले पैटर्न दैनिक जीवन के महत्व को दर्शाते हैं। यह क्षेत्र उत्पादन एवं उपयोग दोनों से जुड़ा है। डिजाइन बनाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि डिजाइन किस प्रकार के वस्त्र के लिए बनायी जा रही है। उसी के अनुरूप पैटर्न

को चुना जाता है। वस्त्रों में रंग-रूप को आकर्षक बनाया जाता है। टेक्सटाइल डिजाइनिंग के अनेक संस्थान हैं, जहाँ इसके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पढ़ाई करायी जाती है।

वस्त्र अभिकल्पन

Texture (टेक्स्चर) : वस्तु की संरचना के धरातल का संवेदन एवं संरचनात्मक गुण को वयन कहते हैं। यह धरातल की प्रवृत्ति एवं ढंग है। जिसे पोत कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।

बनावट/धरातल वयन/पोत

Thatch (थैच) : झोपड़ी, कुटिया व कच्चे घरों में घास-फूस के छप्पर छाने की कला अथवा छप्पर बनाने की कला।

छप्पर छाना

The Bridge (द ब्रिज) : जर्मनी में स्थापित, कलाकारों की एक संस्था, जिसकी स्थापना सन् 1905 ई. में चित्रकार एडवर्ड मुंक ने की थी। इस संस्था के कलाकार रूपात्मक अभिव्यंजना करते थे तथा अपनी रचना में जर्मन निर्दयता, अतीन्द्रियता के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करते थे।

सेतु

Thinner (थिनर) : तनुकारी द्रव जिसका प्रयोग तैल रंगचित्रण, इनैमल रंगांकन व फर्नीचर पॉलिश आदि में किया जाता है। यह एक अच्छा विरलक है। ब्रश एवं वस्त्र आदि के पेण्ट सूख जाने के पश्चात् इससे आसानी से साफ हो जाते हैं।

विरलक

Thread Painting (थ्रेड पेन्टिंग) : धागों को रंगों में भिगोकर, सतह पर रख, कागज की परत से दबाकर, एक सिरे से धागा खींच लेने से अद्भुत परिणाम प्राप्त होते हैं तथा नवीन आकारों का सृजन होता है।

धागा चित्रण

Three Dimensional (थ्री डाइमेंशनल) - जिन कलाओं की त्रि-आयामी रचना होती है, जैसे-मूर्तिकला व वास्तुकला। चित्रकला त्रि-आयामी नहीं होती बल्कि उसके प्रभावों को छाया-प्रकाश द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

त्रि-आयामी / त्रिविम

Three Pencils Technique (थ्री पेन्सिल्स टेक्नीक) : चित्र बनाने की एक तकनीक जिसमें काली पेन्सिल, चाक एवं सेंग्विन का प्रयोग किया जाता है। यह तकनीक 17वीं शताब्दी में खूब प्रचलित थी। इस तकनीक से 'पोर्ट्रेट' एवं निर्वस्त्र (मानव आवृत्ति) बनाये जाते थे। इस चित्र-तकनीक में दानेदार कागज का प्रयोग किया जाता है।

तीन पेन्सिल तकनीक

Thumb Tack (थैम टैक) - बोर्ड पिन/चौड़े मत्थे वाला पिन जिसका उपयोग कागज (ड्रॉइंगशीट) पर चित्र बनाते समय ड्रॉइंग बोर्ड पर लगाने के लिए होता है।

अंगुष्ठ कील

Tie and Dye (टाई एण्ड डाई) : धागे से कपड़े में विभिन्न तरह की गाँठ बाँधकर आकर्षक रंगों से रँगने की तकनीक। यह प्रक्रिया कई चरणों में पूरी की जाती है।

हल्के रंग से शुरू कर वस्त्र को गहरे रंग से रंगा जाता है। यह पारम्परिक कपड़ा रँगने का तरीका है, जो गुजरात व राजस्थान में प्रसिद्ध है। रँगने के लिए भगोने में पानी लेकर गर्म करते हैं तदुपरान्त उसमें नमक एवं सोडा एक चम्मच (या मात्रानुसार) मिलाकर, इसमें मनमाफिक रंग डालकर, गाँठ बँधे कपड़े को अच्छी तरह से डूबोते हैं। कपड़े पर रंग हो जाने के दस मिनट पश्चात् साफ पानी से धो लेते हैं। इसके बाद 'ड्राई फिक्सर' मिले सादे पानी में इसे डुबो देते हैं। रंग पक्का हो जाता है। जितने भी रंग करने होते हैं, यही प्रक्रिया दोहराते हैं। हल्के से गहरे रंग करने से रंग आसानी से एक दूसरे पर चढ़ते जाते हैं। कपड़ा सूख जाने के पश्चात् गाँठ खोलने से बाँधनी डिजाइन बन जाती है। **बँधेज/बाँधणी/बाँधनू**

Tinge (टिन्ज) : किसी चित्र में हल्का रंग चढ़ाना। जिससे अन्तः आभा झलकती रहे। जैसे—वाश चित्रण में रंग वाश लगाया जाता है। **आभा/झलक**

Tint (टिन्ट) : किसी रंग का उपवर्ण जिससे हल्की रंगतें बनती हैं। एक रंग के हजारों उपवर्ण बन सकते हैं। यह रंगों की आभा प्रायः श्वेत रंग के आनुपातिक मिश्रण से प्राप्त होती है। **वर्णक/रंगत/हल्की छटा**

Torso (टॉर्सो) : बिगड़ी हुई रचना। जैसे—मानवाकृति का बिना हाथ-पैर के बनाया गया धड़। खण्डित प्रतिमा को भी कहते हैं। **बुत का धड़/अपूर्ण रचना**

Tower (टाउअर) : ऊँची इमारत, किला, महल अथवा ऊँचे भवन खण्ड में बनी अट्टालिका या मीनार। **मीनार/बुर्ज/ऊँचा भवन खण्ड / ऊँचा स्तम्भ**

Trace (ट्रेस) : खाका उतारना। किसी डिजाइन या अलंकरण की यथावत् अनुकृति करने हेतु पतले पारदर्शी कागज पर रूपरेखा उतारते हैं, तदुपरान्त मूल रूप में अनुचित्रित करते हैं। **निशान/अनुचित्रण**

Tracing (ट्रेसिंग) - अनुरेखण। ट्रेसिंग पेपर द्वारा चित्र को ट्रेस करना तदुपरान्त उससे ट्रेस कर चित्र बनाना। **अनुरेखण**

Trade Mark (ट्रेड मार्क) : किसी व्यापार, उत्पादक, निर्माता, संगठित समूह या वितरक की पहचान के लिए बना औपचारिक पंजीकृत प्रतीक चिह्न (Registered Mark) जो विशिष्टता लिये अथवा विशेषता लिये हुए होता है। यह चिह्न कम्पनी और उत्पाद की सुरक्षा, संरक्षण का कानूनी पंजीकरण है। यह मार्का सरल-सन्देश एवं महत्वपूर्ण गुण के सूचक होते हैं। **व्यावसायिक/व्यापार चिह्न**

Traditional Art (ट्रेडिशनल आर्ट) - जो कला परम्परागत एक पीढ़ी से दूसरी में हस्तान्तरित होती है। यह घरेलू भी होती है (जैसे-लोककला) और व्यावसायिक भी जैसे—शैलीगत कला। **पारम्परिक कला**

Traditional Form (ट्रेडिशनल फॉर्म) : परम्परागत रूप जिनका प्रयोग पीढ़ी दर पीढ़ी से

चित्रकार-मूर्तिकार करते आ रहे हैं। ये रूप, शैली आधारित किसी विशेष स्थान, जाति या समूह द्वारा बनाये जाते हैं। परम्परागत रूपों में भी स्थान-परिवर्तन होने पर शैलीगत अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

पारम्परिक रूप

Transparency (ट्रैनस्पैरेंसी) - पारदर्शी चित्र, ये मुख्यतः कैमरे द्वारा खींच कर बनाये जाते हैं। इन्हें प्रोजेक्टर की सहायता से देखा जाता है।

पारदर्शी चित्र

Tribal Art (ट्राइबल आर्ट) : आधुनिकता से परे दूरस्थ वनों, जंगलों, घाटियों एवं पर्वतों पर सदियों से जीवन-यापन करने वाली आदिम जनजातियों की, चित्र एवं मूर्ति परम्परा, जो उनकी संस्कृति, प्रकृति व जीवन को विहंगम रूप को दर्शाती हैं। यह कला आदिम जाति-सम्बन्धी, समूह-सम्बन्धी, कबीला-सम्बन्धी होती है। इन आदिम जातियों/आदिवासियों द्वारा बनायी गयी कृति, किसी न किसी मिथक, आस्था, विश्वास तथा परम्परा पर आधारित होती है। सरल व सहज रूपों द्वारा निर्मित कृतियों में कोई भी बनावटीपन नहीं रहता, बल्कि अलंकरण का योग रहता है। इन आदिवासियों द्वारा अपने घरों की भूमि एवं भित्तियों को चित्रों से सजाया जाता है। अनुष्ठान हेतु लोकमूर्ति शिल्पों का प्रयोग किया जाता है।

आदिवासी/जनजातीय कला

Triennale (त्रिनालय) : समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी। भारत में इस प्रदर्शनी को राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली, प्रत्येक तीन वर्षों में आयोजित करती है। इस प्रदर्शनी में पूरी दुनिया (विश्व) के कलाकार भाग लेते हैं। इस प्रदर्शनी में दस अवार्ड उत्कृष्ट कलाकारों को दिये जाते हैं। प्रथम त्रिनालय सन् 1968 में हुई थी। तब से यह प्रदर्शनी लगातार आयोजित हो रही है। 11वीं त्रिनालय सन् 2005 में आयोजित हुई थी। इस प्रदर्शनी की परिकल्पना तत्कालीन अकादमी के अध्यक्ष डॉ. मुल्क राज आनन्द ने की थी।

अन्तर्राष्ट्रीय त्रिवार्षिक कला प्रदर्शनी

Triptych (ट्राईप्टिच) : आपस में जुड़े हुए तीन फलक। त्रिपट चित्रण की परम्परा उड़ीसा व राजस्थान में प्रचलित है। समकालीन चित्रकार इस प्रकार का प्रयोग कर चित्र-रचना कर रहे हैं।

त्रिपट/त्रिफलक चित्र

Typographer (टाइपोग्राफर) : छापने वाला मुद्रक अथवा अक्षर योजक (Compositer) जो किसी भी प्रकार की सामग्री को छापता है अथवा अक्षर-योजन करता है।

मुद्रक/अक्षर योजक

Typography (टाइपोग्राफी) : मुद्रण-कला जिसमें पाठ्य-सामग्री, विज्ञापन, बिल-वाउचर्स, कॉपी, कैटलॉग, ब्रोशर, अखबार, पत्रिका, किताब व पर्चे आदि की छपाई का कार्य होता है। छपने से पहले प्रूफ शोधन (Proof reading) अनिवार्य है। जिससे त्रुटि-रहित शुद्ध रूप में पाठ्य-सामग्री उपलब्ध हो। यह छपने की

मूल पाठ-सामग्री का त्रुटि-सुधार या संशोधन, संक्षिप्त रूप में कुछ चिह्नों द्वारा किया जाता है। जिसे मुद्र-शोधक (Proof-reader) करता है। इससे शुद्ध रूप में पाठ्य-सामग्री पढ़ने हेतु छपती है। जैसे — $\neq$ स्पेश करने के लिए, d हटाने के लिए, cap बड़े अक्षर प्रयोग के लिए, दूर-दूर छपे अक्षरों को पास करने के लिए, $\times$ टूटे हुए अक्षरों को बदलने के लिए, # ज्यादा स्पेश के लिए, रोमन अक्षरों के लिए, = ऊपर नीचे अक्षरों को ठीक करने के लिए, () लघु कोष्ठक में रखने के लिए, दौंये खिसकाने के लिए : कोलन चिह्न देने के लिए व W. F. अक्षरों में भिन्नता के लिए आदि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त भी अन्य बहुत सारे चिह्न हैं। जिनका प्रयोग अक्षर या वाक्य शुद्धता के लिए किया जाता है।

मुद्रण कला

Two Dimensional (दू डइमेन्शनल) - दो आयाम अर्थात् लम्बाई $\times$ चौड़ाई। चित्र कलाएँ प्रायः द्वि-आयामी होती हैं। सपाट रंग का प्रभाव भी द्विआयामी होता है परन्तु चित्र में त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करने के लिए छाया-प्रकाश पद्धति का सहारा लिया जाता है।

द्विआयामी/द्विविम

Uu

Ukiyo-e (यूकियो-ए) - जापानी छापाचित्र शैली। सत्रहवीं शती में 'क्योटो-केनो स्कूल' के कलाकारों द्वारा लकड़ी के ब्लॉक-चित्र बनाकर कार्य किया गया। जिससे जापान की पहचान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई। इडो (टोकूगावा) काल की यह चित्रशैली जिसमें जन-सामान्य (Genre) विषयों को लेकर चित्रित किया गया। इस शैली के प्रवर्तक कलाकार **इवासा मैताबाई** (Iwasa matabei, 1578-1650) और **गोशुन** (जन्म 1682 ई.) थे। इन कलाकारों ने दैनिक जीवन से सम्बन्धित चित्रों पर अपनी तूलिका चलाई। यूकियो-ए का शाब्दिक अर्थ है छण भंगुर संसार का दैनिक जीवन। इस शैली में लघु आकार के जन-सामान्य चित्र बनाये गये। इस शैली का प्रादुर्भाव कैनो स्कूल में हुआ। इस शैली में कार्य करने वाले दो वर्ग थे। एक जो तूलिका द्वारा रंगांकन-रेखांकन कर चित्र बनाते तथा दूसरे लकड़ी के ठप्पों द्वारा चित्र छापते। पहले यह शैली विषयाधारित थी तथा बाद में छापा-चित्र आधारित, जिसका सूत्रपात सन् 1660 में ईडोनगर के **होशीकावा मोरोनोबू** (1618-1694 ई.) ने किया था। वह एक-रंगीय चित्र छापता था। विषय जन-सामान्य के थे। कालान्तर में छापे गये चित्रों में हाथ से रंग भरकर रंग-बिरंगी कृतियाँ बनने लगीं। यह जनप्रिय कला निम्न एवं मध्यम वर्ग में पसन्द की जाने लगी क्योंकि जो व्यक्ति महँगी कृति नहीं खरीद सकता था, वह इन सस्ते चित्रों को अपने घरों में टाँग सकता था। रंग-बिरंगे चित्रों के लिए **कियोनोबू** का स्थान

महत्वपूर्ण है। इस विधि से चित्रों के साथ-साथ सचित्र पुस्तकें भी छपने लगीं। लकड़ी के ठप्पों द्वारा प्राकृतिक दृश्यों को निरूपित करने वाला महान चित्रकार था **कात्सुशिका होकूसाई** (1760-1849 ई.)। इसके बनाये भूदृश्यांकन यथार्थवादी थे। होकूसाई के छापा चित्रों की पेरिस में हुई प्रदर्शनी में यूरोपीय चित्रकारों की दृष्टि पड़ी, तब पश्चिमी कला में पूर्वी कला के प्रति जिज्ञासा पैदा हुई। इसके बनाये फ्यूजी पर्वत माला के 36 चित्र श्रेष्ठ कृति है, जो विश्व-धरोहर है। 150 वर्षों तक चली यह शैली यमातो-ए की भांति निजी शैली थी। इस शैली के प्रमुख यहाँ कि चित्रकार **हारुनोबू** (1725-70 ई.), **टोरी कियोनागा** (1751-1815 ई.), **कितागावा उतामोरा** (1753-1806 ई.), **उतागावा तोयोफुनी** (1767-1825 ई.), **टोयोनाबू** (1711-85 ई.), **कियोनोबू** (1644-1779 ई.) एवं **कियोमासू** (1694-1716 ई.) आदि थे।

यूकियो-ए शैली

Unexpected Painting (अनैक्सपेक्टेड पेन्टिंग): वह चित्रण पद्धति जिसमें चित्रकार पूर्व योजना के अनुसार कार्य नहीं करता, बल्कि वह कुछ बनाना शुरू करता तो सहसा उसे कुछ आकृतियों के बिम्ब दिखाई देने लगते हैं। वह उन्हीं अप्रत्याशित अद्भुत बिम्बों को प्रभावशाली ढंग से पूर्णरूप प्रदान करता है। इस प्रकार के चित्रों में चित्रकार का अन्तर्ज्ञान कार्य करता है, अद्भुत बिम्ब मन की गहराई से उछेरित होते हैं। इस प्रकार का चित्रण अति यथार्थवाद से प्रेरित है। यह कला तर्कपूर्ण चिन्तन से मुक्त मानसिक क्रिया और सौन्दर्य पर आधारित है।

अप्रत्याशित चित्रण

UP State LKA (यूपी. स्टेट एल के ए) : उत्तर प्रदेश शासन द्वारा दृश्य कलाओं के प्रोत्साहन, संरक्षण एवं उन्नयन के लिए 08 फरवरी 1962 को राज्यललित कला अकादमी की स्थापना की गयी, जो सांस्कृतिक कार्य विभाग उ.प्र. की पूर्णतः वित्त पोषित इकाई के रूप में थी। अकादमी गतिविधियों के लिए राज्य संग्रहालय, बनारसी बाग, लखनऊ में इस परिसर की स्थापना हुई। सन् 1964 में अकादमी परिसर स्थान्तरित होकर लाल बारादरी, लखनऊ में आया। इस अकादमी के प्रथम औपचारिक अध्यक्ष तत्कालीन **मुख्यमंत्री डॉ सम्पूर्णानन्द** ने 26/3/1962 को पद ग्रहण किया था। तदुपरान्त नियमित अध्यक्ष कलाविद् **डा. राधा कमल मुखर्जी** मनोनीत हुए।

अकादमी की मूल गतिविधियों में राज्य के कलाकारों की **वार्षिक कला प्रदर्शनी** का आयोजन करना, प्रतिष्ठित कलाकारों को **पुरस्कार** देना, उत्कृष्ट कलाकारों की एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित करना, अंतर्राज्य विनियम कला प्रदर्शनी, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, कला शिविरों, व्याख्यानों, कला-संगोष्ठियों, कला मेला, कला-महोत्सव, कला फिल्म महोत्सव, विदेशी मूल की कलाकृतियों की

प्रदर्शनी, आमंत्रित कलाकारों की प्रदर्शनी, युवा कलाकारों की प्रदर्शनी के लिए आर्थिक सहायता, प्रत्येक तीसरे वर्ष **अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी** का आयोजन, कला पत्रिका '**कला त्रैमासिक**' एवं उच्चकोटि की पुस्तकों, कैटलॉग, मोनोग्राफ का प्रकाशन, '**अकादमी अधि सदस्यता**' विशिष्ट कलाकारों का सम्मान, डाकूमेटेशन, संग्रह, डिमान्शट्रेशन एवं कलाकारों को कला-दीर्घा उपलब्ध कराना आदि-आदि मुख्य कार्य हैं।

उ.प्र.राज्य ललित कला अकादमी

U.P.A. (यू.पी.ए.)- उत्तर प्रदेश आर्टिस्ट एसोसिएशन जिसकी स्थापना सन् 1936 में लखनऊ में हुई थी, और इसके सदस्य 3000 के प्रमुख चित्रकार थे। कुछ वर्ष सक्रिय रहने के पश्चात् निष्क्रिय हो गयी थी तदुपरान्त पुनः सन् 1948 में सक्रिय हुई थी।

उत्तर प्रदेश कलाकार संघ

Useful Arts (यूज़फुल आर्ट्स) - हस्त कौशल से युक्त कलाएँ जैसे-बुनाई, कढ़ाई दस्तकारी, खिलौना, सजावटी वस्तुएँ आदि। इन्हें शिल्पकला कहा जाता है। सामाजिक जीवन में उपयोगी तथा महत्वपूर्ण वस्तुएँ जिनमें कलात्मक अलंकरण होता है। यह कला परम्परागत होती है। इन कलात्मक वस्तुओं को बनाने वाले दस्तकार, लोहार, दर्जी, बढ़ई, बुनकर, जिल्दसाज़, कुम्हार, सोनार, तँबेरा, राज-मिस्त्री, चर्मकार एवं पत्थर पर कार्य करने वाले शिल्पकार होते हैं। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक मानव जीवन से जुड़ी इस कला का महत्व यथावत् है। इस कला के अन्तर्गत निर्मित वस्तुओं में मौलिकता का ध्यान न रख बनावट एवं तकनीकी दक्षता का ध्यान दिया जाता है। मूलतः यह शैली प्रधान कला है।

उपयोगी कला

Utrecht School (यूट्रेक्ट स्कूल): हालैण्ड के कलाकारों का दल, जिन्होंने सन् 1920 के पश्चात् आम जन-जीवन और धार्मिक चित्रण को यथार्थवादी शैली में चित्रित किया। इस दल के प्रमुख कलाकार **हान्थास्ट, बात्यूरेन व टब्बूगेन** थे। **यूट्रेक्ट शैली**



Value (वैल्यू) - प्रकाश की मात्रा के अनुसार रंगों का तुलनात्मक हल्कापन अथवा गहरापन। जिसमें सफेद रंग का किसी अन्य रंग में मिश्रण करने से उक्त रंग का मान बढ़ जाता है और काला रंग मिश्रण करने से 'मान' घट जाता है। सफेद अथवा काले के अन्य रंगों में आनुपातिक मिश्रण करने से अलग-अलग 'मान' प्राप्त होते हैं।

मान

Vanishing Point (वेनिशिंग पॉइन्ट) - वस्तुओं की रेखांकित, समानान्तर दो क्षितिज रेखाएँ जो एक बिन्दु पर मिलती हुई प्रतीत होती हैं। इस मिलन बिन्दु को **लोप बिन्दु**

कहा जाता है। यह परिप्रेक्षीय प्रभाव के कारण होता है। जैसे— रेल की पटरी के बीच में खड़े होकर देखने से दिखता है। **लोप बिन्दु**

Venus (वीनस) : वह सुन्दरता की देवी जिसके अंग-प्रत्यंग का गठन पूर्ण-रूपेण होता है। काम देवता की पत्नी रति व **शुक्रग्रह** को भी वीनस कहते हैं। **सर्वांग सुन्दरी**

Visual Arts (विजुअल आर्ट) - दृश्य सम्बन्धी कलाएँ जिनका सम्बन्ध नेत्रों से होता है। जैसे-चित्रकला, मूर्तिकला, व वास्तुकला। **चाक्षुष/दृश्य कलाएँ**

Visual Weight (विजुअल वेट) : कलागत दृष्टिभार। चित्र में रचना-तत्वों एवं विषयवस्तु का समावेश होता है। रचना करते समय समान भार यानि आकर्षण के सिद्धांत का सदैव पालन किया जाता है। चित्र में भार-संतुलन न होने से एकरसता उत्पन्न होती है। चित्र आकर्षण-विहीन प्रतीत होने लगता है। **दृष्टिगत भार**

Volume (वॉल्यूम) : चित्र में आयतन बोध कराने के लिए विभिन्न रंग-उपरंगों का प्रयोग किया जाता है। जिससे चित्र में त्रिमितीय (घनत्व) प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। एक प्रकार से तुलनात्मक गहरे-हल्केपन के गुण को **Volume** कहते हैं। **आयतन**

Vorticism (वॉर्टिसिज़्म) : इस कला-आन्दोलन का सन् 1913 में सूत्रपात इंग्लैंड में अंग्रेज चित्रकार **विण्डेम लुइस** ने किया था। सन् 1914 में लुइस एवं उनके मित्रों ने **भँवरवाद** का घोषणा-पत्र प्रकाशित करवाया। इस आन्दोलन के केन्द्र लन्दन व मेनचेस्टर थे। इसका उद्देश्य मानव मन की सहज प्रवृत्ति आदिम को भँवर के समान की अवस्था को रूपायित करना था। इस आन्दोलन द्वारा मानव की मूर्खता, पशुता, अन्तर्मुखता एवं स्वप्नवादिता को दर्शाया गया है। यह आन्दोलन भविष्यवादी व घनवादी कला शैलियों के मिश्रण का रूप था, जो इंग्लैंड तक ही सीमित रहा। प्रथम विश्वयुद्ध तक इस आन्दोलन का महत्व रहा। इसकी प्रथम प्रदर्शनी सन् 1915 में हुई थी। 'भँवरवाद' नाम देने का श्रेय कवि **'एज़ापाँड'** को जाता है। विण्डेम लुइस के साथ अन्य कलाकार **विलियम रॉबर्ट, फ्रेडरिक इचैल्स, वाइसवर्थ, गाडर ब्रजेस्का** व दार्शनिक **टी.ई. हुल्ले** थे। इस समूह ने मुख्य पत्र **Blast** को भी प्रकाशित किया था। **भँवरवाद**

Ww

Wall Hanging (वॉल हैन्गिंग) : दीवार की सजावट के लिए अलंकृत टाँगने वाली कृति जो चित्र रूप में भी हो सकती है, और मूर्ति रूप (उभारदार) में भी। इसके साथ-साथ विभिन्न हस्तशिल्प वस्तुओं द्वारा भी भित्ति की शोभा बढ़ाई जाती है।

इन कृतियों के माध्यम पारम्परिक, लोक, जनजातीय एवं आधुनिक आदि विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। आन्तरिक सज्जा में इनका विशेष स्थान होता है।

भित्ति लटकन

Wall Painting (वॉल पेन्टिंग) - भित्तियों पर बनाये जाने वाले चित्र, जिसमें अलंकरण व विषय वस्तु का महत्व होता है।

भित्ति चित्रण

Wall paper (वॉल पेपर) : आन्तरिक सज्जा के लिए दीवारों पर लगाये जाने वाला अलंकृत एवं अभिकल्पित कागज जिसको कुछ समय पश्चात् बदला भी जा सकता है। यह आन्तरिक गृहशोभा के लिए सस्ता एवं उपयुक्त तरीका है।

भित्ति सज्जा कागज

Warm Colour (वार्म कलर) : उष्णता के प्रभाव से युक्त रंग जिन्हें देखने से उत्तेजना का आभास हो। ये रंग हैं— लाल, गहरा पीला, नारंगी अथवा इनके संयोग से बने हुए रंग। यह रंग सूर्य के आस-पास की रंगत के होते हैं।

उष्ण रंग

Wash Painting (वाश पेन्टिंग) : वे चित्र जो जल रंग से बनाये जाते हैं, तदुपरान्त इन्हें पानी से धोया जाता है। पानी से धोने - भिगोने की प्रक्रिया कई चरणों में की जाती है। पानी से चित्र को धोने से उसमें लगे रंग कुछ धुल जाते हैं, और कुछ कागज सोख लेता है। इससे लगे रंग हल्के हो जाते हैं। पुनः इस पर रंगांकन किया जाता है। यह प्रक्रिया तबतक की जाती है जबतक की मनवांछित परिणाम न आ जाये। तदुपरान्त उसके ऊपर रंग-वाश लगा कर चित्र को पूर्ण किया जाता है। एक प्रकार से यह पारदर्शी रंगांकन पद्धति है।

धोवन-रंग चित्र / धौति पद्धति

Water Colour (वॉटर कलर) : वह रंग जिसमें माध्यम के रूप में जल/पानी का प्रयोग किया जाता है अर्थात् वह रंग जो जल में घुलनशील हो। ये रंग चूर्ण, टिकिया एवं द्यूब के रूप में मिलते हैं। इनके रंगांकन में पारदर्शी प्रभाव रहता है, यदि इनमें अन्य कुछ मिश्रण न किया गया हो तो। मुलायम बालों की तूलिका द्वारा जल रंग चित्रण किया जाता है। ये रंग प्राचीन काल से प्रचलन में हैं।

जल रंग

Watermark (वॉटर मार्क) : पारभासी चिह्न जो कागज के अन्दर बने होते हैं। इसका प्रयोग अधिकांशतः मुद्रा अथवा सरकारी कागजातों में किया जाता है। कम्पनियाँ भी अपनी पहचान के लिए इस पद्धति का प्रयोग करती हैं।

जलांक / जल चिह्न

Wind Chime (विन्ड चाइम) : हवा के झोंके से घण्टी की आवाज निकालने वाला यन्त्र। यह एक सुरीली घण्टी होती है जिसमें कई लटकने लटकी होती हैं, जो हवा से एक दूसरे से टकराकर सुरीला नाद उत्पन्न करती हैं।

वायु घण्टिका/पवन घण्टी

Wing (विंग) : मंच के बाजू बगल/पार्श्व/किनारों में लगे हुए स्कन्ध/फलक, जहाँ से अभिनेता अभिनय हेतु मंच पर प्रवेश करता है। पक्षियों के पंख एवं पंखे के पर को भी कहते हैं।

पार्श्वद्वार/बगली द्वारा/पार्श्वक

Wire Sculpture (वाइयर स्कैल्पचर) - तारों द्वारा जोड़कर, विभिन्न रूप देकर बनायी गयीमूर्ति । तार-मूर्ति

Wood Carving (वुड कार्विंग)- लकड़ी के बोटे (टुकड़े) को काट-छाँट कर मूर्ति रूप देना अथवा काष्ठ को तराश कर कलात्मक कलाकृति की रचना करना । रचना मूर्ति रूप में भी हो सकती है और उद्भूति अथवा उभार-मूर्ति में भी । इसे काष्ठ-नक्काशी करना भी कहते हैं । नक्काशी/काष्ठ कला

Wood Engraving (वुड इनग्रेविंग) : छापा चित्र बनाने हेतु छापा-ठप्पा तैयार करने की पद्धति जिसमें छाया-प्रकाश का प्रभाव दिखाने के लिए प्रायः बारीक कार्य किया जाता है । काष्ठ उत्कीर्णन

Wood Craft (वुड क्राफ्ट) - परम्परागत तरीके से बनाये गये लकड़ी के खिलौने या मूर्ति जिनके आकार व डिजाइन पूर्व निर्धारित परम्परागत होते हैं । काष्ठ शिल्प

Wood Cut (वुड कट) - लकड़ी के छापा चित्र । काष्ठ को उत्कीर्ण कर छापा बनाना । इस तकनीक को **Xylography** भी कहते हैं । लकड़ी के पट पर डिजाइन इस प्रकार उल्टी उत्कीर्ण की जाती है कि आकृति उभरी बने तथा छपने पर सीधी दिखायी दे । वुडकट का प्रारम्भ 8वीं शती में चीन में हुआ था । काष्ठ कर्तन

Work (वर्क) - चित्रकार/मूर्तिकार द्वारा बनायी गयी कृति को 'काम' कह कर सम्बोधित किया जाता है । कार्य/काम/रचना

Workshop (वर्कशॉप) - कलाकृति बनाने हेतु वह स्थान, जहाँ पर कलाकार कार्य करता है, अथवा कई कलाकार मिलकर कार्य करते हैं । ललित कला अकादमी व कला संस्थाएँ जो कला-शिविरों का आयोजन करती हैं, जहाँ विभिन्न स्थानों के कलाकार आकर सामूहिक सृजन करते हैं । इसको भी कार्यशाला कहते हैं । कार्य शिविर/कार्यशाला

Xx

Xylography (ज़ायलोग्राफी) : काष्ठ उत्कीर्णन का एक शब्द जो प्रारम्भिक व्यावसायिक काष्ठ उत्कीर्णन के लिए प्रयुक्त होता था । काष्ठ नक्काशी कला

Yy

Yamato-e (यमातो-ए) - जापानी कला की एक शैली जिसका उदय-839 ई. में चीन से सांस्कृतिक आदान-प्रदान बन्द होने के पश्चात् हुआ । जापान की इस स्वदेशी चित्रशैली को राष्ट्रीय शैली के नाम से जाना जाता है । जापानी चित्रकार चीनी

परम्पराओं का अन्धानुकरण करते थे। चीन से सम्पर्क टूट जाने के पश्चात् जापानी कलाकारों को अपनी चित्रशैली विकसित करने का मौका प्राप्त हुआ। इस निजी शैली का नाम 'यमातो-ए' रखा गया। यमातो जापान का प्राचीन नाम था। इस स्वदेशी शैली का प्रचलन लगभग 250 वर्षों तक सन् 1077 तक खूब रहा। इस शैली में तेज चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया, साज - सज्जा को विशेष स्थान दिया गया। यह चित्र धार्मिक न थे। इस शैली का सूत्रपात 'कोसे स्कूल' में हुआ, जिसके संस्थापक कोसे कनाओका थे। इस शैली का श्रेष्ठ प्रतिनिधि स्कूल तोसा स्कूल था, जिसकी स्थापना तेरहवीं शताब्दी में हुई थी। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, फूल-पत्ती एवं पेड़-पौधों के सजीव अलंकरण में जापानी चित्रकारों की निजी प्रतिभा दिखाई दी। प्रमुख चित्रकार ताकायोशी, कैसुगा मोतोमित्सु एवं तोसा-सुनेतुका थे। 14वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कैरा-ए शैली का प्रचलन बढ़ने से यह शैली उपेक्षित होने लगी। क्योंकि इस शैली में कार्यरत कलाकारों को सामन्तों व सम्राट का प्रश्रय प्राप्त था और सत्ता सैनिकों के निहित हो गयी थी। इस शैली का महत्व 16वीं शताब्दी में कम होने लगा और 18वीं शताब्दी में लगभग समाप्त हो गया।

यमातो-ए शैली

Yellowing (यैलॉइंग) - चित्र का पीला पड़ना, जो बिना परिष्कृत अलसी तेल के प्रयोग से अथवा वार्निश के प्रयोग से पीला पड़ने की सम्भावना रहती है। **पीला पड़ना**

ZZ

Zincography (ज़िंकग्राफी) : जस्ते की प्लेट से छपाई की कला। मूलतः लिथोग्राफी छपा में प्रयुक्त होने वाला शब्द, जो जस्ता (Zinc) प्लेट द्वारा छपाई के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है।

जस्तकारी/यशद मुद्रण

Zonal Cultural Centres (ज़ोनल कल्चरल सेन्टर्स) - भारत सरकार के सांस्कृतिक विभाग ने वर्ष 1986 में 7 सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना, लोक परम्पराओं को सहेजने, पोषित करने एवं उनके संवर्धन के उद्देश्य से की थी। ये सांस्कृतिक केन्द्र हैं -

1. उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद
2. उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दिमापुर
3. उत्तर-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला
4. पूर्व-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता
5. दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर
6. दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावूर
7. पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र





दृश्यकला शब्दकोश : अंग्रेजी - हिन्दी

अ

Abat - jour	तिरक्षा झरोखा	Advertise	विज्ञापन करना
Ability	कुशलता	Advertisement	विज्ञापन
Aborigines	आदिवासी जातियाँ	Aerial perspective	आकाशी परिप्रेक्ष्य
Aboriginal Art	आदिवासी कला	Aesthetics	सौन्दर्य-शास्त्र
Abrade	मिटाना, खुरचना, रगड़ना	Affix	चिपकाना, जोड़ना
Abraum	गेरू	Aglow	प्रदीप्त
Absorb	अवशोषण	Air Brush	फूहार तूलिका
Absorbent	अवशोषक	Aisle	वीथिका, पथ, गलियारा, गली
Abstract Art	सूक्ष्म कला	Akademi	विद्योचित कला संस्था
Academy	विद्वत्परिषद्	Alamode	फैशन वाला
Academic	शैक्षणिक	Alabaster	सफेद सिलखड़ी
Accessory	अतिरिक्त वस्तु	Album	संग्रह-पत्रिका
Accidental effect	अप्रत्याशित प्रभाव	Albumen	अंडे की सफेदी
Accompany	संगत करना	Alkanet	मेंहदी रंग
Accordance	समरूपता	Alkaline	क्षारीय
Accoutrements	साज-सज्जा	Alla prima	सीधा चित्रण
Accurate	सही-सही, यथार्थ	Allegoric	लाक्षणिक
Achromatic	वर्णहीन	Allegory	दृष्टांत कथा
Acid	अम्ल	Altar-piece	वेदी चित्र
Acrostic	चित्राक्षरी	Alter	वेदी
Acrylic Paint	कृत्रिम तैल-जल रंग	Alteration	रद्दो-बदल
Acting	अभिनय	Aluminium	एल्यूमीनियम
Action Painting	क्रियात्मक चित्रण	Amalgamation	समिश्रण
Actor	अभिनेता	Amateur	शौकिया, अपेशेवर कलाकार
Actress	अभिनेत्री	Amorino	कामदेव की लघु मूर्ति
A.D.(Anno Domini)	ईस्वी सन्	Ampersand	समुच्चय चिह्न जैसे - या /
Ad	विज्ञापन	Amphitheatre	रंगभूमि
Adhere	चिपकना	Amphora	दुहत्थी कलश
Adhesive	चिपचिपा	Amplitude	आधिक्य, आयाम
Advancing colour	अग्रगामी रंग	Amusement Art	मनोरंजक कला
Adventure	रोमांचक	Analogous	सादृश्यता
		Analogous colours	अनुरूप रंग
		Analysis	विश्लेषण

Anamorphosis	रूपाभास	Array	साज, पोशाक
Anatomist	शरीर रचना विशेषज्ञ	Art	कला, कौशल, शिल्प-कला
Anatomy	शरीर रचना विज्ञान	Artefact/Artifact	शिल्पकृति
Ancient	प्राचीन, पुरातन	Artificer	शिल्पकार, कारीगर
Anecdotal Art	उपाख्यान विषयक कला	Artificial	कृत्रिम
Anecdote	दंतकथा	Artisan	शिल्पकार, दस्तकार
Anil	नील का रंग	Artist	कलाकार, चित्रकार
Aniline	रंगों का रासायनिक स्रोत	Artistic	कलात्मक
Animated cartoon	सजीव व्यंग चित्र	Art adviser	कला परामर्शदाता
Angel	फरिश्ता	Art critic	कला समीक्षक
Angular perspective	कोणीय परिप्रेक्ष्य	Art educator	कला शिक्षक
Anklet	पायल	Art element	कला तत्व, रचना तत्त्व
Annotator	टीकाकार	Art engage	समाज परक कला
Annual exhibition	वार्षिक प्रदर्शनी	Art gallery	कला दीर्घा
Announcer	उद्घोषक	Art nouveau	नवीन कला
Antic	विचित्र, प्राचीन	Art therapy	कला-चिकित्सा
Anti-cerne	बाह्य रेखांकन (धरातलीय)	Ashlar	तराशा हुआ पत्थर
Antique	पुरातन/पुरानी कृति	Aspect	पक्ष, पहलू, आकृति
Antiquerian	प्राचीन काल का	Assemblage	सज्जीकरण
Antiquity	पुरावशेष	Association	संघ, संस्था
Apparatus	उपकरण	Asymmetry colour	असममिति रंग
Apparel	सज्जा, पोशाक पहनना	Atelier	शिल्पशाला
Appearance	प्रकटन, बाह्यकृति	Atlas	मानचित्रावली
Applied Art-	व्यावहारिक कला	Atmosphere	वातावरण
Applique	कतरन की कला, जड़ाऊ कार्य	Attache	कागज रखने का छोटा बक्स
Aptitude	योग्यता, कौशल	Attic/Garret	अटारी
Aquarella	पारदर्शी जलरंग	Attire	वस्त्र पहिनना
Aquatint	पृष्ठीय अम्ल निक्षारण	Auburn	बादामी रंग
Arabesque	बेलबूटों या जटिल अलंकरण	Auditorium	प्रेक्षागृह
Arch	तोरण, मेहराब	Authentic	प्रामाणिक
Archaic	पुरातन	Aurignacian	पूर्व पाषाण कालीन
Archaeology	पुरातत्त्व विज्ञान	Autobiography	जीवन-वृत्तान्त
Architect	वास्तुकार, वास्तु-निर्माता	Autograph	हस्तलेख, स्वाक्षर
Architecture	वास्तु कला, स्थापत्य कला	Award	पुरस्कार
Archives	पुरालेख	Axis	अक्षरेखा
Arcuate	चापदार	Axle	धुरा
Argent	रुपहला रंग	Azure	आसमानी रंग
Armature	मूर्ति का आधार ढाँचा		
Armpalette	रंग पट्टिका		
Arrangement	सजावट, आयोजन		

B

Background	पृष्ठभूमि
Backstage	मंच परे
Backstreet	पीछे की गली
Backyard	पीछे का आँगन
Badge	बिल्ला, प्रतीक
Balance	सन्तुलन
Balcony	छज्जा
Ballad	गाथा-गीत (आल्हा)
Baluster	सीढ़ी का छोटा खम्बा
Bambino	बाल ईसा
Bamboceiata	लोक चित्र
Bamboo	बाँस
Bandstand	चबूतरा
Banderol	उभारदार पट्टी
Banner	पताका
Banner Painting	ध्वजा चित्रण
Barrel vaulted / roof	ढोलाकार छत
Barbette	छोटा बुर्ज
Barbican	प्राचीर
Basilica	न्याय सभागार, महामन्दिर
Base	आधार
Basement	तहखाना, भूधरा
Base line	आधाररेखा
Basic	बुनियादी
Basin	हौज
Bas-relief	अर्ध-उभार
Bass	गायन की सबसे नीचा सुर
Bastion	बुर्ज, मीनार
Bathroom	स्नानगृह
Batic	मोम तकनीक द्वारा वस्त्र रंगाई
Battle painting	युद्ध चित्र
B.C. (before christ)	ईसा पूर्व
Beading	उभरी नक्काशी/चौखट
Beargraden	कोलाहल का दृश्य
Beauteous	खूबसूरत
Beauty	सौन्दर्य
Beauty parlor	रूप निखारिका
Beaux Arts	ललित कलाएँ (फ्रेंच नाम)
Bedaub	रंग पोतना
Bedeck	शृंगार करना
Bedew	गीला या नम करना

Bees wax	मधु मोम
Beginner	सीखने वाला
Belle	पूर्ण सुन्दर स्त्री
Besmear	पोतना, लेप करना
Bespatter	छिटे डालना
Bibliography	ग्रंथ सूची
Bichrome	दो रंगा
Biennial exhibition	द्विवार्षिकी प्रदर्शनी
Bill posting	विज्ञापन लगाना
Binder	बन्धक
Bindery	जिल्दसाज़ी कक्ष
Binding	जिल्दसाज़ी
Biograph	सिनेमा यन्त्र
Biography	जीवन चरित
Bioscope	चलचित्र यंत्र
Birds eyes view	विहंगम जमीनी दृश्य
Biscuit	पकाये हुए भांड
Bismuth	कॉसा
Bistre	भूरा अपारदर्शी रंग
Bi-weekly	पाक्षिक
Black	काला रंग
Black board	श्यामपट
Blackness	कालापन
Blacksmith	लोहार
Black & White	श्वेत-श्याम
Blend	मिश्रण
Block printing	ठप्पा मुद्रण
Blot drawing	धब्बा चित्रण
Blue	नीला, आसमानी
Bluish	हल्का नीला (नीलाभ)
Board	तख्ता, दफ्ती, परिषद्
Boards	पुस्तक आवरण
Body colour	अपारदर्शी रंग (गाढ़ा रंग)
Book Illumination	पुस्तक सज्जा
Book Illustration	पुस्तक चित्र
Book jacket	पुस्तक आवरण
Boss	उभार
Botch	पेवन
Box	पेटी, डिब्बा

Bond of security	चिनाई, सुरक्षा दीवार
Booklet	पुस्तिका
Book Mark	पुस्तकीय चिह्न
Bouquet	पुष्प-गुच्छ
Bracket	टेकनी, दिवालगीर
Brand	छाप
Brass	पीतल
Braze	पीतल टाँका/रंग करना
Breeze way	हवादार झरोखा
Brick	ईंट
Brilliant	चमकीला
Bristle brush	कड़े बालों की तूलिका
Brochure	छोटी पुस्तिका
Broken colours	मंजित रंग
Bronze	काँसा (धातु)
Bronze age	काँस्य युग
Bronze casting	काँस्य-ढलाई
Bronze smith	कसेरा
Brooch	जड़ाऊ पिन
Brown	बदामी, भूरा
Brush	वर्तिका, तूलिका, कूची
Brushing	तूलिका संचालन
Brush stroke	तूलिका घात
Brush work	तूलिका कार्य
Buddhism	बौद्ध धर्म
Buff	हल्का पीला रंग
Build	निर्माण
Bulbus	गुम्बदाकृति
Buon fresco	गीलीभित्ति पर चित्रण विधि
Bungalow	बँगला
Bureau	विभाग, केन्द्र, दफ्तर
Burgess	नागरिक
Burin	तक्षणी
Burnish	चमकीली सतह, चमकाना
Burnisher	प्रमार्जक, घोटनी,
Bust	स्त्री की अर्ध-प्रतिमा/छाती

C

Cabinet	पेटी, अलमारी
Cachet	विशेष चिह्न, मार्का
Cadence	लय, आलाप
Calcography	खड़िया चित्रकला
Cairn	स्तूप
Calendar	तिथि-पत्र
Calligraphy	सुलेखन कला
Camaieu	एकरंगा चित्र
Cameo	उत्कीर्ण रत्न, उभारदार नक्काशी
Camera	छविचित्र यंत्र, कैमरा
Camp	शिविर
Canopy	शामियाना, चन्दोवा
Canvas	चित्रपट, किरमिच, टाट
Canvas board	किरमिच बोर्ड
Canvas structure	चौखटा
Carbon black	काजल
Carbon paper	कार्बन-कागज
Card	आमंत्रण-पत्र
Card-board	दफ्ती
Caricature	व्यंग चित्र
Carnival	आनन्दोत्सव
Carpentry	बढ़ईगीरी
Carpet	दरी, गलीचा
Carrot	गाजरी रंग
Cartographer	मानचित्रकार
Cartoon	उपहास चित्र, मूलाकार आलेख
Cartoonist	व्यंग्य चित्रकार
Cartridge-paper	मोटा-कड़ा कागज
Carve	आकार काटना
Carver	नक्काश, मूर्तिकार
Carving	तराशना, मूर्ति उत्कीर्णन, शिला -नक्काशी
Caster	ढलाई करने वाला
Cast	ढालना
Casting	ढलाई

Catacomb	भूगर्भ कब्रिस्तान	Classicism	शास्त्रीयवाद
Catalogue	सूची-पत्र	Classified Ad	वर्गीकृत विज्ञापन
Cathedral	मुख्य गिरजाघर	Clay	मिट्टी, मृत्तिका
Cave	गुफा	Clay Enamel	मृत्तिका आकाचन
Cave painting	गुफा चित्र	Cleaner	मार्जक
Ceramic	मृत्तिका-शिल्प	Clerestory	ऊपरी मंजिल
Ceramic pot	चीनी-मिट्टी बर्तन	Clip	पकड़
Cerography	मोम चित्रण	Cloister	बिहार, मठ
Cerulean	आसमानी	Clothes line	अलगनी
Chaitya	चैत्य, बौद्ध स्थल	Clothing	परदा वस्त्र
Chalcography	ताँबा या पीतल पर -उत्कीर्णन कला	Clout	पेवन
Chalk	चोंक, खड़िया	Coat	पहनने का कोट, लेपन
Characteristic	लाक्षणिक	Coating	आवरण, परत चढ़ाना
Charcoal	काष्ठ कोयला	Coarse screen	मोटी जाली
Chartography	नक्शा बनाने की विद्या	Cobalt Blue	नील रंग
Chamber	कक्षिका	Codex	हस्तलिखित पाण्डुलिपि
Chandelier	झाड़ फानूस	Coeval	समकालीन
Chapel	पूजा गृह (गिरजाघर)	Cool Colour	शीत रंग
Checked	चारखाना	Collage	चिपकाव/चिप्पी चित्र
Chiaroscuro	छाया-प्रकाश योजना	Collection	संग्रह
Children's Art	बाल कला	Coloration	रँगई, रंगसाजी
Chime	घण्टी-नाद	Colossus/Colossusi	विशाल मूर्ति
China-ware	चीनी-मिट्टी पात्र	Color (U.S.A.) American	रंग
Chintz	छींट	Colour (British)	रंग
Chip	चिपड़ (लकड़ी की)	Colourimeter	रंग मापक
Chirography	हस्त लिपि कला	Colouring	रँगई, वर्णांकन
Chisel	रुखानी	Colourist	रंग साज
Christian Art	ईसाई कला	Colourless	रंगहीन
Chroma	चमक	Coloured gray	रंगीन धूसर
Chromatic	चमकीले रंग	Coloured bar	वर्ण भेद
Chrome	चमकीली धातु	Colour blind	वर्णान्ध
Cinema	चलचित्र	Colour contrast	विपरीत रंग
Cinematograph	चलचित्र प्रक्षेपी	Colour fast	पक्का रंग
Circle	वृत्त	Colourful	रंगीन
Circuit root	चक्करदार मार्ग	Colour glow	रंग प्रभा
Civilization	सभ्यता	Colour harmony	रंग संगति, वर्ण मैत्री
Classic	शास्त्रीय, साहित्यिक	Colour in	रँगना
Classical Art	शास्त्रीय कला	Colour lessness	रंगहीनता

Colour mood	वर्णच्छय
Colour note	रंगाभास
Colour perspective	रंग परिप्रेक्ष्य
Colour scheme	रंगयोजना, रंगविन्यास
Colour tone	रंगछटा
Colour unity	रंगमैत्री
Colour value	रंगमान
Colour wash	रंगाई
Combination	सम्मिश्रण, मेल
Comeliness	खूबसूरत
Comics	मनोरंजक चित्र पुस्तक
Comic strips	हास्य कथा चित्र
Commercial Art	व्यापारिक कला
Commercial artist	वाणिज्यिक कलाकार
Communication Art	सम्प्रेषणीय कला
Company school	कम्पनी शैली
Complementary colour	पूरक रंग
Complexion	रंगत, रंगढंग
Compere	उद्घोषक, सूत्रधार
Complicated line	जटिल रेखा
Compose	योजन करना
Composition	संयोजन, रचना
Concave	अवतल
Concept	विचार-बोध
Conceptualism	प्रत्ययवाद
Concolorous	एक वर्ण
Concrete Art	ठोस कला
Concrescence	मूर्तिकरण
Configure	समाकृति, समरूपण
Cone	शंकु
Conformable	अनुरूप
Congruity	सामंजस्य, सदृश्यता
Conservatory	कला विद्यालय
Consolation	सान्त्वना
Conte	भूरी, लाल खड़िया
Contemporary	समकालीन

Contemporary Art	समकालीन कला
Contemporary Artist	समकालीन कलाकार
Contexture	ताना-बाना
Contour	रूपरेखा (मानचित्र की)
Contrary colour	विपरीत रंग
Contrast	असमान, तीक्ष्ण भेद, विरोध
Construction	निर्माण, रचना
Constructivism	रचनावाद
Conventional Art	रूढ़िगत कला
Cool colour	शीत रंग
Copper	ताँबा
Copper smith	ठठेरा
Coptic Art	ममी-पेटी चित्र
Copy	प्रतिलिपि
Copy work	अनुकृति
Copyright	स्वत्वाधिकार
Cord	रस्सी, सुतली
Core	अंतरतम भाग
Corporation piece	निगम चित्र
Correction	संशोधन
Corrugate	लहरियादार/नालीदार आकृति
Costume	वेशभूषा, पोशाक
Cottage	कुटीर
Couillarde	मोटा रंगांकन (फ्रेंच)
Council	परिषद्
Countersign	सांकेतिक शब्द
Cover	आवरण, ढकना
Crack	दराज, दराज
Craft	शिल्पकर्म, हस्तशिल्प
Craft guild	दस्तकार संघ
Craftman	शिल्पी
Craft union	शिल्पीसंघ
Crayon	रंग वर्तिका, रंगीन खड़िया

Creation	सृजन
Creative Art	सृजनात्मक कला
Creativity	सृजनात्मकता
Creator	स्रष्टा
Crescent	अर्द्ध चन्द्राकार
Crimson	गहरा लाल रंग
Crisp	कुरकुरा, मोड़ना
Critic	समालोचक
Criss-cross line	आड़ी-तिरछी रेखा
Crochet	काँटे से बुनाई
Crock	मृण्-पात्र
Crocil pen	धातु की छोटी निब
Cross hatching	परस्पर छेदी - रेखाच्छादन
Crypt	भूमिगृह, तलघर
Crystal	स्फटिक, बिल्लौरी
Cube	घनाकार
Cubic	घनफल
Cubism	घनवाद
Cubistic painting	घनीय/त्रिआयामी चित्रण
Cultural	सांस्कृतिक
Culture	संस्कृति
Cupola	गुम्बद
Curator	संग्रहाध्यक्ष
Currier	चर्मकार
Curtain	मंच यवनिका, परदा
Custom	रीति-रिवाज, प्रथा
Curve	वक्रता
Curvegouge	वक्र रूखानी
Cylindrical	बेलनाकार
Cylix	ग्रीक कटोरा

D

Dabber	रँगने की कूँची
Dadaism	दादावाद
Dado	दीवाल के निचले हिस्से का -सजावटी किनारा
Damask	बूटेदार वस्त्र
Dapping	ठप्पाकारी
Dappled	चितकबरा, रंग-बिरंगा
Dark	गहरा, अँधेरा, काला
Dark colour	गहरा रंग
Daub	भद्दाचित्र, लिपाई, पोताई
Dead culture	लुप्त संस्कृति
Debonair	प्रसन्नचित, शोभायमान
Declamatory	व्याख्यान
Decor	सजावट, अलंकरण
Decorate	आलंकारिक, शृंगार
Decoration	सज्जा, अलंकरण
Decorative Art	सजावटी कला
Decorative style	अलंकरण शैली
Deep	गहरा
Deep etching	गहरा अम्लांकन
Deep relief	गहरा उद्भूत
Deformation	विरूपता, कुरूपता
Delicacy	कोमलता
Delecate colour	कोमल रंग
Delicate line	सुकुमार रेखा
Delight	आनन्द
Delineate	चित्रण करना
Demiurge	सृष्टिकर्ता, विश्वकर्मा
Demo	प्रदर्शन
Demonstration	प्रदर्शन, सिद्धकरना
Depict	वर्णन करना, चित्रित करना
Depth	गहराई
Descriptive art	वर्णनात्मक कला
Desert	रेगिस्तान

Design	परिकल्पना, अभिकल्पना, योजना
Designer	प्रारूपकार
Designing	अभिकल्पन
Detail	बारीकी
Die	पासा, ठप्पा
Diachromatic	द्विरंगी
Diagram	रेखाचित्र, आरेख, रेखालेख
Diaper	फूलकारी, शतरंजी, जालीदार चित्रण
Digest	सार पुस्तिका
Dilettante	ललित कला प्रेमी
Dilute	तनु
Dimension	मिति, आयाम
Dingy	धुँधला, काला, मैला
Diorama	पारदृश्य
Dipper	तैल-पात्र
Dipping	रंगलेपन
Diptych	द्विफलक
Discolour	बदरंग
Disfigure	विरूप
Display	प्रदर्शन
Display window	प्रदर्शन खिड़की
Display work	प्रदर्शित कार्य
Dissertation	लघु शोध-निबन्ध
Dissyllable	द्वि-वर्णीय
Distemper	समारंजन, सूखे पाउडर रंग
Distortion	विद्वृपीकरण
Divisionism	विभाजनवाद
Doctor	खुरचनी
Dodger	विज्ञापन परचा
Dome	गुम्बद, गुम्बज
Dominant	प्रभावशाली
Donjon	दुर्ग-अट्टालिका
Door frame	द्वार-चौखट
Dormitory	सहशयन गृह
Dotted	बिन्दुदार

Dotting	बिन्दु प्रयोग
Double Image	द्वि बिम्ब
Down stage	मंच के सामने
Drab	धूसर/हल्का बदामी रंग
Draftman	प्रारूपकार, नक्शानवीस
Dragging	शुष्क तूलिका संचालन
Drama	नाटक
Dramatist	नाटककार
Dramaturgy	नाट्यकला
Drapery border	कपड़े की सज्जा झालर
Drapes	पर्दे
Draught	नक्शा बनाना
Draw	अंकन करना
Drawing	आरेखण, रेखाचित्र
Drawing room	बैठक, स्वागत कक्ष
Drawing board	आरेख पट्ट
Drawing & painting	रेखण तथा रंजनकला
Drawing pin	आरेखन पिन
Dress	कपड़ा पहिनना
Dressing room	प्रसाधन कक्ष
Drill	बेधक
Drop arch	लटकन मेहराब/चाप
Dryer/ Drier	सोख्ता, सुखाने वाला
Dry brush	शुष्क तूलिका
Dry colour	शुष्क रंग
Drying oils	शोषक तैल
Dry point	शुष्क उत्कीर्णन
Dummy	पुतला
Dung cake	उपला, कण्डा
Dusky	मटमैला
Dust ground	चूर्णित सतह
Dwarf book	छोटी पुस्तक
Dye	रंजक
Dyed glass	रंजित काँच
Dyer	रंगरेज

E

Earth colour	भू-रंग (खनिज रंग)
Earth house	भूमिगत गृह
Earth work	मिट्टी का कार्य
Earthen	मिट्टी का बना हुआ
Earthen ware	मिट्टी के बर्तन
Easel	चित्राधार (तिपायी)
Ecclesiastical Art	चर्च कला
Edging	कोर सज्जा
Edifice	भवन, महल
Educate	शिक्षित करना
Effigy	पुतला
Effulgent	प्रकाशमान
Egyptian Art	मिस्र की कला
Elastic	लचीला, लचक
Elasticity	लचीलापन
Elegant	सुन्दर
Element	तत्व, अवयव
Elementary	मौलिक
Elements of Art	कला के मूलाधार
Eligibility	योग्यता
Ellipse	दीर्घवृत्त, अण्डाकृति
Embellishment	सजावट
Emblem	प्रतीक चिह्न
Emboss	उभरी नक्काशी
Embossing	उभरी नक्काशी, समुद्भरण
Embroidery	कढ़ाई, बेल बूटा काढ़ना
Empurpled	बैंगनी
Emulsion	पायस
Emulsion colour	पायसीकृत रंग
Enamelling	तामचीनी, मीनाकारी
Enamel Painting	तामचीनी चित्रण
Enceinte	चारदीवारी
Encaustic Painting	सिक्थवर्णक चित्र

Enchase	नक्काशी करना
Engrave	उत्कीर्ण करना, खोदना
Engraver	तक्षणकार
Engraving	उकेरन, नक्काशी
Enrobe	वस्त्र पहनना
Entertainment	मनोरंजन
Entresol	बीच का तल्ला
Entwine	गूँथना, लपेटना
Epidiascope	परिचित्रदर्शी
Epigraph	शिलालेख
Equipment	साज-सामान
Eraser	अपमार्जक, रबर
Erotic Art	कामुक/काम विषयक कला
Etching	अम्ल - उत्कीर्णन
Etching needle	अम्लांकन सुई
Even working	समपृष्ठ मुद्रण
Exaggeration	अतिरंजना
Example	उदाहरण
Excavate	उत्खनन
Exhibit	प्रदर्शन
Exhibition	नुमाइश, प्रदर्शनी
Exhibitor	प्रदर्शक
Experiment	प्रयोग करना
Experimental Art	प्रयोगवादी कला
Expert	निपुण, विशेषज्ञ
Exploration	खोज, अन्वेषण
Expo	प्रदर्शनी
Expose	अनावृत, उद्भासित
Expression अभिव्यंजना, भाव अभिव्यक्ति,	
	मुख-मुद्रा
Expressionism	अभिव्यंजनावाद
Exterior	बाहरी

F

Fabled	दन्तकथा, कल्पित
Fabric	वस्त्र, कपड़ा
Fabric Painting	वस्त्र चित्रण
Facade	गृह-मुख
Face	मुख
Facing	मुखिका, आगा
Facsimile	प्रतिरूप, अनुलिपि
Fade	मन्दन
Fairy	परी
Fairy light	धीमा/हल्का रंगीन प्रकाश
Fantastic	अनोखा
Factitious	कृत्रिम
Faculty	मन की शक्ति, संकाय
Faintish	फीके रंग का
Fair	साफ
Fame	शोहरत
Fancy	कल्पना शक्ति
Fantasy	कल्पना चित्र
Fashion	भूषाचार
Fashion design	वस्त्रविन्यास, भूषा रूपांकन
Fat oil	वसायुक्त, वानस्पतिक तैल
Fauvism	उग्रपन्थी कला
Feature	लक्षण, रूपक
Feeling	बोध, स्पर्श-ज्ञान
Fellow	संगी
Felt pen	नमदा लेखनी
Festival	त्यौहार
Festoon	तोरण, उत्सव झालर
Fetish	प्रतीक पूजा
Fibre	तन्तु, रेशा
Fiesta	त्यौहार, पर्व
Figuration	रेखाकृति, आकार
Figurative	लाक्षणिक, आलंकारिक
Figure	आकृति, चित्र
Figurative Painting	मानवाकृति मूलक कला

Figurine	लघुमूर्ति
Filing	घिसाई (रेती से)
Filigree	तारकशी, जरी का काम
Fillers	पूरक
Film	पतली पर्त, चलचित्र
Filter	छन्नी
Fine	परिष्कृत
Fine Arts	ललित कलाएँ
Finery	भव्यता, दिखावटी वेशभूषा
Finesse	कला-कौशल की सूक्ष्मता
Finger painting	अंगुलि चित्रण
Finger print	उँगली छाप
Finish	पूर्ण करना
Finishing	परिष्करण
Finishing touch	अन्तिम कार्य
Fire-brick	अग्निसह - ईंट
Fire clay	अग्निसह मृत्तिका
Fixing	स्थिरीकरण
Fixity	दृढ़ता
Fixative	स्थिरीकारक
Fixative spray	स्थिरीकारक फुहार
Flake	पपड़ी
Flat let	छोटा फ्लैट
Flat brush	चपटी तूलिका
Flat colour	सपाट रंग
Flicks	सिनेमा गृह
Floor	खण्ड, मंजिल
Floral	पुष्प-विषयक
Flow	प्रवाह
Flowery	पुष्पालंकृत
Fluent	प्रवाह युक्त
Fluid	प्रवाही
Fluorescent colours	प्रतिदीप्त रंग

Foil	चाँदी की पन्नी
Folder	तहाया, मोड़दार
Folio	पन्ना
Folk	लोक
Folk custom	लोक रीति
Folk dancer	लोक नर्तक
Folk tale	लोक कथा
Folk art	लोक कला
Folk-lore	लोक कथाएँ, लोक-परम्परा
Forceful Drawing	सशक्त रेखांकन
Fore-ground	अग्रभाग
Fore shortening	दूरीगत लघुता
Foreword	प्रस्तावना
Forge	लोहार भट्टी, तपाना
Form	संरचना, रूप, आकृति, स्वरूप
Formation	बनावट
Formulate	व्यवस्थित ढंग
Foundation	स्थापना, आधार
Founder	संस्थापक
Foundry	ढलाई खाना
Frame	चौखट्टा, मढ़ना
Frame work	ढाँचा
Frontis piece	मुखचित्र
Free expression	स्वच्छन्द चित्रण
Free hand drawing	मुक्तहस्त रेखांकन
Fresco	भित्ति चित्रण विधि
Fresco secco	सूखी भित्ति चित्रण
Fret work	जाली का कार्य, काष्ठ नक्काशी
Friege	झालर, चित्रवल्लरी
Frill	झालर
Frontis piece	द्वार मुख, आमुख चित्र
Frottage	घर्षण चित्रण
Full face	सम्मुख आकृति (व्यक्ति चित्र)
Full length	पूर्णाकार

Full scale	विस्तृत आकार
Fumages	धुँआ चित्रण
Fundamental colour	प्राथमिक रंग
Fungus	फफूँदी
Furbish	साफ करना
Furnace	भट्टी
Furnish	सजाना
Fuzzy	रुआँदार
Fylfot	स्वस्तिक

G

Gable roof	तिकोनी छत
Gaiety	जलसा
Gallery	दीर्घा, वीथी
Gallery copy	संग्रहालयी प्रति
Galvanise	यशद (जस्ता) लेप चढ़ाना
Gamboge	रोगन, गोंद, रंजन
Garden	बगीचा
Garment	परिधान
Garnish	सजाना, सजावट
Gate	द्वार
Gateway	मुख्यद्वार
Gay	चमकीला रंग
Gel	शिलषि
Gelatine	सरेस
Gem	रत्न
Generic	जातीय
Genre Art	दैनिक जीवन चित्र
Geo	भू, पृथ्वी
Geometric Art	ज्यामितीय कला
Geometry form	ज्यामितीय रूप
Gesso	शोषक घरातल
Gesture	भाव भंगिमा
Gewgaw	भड़कदार/लोक खिलौना

Gild	सोना चढ़ाना, चमकीला बनाना
Girder	धरन
Glail	चमड़े पर सोने का कार्य
Glair	अण्डे की सफेदी
Glamour	लावण्य
Glamorize	वास्तविकता से परे लावण्य
Glass Painting	काँच चित्रण
Glassy	काँच के सदृश
Glaze	चमक, रोगन
Glazed paper	चमकीला कागज
Glazing	रोगन करना, चमकाना
Glitter	चमकी, प्रकाश-छटा
Glory	सुन्दर
Glossy	चमकीला
Glow	चमकना
Glue	चिपचिपा पदार्थ
Glyptic Art	उत्कीर्णन कला
Glyptography	रत्नों पर नक्काशी की कला
Gods	कुलदेवता
Gold leaf	स्वर्ण पत्तर
Goldsmith	सुनार
Golden jubilee	स्वर्ण जयन्ती
Gore	त्रिकोणीय भूमि खण्ड
Gothic	जर्मनी वास्तुकला का ढंग
Gouge	गोल रूखानी
Gouache	अपारदर्शी चित्रण
Gradation	क्रमबद्धता
Graffiti	भित्ति चित्रण (सन्देश देने वाला)
Grain	दानेदार धरातल, कण
Grand	भव्य
Granite	रंगीन कड़ा पत्थर, स्फटिक पत्थर
Grant	अनुदान
Granule	रवा, कण
Graph	रेखा-चित्र
Graph paper	ग्राफ कागज
	(सूक्ष्म चौखाने दार)

Graphic	आलेखीय, सजीव, रेखाचित्रीय
Graphic Art	चित्र मुद्रण, छापा कला
Graphy	शैली
Graver	उत्कीर्णक
Grease	चरबी
Green	हरित, हरा
Green room	सज्जा कक्ष
Grey	धूसर, भूरा
Grill	झंझरी, भूनना, सीकचा, जाली
Grisaille	धूसर चित्रण
Grizzly	भूरा
Ground	आधार, धरातल, निचला तल
Ground floor	निचला खण्ड
Ground plan	भू-योजना
Grouting	पतली गचकारी / पलस्तर
Guild	शिल्पी संघ
Guillotine	कर्तन-यन्त्र
Guisse	वेशभूषा शैली, बाध्याकृति
Guitar	सितार
Gum	चिपकने वाला पदार्थ, गोंद
Gunny	टाट, बोरा
Gwa	चित्र (जापानी)
Gypsum	खड़िया मिट्टी

H

Half length	आधा
Half-relief	अर्ध उद्भूत
Half size	अर्धाकार
Halftone	अर्ध प्रकाश बिन्दु-चित्र, प्रतिच्छाया बिन्दु चित्रण
Hall	प्रधान कमरा
Hallmark	प्रमाणिकता चिह्न (सोने की शुद्धता)

Halo	प्रभा मण्डल
Hand bill	इश्तहार
Handbook	पुस्तिका
Handmade	हाथ का बना
Handicraft	हस्तशिल्प, दस्तकारी
Handiwork	हस्तकार्य, कारीगरी
Handling	ठीक प्रकार से निर्वाहन
Handloom	हथकरघा
Hard back	कड़े आवरण वाली पुस्तक
Hard board	सख्त तख्ता
Hard drawing	कठोर रेखांकन
Hard paper	कड़ा-मोटा कागज
Hangings	परदा, अलंकृत लटकन
Hanging scroll	लटकन चित्र
Hardener	दृढ़ीकारक
Harmony	संगति, समन्वय
Hatching	रेखाच्छादन
Hazy	धुँधला, अस्पष्ट
Helm-roof	चौमुखी छत
Head-dress	मुरेठा
Head size	शीर्षाकार
Hem	गोट, उठा किनारा
Hemming	तुरपन
Hemstitch	मगजी
Heritage	विरासत
Hexagon	षडभुजी
Hieroglyph	चित्रलिपि, चित्रलेख
High key	उच्च छटा प्रभाव
Highlands	पर्वतीय भूमि
High light	प्रकाशित भाग
High relief	उच्च उद्भूत
Hill billy	पहाड़ी ग्रामीण
History	इतिहास
Historian	इतिहासकार
Historical Painting	ऐतिहासिक चित्र
Hoarding	विज्ञापन तख्ता
Hobby	रुचि कार्य, शौक

Hog hair brush	कड़े बालों की तूलिका
Hole	छेद
Holograph	स्वलेख
Home	गृह स्थान, घर
Home Industry	गृह उद्योग
Honour	सम्मान
Horizontal	क्षैतिज
Hot colour	ऊष्ण रंग
House-hold brush	घरेलू ब्रश
Houri	परी जैसी स्त्री
Hovel	झोपड़ी, छोटा घर
Hue	वर्ण, छटा, रंगत

I

Icon / Ikon	प्रतिमा, मूर्ति
Iconography	प्रतिमा विज्ञान
Idea	प्रत्यय, विचार
Idealism	आदर्शवाद
Ideism	कल्पनावेद (फ्रेंच)
Identification	पहचान
Igloo	बर्फ का गृह (ऐस्किमो)
Illumination of manuscripts	पाण्डुलिपि सज्जा
Illusion Art	भ्रामक कला
Illustrate	उदाहरण चित्र
Illustrated	सचित्र
Illustrator	चित्रकार
Illustration	दृष्टान्त चित्र
Image	बिम्ब, प्रतिमा, धारणा, कल्पना
Imagery	रूप अवधारणा, कल्पना-सृष्टि
Imagination	कल्पना
Imagism	बिम्बवाद
Imbrue	नम करना
Imbue	रँगना
Imperceptible	अप्रत्यक्ष, अदृश्य
Imitation	अनुकरण
Imitative Art	अनुकरणीय कला
Impasto	सान्द्रवर्ण, मोटा रंगाकन

Impression	निशान, प्रभाव, अंकन
Impressionism	प्रभाववाद
Impressionist	आभासवादी
Imprimatura	छपाईनामा, रंगीन धरातल
Impulse	प्रवृत्ति
Impure	अशुद्ध
Inauguration	शुभारम्भ
Incandescence	उद्दीप्त होना
Inch 1 फुट का 12वें हिस्सा, अल्पपरिमाण	
Incuse	ठप्पा, मुद्रित सिक्का
Indian Ink	काली स्याही
Indication	संकेत
Indifferent	उदासीन
Indigo	नील, नीला
Indissoluble	अघुलनशील
Industrial Art	औद्योगिक कला
Industrial designer	औद्योगिक कलाकार
Informatory Art	सूचनाप्रद कला
Ingot	सोने/चाँदी का सिल्ली
Initiation	दीक्षा संस्कार
Ink	रोशनाई, वर्णिका, स्याही, मसि
Ink drawing	स्याही चित्रण
Inlaid	जड़ाऊ
Inlay	जड़ाऊ कार्य
Installation	अधिष्ठापन
Institution	संस्था
Instrumental	वाद्य
Intaglio	उत्कीर्ण चित्रण
Intellectual Art	बौद्धिक कला
Interior decoration	आन्तरिक सज्जा
Interpreter	दुभाषिया
Intensity	वर्णतीव्रता
Interior decoration	अन्तः सज्जा
Intonaco	चूने की पृष्ठभूमि
Investigator	खोजकर्ता, अन्वेषक
Inwrought	बेलबूटे से सज्जित, चित्रांकित
Iridescence	बहुवर्णी, सप्तरंग

Ironsmith	लोहार
Island	द्वीप
Ism	वाद
Isochromatic	समवर्णी
Isomeric colour	समवर्णी रंग
Isosceles	समद्विबाहु
Italics	छापे के तिरछे अक्षर
Itinerate	घुमन्तू

J

Jade	हरिताश्म रंग
Jap paper	पतला-मुलायम कागज
Jet-black	चमकीला काला रंग
Jewel	रत्न
Jeweller	जौहरी
Jewellery	जवाहराती गहने
Journal	पत्रिका, दैनिक पत्र
Journey man	दैनिक भोगी कलाकार
Jury	निर्णायक दल
Jumper	स्त्रियों की कुरती
Juno	अति सुन्दर स्त्री
Jute	जूट

K

Kalam	शैली
Kaleidoscope	बहुरूपदर्शी, रंगीन काँच से भरा नलीनुमा यंत्र
Kaolin	चीनी मिट्टी
Kerb	छोर, मार्ग के किनारे का पथर
Kerosene	मिट्टी का तेल
Key	छटा प्रभाव
Key block	मूल छापा
Key sketch	सूत्र चित्र

Kinetic Art	गतितज कला	Liberal Arts	उदारवादी कला
Knack	दक्षता	Lido	सार्वजनिक स्नानागार, तालाब
Knife work	छुरी चित्रण	Life	जीवन, सजीव
Knit	बुनना	Life drawing	प्रत्यक्ष रूपांकन/चित्रण
Kodak	छोटा कैमरा	Life member	आजीवन सदस्य
Kopple	छोटी पहाड़ी	Life painting	सादृश्य रूप चित्रण
		Life size	पूर्णाकार
		Life study	मानवाकृति अध्ययन
		Light	प्रकाश
		Light and Shade	छाया-प्रकाश
		Light conductor	तड़ित चालक
		Likeness	सादृश्यता, प्रतिचित्र
		Lime	चूना,
		Lime wash	सफेदी
		Limner	लेखक, लघु, व्यक्ति-चित्रकार
		Line	रेखा, लकीर
		Line drawing	रेखांकन
		Line engraving	रेखा उत्कीर्णन
		Line etching	रेखा निक्षारण
		Line shading	रेखिय वर्तना
		Lineament	सूरत
		Linear	रेखीय
		Linen	सन वस्त्र
		Linear perspective	रेखीय परिप्रेक्ष्य
		Linguistic	भाषा विज्ञान
		Linocut	लिनोलियम रबड़ छापाचित्र
		Linoleum	लिनोलियम फलक
		Linotype	पंक्ति मुद्रक
		Linoxyn	अलसी तेल की पपड़ी
		Linseed oil	अलसी का तेल
		Liny	रेखित
		Liquid	द्रव
		Listener	श्रोता
		Literacy	साक्षरता
		Literary Art	साहित्यिक कला

L

Label	चिप्पी-पत्र
Lace	फीता, डोरी
Lacquer	लाख कार्य, रोगन पोतना
Lacquer painting	प्रलाक्ष चित्रण
Lamination	परतबन्दी
Lampoon	व्यंग्य लेख
Lancetarch	नुकीली मेहराब
Land scape	प्राकृतिक भू-दृश्यांकन
Land scapist	प्रकृति चित्रकार
Lane	मार्ग, गली
Latex	वनस्पति दूध
Latticed screen	झरोखा
Lavender	हल्का बैंगनी रंग
Layout	पूर्व रचना रूप, खाका
Lead	सीसा (धातु)
Leadred	सिंदूर
Lead white	सफेदा (रंग द्रव्य)
Leather	चर्म
Lecture	व्याख्यान
Lecture theatre	व्याख्यान कमरा
Legend	पौराणिक कथा
Length	लम्बान
Lettering	अक्षर लेखन कला
Letter press	अक्षर-मुद्रण
Lexicon	शब्दकोश
Lexicographer	कोश रचनाकार

Litharge	सफेदा	Mahogany	लाल-भूरा रंग
Lithograph	प्रस्तर मुद्रण	Maisonette	छोटा मकान
Lithography	शिला-मुद्रण	Make	बनाना, निर्माणकला
Lithotint	अश्म मुद्रण चित्र	Make-up	रूप सज्जा
Live	जीता जागता, सजीव	Make-up man	रूप सज्जाकार
Lively	सजीव	Mallet	मुँगरी
Livid	नीलाभ, हल्का नीला	Manikin / Mannikin	पुतला, बौना
Lobby	दालान	Manner	ढंग, व्यक्तिगत शैली
Local colour	स्थानीय रंग	Manneristic Art	रीतिवादी कला
Locomotion	गति	Mansion	हवेली, महल
Lodge	डेरा, ठहरने का आवास	Manuscript	पाण्डुलिपि
Logo	शब्द चिह्न	Map	नक्शा, मानचित्र
Logogram	शब्द-चिह्न	Maqutta	लघुप्रतिरूप
Logotype	गुथे हुए शब्दाक्षर	Marble	संगमरमर
Loom	करघा	Marble - paper	अबरी कागज
Lopping	कतरन	Margin	किनारा, हाशिया
Lounge	विश्राम कक्ष	Marine Painting	समुद्री चित्रण
Lovely	आकर्षक	Marionette	कठपुतली
Low colour	मंद रंग	Mark	निशान, चिह्न
Low kew	निम्न कुंजी (रंगों के सम्बन्ध में)	Market	बाजार
Low relief	अधोदभृत	Marking Ink	पक्की/चिह्न स्याही
Lubricous	कामुक, स्निग्ध	Marl	चिकनी मिट्टी, खड़िया
Lumber Art	काठ-कबाड़ कला	Maroon	गाढ़ा भूरा-लाल (रंग)
Luminism	प्रकाशवाद	Marquee	शामियाना
Luminosity	चमकीलापन	Mascot	शुभंकर, सौभाग्यशाली
Luminous	प्रदीप्त	Mask	मुखौटा, बनावटी वेश
Luster	चमक	Mass-media	जनसंचार माध्यम
Lyrical-ballad	लोक-गीत	Master	शिक्षक, स्वामी, उस्ताद



M.A.	कला परास्नातक, स्नातकोत्तर	Master stroke	श्रेष्ठ आघात (रेखांकन),
Macerate	भिगोकर मुलायम करना	Masterly	श्रेष्ठ कौशल
Machine	यन्त्र	Masterpiece	उत्तम नमूने, श्रेष्ठ कलाकृति
Machines	विशाल चित्र	Mastic	गोंद
Madrigal	कजली, बिरहा	Mat	चटाई, छोटा गलीचा
Maesta	मेरी-शिशु ईशा चित्र	Matamorphosis	रूपान्तरण
Maestro	उस्ताद	Material	सामग्री
Magazine	पत्रिका	Materialism	भौतिकवाद
Magenta	गुलाबी-लाल/बैंगनी लाल	Materialization	मूर्तिकरण
Magnumopus	श्रेष्ठ कलाकृति	Matter Painting	पदार्थ चित्रण
		Maulstick	छड़ी (हाथ रखकर चित्रकार रेंगता है)

Mauve	चमकीला बैंगनी	Mile stone	मील का पत्थर
Mazarine	गहरा नीला रंग	Mill board	मोटी दफती
Meandering	टेढ़ा-मेढ़ा	Mime	मूक अभिनय
Measure	माप	Mimicry	अनुकरण
Mechanical Art	यांत्रिक कला	Minaret	मस्जिद की मीनार
Medal	पदक	Mineral colour	खनिज रंग
Media	जनसंचार माध्यम	Mineral painting	खनिज चित्रण
Medieval	मध्य युगीन	Miniature	लघु चित्र
Medium	माध्यम	Minor art	गौण कला
Megalography	महाविषय चित्रण	Minstrelsy	गान्धर्व कला
Megilp	वारनीश अलसी तेल मिश्रण	Mintage	ढले सिक्के
Melodrama	अतिसंवेगी/भावपूर्ण नाटक	Minutes	कार्य रूप रेखा, कार्यवृत्त
Melt	पिघलाना	Mirror painting	दर्पण चित्र
Methylated spirit	मैथिलेटिड स्प्रिट	Misprint	अशुद्ध मुद्रण
Memento	यादगार, स्मृति चिह्न	Mist	धुंधलापन
Memory Drawing	स्मृति रेखांकन	Mixed media	मिश्रित शैली
Memorial	स्मारक	Mnemonics	स्मरण शक्ति तीव्र
Mermaid	मत्स्य कन्या		-करने की कला
Merman	जलपुरुष	Mobiles Art	चलायमान कृति
Mesolithic Art	मध्यपाषाण कालीन कला	Model	आकारात्मक, नमूना
Messianic	ईसा मसीह सम्बन्धी	Modeller	मूर्तिकार, प्रतिमाकार
Messuage	निवास गृह	Modelling	प्रतिरूपण, मूर्ति गढ़ना
Metal	धातु	Modern	आधुनिक, नवीन
Metal worker	धातु कर्मी/कर्मकार	Modern Art	आधुनिक कला
Metallography	धातु रचना विज्ञान	Moist	भीगा, आर्द्र
Metamorphosis	रूपान्तरण	Mold/Mould	साँचा
Metaphysical Art	पराभौतिक कला	Molding/Moulding	गढ़नकार्य/साँचे में ढालना
Metaphysical लाक्षणिक/आध्यात्मिक चित्रण		Molten	पिघली धातु
-painting		Monarch	सम्राट, राजा
Method	पद्धति, प्रणाली	Monograph	प्रबन्ध, ग्रन्थ
Mezzotint	छटा उत्कीर्णन	Monochromatic	एकरंगी
Mica	अबरक	Monochrome	इकरंगा चित्र
Microscope	सूक्ष्मदर्शी	Monograme	गुम्फाक्षर
Middle tone	मध्य रंगत	Monotonous	एकरूपी
Mihrab	महराब	Monotype	एकमुद्र
Mild	मृदु	Montage	फोटो-संग्रथन

Monthly	मासिक पत्रिका
Monument	स्मारक
Monumental	महान कृति, स्मारकीय
Monumental sculpture	स्मारकीय मूर्ति
Morphologist	आकृति वैज्ञानिक
Mosaic	कुट्टिम, पच्चीकारी
Motel	बाह्य मार्ग में स्थित होटल
Motif	सजावट की इकाई, अनुकल्पन
Motion picture	चलचित्र
Motive	अभिप्राय
Mottle	चित्तीदार
Mould	साँचा, चिकनी मिट्टी
Mount	चौखटा (फ्रेम) करना
Mountain	पहाड़
Mounting	मढ़ाई
Musoleum	मकबरा
Movement	लय-गति
Movie	चलचित्र
Mud	गँदला, गीली मिट्टी
Multi coloured	रंग-बिरंगा
Multiform	बहुरूपता
Multistoried	बहुमंजिला इमारत
Mummery	मूक अभिनय, स्वांग प्रदर्शन
Mummy	परिरक्षित शव
Mural	भित्ति चित्रण
Museum	अजायबघर, संग्रहालय
Music	संगीत, गान विद्या
Musician	संगीतज्ञ
Myrtle	मेंहदी
Mysticism	रहस्यवाद
Myth	मिथक, पौराणिक कथा
Mythology	पौराणिक कथाएँ

N

Nacarat	चमकीला नारंगी
Nail Painting	नख-चित्रण
Naive Art	सहजकला
Naive Artist	सहज कलाकार
Naked	नग्न
Nameplate	नाम पट्ट
Narrative Art	कथानक चित्रण
National Art	राष्ट्रीय कला
Nature	प्रकृति, स्वभाव
Naturalism	सहजवाद, नैसर्गिकवाद, प्रकृतिवाद
Nature workshop	प्रकृति पूजा
Nebulous	धुँधला
Needle	सुई
Needle woman	दरजिन
Needle work	सुईकारी (कढ़ाई)
Negative	विपरीतात्मक/ प्रति अक्स चित्र ऋणात्मक छवि चित्र/प्रकाश चित्र
Neo-classical Art	नव-शास्त्रीय कला
Neo-classicism	नवशास्त्रवाद
Neo-dadaism	नवदादावाद
Neo-expressionism	नव अभिव्यंजना वाद
Neo-impressionism	नव आभासवाद
Neolithic Art	नव पाषाण कालीन कला
Neo-plasticism	नवलचीलवाद
Neo-realism	नव यथार्थवाद
Neo-romanticism	नव रूमानीवाद
Net	जाली
Netting	जाली कार्य
Neutral	तटस्थ
Nib	निब, जीभी
Nickel	गिलट
Nimbus	प्रभामंडल
Nomad	यायावर
Nominalism	नामवाद
Non figurative painting	अनाकृति चित्रण
Notice board	सूचना-पट्ट

Normals colours	सामान्य रंग
Novice	नव शिष्य, नौसिखिया
Nude painting	नग्न चित्र
Nude study	नगनाकार अध्ययन
Nylon	कृतिम मुलायम रेशा
Nymph	अप्सरा

O

Object	निरुद्धदेशीय, वस्तु
Object Painting	वस्तु चित्रण
Observer	प्रेक्षक
Observation	विचार, प्रेक्षण
Ochre	गेरुआ पीला रंग
Ochre	रामरज मिट्टी
Octagon	अष्टभुज
Oculus	वृत्ताकार झरोखा
Odeon	प्रेक्षगृह
Offcolour	अपवर्ण
Offset printing	अनुचित्रित मुद्रण
Oil cloth	मोम जामा
Oil colour	तैल रंग
Oil cup	तैल पात्र
Oil painting	तैल चित्र
Oil proof	तेल-सह कागज
Oils	तैल
Old master	पुराने प्रतिष्ठित चित्रकार
Oleo graph	तैल मुद्रित चित्र
Olive green	हल्का हरा रंग
One man show	एकल प्रदर्शनी
One storeyed	एक मंजिला
Oneness	एकता
Oniony	प्याजी रंग
Opacity	अपारदर्शिता
Opaque	अपारदर्शी
Opaque colour	अपारदर्शी रंग
Op Art	दृष्टिभ्रामक कला
Openair - painting	मुक्ताकाशी चित्रण
Optics	दृष्टि-विज्ञान

Optical Art	दृष्टि-भ्रामक कला
Optical Illusion	दृष्टि भ्रम
Optical mixture	दृष्टिजन्य मिश्रण
Orange	नारंगी रंग
Orbed	वृत्ताकार
Orbicular	गोलाकार
Orchestra	वृन्द वाद्य, वादकवृन्द
Organism	शरीर रचना
Organize/Organise	आयोजित करना
Oriental Art	पूर्वी देशों की कला
Origin	उद्गम
Original version	मौलिक चित्रण
Ornament	आभूषण, अलंकरण
Ornamental	आलंकारिक
Ornamental Art	आलंकारिक/सजावटी कला
Ornate style	अलंकृत शैली
Orphism	सुरीलवाद
Orpiment	हरताल
Outdoor	बाह्य क्षेत्र, बाहरी
Outdoor painting	बाह्य स्थान चित्रण
Outfit	साज-सामान
Outhouse	उपगृह
Outlay	खाका
Outlet	निर्गम, निकास
Out line	सीमान्त रेखांकन, बाह्य रेखा
Ouzel	कृष्णवर्णी
Oval	अण्डाकार
Overcolour	अतिरंजन
Overlapping	परस्परव्यापी
Overwork	अधिक कार्य
Oviform	अण्डाकार

P

Packaging	बन्धाई
Pad	लिखने की पट्टी
Pagan	मूर्ति पूजक, प्रकृति पूजक
Page	पृष्ठ

Page proof	पृष्ठ शोधन
Pagination	पृष्ठांकन
Pagoda	बौद्ध मंदिर
Paillasse	फूस की चटाई
Paillette	सलमा-सितारा, मीना धातु
Paint	रँगना, रंग-रोगन
Paint-brush	तूलिका
Paint-work	रँगई
Painted panel	चित्रित पट्ट
Painter	वर्णी, रंगसाज, चित्रकार
Painting	पुताई, रंगचित्र, चित्रकला, चित्रण
Painting knife	वर्ण कन्नी
Painting medium	चित्रण माध्यम
Palaeography	पुरालिपि
Palaeolith	पुरा-पाषाण उपकरण
Palaeolithic	पूर्व पाषाण कालीन कला
Palanquin	डोली, पालकी
Pale	पीलाभ, पीला
Palette	रंग मिश्रण-पट्टिका
Palette cup	तैल पात्र
Pallet	पट्टिका, फूस का गद्दा
Palette knife	रंग-पट्टिका छूरी
Pallid	अस्वस्थ, पीलापन
Palm oil	गरी का तेल
Palmette	पर्दा आवरण, पर्दा टंगना
Pamphlet	चौपन्ना, चौपतिया, छोटी पत्रिका
Panama	सीक की टोप
Panel	फलक, पट्टिका, दिलहा
Paneling	फलकबन्दी
Pantile	खपरैल
Panorama	परिदृश्य, विस्तृत दृश्य
Paper	कागज, दस्तावेज
Paper back	जिल्द चढ़ी पुस्तक
Paper bag	कागज लिफाफा
Paper board	कागज तख्ता
Paper-clip	कागज चिमटी
Paper-cutter	कागज चाकू

Paper knife	कागज काटने की छूरी
Paper-pulp	कागज की लुग्दी
Paper-weight	कागज दबाने का गुटका
Papier mache	कागज की लुग्दी, कुट्टी
Parade	जुलूस, प्रदर्शन, कवायद
Paraffin	मोमबत्ती पदार्थ
Paraffin oil	मिट्टी का तेल
Parallel	समरूप, सदृश
Parapet	मुँडेर
Parchment	चर्मपत्र
Parer	चाकू, छिलनी
Parietal Art	भित्तिक कला
Parlour	बैठकखाना/वार्ताकक्ष
Parody	व्यंग्य लेख
Participation	प्रतिभागी, भागीदार
Partition wall	विभाजित भित्ति
Paste	लेई
Paste board	दफ्ती
Pastel	रंगीन खड़िया
Pastoral	ग्रामीण सम्बन्धी
Passage	मार्ग, गलियारा
Passion	धुन
Patch	पैबन्ध, धब्बा
Patch work	थिंगली, पेवन कार्य
Pattern	अभिरचना, अभिरूप, नमूना
Pavilion	मण्डप
Peacock-blue	मोरपंखी नीला
Pearl colour	सीपिया रंग
Peasant Art	खेतिहर कला
Pedestal	पीठिका, मूर्ति आधार
Peep hole	झरोखा
Peg	कील, खूँटी
Pen	लेखनी
Penannular	वलयाकार, वृत्ताकार
Pencil	वर्तिका, पेन्सिल
Pen-ink drawing	इंक-रेखा चित्र
Penmanship	सुन्दर लिखावट की कला
Pentangular	पंचकोणीय

Penthouse	छत पर बना आवास गृह	Pistachio green	पिस्ता हरा रंग
Percept	प्रत्यक्ष वस्तु, मानसिक चित्र	Pitched roof	ढलवाँ छत
Perform	प्रदर्शन करना	Placard	बड़ा इशतहार
Performer	प्रदर्शक	Plan	योजना, उपाय रचना
Performing Arts	प्रदर्शनकारी कलाएँ, - मंचीय कला	Plan design	योजना नक्शा
Permanent colours	टिकाऊ रंग	Plaque	फलक, पटिया
Perspective	दूरदृश्य लघुता, परिप्रेक्ष्य	Plaqueette	लघुपट्टिका शिल्प
Petroglyph	पत्थर पर नक्काशी	Plaster	पलस्तर
Petrograph	शैलचित्र/लेख	Plaster-board	प्लास्टर फलक
Pewterware	काँस्य-पात्र	Plaster casting	चक्क से मूर्ति ढालना
Philosopher	तत्त्वज्ञानी	Plaster of Paris	प्लास्टर ऑफ पेरिस
Photocopier	फोटोकॉपी मशीन/छायाप्रति यन्त्र	Plastering	पलस्तर, लिपाई
Photogenic	सौन्दर्यपूर्ण रूप	Plastic	लचीला, प्लास्टिक, ढालने योग्य
Photograph	आलोक चित्र, छवि चित्र	Plastic Arts	रूपंकर कला
Photographer	छाया चित्रकार	Plasticity	लचीलापन
Photography	छाया चित्रण, छवि चित्र विज्ञान	Plating	लेपन
Photomontage	तस्वीर समुच्चित चित्र	Play house	रंग मण्डप
Photostat	छायाप्रति	Plaza	नगर चौक
Phototype	प्रकाशमुद्र	Pliers	चिमटी, पकड़
Physiognomist	आकृति विशेषज्ञ	Plinth	चौकी, बैठकी
Physiology	मानव शरीर रचना-विज्ञान	Plot	भूखण्ड, कथानक
Physique	शारीरिक गठन	Poesy	काव्य रचना, काव्य-कला
Pictograph	चित्रलेख, चित्रलिपि	Pointillism	बिन्दुवाद
Pictorial magazine	सचित्र पत्रिका	Polaroid camera	तत्काल फोटा कैमरा
Picture	चित्र, तस्वीर, चलचित्र	Polkadot	वस्त्र पर छपे बिन्दुयुक्त अभिरूप
Picture-book	सचित्र पुस्तक	Polish	परिष्कार, चमकाना
Picture-card	चित्रित पत्रक	Polychrome	बहुवर्णीय
Picture gallery	चित्रशाला, चित्र दीर्घा	Polygon	बहुभुजीय
Picturesque	नयनाभिराम, चित्रोपम	Polygram	बहुरेखीय आकृति
Pigment	वर्णक, रंग द्रव्य, रंग पदार्थ, रंजनक	Polyptych	बहुफलक
Pilaster	भित्ति अर्ध स्तम्भ	Polythene	मोमिया
Pillar/Pier	खम्भा, स्तम्भ	Pond	तालाब, पोखर
Pink	गुलाबी	Pool	जलाशय, तालाब
Pinnacle	शिखर	Pop Art	जनप्रिय/लोकप्रिय कला
Pipe-clay	खड़िया मिट्टी, सफेद चीनी मिट्टी	Popular Art	लोकप्रचलित कला
Pipkin	मिट्टी का छोटा पात्र	Porcelain	चीनी मिट्टी
		Porch	द्वार-मण्डप

Pornographer	अश्लील चित्र बनाने वाला
Portal	प्रवेश द्वार
Portfolio	पेटिका
Portrait	शबीह, रूपचित्र
Portraitist	शबीह/व्यक्तिचित्र चित्रकार
Pose	शारीरिक मुद्रा, भंगिमा
Post	खम्भा, डाक, पद
Poster	इशतहार, विज्ञापन चित्र
Poster colour	पोस्टर रंग
Posture	मुद्रा (भंगिमा), अंग-विन्यास
Post cubism	उत्तर घनवाद
Post expressionism	उत्तर अभिव्यंजनाविवाद
Post modern	उत्तर प्रभाववाद
Post impressionism	उत्तर आधुनिक कला
Pot	पात्र
Potter	कुम्भकार, कुम्हार
Potter earth	चिकनी काली मिट्टी
Pottery	मिट्टी के पात्र
Powder colour	रंग चूर्ण
Prefiguration	पूर्व कल्पना
Pre-historic Art	प्रगैतिहासिक कला
Preparation	तैयारी
Preserve	परिरक्षण
Presentation	प्रस्तुतीकरण
Press	दबाव, इस्त्री, मुद्रणालय, समाचार पत्र छापाखाना
Press communique	प्रेस विज्ञप्ति
Press conference	पत्रकार वार्ता
Press copy	मुद्रण प्रति
Press clipping	समाचार कतरन
Press release	समाचार विज्ञप्ति, प्रकाशनार्थ
Press reporter	संवाददाता, पत्रकार
Primary	प्रारम्भिक, मूलभूत
Primary colour	प्राथमिक रंग
Primer	अस्तर
Priming	प्राथमिक लेप
Primitive Art	पुरातन/आदिम कला
Principal	प्रधानाचार्य, प्राचार्य, मुख्य
Principal	मूल सिद्धान्त

Print	छाँट, छाप, निशान, मुद्र
Printing	मुद्रण, छपाई
Printing ink	छपाई स्याही
Printing press	छपाई खाना
Pristine	पूर्व, आदिकालीन
Prize	पुरस्कार
Prodigious	अद्भुत
Profile	पार्श्वचित्र
Programme	योजना, कार्यक्रम
Project	परियोजना
Promoter	प्रोत्साहक
Pronunciation	उच्चारण
Proof reader	पाठ संशोधक
Prop	रंगमंच सामग्री
Properly	उचित रीति
Property	सम्पत्ति, रंगमंच सामग्री
Proportion	अनुपात
Prospectus	विवरण पत्रिका
Protoplast	स्रष्टा, मूल तत्त्व
Protractor	ज्यामितीय यंत्र चौड़ा
Psychedelic Art	चेतना प्रसारी कला
Psychological	मनोवैज्ञानिक
Psychotic Art	मनोरोगी कला
PTO	कृपया पृष्ठ पलटिए
(Please turn over)	
Public taste	जनरुचि
Publicise	विज्ञापन करना
Publication	प्रकाशन
Publish	प्रकाशित करना
Puddle	गारा/मिट्टी बनाना, गड़ही
Pulp	लुगदी
Punnet	छोटी डलिया, टोकरी
Pupil	पुतली, शिष्य
Puppet/Poppet	कठपुतली, गुड़िया
Puppeteerकठपुतली का	खेल दिखाने वाला
Pure Colour	शुद्ध रंग
Purle	गोटे का कार्य/किनारा
Purism	विशुद्ध वाद
Purple	बैंगनी रंग
Pyramid	पिरैमिड, सूच्याकार आकृति



Quadrate	वर्गाकार
Quadrangle	चतुष्कोण, चौक
Quaint	अनूठा, विचित्र
Qualification	योग्यता
Quality	गुण
Quantity	मात्रा
Quarring	उल्लंघन
Quarterly	त्रैमासिक पत्रिका
Quarto	चार परतों में मुड़ी पुस्तक
Quartz	स्फटिक, कौंच-मणि
Quatrefoil	चौपतिया
Queer painting	अनूठा चित्रण
Quest	खोज
Queue	पंक्ति
Quick lime	अबुझा-चूना
Quickie drawing	त्वरित रेखांकन
Quill pen	पंख की कलम
Quire	24 कागज ताव, एक दस्ता

R

Raddle/Ruddle	गेरू
Radius	त्रिज्या
Rag	पुराने कपड़े का चिथड़ा
Raiment	नेपथ्य, पोशाक
Rainbow colour	इन्द्रधनुषी रंग
Rang	क्षेत्र, पंक्ति
Rapid line	वेगयुक्त रेखा
Rare pain	दुर्लभ चित्र
Rasp	रेती (उपकरण)
Ratio	अनुपात
Raw material	कच्चा माल
Rayon	कृत्रिम रेशा
Raze	मिटाना
Realism	यथार्थवाद
Readable	पढ़ने योग्य
Reader	पाठकगण
Realistic	यथार्थ
Ream	बीस दस्ते कागज

Recoat	दोबार लेपन
Recollection	अनुस्मरण
Record	लिपिबद्ध
Rectangular	आयताकार
Red	अरुणाभ, सुख, लाल
Red carpet	स्वागती उत्सव
Red light	संकेत, खतरा
Red ochre	गेरू
Reddish	लालपन
Redlead	सिन्दूर
Reduced image	लघु प्रतिरूप
Reduction	छोटा करना
Reed	संरकण्डा, सेठा, नरकुल
Reference book	संदर्भ ग्रंथ
Refine	परिष्कृत करना
Reflect	प्रतिबिम्बित
Reflection	परावर्तन
Reform	सुधार करना
Reformation	सुधार
Refulgence	दीप्ति
Refuse	अस्वीकृत
Regalia	राज चिह्न
Regional	आंचलिक
Register	पंजीकृत, पंजिका
Rehearsal	पूर्वाभ्यास
Reimpression	पुनर्मुद्रण
Relay	प्रसारण
Relic carving	उद्भूत नक्काशी
Relief	उभारयुक्त नक्काशी
Relief carving	उभरी नक्काशी
Relief print	उभार छापा
Relief sculpture	उभार मूर्ति
Religious	धार्मिक
Remoulding	पुनर्ढलाई
Remover	मिटाने वाला
Renaissance Art	नवीनीकरण
Rendering	अनुवाद, प्रतिरूपण
Renewal	पुनर्जागरणकालीन कला, पुनरुद्धार
Renowned	प्रख्यात
Repainting	पुनर्रंगांकन

Repeat	दोहराना, पुनरावृत्ति	Rookery	गन्दी बस्ती, छोटा गाँव
Repertory	नाट्य कम्पनी, कोष	Rope	रस्सी
Repetition	पुनरावृत्ति	Rosace	चक्राकार खिड़की
Replica	अनुकृति, प्रतिकृति	Roseate	गुलाबी
Repousse	उभारदार	Rose colour	गुलाबी रंग
Representational Art	प्रतिनिधि कला	Rosin	राल, गन्धराल
Reproduction	पुनर्रचना, प्रतिकृति निरूपण	Rosy	गुलाबी
Reputed	विख्यात, प्रसिद्ध	Rotunda	गोल भवन/घर
Research	अनुसंधान, खोज, शोध	Roulette	छेदक चक्र
Researcher	खोजकर्ता, शोधकर्ता, अन्वेषक	Round Brush	गोल तूलिका
Research article	शोध लेख	Rover	भ्रमणशील
Research thesis	शोध प्रबन्ध	Royal	राजसी
Resemblance Art	सादृश्य मूलक कला	Rub	रगड़ना
Residence	निवास गृह	Rubber	अपमार्जक, मिटाने वाली रबड़
Resin	राल	Rubbing	घिसाई
Resort	सैरगाह	Ruby colour	गहरा लाल रंग
Rest house	विश्राम-गृह	Ruddy	रक्ताभ, लाल
Restaurant	आहार गृह, भोजनालय	Rule	पटरी, फुटा, नियम, शासन
Restoration	जीर्णोद्धार	Rural	देहात, ग्रामीण
Retrospection	सिंहावलोकन	Russet	गेरुआ
Retouching	अनुशोधन		
Reviewer	समीक्षक	S	
Revoluta	मुड़ा किनारा, कोर	Sable	नेवले के आकार का पशु
Rhapography	आडम्बरपूर्ण चित्रण	Saffron	केसरिया
Rhinestone	बिल्लौरी पत्थर	Sale-price	विक्रय मूल्य
Rhythmic	लयत्मक, लयबद्ध	Salon	वार्षिक प्रदर्शनी (फ्रांस)
Ribbon	फीता	Saloon	शानदार कक्ष/दुकान
Rick	पयाल (सूखी धान की घास)	Salver	सजावटी तश्तरी, धाली
Rind	ऊपरी आवरण, छाल, छिलका	Sanctuary	गर्भ-गृह, पवित्र स्थान
Rinzaftato	प्रारम्भिक पलस्तर (इटा.)	Sand paper	रेगमाल
Ritual	संस्कार, अनुष्ठान, धार्मिक	Sand-stone	बलुआ-पत्थर
Rocaille	पत्थर, सीप (फ्रेंच)	Sanguine	लाल खड़िया
Rock	शैल	Sapphire	नीलम
Rock Painting	शिला चित्र	Sapphirine	नीला
Rococo	अलंकृत शैली	Sarcophagus	मकबरा (पत्थर का)
Roller	बेलन	Sateen	चिकना वस्त्र
Romanesque	रोमन शैली	Satire	व्यंग्य-लेख
Romanticism	स्वच्छन्दतावाद	Satsuma	जपानी मिट्टी के पात्र
Rondo	गोलाकार कृति	Saturate	तर-बतर, सन्तुप्त होना
Roof	छत, छप्पर	Saturated colours	विशुद्ध रंग

Saturation	सन्तृप्ति	Secondary Colour	द्वितीय श्रेणी रंग
Saying	कहावत	Section	खण्ड, भाग, परिच्छेद
Scale	मापनी, पैमाना	Section D'ore	स्वर्णम अनुपात (फ्रेंच)
Scale of life	व्यक्ति चित्र	Sedan	डोली, पालकी
Scape	परिदृश्य	Selection	चयन
Scarlet	चमकीला लाल रंग	Self portrait	आत्मचित्र
Scene	दृश्य	Sello tape	चिपकने वाला फीता
Scenography	दृश्य चित्रण	Semi abstract	अर्ध अमूर्त
Schema	चित्रयोजना, रूप-रेखा	Semi-circular	अर्ध वृत्ताकार
Scheme	योजना	Sense	बोध
Scholar	वृत्ति छात्र, विद्वान	Sepia	बदामी रंग
Scholastic	विद्वत्तापूर्ण	Septangular	सप्तकोणीय
School	विद्यालय, शैली, कलम	Serial	शृंखला
Sciagraphy	एक्स-रे चित्रण, सछाया परिप्रेक्ष्य	Serigraphy	स्क्रीन प्रिण्टिंग, छन्नी मुद्रण विधि
Scrap	कतरन, रद्दी	Serpenti form	सर्पाकार
Scrape	खुरचकर	Serpenti line	सर्पिल रेखा
Scraper	क्षुरक, खुरचनी	Set	जमना, बैठाना
Scraper Painting	खुरच चित्रण	Setting	जड़ाई
Scratch	खुरचना	Severy	भीतरी मेहराब
Screen	पर्दा, छन्नी	Sew	सिलना, सिलाई
Screen play	पटकथा	Sexto	छः परत मोड़ की पुस्तक/कागज
Screen printing	छन्नी मुद्रण	Sfregazzi	अंगुली अंकन (इटाली)
Screening	छँटाई	Sfumatezza	कोमल सीमांकन (इटाली)
Screw	पेंच	Shade	छाया, रंगों का उतार-चढ़ाव
Scriber	धातु लेखनी	Shade of colour	रंगत
Scrim	अस्तर का कपड़ा/जिल्दसाजी का कपड़ा	Shading	छायाकरण
Script	पाण्डुलिपि, लिपि	Shadow	छाया, परछाई
Scriptwriter	आलेखक	Shale	परतदार पत्थर
Scroll	खर्रा, कुण्डली चित्र	Shanty	कुटिया, झोपड़ी
Scrub	माँजना	Shapable	ढालने योग्य
Sculptor	शिल्पकार, मूर्तिकार	Shape	आकार, रूपदेना, गढ़ना
Sculpture	मूर्तिकला	Shapeless	निराकृति
Scumble	पुचारा	Sharpener	छीलने वाला, तेज करने वाला
Scumbling	पुचारा पद्धति	Sheeny	चमकदार
Seal	मोहर, मुद्रा, मुहर	Sheet	कागज फलक, चादर
Sealing wax	मुहर की लाह/लाख	Shellac	लाक्षा, चपड़ा, लाख
Search	खोजना	Shell work	सीप-शंख कार्य/शिल्प
Season	मौसम, ऋतु	Shine	प्रकाशमान, चमकना, चमक
Secco fresco	सूखी भित्ति	Shoddy	रद्दी
	पर चित्रण विधि	Shoot	छायाचित्र उतारना, गोली चलाना

Shot	फोटो खीचना, निशाने बाजी
Shutter	किवाड़, कपाट
Siccative	शुष्कता प्रेरक, आर्द्रता शोषक
Sienna	बदामी मिट्टी
Sight	दृष्टि, दृश्य
Sign	हस्ताक्षर, संकेत, विशिष्टता, राशि
Signal	संकेतक
Signature	दस्ताखत, हस्ताक्षर
Silhouette	छायाचित्र, रूपरेखा बनाना (फ्रेंच)
Silk	रेशम
Silken	रेशमी
Silk-screen printing	रजतपट मुद्रण
Silver colour	रुपहला, चमकीला रंग
Silver jubilee	रजत-जयन्ती
Silver paper/foil	रजत पत्र
Silver screen	रजतपट
Silvery	रुपहला
Simple	सहज, सरल
Simplification	सरलीकरण
Simplify	सरलीकरण
Sinusosity line	सर्पिल रेखा, घुमावदार रेखा
Size	परिमाण, आकार, गोंद, वार्निश
Sizing	मापन, सुताई, सरेस लगाना
Sketch	खाका, रूपरेखा
Sketching	अल्परेखा चित्र, त्वरत रेखांकन
Sketch- book	रेखा चित्री, अभ्यास पुस्तिका
Skiagraphos	छायांकनकार (ग्रीक)
Skill	दक्षता, हस्त कौशल, निपुणता
Skin	छिलका, झिल्ली, खाल
Skyblue	आसमानी
Skylight	रोशनदान
Skyscraper	गगनचुम्बी इमारत
Slat	लकड़ी की पाटी/पट्टी
Slate	स्लेट (पत्थर), पट्टी
Slaty	स्लेटी रंग
Sleek/Slick	चिकना करना
Sleeper	शयनयान
Slogan	नारा
Smoothen	चिकना करना
Smooth	चिकना

Snack bar	अल्पाहार गृह
Snap	फोटो खींचना, प्रकाश-चित्र
Snip	कतरना
Soft colour	हल्का रंग
Soft furnishing	पर्दे, कालीन
Soft ground etching	मृदु अम्ल लेखन
Soft style	मृदु शैली
Soft wood	मुलायम लकड़ी
Soften	मृदु करना
Soft toning	कोमल रंगत
Solid	ठोस, घनीकृत
Soluble	घुलनशील
Soot	काजल
Souvenir	स्मारिका
Space	स्थान, अन्तराल
Span roof	त्रिकोणीय छत
Spangle	चमकी, सलमा सितारा
Spatter	छिड़काव
Specialize	विशेषज्ञ
Spectator	दर्शक, प्रेक्षक
Spectrum	वर्णक्रम
Spectrum colour	इंद्र धनुषी रंग
Sphere	गोल
Spheroid	गोलाकार
Spiral binding	सर्पिल जिल्दबन्दी
Spire	मीनार
Spirit	उत्साह
Spiritualist Art	अध्यात्मवादी कला
Splint	खपच्ची, चिप्पड़
Spode	मिट्टी के पात्र
Sponge	गद्देदार मुलायम, जल सोख
Spontaneous	स्वतः/सहजोत्पन्न चित्रण
Spot painting	तत्काल/स्थलीय चित्रण
Spray	फुहारना
Spray gun	फुहार यन्त्र, पिचकारी
Spread	फैलाना
Sprezzatura	उन्मुक्त तूलिका कार्य (इटली)
Square	चौकोर भवन समूह, वर्गाकार
Squeegee	रबड़ बेलन
Squinch	बगली डाट

Stables	अचल शिल्प	Straight	सीधी, सरल
Stain	रँगना	Straight line	सीधी रेखा
Stain Glass	रंगीन काँच	Strap	फीता, पट्टी
Stained Glass	रंगीन काँच चित्र	Strap work	पट्टियों से सजावट
Stage	रंगमंच, मंच	Straw - board	गत्ता, दफ्ती
Stage craft	नाट्यकला	Stream	प्रवाह
Stand	खड़ा होना, आधार चौकी, चबूतरा	Stretcher	चौखटा, ढाँचा
Staple	पिन बन्धन, सीवन	Strip cartoon	व्यंग्यचित्र पट्टी
Stapler	पिन बन्धन यंत्र	Stripe	धारी, फीती
Starch	कलफ, मॉड़ी	Stroke	आघात
State room	निजी कक्ष	Structure	ढाँचा, बनावट
Stationery	लेखन/कार्यालय/दस्तावेज़ सामग्री	Stucco	गचकारी, महीन पलस्तर
Statuary	मूर्तिकला	Studio	फोटो निर्माण कक्ष, कला कक्ष
Statue	बुत, प्रतिमा	Study	प्रारम्भिक अभ्यास, अध्ययन
Statulette	लघु प्रतिमा	Stump	नोकदार कागज
Steel	पक्का इस्पात	Stupa	स्तूप
Stencil	क्षेपांकन	Style	तरीका, शैली, रीति
Stencil brush	क्षेपांकन तूलिका	Stylish	फैशन करने वाली,
Stenographer	आशुलिपिक		बना-ठना, सजीला
Stereochromy	खनिज चित्रण	Stylized	शैलीगत
Stereotype	मुद्रण फलक, ब्लाक कृत पट्ट	Sub colour	उपवर्ण
Stick	चिपकना, छड़ी	Sub way	सुरंग पथ
Sticky	चिपकने वाला	Subject	विषय
Stijl-de	नव लचीलवाद (हालैण्ड)	Subjective Art	विषयगत कला
Stile	सीढ़ी, खड़ी पट्टी	Sublime	उत्कृष्ट शैली
Still-life Painting	अचल चित्र, वस्तु चित्रण	Subtone	उपरंगत
Still lives	स्थिर वस्तु चित्रण	Subsidy	अनुदान
Stipple	बिन्दु चित्रण	Successful artist	सफल कलाकार
Stitch	सिलाई, टाँका	Sugar aquatint	एक्वाटिन्ट विधि
Stone	रत्न, प्रस्तर, शिला	Suite	वाद्य-संगीत रचना, चित्र शृंखला (फ्रेंच)
Stone age	प्रस्तर युग	Sun-shade	छाया झाँप, छाया आवरण
Stone ware	प्रस्तर पात्र	Sunday painter	शौकिया चित्रकार
Stone work	प्रस्तर शिल्प	Superfine	अतिसूक्ष्म, महीन वस्त्र
Stonecutter	पत्थर तराश, संगतराश	Super	उत्कृष्ट, उत्तम, उच्च, अति, सर्वोत्तम
Storax	गोंद	Super graphic	बाह्य लेखा चित्र
Store house	माल गोदाम	Super market	उत्कृष्ट बाजार
Storey	मंजिल	Super structure	भवन की अधिरचना
Storied/storeyed	मंजिला	Superior	उत्तम, उत्कृष्ट
Story	किस्सा, कहानी	Supper natural	अलौकिक
Story illustration	कहानी चित्र	Supports	सहायता, आधार, धरातल

Surface	तल, फलक, सतह
Surface printing	फलक मुद्रण
Surrealism	अति यथार्थवाद
Sweetie	सुन्दर स्त्री
Sweetner	मृदु तूलिका
Symbol	संकेताक्षर, संकेत चिह्न, प्रतीक
Symbolism	प्रतीकवाद
Symmetry/Symmetric	सममिति
Symptomatic	लाक्षणिक
Synthetic colour	संश्लेषित रंग
Syringe	पिचकारी, सुई
Syringe painting	पिचकारी चित्रण

T

Table	मेज
Tablet	फलक
Tabouret	तिपाई, पीढ़ा, चौकी
Tachisme	धब्बावाद (फ्रेंच)
Tachygraphy	आशुलिपि
Tacky	विपचिपा
Tag	नथी करना
Tailor	दरजी
Tailoress	दरज़िन
Talc	सेलखड़ी
Talkies	सिनेमा
Tambour	काढ़ने का ढाचा
Tangent	स्पर्श रेखा
Tannery	चर्म शिल्पशाला
Tantra Art	तंत्र कला
Tap room	मदिरालय
Tape	मापन, फीता, पट्टी
Tapering	शुण्डाकार
Tapestry	अलंकृत पर्दा
Tar	तारकोल
Tarnish	धुँधला करना
Tatting	झालर
Tattoo	गोदना
Tattooist	गोदने वाला
Tawny	पीला बदामी

Taxidermy	चर्म कला
Team	टोली, दल, मण्डली
Technical	प्राविधिक, यांत्रिक
Technique	तकनीक, प्रविधि
Technology	शिल्प विज्ञान
Tectonic	वास्तु शिल्पीय
Tempera	दृढ़ीभूत चित्रण
Tenement	कोठरी
Tension	खिंचाव
Tent	तम्बू, शिविर
Tepee	शंकु रूप का तम्बू
Tercet	त्रिक, तीन का समूह
Terminology	पारिभाषिक शब्दावली
Terra	धरती, पृथ्वी
Terrace	छत का खुला स्थान
Terracotta	मृण्मूर्ति
Terrible	भयानक
Tertiary colour	तृतीयक रंग
Tessellated	चारखाने से चित्रित फर्श
Testimonial	प्रमाण पत्र, प्रशंसा पत्र
Text	मूल पाठ
Textile	वस्त्र, बुना हुआ
Textile design	वस्त्रकला
Textile industry	वस्त्रोद्योग
Textural	संरचनात्मक
Texture	गठन, बिनावट, बनावट, बुनावट
Theater	नाट्य कला
Theme painting	विषयगत चित्र
Theodolite	भूमिमापन का यंत्र
Theory	सिद्धान्त
Thesis	शोध-प्रबन्ध
Thick colour	गाढ़े रंग
Thin	महीन, बारीक, पतला
Thin colour	पतला रंग
Thinner	विरलक
Thing	वस्तु, पदार्थ
Third dimension	तृतीय आयाम
Thought	सोच, विचार
Three-dimensional	त्रिआयामी, त्रिविम
Through way	चौड़ा रास्ता

Thunka painting	बौद्ध धार्मिक चित्रण	Tracery	पत्थर की नक्काशी
Tie	बान्धनी	Track	रास्ता
Tie and dye	बान्धनी, गाँठना	Tradition	परम्परा
Tie beam	धरन	Traditional Art .	पारम्परिक कला
Tile	खपड़ैल, खपड़ा, चौका	Transcript	प्रतिलिपि
Timbre	लय, स्वर	Transfer अनुमुद्रण, प्रतिचित्रण, स्थानान्तरण	
Tin	रंगा (धातु)	Transformation	रूपान्तरण
Tin smith	कलईगर	Translate	अनुवाद
Tinge	हल्का रंग	Transparency	पारदर्शी चित्र
Tinker	ठठेरा	Travel	यात्रा, सफर
Tinsel	पन्नी, गोटा	Traveller	पर्यटक
Tint	हल्की छटा/रंगत	Travesty	उपहासयुक्त अनुकृति
Tiring - room	साज गृह	Treatment of colour	रंग निर्वाह
Tissue	तन्तु	Trellis	जाली
Tissue paper	अर्ध पारदर्शी, पतला कागज	Triangle	त्रिकोण
Toilet	प्रसाधन गृह	Tribal	जनजातीय
Tomb painting	मकबरा चित्र	Tribes man	आदिवासी
Tombstone	समाधि शिला-लेख	Triennial exhibition	त्रैवार्षिक प्रदर्शनी
Tonality	रंग संगति, रंग सामंजस्य	Tricolour	तिरंगा
Tondo	गोल चित्र (इटाली)	Trigon	त्रिकोण
Tone	उपवर्ण, तान, वर्णच्छटा, स्वर, सुर,	Trihedron	त्रिफलक
Tone down	गहरा रंग करना	Trilinear	त्रिरेखिक
Toning	रंग मिलाना	Trimonthly	त्रैमासिक
Tool	उपकरण	Trinity	त्रिमूर्ति
Topic	विषय	Tripod	तिपाई
Topography	स्थानाकृति	Triptych	त्रिपट
Totem	जनजाति चिह्न	Trophy	विजय चिह्न
Tour	पर्यटन	Troop	टोली, मण्डली, दल
Tourist	पर्यटक	Troupe	मण्डली
Tower	मीनार	True copy	पक्की नकल
Tower victory	कीर्ति स्तम्भ	Tumulus	समाधि स्थल, स्तूप
Town	नगर, कस्बा, शहर	Tump	स्तूप, छोटी पहाड़ी
Towncrier	ढिंढोरची	Tunnel	सुरंगीय रास्ता
Town planner	प्रबन्धक, नगर योजना बाज़ू	Turpentine oil	तारपीन का तेल
Toy	खिलौना	Turquoise	हरित नील-मणि
Toy shop	खिलौने की दुकान	Twine	डोरा, सुतली
Tracing	खाका उतारना, अनुरेखण	Two-dimensional	द्वि-आयामी, द्विविम
Tracing paper	पारदर्शक कागज	Type	किस्म, टंकण, मुद्राक्षर
Tracer	अनुचित्रक	Type piece	विशेष नमूना कृति
		Type writer	टंकण यंत्र

Typography
Tyrian purple

मुद्रण कला
गहरा बैंगनी

U

Ultra-marine
Umber
Under coat
Under painting
Under tone
UNESCO

लाजवर्द, नीला
गेरू
अस्तर
अधः चित्रण
धीमा स्वर, हल्का रंग
संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक,

वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संघ

Uniformity
Union
Unique
Unity
Universe
University
Unripe
Up stairs
Urban
Urceolate
Useful Art
Utensil

समानता
संघ
अद्वितीय
एकता
विश्व, ब्रह्माण्ड
विश्वविद्यालय
कच्चा
ऊपरी खण्ड
नगरीय, शहरी
कुम्भाकार
उपयोगी कला
उपकरण, गृहस्थी के बरतन

V

Vagrant
Validity
Vallation
Valley
Vallum
Value
Valuable
Valvular
Vandal
Vanishing point
Vaporous
Variation
Varicoloured
Variegate
Varnish
Vault

धुमन्तू
प्रमाणिकता
परकोटा
घाटी
चहारदीवारी, परकोटा
छटा, मान, गुण
बहुमूल्य
कपाट
कला विध्वंसक
लोप बिन्दु
वाष्पीकृत
रूपान्तर
विविध रंग
चितकबरा, रंग-बिरंगा
रोगन, वार्निश
तहखाना, मेहराबी छत

Vaulted
Vegetable drying oils
Vellum
Velocity
Velvet / Velour
Ventil
Verdure/ Verdant
Vermillion
Vernacular
Versicoloured
Version
Vertical line
Vessel
View finder
Vignette
Villa
Village
Violet
Virtu
Virtuosity
Virtuoso
Visage
Visible
Vision
Visitors book
Visitor's gallery
Visual Arts
Visualiser/ Visualize
Vocabulary
Vogue
Volume
Vorticism

मेहराबदार
वानस्पतिक तैल
चर्म पत्र
वेग गति
मखमल
परदा, कपाट
हरापन
सिन्दूरी लाल
देशी बोली
रंग-बिरंगा
संस्करण
ऊर्ध्वाधर रेखा
पात्र, बरतन
दृश्यदर्शी
गुलकारी, बेलबूटे
देहाती आवास
ग्राम, गाँव
बैंगनी रंग
कलाकृतियाँ
प्रवीणता, कौशल, कला-प्रेम
कला मर्मज्ञ, कला विशेषज्ञ
चेहरा, मुख
दृष्टिगोचर
अवलोकन, दृष्टि
आगन्तुक पंजिका
दर्शक/आगन्तुक दीर्घा
दृश्य कलाएँ
प्रारूप द्रष्टा
शब्द ज्ञान, शब्द कोश
फैशन
परिमाण, पुस्तक खण्ड, आयतन
भँवरवाद

W

Waist
Wall
Wall enclosure
Wall paper
Wall painting
Wallet
Wanderer

कमर
भित्ति, दीवार
चारदीवारी
सजावटी भित्ति कागज
भित्ति-चित्र
बटुआ
भ्रमणशील, घुमक्कड़

Wandering artist	घुमन्तू कलाकार
Wandering exhibition	घुमन्तू प्रदर्शनी
Ware	मृण्पात्र
Warm colour	उष्ण रंग
Wash	प्रक्षालन, धोना, पतला लेप, रंग परत
Wash basin	धोवन कुण्ड
Wash painting	धौति/धौवन चित्रण
Wastage	छीजन
Water colour	जल रंग
Water proof	जल सह
Water wheel	पनचक्की
Watered	लहरियादार
Waved	लहरिया
Wavy	लहरदार
Wax painting	मोम चित्र
Wax sealing	लाख, लाह
Wax works	मोम की मूर्ति/कलाकृति
Weave	बुनना
Weaver	जुलाहा, बुनकर
Weekly	सप्ताहिक पत्रिका
Welder	जड़ाईगर
Wet	नमी, गीलापन
Wheel	पहिया
White	सफेद, श्वेत
White Lead	सफेदा
White Metal	सफेद धातु, कलई से युक्त धातु
White Wash	पुताई, सफेदी करना
Whiting	खड़िया मिट्टी
Whitish	हल्का सफेद
Whorled line	चक्कर रेखा
Wicker work	खप्पची कार्य
Wind screen	हवा रोक शीशा
Window dressing	बाह्य अलंकरण
Window shade	खिड़की का ऊपरी छाया परदा
Wiper	सफाई पोंछा
Wire Art	तारकशी/तारकला
Wire netting	तार जाली

Wire sculpture	तार मूर्ति
Writing	लिखावट
Wise	दंग, विद्वान
Woad	नीला रंग बनाने का पौधा
Wonder	आश्चर्य
Wood block	काष्ठ ठप्पा
Wood carver	काष्ठाकार
Wood carving	काष्ठ तक्षण
Woodcraft	काष्ठ शिल्प
Woodcut	काष्ठ चित्र, काष्ठ कर्तन
Wood cutter	काष्ठ चित्रकार
Wood engraving	काष्ठ उत्कीर्णन
Wood work	काष्ठ शिल्प
Word picture	शब्द चित्र
Work	काम, कलाकृति
Work box	उपकरण पेटी
Workmanship	कारीगरी
Work shop	कार्य शिविर
Working drawing	कार्य का नक्शा
Worthless material	बेकार सामग्री
Wrapper	आवरण, लपेटने वाला
Wrinkle	सिलवट
Writing	लिखावट

Xx

Xanthic	हल्का पीला
Xanthous	पीलापन
Xerography	शुष्क फोटोग्राफी
Xerox	छायाप्रति यंत्र, विद्युत छाया चित्रक
Xylograph	काष्ठ चित्र
Xylography	काष्ठ उत्कीर्णन कला
Xylophone	काष्ठ वाद्य यंत्र

Yy

Yard	गज (नाप)
Yarn	धागा, सूत, तन्तु
Yearly	वार्षिकी

Yearly show	वार्षिक प्रदर्शनी
Yellow	सुनहरा, पीत, पीला
Yellow boy	सुवर्ण-मुद्रा
Yellow Journalism	सनसनीखेज पत्रकारिता
Yellowish	हल्का पीला
Yellowing	पीला पड़ना
Yolk	जरदी (अण्डे की)
Yonker	युवा पुरुष

Zz

Zigzag	टेढ़ा-मेढ़ा
Zincography	यशद मुद्रण
Zodiac	राशि-चक्र
Zonal	मण्डलीय, क्षेत्रीय, अंचलीय
Zonal exhibition	क्षेत्रीय प्रदर्शनी
Zonal centre	क्षेत्रीय केन्द्र



दृश्यकला शब्दकोश : हिन्दी - अंग्रेजी

अ

अंकन	In figures	अनुकृत	copied, imitated
अंकनी	pencil	अनुकृत पोत	copied texture
अंगुली अंकन	sfregazzi	अनुकृति	imitation, copy
अंडाकार	oval	अनुचित्रित मुद्रण	offset printing
अंतरतम	core	अनुपात	ratio, proportion
अंतराल	space	अनुभूत रेखा	felt line
अंतिम पलस्तर	intonaco	अनुमुद्रण	decalconania
अंत्येष्टि मूर्ति	funeral effigy	अनुरूप	proper, analogous
अकादमी	akademi	अनुर्जकन	rendering
अक्षर कला	lettering/calligraphy	अनुरेखन/अनुरेखण	tracing
अक्षर योजक	compositor	अनुरेखण कागज	tracing paper
अक्षिपटल	retina	अनुलेप, अनुलेपन	unguent
अग्रभाग	front part/portion	अनुलिपि	duplicate copy
अग्रभागीय	frontal view	अन्तश्छटा	undertone
अग्रभूमि	fore ground	अपमार्जक	eraser, rubber
अचेतन	unconscious	अपरिष्कृत	coarse
अतिछटा	overtone	अपारदर्शी	opaque
अतिप्रकाश	highlight	अप्रकृत	unnatural, artificial
अतियथार्थवाद	surrealism	अभिकल्प	design
अतिवाद	extremism	अभिनय कला	acting art
अतिसूक्ष्म उभार	rilievo stacciato	अभिप्राय	motif
अत्यधिक कार्य	over work	अभिरंजक	stain
अदृश्य	Invisible, unseen	अभिरचना	pattern
अदृश्यता	invisibility	अभिव्यक्ति	expression
अधिष्ठापन	installation	अभिव्यंजना	expression
अनुदान	grant	अभिव्यंजनावाद	expressionism
अनुकरण	imitation	अभ्यन्तर सज्जा	interior decoration
		अन्तरसज्जा	interior decoration

अभ्यास	Training, Practice
अभ्यास चित्र	sketch
अभ्यास पुस्तिका/पत्रिका	sketch book
अमूर्त	abstract, formless, shapeless
अम्ल	acid
अम्ल उत्कीर्णन	etching
अम्ल लेखन	aquatint /etching
अर्द्ध उभार चित्र	relief
अर्धछटा	half - tone
अर्धछटा मुद्रण	half - tone printing
अर्धपारदर्शक	translucent
अर्धपारदर्शी कागज	tissue paper
अर्ध प्रतिमा / मूर्ति	bust
अर्ध यथार्थ	semi realistic
अर्धाकार	half size
अलंकार	ornament, decoration
अलंकरण	ornamentation
अलंकार शास्त्र	rhetoric
अलंकृत	ornamented
अलसी तेल	linseed oil
अलसी तेल पपड़ी	linoxyn
अलौकिक	imaginative
अवशोषक तल	absorbent ground
अश्म उत्कीर्णन	petroglyphs
अश्ममुद्र	lithograph
अश्ममुद्र चित्र	lithotint
अश्ममुद्रण	lithography
असममिति	asymmetry
असम्मात्रा अंकन	asymmetry drawing
अस्तर	base/priming/under coat
अस्तित्व बिम्बीय कला	abstract art

आ

आकार	form, shape, size
आकारनिष्ठ कला	concrete art
आकाशीय दूरदृश्यलघुता	aerial perspective
आकृति	form, shape, size
आकृति उत्कीर्णन	carvo-rilievo, Intaglio
आकृति मूलक	figurative
आकृति विज्ञान	morphology
आघात	stroke, accent
आत्म-चित्र	self-portrait
आदर्श	ideal, model
आदर्शवाद	idealism
आर्द्र	wet
आदिम	primitive
आदिवासी	aboriginal
आधार	base, support, ground
आधार छड़ी	mahl stick
आधार रेखा	base
आधार शिला	foundation stone
आधुनिक कला	modern Art
आनन्द	delight, pleasure
आन्तरिक सज्जा	interior decoration
आभा	luster, tinge
आभा मण्डल	halo
आभास	glimpse, semblence
आयाम	dimension
आयतन	volume
आयताकार	rectangular
आरेख	drawing, diagram
आरेखण	drawing
आरेखण पट्ट	drawing board

आलंकारिक	ornamental
आलेख	plan, writing, draft
आलेखक	draftman
आलेख्य	picture, painting, written
आलेखन	design, plotting
आलेखन कला	graphic art
आलोक चित्र	photography
आवक्ष मूर्ति	bust
आवरण	cover
आवरण पृष्ठ	coverpage, book jacket
आर्वा	potter's kiln, furnace
आसरा	shelter

इ ई

इंच	inch
इंद्र धनुष	rainbow
इंद्रधनुषी रंग	rainbow palette
इंद्रियवाद	sensualism
इतिहास	history
इतिहासकार	historian
ईंट	brick

उ

उकेरना	engrave, carve
उकेरी	engraving
उच्च छटा	high key
उत्कीर्ण	engraved
उत्कीर्ण छपाई	intaglio
उत्कीर्णक	graver
उत्कीर्णन	carving/ engraving
उत्खनन	excavation
उत्तर अभिव्यंजनावाद	post expressionism
उत्तर आधुनिक कला	post modern art
उत्तर धनवाद	post cubism
उत्तर प्रभाववाद	post impressionism
उत्तराण	decollage

उदार कलाएँ	liberal arts
उदासीन रंग	indifferent colour
उपकरण	equipment, instrument
उपवर्ण	tone
उपहास चित्र	caricature
उपाधि पत्र	diploma
उपाख्यान	episode
उभार	boss /emboss
उभारदार	relief, protruding
उष्णवर्ण	hot/warm colour
उस्ताद	master, teacher

ऊ

ऊँचा उभार	high relief
ऊर्ध्व	vertical, upward
ऊर्ध्वाधर	vertical

ए

एकतल्ला	one storeyed
एकता	unity, oneness
एक चश्म	profile
एक छटा चित्र	monotone/silhouette
एक मुद्र	monotype
एक रंगा	monochrome
एकरूप	similar, uniform
एकरूपता	uniformity
एकवर्णीय	monochromatic
एकल बैठक चित्रण	allaprimé
एकल प्रदर्शनी	one-man show
एकाकी	solitary
एलबम (संग्रह पुस्तक)	album

ऐ

ऐतिहासिक	historic, historical
----------	----------------------

ओ

ओप	brightness, glazing, polish
----	-----------------------------

औ

औद्योगिक कला industrial arts

क

कंगूरा ornamental cornice, turret

कण grain, particle

कटे-फटे irregular

कढ़ाई embroidery

कथई the colour of catechu

कथा चित्र feature film

कथानात्मक चित्र Narrative painting

कलम style, school, pen, fine brush

कलमकारी engraving, painting style

कलम तराश pen knife

कला skill, art, trick, craft

कलाकार artist

कलाकौशल art and craft, artifice

कला कक्ष studio

कला तत्व Art elements

कला पारखी connoisseur

कला भवन technical school

कला बस्ती Art colony

कला वीथी Art gallery

कला संकाय faculty of arts

कलात्मक pertaining to art

कलावन्त musicians, artist

कलावती artistic, skilful, beautiful

कलावान skilful, competent

कल्पना imagination, idea

काँच अभिरचना stained glass

काँच चढ़ाना glazing

कांसा bronze

कागज paper, written document

कागज का फलक paste board

कागज तराश paper cutter

कागद paper, to borrow, to sift

काम work

काम कला erotic art

कामदानी embroidered work

कारीगर craftsman, artisan

कारीगरी workmanship

काला black, dark

काली स्याही Indian Ink

कालीन carpet

काल्पनिक imaginary, fictitious

काष्ठ wood, timber

काष्ठ उत्कीर्णन wood engraving

काष्ठ कर्तन wood cut

काष्ठ कला wood carving, wood craft

काष्ठ फलक wood panel/board

किनारा/ किनारी border, edge

किरणवाद rayonism

किरकिरी grittiness

किरमिच canvas, sacking (cloth)

किरमिच तख्ता canvas board

किरमिज kind of red colour

कील nail, peg, pin

कुंजी चित्र key sketch

कुंडलित spiral

कुण्डली चित्र scroll painting

कुंभकार potter

कुटी cottage

कुट्टी papier-mache

कुमकुम saffron

कुँची painter's brush

कृति performance

कृतिम artificial

कोठरी cabin

कोठी bungalow

कोण	corner, angle
कोमल	soft, mild, thin
कोमल रंग	tint, soft colour
कोमल रेखा	soft line
कोयला (लकड़ी का)	charcoal
कोयला (पत्थर का)	coal
कौशल	skill, craftman ship
क्रमबद्ध छटा उत्कीर्ण	mezzotint

क्ष

क्षार	salty, alkaline
क्षेत्रफल	field, area
क्षेत्रीय	zonal, regional
क्षैतिज	horizontal

ख

खपरा	earthen roofing tile
खण्डित वर्ण	broken colour
खपच्ची	splinter
खड़िया	gypsum, chalk
खड़िया पेन्सिल	crayon
खनिज रंग	earth/mineral colours
खाका	layout, sketch
खुरचनी	scraper
खुरदरा	rough
खपरैल	tilled shed
खिंचाव	tightness, tenseness
खिलौना	plaything, toys
खुरचना	scratch, erase

ग

गचकरी	stucco
गति	motion, movement
गतिज कला	kinetic art
गतिशील	dynamic

गलाना	dissolve, melt
गलैचा/गलीचा	carpet
गहना	ornament, jewellery,
गहरा रंग	shade, dark
गहराई	depth
गीला	wet, moist
गीलापन	dampness, wetness,
गुणन छायाभास	cross-hatching
गुदाना	cause to be pierced
गुम्मज	cypola
गेरुआ	red-brown
गेरू	red, ochre, ruddle
गोंद	gum
गोटा	applique, gold or silver lace
गोदना/गुदना	tattoo
गोबर	cow-dung
गोलाकार	round, spherical
गोष्ठी	seminar
ग्वाश	gouache

घ

घन	cube
घनत्व	density, solidity
घनफल	cubic of a solid volume
घनवाद	cubism
घनवादी चित्रण	cubistic painting
घर	home, house, residence
घरौंदा	toy house
घुटाई	the work for rubbing
घोल	solution

च

चका, चाक	potter's wheel
चटकीला	rich colour, shining
चपड़ा	shellac

जड़ाऊ	studded or set with jewels
जड़ाऊ कार्य	inlay, studded
जनजाति	tribe
जनजातीय	tribal
जनजाति चिह्न	totem
जरदोजी	embroidery (golden)
जरदोजी कला	filligree
जरी	gold lace, gold brocade
जलसह	waterproof
जस्ता	zink
जाल	net
जाली	grill, lattice
जिल्द	binding (book)
जिल्दसाज	bookbinder
जिल्दसाजी	book binding
जीवन चरित	biography
जीवन चरितकार	biographer
जीवन चित्रण	life painting
जीवनवृत्त, जीवनी	biodata, biography
जूट	matted hair, jute
जैवरूप	organic form
ज्यामिति	geometry
ज्यामितीय	geometrical
ज्यामितीय आकार	geometric form
झ	
झंडा	flag
झंडी	small flag
झरोखा	oriel, window
झलक (रंगो की)	tinge
झाँकी	tableau, scene
झाड़ फानूस	chandelier
झालर	frill, festoon
झोपड़ी	hut, small cottage

ट

टैकाई	the work or wages for stitching
टैकाना	Stitch a patch
टाट	sack cloth, floor mat
टिप्पी	mark made by the tip of finger
टुकड़ा (कागज का)	stump
टेढ़ा-मेढ़ा	zig-zag, irregular

ठ

ठप्पा	block, impression
ठठेरा	tinker
ठेठ चित्रण	Alla prima

ढ

ढाँचा	armature
ढलाई	casting, moulding
ढलाईकार	caster

त

तंतुनीक	fibre, yarn, fabric
तकनीक	technic, technique
तकनीकी	technical
तक्षणी	burin
तटस्थ रंग	netural colours
तत्त्व	element, principle, substance
तरल	liquid, fluid
तराशना	to cut
तहखाना	basement, underground
ताँबा	copper,
तांत्रिक चित्रण	tantric painting
तागा चित्रण	thread painting
तान	tone, musical tone
ताम चीनी	enamel ware, enamel
ताम्रपत्र	plate of copper
तारकशी	type of needle work

तारपीन	turpentine oil
तारमूर्ति	wire sculpture
ताल	rhythm, tune
तिपाई	tripod
तिपाई चित्र	easel painting
तुरही	bugle
तूलिका	brush, pencil, quill
तूलि, तूलिका	painters brush
तूलिका संचालन	brushing
तृतीय रंग	tertiary colours
तेल	oil, grease
तैल चित्रण	oil painting
तैल पात्र	dipper
तैल रंग	oil colour
तैल रंगीय छाप चित्र	oleograph
तोरण	arched

त्र

त्रिज्या	the radius of circle
त्रिपट	triptych
त्रिफलक	triptych
त्रिभुज	triangle
त्रिभुजाकार	triangular
त्रिविम/त्रिआयामी	three dimensional
त्रैमासिक	quarterly
त्रैवार्षिक	triennial

थ

थापना	give an impression of a thing
थापा	the mark of a hand

द

दमक	brilliance
दरारें	cracks
दरी	carpet, cave
दस्तकार	artisan, craftsman

दस्तकारी	artisanship, handicraft
दादावाद	dadaism
दानेदार	granular
दार्शनिक	philosopher
द्वितीय रंग	secondary colours
द्विपट/द्विफलक	diptych
द्विविम/द्विआयामी	two dimensional
दीप्त	glittering, bright
दीप्ति	lustre, glitter
दीर्घवृत्त	ellipse
दीर्घा	gallery
दीवार कागज (सजावटी)	wall paper
दीवार पर्दा	tapestry
दूरदर्शन	television
दूरदृश्यलघुता	perspective
दूरमुद्रक	teleprinter
दृढीकरण	ratification
दृश्य	visible scene
दृश्य कलाएँ	visual arts
दृश्य भूमि	land scape
दृष्टांत चित्र	illustration
दृष्टि	vision
दृष्टिगत कला	optical art
दृष्टिगत, दृष्टिगोचर	visible
दृष्टिजन्य मिश्रण	optical mixture
दृष्टिभ्रम	optical illusion
दृष्टिभ्रामक कला	optical illusion
देह	body
दैत्याकृति	mascaron, ogrish
दैनिक जीवन चित्र	genre painting
दो हत्था कलश	amphora
द्रव	liquid

ध

धड़ प्रतिमा	torso
धब्बा चित्रण	blot-painting
धब्बांकन	patch work
धरन	beam
धरातल	ground, surface
धरोहर	trust
धवल	bright
धवलमृत्तिका	chalk
धातु	metal
धात्विक	metallic
धुँआ चित्रण	fumages
धुँधला	hazy, foded, mistry
धुँधलापन	haziness, darkening
धूमिल	chalky, vague
धूसर	grey
ध्वजा चित्रण	banner painting

न

नकल करने का कागज	carbon paper
नक्शा	plan, map, layout
नक्काशी	carving, engraving
नगर योजनाकार	town planner
नगाड़ा	drum
नग्न चित्र	nude painting
नन्दतिक	pleasure
नमूना	pattern, model, design
नव अभिव्यंजनावाद	neo-expressionism
नव आदिम चित्रकार	neo-primitives
नव दादावाद	neo-dadaism
नव पाषाणकालीन कला	neolithic art
नव प्रभाववाद	neo-impressionism
नव यथार्थवाद	neo-realism

नव रोमांसवाद	neo-romanticism
नव लचीलावाद	neo-plasticism
नव शास्त्रीयवाद	neo-classicism
नवरंग	beautiful
नवरंगी	Jovial
नवीन	new, modern
नाच	dance
नाटक	drama
नाटकशाला	theatre, hall, stage
नाटकीय	dramatic
नाट्य	drama, play
नाट्यकला	dramatic art, stagecraft
नाट्यकार	performer, actor
नाट्यशास्त्र	dramaturgy
नाद	sound
नारंग, नारंगी	orange
नारी स्तम्भ	caryatid
निक्षारण	etching
निब	nib
निपुणता	skill, expertise
निम्न छटा	low tone
निम्न छटा प्रभाव	low key
निरूपण	portrayal
नील	indigo
नीलमणि	Indigo, sapphire
नीला	blue, azure
नीलिमा	bluishness
नेत्रीय	optical
नैसर्गिक	natural
नेत्रीय कला	optical art (opart)

प

पंचरंग	five different colours
पकी मिट्टी की मूर्ति	terracotta
पगोड़ा	buddhist monastery
पच्चीकारी	inlay/mosaic work
पट	screen, canvas
पट चित्र	scroll painting
पटरा	plank
पटवा	craftman
पट्ट	panel
पतला कागज	tissue paper
(अर्द्धपारदर्शी)	
पतला लेप (रंग का)	wash
पताका	flag, banner
पत्थर	stone
पदार्थ	a thing, an object
पदार्थ चित्रण	still life, object painting
पद्धति	custom, method, process
पन्नी	fine metallic coloured paper
पर की कलम	quill pen
परत	wash, glaze
परत रंगांकन पद्धति	wash painting
परदा चित्र	hanging
पर्दा चित्र	screen painting
परम्परा	tradition
परम्परागत	tradition, hereditary
परम्परागत कला	traditional art
परस्परछेदी रेखाच्छादन	cross hatching
परावर्तित प्रकाश	reflected light
परिकल्पना	hypothesis, design
परिधान	dress

परिप्रेक्ष्य	perspective
परिमाण	size, volume
परिष्करण	finishing
परिमिति	measure
परियोजना	project
परिलेखन	drawing picture
परीखम्भा	caryatid
पलस्तर	plaster
पलस्तर करना	pargetting, to plaster
पहनावा	dress, clothing
पहिरावा	costume, dress
पांडुलिपि	manuscript
पांडुलिपि विज्ञान	popynology
पात्र	character, jug, cup
पॉप कला	pop art
पायस	emulsion
पारदर्शक	transparent
पारदर्शी	transparency
पारदर्शी कागज	tissue paper
पार्श्व	back, side
पार्श्व दृष्टि	side view
पारम्परिक	traditional
पारिभाषिक	technical
पारिभाषिक कोश	dictionary of
	technical words
पिघलाना	dissolve, melt
पिचकारी	syringe, pump
पिच्चीकारी	inlaid work, mosaic
पिछवाई	screen hung behind object
पीठिका	pedestal
पीत, पीला	yellow, pale

पुचारा पद्धति	scumbling	पूर्वरूप	prototype
पुतला	manikin, effigy	पूर्वाभ्यास	rehearsal
पुताई	white wash	पृष्ठभूमि	back ground
पुनर्जागरण	renaissance	पृष्ठीय आलांकन	aquatint
पुनः सृजन	recreated	पेन्सिल	pencil
पुनरावृत्ति	repetition	पेवन	botch, patch
पुनर्गांकन	repainting	पैवंदकारी	applique
पुरस्कार	award, honorarium	पोत	tiny artificial pearl, texture
पुरस्कृत	awarded, prize	प्रकाश	light
पुराणकथा	myth	प्रकाशवाद	luminism
पुरातत्व विज्ञान	archaeology	प्रकाशित	evident, published
पुरातन	old, ancient	प्रकृत	natural, real
पुराने उस्ताद	old masters	प्रकृति	nature, habit
पुराभिलेख	epigraph	प्रकृति चित्रण	landscape painting
पुरालिपि	palaeography	प्रक्षालन	washing, cleansing
पुरालेख	epigraph	प्रक्षेपक	projector
पुरावशेष	relic, antiquity	प्रख्यात	renowned, famous
पुरावस्तु	antique, antiquity	प्रतिकृति	reproduction, image, picture
पुष्प विषयक	floral	प्रतिच्छाया	reflected image
पुस्तक किनार चित्रण	foreedge painting	प्रतिनिधित्व	representation
पुस्तक चित्रण	book illustration	प्रतिबिम्ब	image
पुस्तक सज्जा	book illumination	प्रतिदीप्ति रंग	fluorescent
पुस्तकावरण	book jacket	प्रतिभा	talent
पुस्तिका	pamphlet, hand book	प्रतिमा	statue, icon, image
पूनी	roll of cotton prepared - for spinning thread	प्रतिमा पूजा	iconolatry
पूरक रंग	complementary colours	प्रतिमावाद	imagism
पूरन	fill	प्रतिमा विज्ञान	iconography
पूर्वकल्पना	premeditation	प्रतिरूप	image, a picture
पूर्वकल्पित	presupposed	प्रतिरूपण	rendering, impersonation
पूर्व पाषाण कालीन कला	aurignacian	प्रतीक	mark, sign, symbol
पूर्वपीठिका	background	प्रतीकात्मक	symbolic
		प्रतीक चिह्न	emblem

प्रतीक चित्रण	symbol painting
प्रतीकवाद	symbolism
प्रथमाक्षर	initial letter
प्रथम परत	base
प्रदर्शक	exhibitor
प्रदर्शन	display, show
प्रदर्शनी	exhibition
प्रदर्शित	exhibited, displayed
प्रदीप्ति	luminous, illuminated
प्रधान रंग	key colour
प्रबलता	intensity
प्रभामण्डल	nimbus, halo of light
प्रभाव	impression
प्रभाववाद	impressionism
प्रभाविता	dominance
प्रमाण	proportion, measure, authentic
प्रमाण पत्र	certificate, testimonial
प्रमाणिक	standard, reliable
प्रयोग	experiment
प्रयोगवाद	experimentation
प्रलाक्षा	lacquer
प्रलेख	document
प्रवाह	flow, stream of water
प्रवाही	effluent
प्रवृत्ति	tendency, action
प्रसोधन गृह	beauty saloon
प्रस्तर शिल्प	stone sculpture
प्रस्तुति	representation
प्राकृत	natural
प्राकृतिक	natural, physical
प्राचीन	ancient
प्राचीन अवशेष	antiquities

प्राचीर	rampart
प्राथमिक	primary, elementary
प्राथमिक रूपरेखा	design
प्रौद्योगिकी	technology
प्राच्य	eastern, old, ancient
प्राबल्य	emphasis, predominance
प्रामाणिक	reliable, authentic
प्रारम्भिक	primary, original
प्रारूप	proforma, draft
प्रारूपकार	draftsman
प्रविधि	technique
प्राविधिक	technical
प्राविधिक शिक्षा	technical education

फ

फलक	board, canvas, sheet
फलक चित्र	panel painting
फव्वारा	fountain
फिरोजी	violet-blue
फर्श	carpet, floor
फुहारना	to spray
फूलकारी	embroidery of flower
फेंटना	shuffle, mix

ब

बंधक	binder, fixative
बंबू	a thin bamboo pipe
बखिया	a kind of strong stitching
बढ़ई	carpenter
बदामी	colour of almond
बनावट	formation, construction
बरमी	drill
बहुफलक	polyptych
बहुभुज	polygon

बहुरंगा	multi coloured
बहुरूपदर्शी	kaleidoscope
बहुवर्णीय	polychromatic
बाउली	tank of water
बादामी	colour of almond
बारहमासा	song which is sung in -all the seasons of the year
बारीक	detail, fine
बालकला	child art
बाह्य	outside
बाह्य रेखा	outline
बिनना	knit, weave
बिनाई	work for knitting
बिनावट, बनावट	knitting, texture
बिन्दु	point, dot
बिन्दु उत्कीर्णन	stipple engraving
बिन्दु चित्रण	dot painting, stippling
बिन्दुवाद	pointillism
बिम्ब	Image
बिल्ला	plaque, badge
बुत	statue, idol
बुनकर	weaver
बुनकारी	textile art
बुनना	weave, knit
बुनाई	act of wages for weaving
बुनावट	texture of cloth
बुन्दीदार	dotted
बुर्ज	tower, turret
बूटा	a pattern of flower -worked on cloth
बूटी	small flower worked on cloth
बेलबूटा	vignette, foliage
बैंगनी	purple, violet
बोध	perception

भ

भंगिमा	pose, posture
भंजित रंग	broken colour
भंवरवाद	vorticism
भविष्यवाद	futurism
भाव	mood, feeling
भिन्नवर्ण	different colour
भित्ति	wall
भित्ति चित्रण	mural painting
भू-परिदृश्य	landscape
भू-रंग	earth colour
भूमि-बन्धन	grounding
भूरा	brown, hoary, grey
भूषाचार	fashion

म

मंच	stage, platform
मंडलाकार	round, circular
मकबरा चित्रण	tomb painting
मखमल	velvet
मगजी	border, edging
मड़ई	cottage, small hut
मठ	cloister
मधुरिमा	beauty
मणिकुट्टिम	mosaic
मध्ययुगीन कला	mediaeval art
मध्यम रंगत	middle tint
मद्धिम	middle, slow
मनोरंजक कला	amusement art
मनोरोगी कला	psychotic art
मनोवर्धक कला	psychedelic art
मनोहर	beautiful, lovely, attractive
मलमल	muslim, linen
महराब	arch
महराबी छत	vault
महल	palace

महल्ला	street, ward, locality
महावर	red colour prepared -from lac
महीन निब	mapping pen
महोत्सव	festival
माधुर्य	sweetness, beauty
माध्यम	medium
मान	value
मानचित्र	map
मानचित्रकार	cartographer
मानव चित्रण	life painting
मापनी	scale, ruler
मासिक पत्रिका	magazine
मिट्टी	clay, soil, earth, dust
मिति	dimension, measurement
मिथ्याभास	hallucination
मिस्री कला	egyptian art
मिस्त्री	craftsman, artisan
मिश्रण पट्टिका	palette
मिश्रित माध्यम	mixed media/medium
मिश्रित वर्ण	composite colours
मीनाकार	enameller
मुखाकृति	countenance, appearance
मुखौटा	mask, countenance
मुद्र	print
मुद्रा	pose
मुद्रक	printer
मुद्रणालय	printing press
मुद्रित	printed
मुरेठा	head dress
मुल्लमा करना	gilding
मूर्त	concrete, image

मूर्ति	statue, idol
मूर्तिकरण	concrecence
मूर्तिकला	sculpture
मूर्तिकार	sculptor
मूर्ति गढ़ना	modeling
मूर्तिशास्त्र	iconography
मूल ठप्पा	key block
मूल प्रवृत्ति	instinct
मूल रंग	main colour
मृण्मूर्ति	terracotta, clayey idol
मृण्मूर्ति (बिना चमकाई)	biscuit
मृदुता	softness, mildness
मृदुतूलिका	sweetner
मेक्सिकन कला	Mexican art
मेंहदी	myrtle
मोटा रंगाकन	impasto
मोम चित्रण	encaustic
मोरपंखी	colour of peacock feather
मोहल्ला	street, ward, locality
मौलिकता	originality
र	
यथाकार	life size
यथार्थ	realistic
यथार्थवाद	realism
यशद मुद्रण	zincography
यांत्रिक कलाएँ	mechanical art
र	
रंग	paint, hue, colour
रंग आभास	colour note
रंग क्रम	colour spectrum
रंग चिकित्सा	colour therapy

रंग चिकित्सा	colour therapy	रागिनी	musical mode
रंगत	colour, complexion, hue	रामरज	yellow clay
रंग-द्रव्य	pigment	राल	resin, rosin
रंग-पट्टिका	palette	रीति	manner
रंगबिरंगा	various colours	रीति-रिवाज	customs
रंगभूमि	theater	रीतिवाद	mannerism
रंगमंच	stage	रुखानी	chisel
रंगमंडप	theatre	रूपकर	plastic
रंगरेज	dye of clothes	रूपकर कलाएँ	plastic art, shaping art
रंगरोगन	paints	रूप	form, shape
रंग-वर्तिका	poster colour	रूपकार	designer
रंग-विधान	colour scheme	रूपचित्र	portrait
रंगशाला	theatre, theatrum	रूपमय	beautiful, handsome
रंगसाज	painter	रूपरेखा	outline, synopsis, design
रंगाई	colouring, dyeing	रूपवाद	formalism
रंगाकार	painter	रूपांकन	design
रंगीन	coloured	रूपाभास	anamorphosis
रंगीन अश्ममुद्रण	chromo lithography	रूपान्तरण	metamorphosis
रंगीन काँच चित्रण	stained glass	रेखा	line
रंजक	painter	रेखांकन	drawing
रचना	creation, invention	रेखांकन कापी	sketching book
रचनाकार	designer, creator	रेखाकृति	sketch, drawing
रचनात्मक कला	tectonics	रेखा चित्र	line drawing
रचनावाद	constructivism	रेखाचित्रण	sketching, figure drawing
रजत पट	silver screen	रेखाच्छादन	hatching
रजत पट मुद्रण	serigraphy	रेखा वर्तना	line shading
रद्दी	waste	रेखीय परिप्रेक्ष्य	linear perspective
रद्दी मूर्तिकला	junk sculpture	रेगमाल	sand paper
रबड़	rubber, eraser	रेती	file
रस	relish, pleasure, sentiment	रेशम	silk
रसानुभव	relish	रेशमी	silken
रसास्वदन	appreciation	रेशा	fibre
रसिक	admirer	रोगन	varnish, polish
राग	desire, song, tune	रोली	mixture of turmeric and lime
		रोमांसवाद	romanticism
		रोशनाई	ink

ल

लंबाई	length
लकड़ी	wood, timber
लकीर	line
लक्षण	indication
लक्षणा	metaphor
लचीली कलाएँ	plastic arts
लघुकरण	reduction
लघुचित्र	miniature
लघुपट्टिका शिल्प	plaque
लघुपुस्तक	brochure
लघु प्रतिमा	statuette
लघु फलक	tablet
लघु मूर्ति	figurine
लघुशब्दकोश	glossary
लय	tune, rhythm
लयात्मक	rhythmic
लयात्मक रेखा	rhythmic line
ललित	lovely, beautiful
ललित कलाएँ	fine arts
लहर	wave
लाक्षणिक	metaphorical, symbolic
लाजवर्द	ultramarine, lapis lazuli
लाल	ruby, red
लालित्य	loveliness, beauty, grace
लावण्य	beauty, charm, loveliness
लिपाई	plastering
लिपि	handwriting
लिपि लेखन	calligraphy

लीपना	to coat, besmear
लुगदी	lump of pulpy object
लेखनी	pen
लोक कला	folk art
लोक चित्रण	folk painting
लोक नृत्य	folk dance
लोकाचार	popular custom
लोपीबिन्दु	vanishing point
लौकिक	popular, customary

व

वक्र	curve
वनस्पतिज तेल	vegetable drying oil
वर्ग	square, species, group
वर्गाकार	square
वर्ण	colour, hue
वर्णक	pigment
वर्ण क्रम	spectrum
वर्ण चक्र	colour circle / wheel
वर्ण तीव्रता	intensity of colour
वर्णनात्मक कला	descriptive art
वर्णनात्मक चित्र	narrative painting
वर्ण नियोजन	colour scheme
वर्ण मैत्री	colour unity
वर्णहीन	achromatic
वर्तना	shading
वर्तिका	pencil, wick
वर्तुल	round, circular
वयन	texture
वस्तु	thing, object

वस्त्र	textile, cloth, dress
वस्त्रकला	textile design
वस्त्र चित्रण	fabric painting
वस्त्र परिकल्पना	textile design
वस्त्रालंकरण	dress designing
वस्त्र विन्यास	drapery, fashion design
वस्तु चित्रण	still life painting
वस्तु निरपेक्ष कला	abstract art
वस्तुनिष्ठ चित्रण	objective painting
वादक	musician
वादन	playing on musical instrument
वानस्पतिक	botanic
वारनिश	varnish
वार्षिकप्रदर्शनी	salon, annual exhibition
वास्तविक	actual
वास्तुकला	architecture
वास्तुकार	architect
वास्तुशिल्प	architecture
विद्वत्परिषद्	academic council, academy
विरलक तैल	thinner
विरूप चित्र	caricature
विरूपण	distortion
विरूपाकृति	grotesque
विरोधी	contrast
विरोधी रंग	contrast colour
विरोधी रंग-संगति	contrasted harmony
विलोम	reverse, opposite
विवरणिका	brochure
विविध शिल्प	different craft

विशाल मूर्ति	colossus
विशुद्धवाद	purism
विश्वकर्मा	God of creation
विश्वविद्यालय	university
विषयगत	subjective
विषय वस्तु	content
विस्तार	extension
विहंगम दृश्य	bird's eye-view
विज्ञापक	advertiser, informer
विज्ञापन	advertisement
विज्ञापन तख्ता	hoardings
वीणा	Indian lute
वीथिका	gallery, path
वेदी	altar
वेदी चित्र	altar-piece
वृत्त	circle
वृत्तचित्र	documentary
वृत्ताकार	circular, round
वृत्तान्त	incident, news
वेग	speed, velocity
वेद	the divine knowledge
वेदिका	alter, satire, platform
व्यक्ति चित्र	portrait
व्यक्तिगत शैली	style
व्यंग/व्यंग्य	comic, satire, sarcasm
व्यंग चित्र	cartoon
व्यंग चित्र पुस्तक	comic book
व्यंग चित्रमालिका	comic strip
व्यंग चित्रकार	cartoonist
व्याख्या चित्र	illustration

व्याख्यान	lecture, speech
व्यापारिक कला	commercial art
श	
शंकु	spear, cone
शंख	conch-shell
शतरंजी	chessboard, kind of carpet
शतरंजी फूलकारी	diaper
शबीह	portrait
शरीर रचना विज्ञान	anatomy
शरीर विज्ञान शास्त्र	physiology
शारीरिक गठन	physique
शास्त्रीय	classical
शास्त्रीयतावाद	classicism
शलाका	stic
शिकन	wrinkle
शिला	rock
शिला चित्रण	rock painting
शिला मुद्रण	lithography
शिलालेख	epigraph, inscription
शिल्प	craft, architecture, handicraft
शिल्पकला विज्ञान	technology
शिल्पकार	artisan, craftsman
शिल्पकारिता	craftmanship
शिल्पगृह	studio
शिल्पविद्या शास्त्र	mechanical skill
शिल्प विधि	technique
शिल्पशाला	workshop
शिल्प शिक्षक	craft teacher
शिल्पी	sculptor, artist, craftsman

शिल्पी संघ	guilds
शिविर	camp
शीतल रंग	cool colour
शुद्ध रंग	pure colour
शुद्धता	chroma, purity
शुष्क	dry
शुष्कक	drier
शुष्क तूलिका संचालन	dragging
शुष्क नोक उत्कीर्णन	dry point
शुष्क सूची	dry point
शैक्षणिक	academic
शैली	style, school
शोध	research, investigation
शोधकर्ता	researcher, investigator
शोध-निबन्ध	dissertation, thesis
शोध पत्रिका	research journal
शोध प्रबन्ध	research thesis, dissertation
शोध लेख	research article
शोभन	lovely, beautiful
शोभा	decoration, glory
शौकिया	amateur
शौकिया चित्रकार	sunday painter
श्याम-श्वेत	black and white
श्वेत	white
शृंखला	series, chain
शृंगार	ornament, adornment
श्रेणी	series, grade, rank
श्रेष्ठ कलाकृति	master-piece

ष

षट्कोण	hexagon
षडंग	six limb of Indian painting

स

संकलन	collection
संकेत	sign, indication
संकेत चित्र	key sketch
संकेत चिह्न	symbol
संगत	party, company
संगतराश	sculptor, stone-cutter
संगति	relation, association
संगमरमर	marble
संगीत	art of music and dancing
संगीत काव्य	lyric
संगीतकार	musician
संगोष्ठी	seminar
संग्रह	collection
संग्रहण	collection
संग्रहालय	museum
संघ	society, organization
संतुलन	balance, equilibrium
संतृप्ति	saturation
संदर्भ	reference
संदर्भ ग्रन्थ	reference book
संदीप्त	luminosity
संप्रेक्षण	observation
संयोजक	convener
संयोजन	composition
संरचना	construction, structure

संवेदना	sensation, feeling
संश्लेषित रंग	synthetic colour
संस्करण	edition of a printed book
संस्कार	impression, ritual
संस्कृति	culture, civilization
संस्था	institution, society
संस्थान	Institute
संस्थापन	installation
सचित्र	pictorial
सजधज	ornamentation
सज़ना	dress
सजाना	decorate
सजाव	decoration
सजावट	decore
सज्जा	decoration, display
सज्जा कला	decorative art
सतह	surface
सदृश	similar
सद्ग्रन्थ	good book
सपाट	smooth
सप्तक	the seven notes in music
सफेद	white
सफेदा	whitelead, litharge
सभ्य	civil
सभ्यता	civilization
सम	equal
समकालीन	contemporary
समचतुर्भुज	square

समतल	smooth	सरल	straight
सममिति	symmetry	सरल रेखा	straight line
समत्रिभुज	triangle	सरलीकरण	simplification
समतोलन	equilibrium	सरेस	gelatine, animal glue
समन्वय	co-ordination	सर्जनशीलता	creativity
समन्वित	combined	सर्जनात्मक	creative
समपरिमाण	equal quantity	सर्वश्रेष्ठ	paramount
समरूपता	conformity	सलेटी रंग	grey
समवर्णी	isochromatic	सशक्त रेखा	powerful/forceful line
समविन्यास	conformity	सहज	natural
समसामयिक	contemporary, current	सहयोग	assistance, co-operation
समागम	arrival	सहायक	secondary, contributory
समाचार	news	साँचा	mould, cast, pattern
समाधि गुफाएँ	catcombs	सांसारिक	wordly
समानता	equality	सांस्कृतिक	cultural
समानान्तर	parallel	साज-सामान	materials
समानुपात	equal, proportion	साटन	satın, sateen
समालोचक	critic	सादृश्य	likeness, similarity
समालोचना	criticism	साधारणीकरण	generalisation
समिति	association	सामंजस्य	harmony
समीक्षक	reviewer	सामग्री	apparatus, tools, material
समुच्चित चित्र	collage	सामान्य रंग	general colours
समूह	group, crowd	सामिग्री	materials
सम्प्रति	currently, at this time	सामूहिक	collective, group
सम्प्रेषण	communication	साम्य	similarity
सम्मानित	respected	सारभाग	core
सम्मिश्रण	intermixture	साहित्य	literature
सम्मुख विषय	model	साहित्यिक	literary
सम्मेलन	assembly, conference	साहित्यिक कला	literary art
		सिंगार	decoration
		सिंगारदान	makeup box, toilet box
		सिंदूर	vermillion

सिक्का	stamped coin	सृजन	creator
सिद्धान्त	principle	सृजनात्मक	creative
सिक्थ वर्णक	encaustic	सृजित	created
सितार	kind of guitar	सेलखड़ी	chalk
सितारा	planet	सोखता	blotting paper
सिलखड़ी	kind of chalk	सोखना	absorb
सिलवट	wrinkle	सोभन	beauty
सिलाई	sewing, seam	सौंदर्य	beauty, loveliness
सिलापट	sleeper of wood	सौन्दर्य कला	fine art
सीप	shell	सौन्दर्य शास्त्र	aesthetics
सीमाकन	demarcation	स्तम्भ	pillar, column
सीसा	lead	स्तूप	buddhistic monument, stupa
सुकुमारता	softness	स्थल	place, spot
सुनहरा, सुनहला	golden	स्थल नक्शा	site plan
सुन्दर	beautiful, charming	स्थल वर्णन	topography
सुन्दरता	prettiness	स्थलाकृति	topography
सुराही	long-necked water pot	स्थानीय रंग	local colour
सुरीलवाद	orphism	स्थापत्य	architecture
सुर्खी	redness	स्थापत्य कला	architecture
सुलेखन/सुलेख	calligraphy	स्थायीकरण	fixative
सुलेखकार/सुलेखक	calligraphist	स्थायी रंग	permanent colours
सुशोभित	graceful	स्पर्श	touch
सुसंगति	harmony, concord	स्पर्श रेखा	tangent
सुसंस्कृत	refined	स्मारकीय	monumental
सुसज्जित	well-arranged, decorated	स्मारिका	souvenir
सूक्ष्म	abstract	स्वर्णिम अनुपात	golden section
सूचना	information	स्वप्न चित्र	fantasy
सूचीकर्म	needlework, embroidery	स्पर्शेन्द्रिय	the sense of touch
सूचीपत्र	catalogue		

स्मारक	memorial
स्मारक चिह्न	monument
स्मृति	memory
स्मृति चिह्न	souvenir
स्याही	ink, darkness
स्याही चित्र	sumi-e, pen & ink drawing
स्वच्छन्द चित्रण	free expression, action painting
स्वच्छन्दतावाद	romanticism
स्वर	sound, note, tone, vowel
स्वरूप	shape, form
स्वस्तिक	fyfot
स्वांग	disguise
स्वाक्षर	signature
स्वाभाविक	natural, characteristic
स्थिरीकरण	fixing, stabilization
स्थिरीकारक	fixative
स्निग्धता	greasiness

ह

हम्माम	warm bath, bagnio
हरा	green, verdant
हल्का उभार	bas relief
हल्का रंग	tint
हल्की परत	frottis
हाशिया	margin, border
हस्त	hand, handwriting
हस्तकला	handicraft
हस्तकला शिक्षण	manual training
हस्तलिपि कला	chirography
हस्तशिल्प	handicraft
हस्ताक्षर	signature, autograph
हाट	market
हास्य	joke
हास्यकर चित्र	cartoon
हास्य चित्र	caricature
होल्डर	holder

□□□



सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची (Bibliography)

- वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला (1990), संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
- डॉ. गिराज किशोर अग्रवाल , रूपांकन (2002) ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
- डॉ. जी.के. अग्रवाल , पश्चिम की कला (2009), ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
- डॉ. राजेन्द्र बाजपेयी, मध्यकालीन यूरोपीय कला (1989), साहित्य निकेतन, कानपुर
- डॉ. राजेन्द्र बाजपेयी, जापानी चित्रांकन (1980) साहित्य निकेतन, कानपुर
- एस. के. शर्मा, आर. के. अग्रवाल, रूपप्रद कला के मूलाधार (2000) लायल बुक डिपो, मेरठ
- डॉ. शिवकुमार शर्मा एवं डॉ. शुक्देव श्रोत्रिय, चित्रण-विधान एवं सामग्री (1997) चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर
- अविनाश बहादुर शर्मा, कला एवं तकनीक (1998), प्रकाश बुक डिपो, बरेली
- डॉ. आर. ए. अग्रवाल, कला विलास (2000), इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ,
- रूपनारायण बाथम, पारिभाषिक कला-कोश (1994), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- र. वि. साखलकर, कला कोश (1998), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- र. वि. साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास (2004), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- डॉ. सुनील कुमार, भारतीय छापाचित्र कला (2000), भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली
- डॉ. हृदय गुप्ता, पारिभाषिक दृश्यकला कोश (2011) चतुर्व्यूह प्रकाशन, गोरखपुर
- डॉ. हृदय गुप्ता, दृश्यकला के मूलभूत सिद्धान्त, तकनीक और परम्परा (2013), मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

Mahendra Chaturvedi, Bhola Nath Tiwari, A Practical Hindi-English Dictionary (2004) National Publishing House, New Delhi

Prof. R. C. Pathak, Bhargava's Concise Dictionary of the English Language (Anglo-Hindi Edition), Bhargava Book Depot, Varanasi

Prof. R. C. Pathak, Bhargava's Concise Dictionary the Hindi Language (Hindi-English), Bhargava Book Depot, Varanasi

Dr. Hardev Bahri, English-Hindi Dictionary (2004), Rajpal & Sons, New Delhi

F. W. Fairholt, A Dictionary of terms in Art (1988), Ritwik Publications, Ghaziabad

M.S. Randhawa, Indian Miniature Painting (1981), Roli Books International, New Delhi



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

कोश सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रकारान

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
● हलायुध कोश	सम्पा. जयशंकर जोशी	220.00
● वृहत् मुहावरा कोश भाग-1	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	140.00
● वृहत् मुहावरा कोश भाग-2	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	293.00
● वृहत् मुहावरा कोश भाग-3	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	230.00
● साहित्यिक ब्रजभाषा कोश भाग-1	सम्पा. डॉ. विद्यानिवास मिश्र	105.00
● हिन्दू धर्मकोश	डॉ. राजबली पाण्डेय	345.00(एच.बी.) 320.00(पी.बी.)
● सूक्ति सागर	संक. रमाशंकर गुप्त	230.00
● भारतीय इतिहास कोश	अनु. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य	170.00
● अवधी वृहत् लोकोक्ति कोश	कमला शुक्ला	300.00
● अवधी कोश	प्र.सम्प. प्रो. सरयू प्रसाद अग्रवाल	300.00 370.00

सम्पर्क सूत्र
निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ - 226001

ISBN : 978-93-82175-54-5

मूल्य रुपये 185=00